वार्षिक समीक्षा

2015

आई.सी.डब्ल्यू.ए. अनुसंधान संकाय द्वारा निर्मित

विश्व मामलों की भारतीय परिषद,

सप्रू हाउस,

नई दिल्ली -110001

वार्षिक समीक्षा 2015

विदेशी मामलों, आंतरिक सुरक्षा, आर्थिक नीति, रक्षा, वाणिज्य एवं वित्त के क्षेत्र में हुए विकास पर वार्षिक रिपोर्ट

विषय-सूची

अध्याय पृष्ठ सं.

1. दक्षिण एशिया **04**

I. अफगानिस्तान
II. बांग्लादेश
III. भूटान
IV. नेपाल
V. पाकिस्तान
VI. श्री लंका

2. पूर्वी एशिया / आसियान **19**

I. कंबोडिया
II. इंडोनेशिया
III. लाओ पीडीआर
IV. मलेशिया
V. मंगोलिया
VI. म्यांमार
VII. फिलीपींस
VIII. कोरिया गणराज्य
IX. सिंगापुर
X. थाईलैंड

3. मध्य एशिया **30**

I. कजाखस्तान
II. किर्गिज़स्तान
III. तजाकिस्तान
IV. तुर्कमेनिस्तान
V. उज़्बेकिस्तान

4. पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका **35**

I. बहरीन
II. मिस्र
III. ईरान
IV. इराक
V. इजराइल
VI. जॉर्डन
VII. फिलिस्तीन
VIII. कतर
IX. सऊदी अरब
X. ओमान सल्तनत
XI. तुर्की
XII. संयुक्त अरब अमीरात

5. अफ्रीका 43

I. मोजाम्बिक
II. दक्षिण अफ्रीका
III. तंजानिया

6. हिंद महासागर द्वीप राज्य 45

I. मालदीव
II. मॉरीशस
III. सेशेल्स

7. लैटिन अमेरिका और कैरेबियन 50

I. अर्जेंटीना
II. अंतिगुया और बार्बूडा
III. ब्राज़ील
IV. गुयाना सहकारी गणराज्य
V. कोस्टा रिका
VI. जमैका
VII. सूरीनाम गणराज्य
VIII. साल्वाडोर
IX. विविध

8. उत्तरी अमेरिका 55

I. कनाडा

9. प्रमुख शक्तियाँ 57

I. चीन
II. यूरोपीय संघ
III. जापान
IV. रूस
V. संयुक्त राष्ट्र अमेरिका

10. बहुपक्षीय संस्थान 95

I. आसियान-भारत शिखर सम्मेलन
II. बेसिक 20वीं मंत्रिस्तरीय बैठक
III. बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल (बी.बी.आई.एन.)
IV. ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका (ब्रिक्स)
V. लोकतंत्र समुदाय का 8वां मंत्रिस्तरीय सम्मेलन
VI. सीओपी 21
VII. पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन
VIII. जी-20
IX. भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन
X. हिंद महासागर तटीय क्षेत्रीय सहयोग संघ (आई.ओ.आर.ए.)
XI. रूस, भारत और चीन (आर.आई.सी.)
XII. संयुक्त राष्ट्र

11. गैर-पारंपरिक सुरक्षा मुद्दे 111

I. साइबर सुरक्षा

12. विविध **113**

13. भारत और बहुपक्षीय संस्थान **121**

I. ब्रिक्स और भारत
II. जी-20 और भारत
III. एस.सी.ओ. और भारत

14. वित्त मंत्रालय के प्रमुख कार्यक्रम **128**
15. रक्षा क्षेत्र में विकास **140**

स्रोत

वार्षिक समीक्षा 2015 में दी गई जानकारी निम्नलिखित वेबसाइटों से ली गई है:

1. विदेश मंत्रालय
2. गृह मंत्रालय
3. रक्षा मंत्रालय
4. वाणिज्य मंत्रालय
5. वित्त मंत्रालय
6. पर्यावरण मंत्रालय
7. उपराष्ट्रपति कार्यालय
8. प्रधानमंत्री कार्यालय
9. औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डी.आई.पी.पी.)
10. प्रेस सूचना ब्यूरो

1. दक्षिण एशिया

I. अफगानिस्तान

1. इस्लामिक गणराज्य के राष्ट्रपति का भारत दौरा (27-29 अप्रैल, 2015)

अफगानिस्तान इस्लामिक गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री मुहम्मद अशरफ गनी ने भारत गणराज्य के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के निमंत्रण पर 27 से 29 अप्रैल, 2015 के दौरान भारत का राजकीय दौरा किया। यह सितंबर, 2014 में राष्ट्रपति का पद ग्रहण करने के बाद महामहिम श्री मुहम्मद अशरफ गनी की भारत की पहली यात्रा है, जो दोनों देशों के बीच उच्च स्तर पर नियमित आदान - प्रदान की परंपरा को आगे बढ़ा रही है, जो वर्ष 2002 से चली आ रही है। यात्रा के दौरान, दोनों नेताओं ने एक संयुक्त बयान जारी किया जिसमें निम्नलिखित प्रमुख बिंदु शामिल हैं:

- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति श्री मुहम्मद अशरफ गनी ने अफगानिस्तान के संविधान की रूपरेखा तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत लाल रेखाओं के अंदर अफगानिस्तान के नेतृत्व में तथा अफगानिस्तान के स्वामित्व में सामंजस्य प्रक्रिया शुरू करने के लिए राष्ट्रपति गनी द्वारा शुरू किए गए प्रयासों पर चर्चा की। राष्ट्रपति गनी ने दृढ़ता के साथ कहा कि पिछले 14 वर्षों में मुश्किल से जो राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक उपलब्धियां हासिल हुई हैं, अफगान नागरिकों, विशेष रूप से महिलाओं एवं बच्चों के बुनियादी मानवाधिकारों के संरक्षण, अफगानिस्तान की एकता, बहुलता तथा संप्रभुता को सामंजस्य की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के किसी भी प्रयास में कभी भी हल्का नहीं होने दिया जाएगा।
- राष्ट्रपति गनी ने दोनों देशों के बीच व्यवसाय संपर्क एवं व्यापार बढ़ाने के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदमों तथा हाल ही में पीएटीटीए (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान व्यापार एवं पारगमन करार) वार्ता में शामिल होने के लिए चौथे पक्षकार के रूप में भारत के निर्णय का स्वागत किया, जिससे ऐसी व्यवस्था स्थापित होगी जो व्यापक क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण के विजन में सार्थक ढंग से योगदान करेगी। अफगानिस्तान ने अफगान के नेतृत्व में हार्ट ऑफ एशिया प्रक्रिया के तहत व्यापार, वाणिज्य एवं निवेश विश्वासोत्पादक उपायों (टी.सी.आई. – सी.बी.एम.) में भारतीय नेतृत्व का भी स्वागत किया, जिसकी गतिविधियां अफगानिस्तान की क्षमता तथा हार्ट ऑफ एशिया में इसके अनोखे लोकेशन को प्रदर्शित करने पर केंद्रित हैं।
- दोनों नेताओं ने ईरान इस्लामिक गणराज्य की सरकार के साथ निकटता से काम करने का भी वादा किया ताकि चाहबहार बंदरगाह को अमली जामा पहनाया जा सके और इसे अफगानिस्तान एवं मध्य एशिया के लिए एक व्यवहार्य गेटवे बनाया जा सके। वे इस बात पर सहमत हुए कि विद्यमान मार्गों के अलावा नए मार्ग अफगानिस्तान के आर्थिक पुनर्निर्माण से जुड़े प्रयासों को गति प्रदान करेंगे।
- दोनों नेता संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में सुधार लाने के अपने साझे लक्ष्य के लिए साथ मिलकर काम करने पर सहमत हुए तथा प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र सुधार पर जी-4 के संकल्प को सह-प्रयोजित करने तथा अफगानिस्तान के समर्थन के लिए राष्ट्रपति गनी का धन्यवाद किया जिसमें संयुक्त राष्ट्र की 70वें वर्ष में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का विस्तार शामिल है।
- राष्ट्रपति श्री मुहम्मद अशरफ गनी ने अप्रैल, 2015 में भारत से तीन बहु प्रयोजनीय चीतल हेलिकाप्टर उपहार में देने के लिए धन्यवाद दिया।

2. इस्लामिक गणराज्य अफ़गानिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री हनीफ अतमार की भारत यात्रा **(8-9** नवंबर**, 2015)**

- यात्रा के दौरान, दोनों पक्षों ने क्षेत्रीय सुरक्षा, विशेष रूप से आतंकवाद के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की जिससे क्षेत्र की शांति तथा स्थिरता को खतरा है। उन्होंने भारत तथा अफगानिस्तान के बीच सुरक्षा और आतंकवाद के सभी रूपों से निपटने हेतु रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने के लिए सहयोग बढ़ाने के तरीकों और साधनों पर चर्चा की।

3. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अफगानिस्तान यात्रा **(25** दिसंबर**, 2015)**

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 25 दिसम्बर, 2015 को अफगानिस्तान की यात्रा की। प्रधानमंत्री ने अफगानिस्तान इस्लामी गणतंत्र के राष्ट्रपति महामहिम मोहम्मद अशरफ गनी और मुख्य कार्यकारी महामहिम डॉ. अब्दुल्ला अब्दुल्ला से विस्तृत विचार - विमर्श किया। यात्रा के प्रमुख परिणाम थे:

- राष्ट्रपति गनी और प्रधानमंत्री मोदी ने भारत - अफगानिस्तान विकास सहयोग के अंतर्गत निर्मित नेशनल असेंबली बिल्डिंग को संयुक्त रूप से अफगान राष्ट्र को समर्पित किया। नेशनल असेंबली बिल्डिंग का एक ब्लॉक भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर रखा गया था। अफगानिस्तान सरकार को नेशनल असेंबली के नए प्रशासनिक ब्लॉक के लिए भारतीय सहायता का आश्वासन दिया गया था। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यह विशेष रिश्ते में भारत और अफगानिस्तान को बांधने वाले स्नेह तथा आकांक्षाओं की भावनाओं व मूल्यों के संबंधों के स्थायी प्रतीक के रूप में खड़ा होगा।
- भारतीय प्रधानमंत्री मोदी और अफगानिस्तान के राष्ट्रपति के बीच अफगानिस्तान में विकास के लिए 2 बिलियन से अधिक अमरीकी डालर की भारत की प्रतिभूत सहायता के उपयोग के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की।
- भारत हाल के आतंकवादी उपद्रव के बाद कुंदुज में पुनर्निर्माण के लिए प्राथमिकताओं सहित अफगानिस्तान की सरकार की प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं द्वारा पथ प्रदर्शित रहना जारी रखेगा।
- दोशी और चारिकर सब-स्टेशनों और चिश्ती शरीफ, हेरात में भारत - अफगानिस्तान मैत्री बांध सहित भारत-समर्थित परियोजनाओं का सफलतापूर्वक समापन किया गया। ये बांध शीघ्र ही पूरी तरह से क्रियाशील होने वाले हैं।
- सामुदायिक अवसंरचना के लिए कुल लघु विकास परियोजनाएं (एसडीपी) परिव्यय 2020 तक 200 मिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ने की परिकल्पना की गई थी।
- भारत अफगानिस्तान की तत्काल जरूरतों को पूरा करने के लिए 170,000 टन गेहूं की आपूर्ति करेगा।
- भारत से अफगानिस्तान के लिए 1000 नई बसों की आपूर्ति के लिए तौर-तरीके विकसित किया गया है।

- प्रधानमंत्री मोदी ने शासन, सुरक्षा और विकास के लिए अफगान क्षमता के निर्माण में भारत के निरंतर समर्थन की पुष्टि की। शिक्षा और शासन के क्षेत्रों में क्षमता विकसित करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि अफगानिस्तान के 10,000 से अधिक छात्र भारत में अध्ययनरत थे। उन्होंने कहा कि भारत में अध्ययन करने के लिए अफगान छात्रों को प्रत्येक वर्ष 1,000 छात्रवृत्तियों की मौजूदा योजना को एक वर्ष व्यावसायिक और कौशल प्रशिक्षण की संभावना के साथ 2017 के बाद अगले पांच वर्षों के लिए बढ़ा दिया जाएगा। भारत सरकार इसके अलावा भारत और अफगानिस्तान में प्रतिष्ठित स्कूलों और कॉलेजों में अफगानिस्तान राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा बलों के शहीदों के बच्चों के अध्ययन के लिए 500 छात्रवृत्तियां प्रदान करेगी।
- अफगानिस्तान ने अफगानिस्तान राष्ट्रीय खनन संस्थान की स्थापना शुरू करने और आवश्यकताओं के आकलन के आधार पर खनन क्षेत्र के विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के लिए आदान-प्रदान कार्यक्रमों को विनियमित करने के लिए भारत के निर्णय का स्वागत किया।
- कंधार कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना का इस महत्वपूर्ण संस्थान के क्षमता विकास के लिए अपना समर्थन जारी रखने में भारत की प्रतिबद्धता के रूप में स्वागत किया गया है।
- अफगानिस्तान ने दोहराया कि अफगानिस्तान पाकिस्तान व्यापार और पारगमन समझौते में भारत का समावेश पूरे क्षेत्र के लिए फायदेमंद होगा।
- दोनों नेताओं ने तापी परियोजना की अभूतपूर्व घटना का स्वागत किया।
- अफगानिस्तान के लिए बेहतर संपर्क को बढ़ावा देने के संदर्भ में, दोनों नेताओं ने ईरान में चाहबहार बंदरगाह के पहले चरण के विकास में भारत की भागीदारी को ध्यान में रखते हुए त्रिपक्षीय सहयोग की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया। दोनों नेताओं ने अपने संबंधित अधिकारियों को इस संबंध में अफगानिस्तान, भारत और ईरान के बीच त्रिपक्षीय समझौते पर चर्चा पूरा करने का निर्देश दिया।
- दोनों देशों के बीच इस बात पर बल दिया गया कि लोगों के बीच परस्पर बातचीत दोनों देशों के बीच संबंधों का केन्द्र है।
- अफगान क्रिकेट टीम को दिल्ली के पास ग्रेटर नोएडा में एक नया 'होम ग्राउंड' सौंपे जाने पर अपनी संतुष्टि व्यक्त करते हुए अफगानिस्तान में क्रिकेट को विकसित करने के लिए आवश्यक सुविधाओं और प्रशिक्षण के लिए बढ़ रहे भारत-अफगानिस्तान सहयोग का स्वागत किया और इस तरह के प्रयासों को आगे प्रोत्साहन का आश्वासन दिया।
- फैसला किया गया कि विदेश मंत्रियों की सह-अध्यक्षता वाली द्विपक्षीय कार्यनीतिक भागीदारी परिषद, परिषद के चार संयुक्त कार्य समूहों की बैठकों के बाद, दोनों नेताओं के

निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए 2016 की पहली तिमाही में बैठक का आयोजन करेगी।

- दोनों नेताओं ने उन 6 समझौतों के महत्व पर प्रकाश डाला जो दोनों देशों के बीच शीघ्र ही हस्ताक्षरित होंगे।
- दोनों नेताओं ने अफगानिस्तान में सुरक्षा स्थिति पर भी विचार-विमर्श किया, जो आतंकवाद, उग्रवाद और मादक पदार्थों की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है।
- इस संदर्भ में, दोनों नेताओं ने कहा कि भारत सरकार द्वारा अफगानिस्तान को उपलब्ध कराए गए एमआई-25 हेलीकाप्टर और उनके रखरखाव की सुविधा एक महत्वपूर्ण आवश्यकता का समाधान करेंगे।
- दोनों नेता अफगानिस्तान की आवश्यकताओं के आधार पर,प्रासंगिक भारतीय संस्थानों में अफगान राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा बलों के लिए प्रशिक्षण के अवसरों को बढ़ाने और उसका विस्तार करने पर सहमत हुए।
- प्रधानमंत्री मोदी ने अफगान सरकार के नेतृत्व वाली सुलह प्रक्रिया का दृढ़ता से समर्थन किया जो अफगानिस्तान के लोगों और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा तैयार की गई सीमाओं का सम्मान करता है, अर्थात, मेल-मिलाप किए जाने वाले समूहों और व्यक्तियों को हिंसा छोड़ देना चाहिए और अफगानिस्तान के संविधान का पालन करना चाहिए।

भारत ने अपने ऐतिहासिक संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने के लिए हैदराबाद शहर में एक नया महावाणिज्य दूतावास खोलने के लिए अफगानिस्तान सरकार के निर्णय का स्वागत किया।

II. बांग्लादेश

1. **6-7** जून **2015** को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बांग्लादेश यात्रा के दौरान, दोनों देशों ने अपने दशकों पुराने सीमा विवादों को हल किया। निम्नलिखित संधियों, समझौतों और समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए:

    - भारत और बांग्लादेश के बीच भूमि सीमा के सीमांकन और 1974 के संबंधित मामलों तथा 1974 समझौते के 2011 के प्रोटोकॉल से संबंधित समझौते, इंस्ट्रूमेंट ऑफ रैटिफिकेशन के आदान-प्रदान के साथ लागू होते हैं; यह पत्र भारत और बांग्लादेश और संबंधित मुद्दों के बीच भूमि सीमा के सीमांकन से संबंधित समझौते के कार्यान्वयन के तौर-तरीकों को निर्दिष्ट करता है।
    - इस समझौते का उद्देश्य भारत और बांग्लादेश के बीच बंदरगाहों के माध्यम से दोतरफा व्यापार को बढ़ावा देना है। वर्तमान में, शिपिंग कार्गो देशों के बीच कोलंबो / सिंगापुर / कलांग बंदरगाहों के माध्यम से जाता है। तटीय शिपिंग से शिपिंग समय कम होगा और भूमि बंदरगाहों पर भीड़ को कम करने में मदद मिलेगी।

- समझौते का नवीकरण दोनों देशों के बीच भूमि, जलमार्ग, और रेलवे के माध्यम से व्यापार को बढ़ावा देने की परिकल्पना करता है और पूर्वोत्तर भारत के लिए परिवहन प्रदान करता है। यह नेपाल और भूटान में भारत के माध्यम से बांग्लादेश के कार्गो तक पहुंचने की सुविधा प्रदान करता है। समझौते में स्वतः नवीकरण के प्रावधानों के साथ पांच साल की वैधता है;
- दोनों देशों की व्यापारिक संस्थाओं की भागीदारी के साथ भारतीय आर्थिक क्षेत्र की स्थापना हेतु सहयोग की परिकल्पना की गई है।
- दोनों देश, तरजीही नीतियों पर काम करेंगे और दोनों देशों के निवेशकों / कंपनियों / व्यापार समुदायों को बांग्लादेश में भारतीय आर्थिक क्षेत्र में इकाइयां स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित करेंगे।
- भारत और बांग्लादेश के बीच समुद्री सीमा के निपटारे के परिणामस्वरूप, समझौते का उद्देश्य संयुक्त रूप से समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने और समुद्र में अपराधों को रोकने के लिए दोनों तट रक्षकों के बीच सहयोग है।

2. भारत और बांग्लादेश के बीच एनक्लेव समझौते का आदान-प्रदान **(31** जुलाई **2015)**

31 जुलाई, 2015 भारत-बांग्लादेश संबंधों में एक ऐतिहासिक दिन बन गया क्योंकि इसी दिन 1974 के भूमि सीमा समझौते और अनुसमर्थन के 2011 प्रोटोकॉल साधनों के अनुसमर्थन और कार्यान्वयन को चिह्नित किया गया। यह 6-7 जून, 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बांग्लादेश यात्रा के दौरान भारत तथा बांग्लादेश के बीच सहमत कदमों के अनुसार किया गया था। भारत में बांग्लादेशी परिक्षेत्र एवं बांग्लादेश में भारतीय परिक्षेत्र आधी रात से प्रभावी रूप से दूसरे देश में स्थानांतरित कर दिए गए थे। 31 जुलाई 2015 को एन्क्लेव के लोगों को अपनी 'नई' राष्ट्रीयता और देश चुनने का विकल्प दिया गया। सीमा सीमांकन की पूरी प्रक्रिया 30 जून 2016 तक समाप्त होने की उम्मीद है।

III. भूटान

1. भूटान के प्रधानमंत्री महामहिम लियोंछेन त्शेरिंग तोबगे का **10-18** जनवरी**, 2015** तक भारत का दौरा

भारत के प्रधानमंत्री के निमंत्रण पर भूटान के प्रधानमंत्री महामहिम लियोंछेन त्शेरिंग तोबगे ने 10 से 18 जनवरी, 2015 के दौरान भारत का आधिकारिक दौरा किया। दोनों प्रधानमंत्री इस बात पर सहमत थे कि जल विद्युत के क्षेत्र में सहयोग परस्पर लाभप्रद एवं दोनों देशों के लिए बहुत उपयोगी है। इस यात्रा के अन्य परिणाम थे:

- उन्होंने अंतर सरकारी मॉडल के तहत कुल 2940 मेगावाट की तीन चल रही जल विद्युत परियोजनाओं की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने 10,000 मेगावाट की पहल तथा इस संदर्भ में कुल 2120 मेगावाट की जेवी मॉडल की 4 परियोजनाओं के शीघ्र कार्यान्वयन के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।
- दौरे पर आए भूटान के प्रधानमंत्री ने गुजरात की मुख्य मंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल

के साथ भी बैठक की। उन्होंने भूटान एवं गुजरात के बीच सहयोग के क्षेत्रों पर चर्चा की जिसमें गुजरात से भूटान में निवेश एवं अन्य कारोबारी संपर्कों को बढ़ावा देना शामिल था।

- गुजरात के अलावा, भूटान के प्रधानमंत्री ने 16 से 18 जनवरी के दौरान वाराणसी एवं बोध गया के पवित्र स्थलों का दौरा किया। बोध गया में, भूटान के प्रधानमंत्री को एक बहुत विशेष वर्ष के दौरान, जब भूटान के लोग भूटान के चौथे नरेश महामहिम जिग्मे सिंगये वांगचुक की 60वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, भारत के लोगों की ओर से उपहार के रूप में बोधि वृक्ष का एक पौधा भेंट किया गया।

2. 11वीं पंचवर्षीय योजना के लिए चौथी भारत-भूटान विकास सहयोग वार्ता - 2 सितंबर 2015

- भारत-भूटान ने द्विपक्षीय विकास सहायता पर चर्चा की। भारत के शिष्टमंडल का नेतृत्व सुश्री सुजाता मेहता, सचिव (एम एंड ईआर) द्वारा किया गया और भूटान के शिष्टमंडल का नेतृत्व भूटान के विदेश सचिव दाशो तशेरिंग दोरजी द्वारा किया गया।
- भारत ने भूटान की 11वीं पंचवर्षीय योजना (जुलाई, 2013 - जून, 2018) के लिए परियोजना अनुबंधित सहायता (पीटीए) के रूप में 2800 करोड़ रूपए, कार्यक्रम अनुदान के लिए 850 करोड़ रूपए और लघु विकास परियोजनाओं (एसडीपी) के लिए 850 करोड़ रूपए की प्रतिबद्धता की है।
- वर्तमान योजना अवधि के दौरान कार्यान्वयन के लिए मोटेतौर पर कुल 85 पीटीए परियोजनाओं और 485 एस डी पी पर सहमति हुई है।
- दोनों पक्षों ने पीटीए परियोजनाओं की समग्र प्रगति की समीक्षा की तथा वे परियोजनाओं की फिर से प्राथमिकता निर्धारित की गई सूची पर सहमत हुए। दोनों पक्षों ने एसडीपी की समग्र प्रगति पर भी संतोष व्यक्त किया।

IV. नेपाल

1. नेपाल में **25** अप्रैल **2015** को आया विनाशकारी भूकंप

- नेपाल के लिए राष्ट्र के समग्र राहत प्रयास के हिस्से के रूप में, भारतीय सेना ने 25 अप्रैल 2015 से ऑपरेशन 'मैत्री' शुरू किया। इंजीनियर कार्य बलों ने बारपाक, बसंतपुर / भक्तपुर और जोरबती से बचाव एवं पुनर्वास अभियान शुरू किया। सेना ने भी अस्पतालों की स्थापना की तथा भूकंप में घायल लोगों का इलाज किया।

2. काठमांडू में नेपाल के पुनर्निर्माण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विदेश मंत्री का भाषण (25 जून, 2015) - भाषण की मुख्य बातें

- भारत में, त्रासदी के क्षणों में नेपाल के साथ सहानुभूति, समर्थन और एकजुटता का विस्तार हुआ है। भारत से प्रतिक्रिया तेज, सहज और ठोस थी।
- भारत सरकार, राज्य सरकारों, गैर सरकारी संगठनों और कॉर्पोरेट्स और भारत के सभी लोगों से ऊपर, ने नेपाल की सहायता के लिए अपने दिल खोल दिए।
- नेपाल के भूकंप के बाद के पुनर्निर्माण के लिए भारत सरकार की घोषणा 10,000 करोड़ रुपए यानि एक बिलियन अमेरिकी डॉलर के बराबर, जो ग्रांट के रूप में एक चौथाई है।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पिछले साल नेपाल की दो यात्राओं ने विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन दिया। पनबिजली परियोजनाओं को अब

तेजी से लागू करने की आवश्यकता है और काठमांडू-निजगढ़ फास्ट ट्रैक रोड और भारत की भागीदारी वाले निजगढ़ हवाई अड्डे के निर्माण पर काम तेज किया जाना चाहिए।

- ये परियोजनाएं नए रोजगार के अवसर पैदा करेंगी, राजस्व में योगदान देंगी और दीर्घकालिक वसूली को सुगम बनाएंगी।
- भारत सरकार विशिष्ट पुनर्निर्माण परियोजनाओं की पहचान करने में नेपाल सरकार के साथ मिलकर काम करेगी।

3. नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री श्री शेर बहादुर देउबा की भारत यात्रा (29 जुलाई- 03 अगस्त, 2015)

- श्री शेर बहादुर देउबा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और नेपाल को पुनर्वास 2015 के बाद भूकंप के लिए भारत की सहायता पर धन्यवाद दिया और साथ ही साथ नेपाल में संवैधानिक विकास के बारे में उन्हें जानकारी दी।
- उन्होंने राष्ट्रपति मुखर्जी के साथ-साथ विदेश मंत्री और विदेश सचिव से भी मुलाकात की।
- श्री देउबा ने रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए) में "नेपाल में राजनीतिक विकास" शीर्षक से एक लेख प्रस्तुत किया।

4. नेपाल दौरे के बाद विदेश सचिव द्वारा प्रेस वक्तव्य से मुख्य बातें **(19** सितंबर**, 2015)**

- भारत नेपाल में संविधान बनाने का प्रबल समर्थन करता है। हम चाहते हैं कि इसका समापन खुशी और संतुष्टि के लिए हो, न कि आंदोलन और हिंसा के लिए।
- भारत सरकार को उम्मीद है कि नेपाल के राजनीतिक नेता इस महत्वपूर्ण समय पर आवश्यक लचीलेपन और परिपक्वता का प्रदर्शन करेंगे, ताकि एक टिकाऊ और लचीले संविधान को सुनिश्चित किया जा सके, जिसमें व्यापक रूप से स्वीकृति हो।

5. नेपाल में स्थिति पर वक्तव्य **(21** सितंबर**, 2015)**

- वक्तव्य 20 सितंबर, 2015 को संविधान की घोषणा के बाद भारत की सीमा से लगे नेपाल के क्षेत्रों में मौत और चोट के कारण हुई हिंसा की घटनाओं पर भारत सरकार की गहरी चिंता को दर्शाता है।
- भारत ने नेपाल के राजनीतिक नेतृत्व को इन क्षेत्रों में तनाव को कम करने के लिए तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता बताई है। यह, यदि समय पर किया जाता, तो इन गंभीर घटनाओं से बचा जा सकता था।
- भारत ने लगातार तर्क दिया कि नेपाल के सभी वर्गों को राजनीतिक चुनौतियों पर आम सहमति तक पहुंचना चाहिए। नेपाल के सामने आने वाले मुद्दे प्रकृति में राजनीतिक हैं और बल के माध्यम से हल नहीं किए जा सकते हैं।
- भारत को अब भी उम्मीद है कि नेपाल के नेतृत्व द्वारा टकराव की वर्तमान स्थिति को प्रभावी ढंग से हल करने के लिए पहल की जाएगी।

6. सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा (यूपीआर) कार्य समूह के **23**वें सत्र में नेपाल – अंत:क्रियात्मक

वार्ता के दूसरे यूपीआर के दौरान भारत द्वारा वक्तव्य (**04** नवंबर**, 2015)**

- भारत ने उप प्रधानमंत्री और विदेश मामलों के मंत्री महामहिम कमल थापा के नेतृत्व में नेपाल के प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया। भारत ने नेपाल सरकार के समक्ष निम्नलिखित सिफारिशें रखीं:
- व्यापक आधार पर स्वामित्व और भागीदारी को सक्षम करने के लिए नेपाल के सभी वर्गों को समायोजित करके संविधान निर्माण और लोकतंत्रीकरण प्रक्रिया को समेकित करें।
- सत्य और सुलह आयोग के प्रभावी कामकाज को सुनिश्चित करना और हिंसक उग्रवाद के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ मुकदमा चलाने और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की स्वतंत्रता और वित्तीय स्वायत्तता सुनिश्चित करने सहित उन पर मुकदमा चलाने सहित इसकी सिफारिशों को पूरी तरह लागू करना, और
- बच्चों और महिलाओं के लिए एक स्वतंत्र आयोग का गठन करें।

7. राज्य सभा में "नेपाल में स्थिति और भारत-नेपाल संबंध" पर ध्यान देने के प्रस्ताव पर विदेश मंत्री का वक्तव्य (03 दिसंबर, 2015) - अंश

- कई दशकों की अस्थिरता और हिंसा के बाद नेपाल में शांतिपूर्ण तरीके से राजनीतिक बदलावका भारत हमेशा से पक्षधर रहा है। हमने समय-समय पर नेपाल के राजनैतिक दलों के अनुरोध पर इन प्रक्रियाओं में सक्रिय सहयोग प्रदान किया है।
- हमने समय-समय पर नेपाल के राजनैतिक दलों के अनुरोध पर इन प्रक्रियाओं में सक्रिय सहयोग प्रदान किया है। नेपाल में संविधान निर्माण की प्रक्रिया के दौरान भारत में इस बात पर हमेशा राजनैतिक सहमति रही है कि नेपाल में शांतिपूर्ण, स्थायी और संवैधानिक लोकतंत्र के लिए भारत हमेशा उसे हर प्रकार की आर्थिक तथा नैतिक सहायता प्रदान करे। नेपाल में जारी राजनीतिक परिवर्तनों के दौरान भारत नेपाल के साथ निकट से जुड़ा रहा है। भारत ने हमेशा इस बात का समर्थन किया है कि नेपाल में एक सर्व-समावेशी और स्थायी संविधान जल्द से जल्द लागू हो। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने वर्ष 2014 में अपनी दोनों नेपाल यात्राओं के दौरान नेपाली नेतृत्व को यह सलाह दी थीकि संविधान का निर्माण "ऋषि-मन" के साथ किया जाए जो "सहमति" पर आधारित हो न कि केवल "बहुमत" पर।
- मई 2014 में कार्य-भार ग्रहण करने के शीघ्र बाद, हमारी सरकार ने, नेपाल के साथ सहभागिता पर नए उत्साह के साथ कार्य आरंभ किया जिससे हमारे महत्वपूर्ण संबंधों में नई आशा का संचार हुआ। जल विद्युत और संपर्क के सहयोग में महत्वपूर्ण प्रगति हुई।
- अप्रैल 2015 में जब नेपाल में विनाशकारी भूकंप आया तब भारत ने सबसे पहले और अपने सबसे बड़े आपदा राहत अभियान की शुरूआत की, जिसे 'ऑपरेशन मैत्री' का नाम

दिया गया। दीर्घकालिक पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए भारत ने काठमांडू में 25 जून, 2015 को 1 बिलियन अमरीकी डॉलर (जिसकी 1/4 राशि अनुदान के रूप में होगी) की भारतीय प्रतिबद्धता की घोषणा की जो कि समस्त अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में सबसे बड़ा अंशदान है।

- प्रधानमंत्री जी द्वारा अगस्त और नवंबर 2014 में नेपाल की अपनी दोनों यात्राओं के दौरान संविधान पर व्यापक और विस्तृत सहमति का आह्वान किया गया। जून-अगस्त 2015 में जब नेपाल के संविधान के प्रारूप को जनता के बीच विचार-विमर्श के लिए रखा गया, उससे पूर्व और उसके बाद भी हमारी सरकार ने बहुत ही दृढ़ता और निरंतरता के साथ नेपाल को अपने इस रुख से अवगत कराया।
- कई अवसरों पर भारत ने इस सलाह को दोहराया, जिसमें सीपीएन-यूएमएल उपाध्यक्ष श्रीमती विद्या भंडारी की जनवरी 2015 यात्रा, यूसीपीएन (एम) के वरिष्ठ नेता श्री बाबूराम भट्टराई की मार्च 2015 यात्रा, यूसीपीएन(एम) के अध्यक्ष श्री प्रचंड की जुलाई 2015 यात्रा, नेपाली कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री शेर बहादुर देउबा की अगस्त 2015 यात्रा तथा साथ ही नेपाल के अन्य लोगों की यात्राएं भी शामिल हैं।
- अंततः जब संविधान का प्रारूप सामने आया तब दुर्भाग्य से नेपाली समाज के कई वर्गों और विशेष तौर पर तराई के लोगों ने इसे गैर-समावेशी माना। इससे इस क्षेत्र में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई तथा अगस्त 2015 के मध्य से इसका विरोध शुरू हो गया। कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विवादास्पद प्रावधान -जैसे निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन, समाज के कमजोर तबकों का समावेश और प्रांतीय सीमाओं का निर्धारण- या तो बिना किसी चर्चा और वाद-विवाद के आखिरी समय में इनको शामिल किया गया या 2007 के अंतरिम संविधान जिसके अंतर्गत दो बार 2008 तथा 2013 में सफलतापूर्वक चुनावों का आयोजन हो चुका था, उनके महत्वपूर्ण प्रावधानों को नजरअंदाज कर दिया गया।
- आसन्न संकट से निबटने के लिए हमारे विदेश सचिव ने प्रधानमंत्री के विशेष दूत के तौर पर 18-19 सितंबर को नेपाल की यात्रा की। उन्होंने नेपाली राजनैतिक नेतृत्व को सलाह दी कि वह (क) विस्तृत आधार पर सहमति बनाने के लिए वार्ता हेतु अधिक समय दें; (ख) नेपाली समाज के असंतुष्ट वर्गों को उनकी शिकायतें सुनने के संबंध में सकारात्मक संकेत दें; (ग) हमारे इस आंकलन पर ध्यान दें कि यदि इस समस्या का राजनैतिक समाधान नहीं खोजा गया तो तराई क्षेत्र में आंदोलन तीव्र हो सकता है; तथा (घ) तराई तथा भारत-नेपाल सीमा पर स्थिति को और बिगड़ने से रोकें। मुझे खेद है कि इन चेतावनियों को नजरअंदाज कर दिया गया।
- इसके फलस्वरूप, 20 सितंबर, 2015 को अंगीकृत संविधान को नेपाल के अनेक वर्गों द्वारा गैर-समावेशी माना गया। इसे वर्ष 2007 से नेपाल की जातियों तथा सामाजिक दलों को पहले से ही उपलब्ध प्रतिनिधित्व को कमजोर करने वाले संविधान के रूप में भी देखा गया। तराई के क्षेत्र में तनाव में तेजी से वृद्धि हुई, जिसके परिणामस्वरूप अगस्त से अब तक 55 लोग मारे जा चुके हैं तथा सैंकड़ों लोग घायल हुए हैं। 23

नवंबर, 2015 को इस आंदोलन के 100 दिन पूरे हो गए। इस दौरान आंदोलनकर्ताओं ने भारत-नेपाल सीमा पर कार्गो ट्रकों के आवागमन पर रोक लगा दी, जिससे भारत से नेपाल जाने वाले ईंधन तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित हुई है।

- नए संविधान ने नेपाल को एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य के तौर पर स्थापित किया। इसे हमारे द्वारा विधिवत रूप से नोट करते हुए इसे मान्यता भी दी गई। लेकिन हम इस वास्तविकता को भी अनदेखा नहीं कर सकते कि नेपाली समाज के अनेक वर्ग यह मानते हैं कि इसमें उनके हितों की रक्षा नहीं हुई है।
- भारत कभी भी अपने मत को नेपाल पर नहीं थोपा पर हमेशा उसे अपने इस रुख से अवगत कराया कि असमानप्रतिनिधित्व के मुद्दे को हिंसा तथा धमकी से मुक्त वातावरण में वार्ता के माध्यम से सुलझाया जाना चाहिए तथा इसे इस प्रकार से कार्यान्वित किया जाना चाहिए कि यह संविधान बड़े पैमाने पर लोगों को स्वीकार्य हो।
- इससे नेपाल के असंतुष्ट वर्गों में नाराजगी बनी हुई है और भारत से लगने वाले नेपाल के क्षेत्रों में स्थिति उग्र बनी हुई है। हमारे पांच राज्यों- उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा सिक्किम की नेपाल के साथ 1751 किलोमीटर लंबी मुक्त सीमा है। इसी कारण तराई की घटनाओं का भारत पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
- इस मुद्दे पर फैलाये गए दुष्प्रचार के विपरीत नेपाल को भेजी जानी वाली सामग्री की आपूर्ति को भारत ने किसी भी प्रकार से बाधित नहीं किया, जैसा कि हमने बार-बार स्पष्ट किया है। ये बाधाएँ नेपाल की ओर से और नेपाली जनता द्वारा पैदा की जा रही हैं जिसमें भारत सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती। वस्तुतः भारत सरकार ने जहाँ भी संभव हो सका सामान की आपूर्ति को सुविधाजनक बनाया है। हजारों ट्रक कई सप्ताह से सीमा पर भारतीय इलाके में फँसे हुए हैं। हमने उन्हें वहाँ रोक रखा है ताकि यदि नेपाल के इलाकों में बाधाओं को शांतिपूर्वक हटा लिया जाता है तो हम उन्हें यथाशीघ्र सूचित कर सकें। रक्सौल-बीरगंज का मुख्य मार्ग जहाँ से हमारे कुल कारोबार का दो-तिहाई कारोबार होता है, नेपाल की ओर से दो माह से भी अधिक समय से बंद है। लेकिन कई सौ मालवाहक ट्रक उन समपारों से प्रतिदिन आ-जा रहे हैं जो खुले हुए हैं और जहां से प्रवेश उपलब्ध है।
- अड़चनों के बावजूद इंडियन आयल कोर्पोरेशन ने यथासंभव पी.ओ.एल. की आपूर्ति की है। भारत-नेपाल सीमा पर नवंबर, 2015 में 400 से अधिक चिकित्सा खेपें पार हुईं।

V. पाकिस्तान

प्रवाह की स्थिति में रहने के बाद, भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों में दिसंबर 2015 में सकारात्मक विकास देखा गया। हालांकि, उनके बीच औपचारिक बातचीत पटरी से उतर गई, फिर भी दोनों देश द्विपक्षीय और बहुपक्षीय स्तर पर कई बैठकों के माध्यम से जुड़े रहे।

1. भारत और पाकिस्तान ने 1 जनवरी, 2015 को नई दिल्ली और इस्लामाबाद में एक साथ राजनयिक चैनलों के माध्यम से आदान-प्रदान किया, भारत और पाकिस्तान के बीच परमाणु प्रतिष्ठानों के खिलाफ प्रतिबंध के समझौते पर समझौते के तहत शामिल परमाणु प्रतिष्ठानों और सुविधाओं की सूची, 31 दिसंबर को हस्ताक्षरित 1988 और 27 जनवरी 1991 को लागू हुआ।

2. 8 जून, 2015 को पीओके में गिलगित- बाल्टिस्तान में 2 जून, 2015 को होने वाले चुनावों से संबंधित एक मीडिया सवाल के जवाब में, आधिकारिक प्रवक्ता, एमईए ने कहा, "भारत की स्थिति सर्वविदित है। पूरा जम्मू और कश्मीर राज्य जिसमें गिलगित और बाल्टिस्तान के क्षेत्र शामिल हैं, भारत का एक अभिन्न अंग है। गिलगित और बाल्टिस्तान में 8 जून को "गिलगित बाल्टिस्तान सशक्तिकरण और स्वशासन आदेश" के तहत चुनाव पाकिस्तान द्वारा जबरन और अवैध कब्जे के लिए एक प्रयास था। भारत पाकिस्तान द्वारा क्षेत्र के लोगों को उनके राजनीतिक अधिकारों से वंचित करने और इन क्षेत्रों को अवशोषित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों से चिंतित है। यह तथ्य कि पाकिस्तान का संघीय मंत्री भी "गिलगित बाल्टिस्तान का राज्यपाल" है। "इसके लिए बोलता है। दुर्भाग्य से हाल के दिनों में पाकिस्तान के कब्जे वाली नीतियों के कारण क्षेत्र के लोग भी सांप्रदायिक संघर्ष, आतंकवाद और अत्यधिक आर्थिक कठिनाई का शिकार हो गए हैं।"

3. पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ बैठक (**9** जुलाई **2015)**

   प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 9 जुलाई 2015 को रूस के उफा में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मौके पर अपने पाकिस्तानी समकक्ष नवाज शरीफ के साथ मुलाकात की। दोनों नेता दक्षिण एशिया से आतंकवाद के खतरे को खत्म करने के लिए सहयोग करने के लिए सहमत हुए। बैठक में द्विपक्षीय संबंधों को सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने पर भी सहमति हुई:

   - आतंकवाद से जुड़े सभी मुद्दों पर चर्चा के लिए दो राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों (एनएसए) के बीच नई दिल्ली में बैठक।
   - डीजीएमओ के बाद डीजी बीएसएफ और डीजी पाकिस्तान रेंजर्स की शुरुआती बैठकें।
   - एक-दूसरे की हिरासत में रखे गए मछुआरों को उनकी नौकाओं के साथ, 15 दिनों की अवधि के भीतर छोड़ने का निर्णय।
   - धार्मिक पर्यटन की सुविधा के लिए तंत्र।
   - दोनों पक्ष 26/11 मुंबई जांच को तेज करने के तरीकों और साधनों पर चर्चा करने के लिए सहमत हुए, जिसमें आवाज के नमूने प्रदान करने जैसी अतिरिक्त जानकारी शामिल है।

4. दिल्ली में अजीत डोभाल और सरताज अजीज के बीच एनएसए स्तर की वार्ता **23** अगस्त **2015** को रद्द कर दी गई

भारत और पाकिस्तान के बीच विश्वास की कमी ने जुलाई 2015 में रूस के उफा में दो प्रधानमंत्रियों

द्वारा सहमत एनएसए स्तर के संवाद पर अपना प्रभाव डाला। पाकिस्तान को दोनों एनएसए के बीच नई दिल्ली में बैठक के भारतीय प्रस्ताव का जवाब देने में 22 दिन लगे और एक एजेंडा प्रस्तावित किया जो प्रधानमंत्रियों के साथ पूर्ण रूप से विचरण रहा, जिसपर प्रधानमंत्री ने ऊफ़ा में सहमति व्यक्त की थी। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि कार्यक्रम या एजेंडे की पुष्टि किए बिना, पाकिस्तानी उच्चायुक्त ने हुर्रियत प्रतिनिधियों को एनएसए के साथ परामर्श करने के लिए आमंत्रित किया। वार्ता पर उफा की समझ - दो विदेश सचिवों द्वारा संयुक्त रूप से पढ़ी गई - बहुत स्पष्ट थी: एनएसए को आतंकवाद से जुड़े सभी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए मिलना था। यह दोनों प्रधानमंत्रियों द्वारा उनके लिए निर्धारित एकमात्र एजेंडा था।

हुर्रियत के प्रतिनिधियों से मुलाकात करने के साथ-साथ उफा समझौते को रद्द करने के लिए पाकिस्तान का आग्रह एनएसए स्तर के वार्ता को अगस्त 2015 में रद्द करने के लिए जिम्मेदार था। पाकिस्तानी एनएसए सरताज अजीज ने नई दिल्ली की अपनी यात्रा को आखिरी बार यह कहते हुए रद्द कर दिया कि बातचीत ऐसा नहीं हो सकता है कई पूर्व शर्त निर्धारित की जा रही हैं। वह वार्ता के लिए नई दिल्ली आए, लेकिन भारत की पूर्व शर्त के कारण ऐसा नहीं हुआ, जिसका पाकिस्तान पालन करने के लिए तैयार नहीं था।

5. 06 दिसंबर **2015** को बैंकाक में भारत और पाकिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की बैठक

पेरिस में भारतीय और पाकिस्तानी प्रधानमंत्रियों की बैठक के दौरान भारत और पाकिस्तान के एनएसए अजीत डोभाल और लेफ्टिनेंट जनरल नासिर खान जांजुआ ने अपने-अपने विदेश सचिवों के साथ 6 दिसंबर 2015 को बैंकाक में मुलाकात की। आतंकवाद, जम्मू और कश्मीर और अन्य मुद्दे, एलओसी पर शांति सहित शांति और सुरक्षा पर चर्चा की।

6. हार्ट आफ एशिया – इस्तांबुल प्रक्रिया के पांचवें मंत्री स्तरीय सम्मेलन में विदेश मंत्री की भागीदारी **(09** दिसंबर**, 2015)**

भारत के विदेश मंत्री, श्रीमती सुषमा स्वराज ने 8-9 दिसंबर, 2015 को इस्लामाबाद में हार्ट ऑफ एशिया-इस्तांबुल प्रक्रिया के पांचवें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मुलाकात की और विदेशी मामलों पर प्रधानमंत्री के सलाहकार सरताज अजीज के साथ विचार विमर्श किया। चर्चा से उभरे प्रमुख बिंदु हैं:

- विदेश मंत्री और सलाहकार ने आतंकवाद की निंदा की और इसे खत्म करने के लिए सहयोग करने का संकल्प लिया।
- दोनों नेताओं ने दो एनएसए द्वारा बैंकाक में आतंकवाद और सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर सफल वार्ता का उल्लेख किया और निर्णय लिया कि एनएसए आतंकवाद से जुड़े सभी मुद्दों को संबोधित करते रहेंगे।
- पाकिस्तान ने भारत को मुंबई परीक्षण के जल्द समापन के लिए उठाए जा रहे कदमों का आश्वासन दिया।
- दोनों देशों ने एक व्यापक द्विपक्षीय वार्ता के लिए सहमति व्यक्त की और विदेश सचिवों को शांति और सुरक्षा, सीबीएम, जम्मू और कश्मीर, सियाचिन, सर क्रीक, वुल्फ बैराज / टुलबुल नेविगेशन परियोजना सहित आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोग, प्रतिवाद, नारकोटिक्स नियंत्रण, मानवीय मुद्दे, लोगों से आदान-प्रदान और धार्मिक पर्यटन संवाद के तहत तौर-तरीकों और बैठकों की रूपरेखा तैयार करने का निर्देश दिया।

सम्मेलन में उनके वक्तव्य के कुछ मुख्य अंश थे:

- सम्मेलन में भारत की भागीदारी ने एक संयुक्त, लोकतांत्रिक, स्वतंत्र, मजबूत और समृद्ध अफगानिस्तान के लिए राजनीतिक परामर्श और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए देश की मजबूत प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की।
- अफगानिस्तान के साथ एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में भारत की प्रक्रिया के विजन, हार्ट ऑफ एशिया, इंटरलिंक व्यापार, पारगमन, ऊर्जा और संचार मार्गों में से एक है।
- क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग विकसित करने हेतु भारत के प्रयास कनेक्टिविटी के माध्यम से हैं। यदि अफगानिस्तान भारत को अपने निर्यात हेतु उपलब्ध शून्य शुल्क व्यवस्था का लाभ लेने के लिए भारत के बाजारों तक सीधे और पूरी तरह से पहुंच प्राप्त कर सकता है, तो उसे अत्यधिक लाभ हो सकता है।
- भारत अफगानिस्तान-पाकिस्तान व्यापार तथा पारगमन समझौते में शामिल होने के लिए तैयार है, जिसका औपचारिक रूप से संकेत दिया गया था।
- अग्रणी देश के रूप में हार्ट ऑफ एशिया प्रक्रिया के अंदर व्यापार, वाणिज्य एवं निवेश (टीसीआई) सीबीएम में भारत की भागीदारी अफगानिस्तान के साथ हमारे द्विपक्षीय विकास सहयोग को संपूरित करती है जिसमें अवसंरचना, संपर्क तथा क्षमता निर्माण के क्षेत्रों में सहयोग शामिल है।
- उन्होंने कहा कि, यह सुनिश्चित करना भी हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है कि किसी नाम, रूप या अभिव्यक्ति में आतंकवाद एवं अतिवाद की ताकतों को शरणगाह एवं सुरक्षित आश्रय प्राप्त न हो।
- आतंकवाद एवं अतिवाद का सफाया तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत लाल रेखाओं का अनुपालन अफगानिस्तान में सामंजस्य एवं स्थाई शांति के लिए आवश्यक है।

7. भारतीय प्रधानमंत्री का **25** दिसंबर **2015** को अफगानिस्तान से घर वापस आने के दौरान पाकिस्तान के लाहौर की यात्रा (निवर्तमान यात्रा)

11 वर्षों के अंतराल के बाद यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली पाकिस्तान यात्रा थी। इसका क्षेत्र और उससे बाहर के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रभाव था और विश्व नेताओं द्वारा इसका स्वागत किया गया था। प्रधानमंत्री शरीफ और पीएम मोदी ने सहमति व्यक्त की कि देशों के दो विदेश सचिव जनवरी के मध्य में इस्लामाबाद में मिलेंगे। (यह पठानकोट, भारत में आईएएफ एयरबेस पर आतंकी हमले के कारण स्थगित कर दिया गया है।)

VI. श्रीलंका

1. श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री मैत्रीपाल सिरीसेना की भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा मीडिया वक्तव्य, 16 फरवरी, 2015

- भाषण सफल चुनाव के पूरा होने पर श्रीलंका को एक बधाई देने के साथ शुरू हुआ और दोस्ती, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक सहयोग के भारतीय और श्रीलंका के बीच मजबूत ऐतिहासिक और समकालीन जुड़ाव पर प्रकाश डाला गया।
- इसमें ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने, समुद्र तथा वायु संपर्क में सुधार, असैन्य परमाणु सहयोग पर द्विपक्षीय समझौते और रक्षा व सुरक्षा सहयोग का विस्तार करने की योजना के बारे में बात की गई।
- इसमें भारत द्वारा सहायता प्रदान की जा रही श्रीलंका में आवास कार्यक्रम (आंतरिक रूप से

विस्थापित व्यक्तियों के लिए) द्वारा की गई प्रगति का उल्लेख किया गया।
- कृषि में सहयोग और मछुआरे के मुद्दे को हल करने के महत्व पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

श्रीलंका के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए समझौतों / समझौता ज्ञापनों की सूची

- *श्रीलंका और भारत के बीच परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग पर समझौता*

  - परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोगों में ज्ञान एवं विशेषज्ञता के आदान - प्रदान एवं अंतरण, संसाधनों की साझेदारी, कार्मिकों के क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण में सहयोग को संभव बनाने पर समझौता, जिसमें रेडियो आइसोटोप्स का प्रयोग, परमाणु सुरक्षा, विकिरण सुरक्षा, परमाणु संरक्षा, रेडियोधर्मी अपशिष्ट का प्रबंधन तथा परमाणु एवं रेडियोधर्मी आपदा उपशमन और पर्यावरण संरक्षण शामिल है।

- *वर्ष **2015-18** के लिए श्रीलंका और भारत के बीच सांस्कृतिक सहयोग का कार्यक्रम*

  - यह वर्ष 2015 - 18 के लिए सांस्कृतिक सहयोग कार्यक्रम विविध प्रकार के क्षेत्रों जैसे कि अभिनय कला, दृश्य कला, पुस्तकालय, संग्रहालय, अभिलेखागार एवं सांस्कृतिक प्रदर्शन, पुरातत्व विज्ञान, हस्तशिल्प, प्रकाशन एवं व्यावसायिक आदान - प्रदान में सहयोग के स्तर को बढ़ाना चाहता है।

- *नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना पर एमओयू*

  - समझौता ज्ञापन श्रीलंका को नालंदा विश्वविद्यालय परियोजना में भाग लेने में सक्षम करेगा।

- भारत और श्रीलंका के बीच कृषि के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन के तहत कार्य-योजना **2014-2015**

  - यह दोनों देशों की संगत संस्थाओं एवं संगठनों के बीच कृषि प्रसंस्करण, कृषि विस्तार, बागवानी, कृषि मशीनरी, कृषि यंत्रीकरण में प्रशिक्षण, पशुओं की बीमारियों आदि में द्विपक्षीय सहयोग को संभव बनाएगी।

2. प्रधानमंत्री मोदी की श्रीलंका यात्रा**,** 13-14 मार्च 2015

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के दौरान, दोनों पक्षों ने श्रीलंका में वीजा, सीमा शुल्क, युवा विकास और रवींद्रनाथ टैगोर स्मारक के निर्माण पर चार द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

*श्रीलंका की यात्रा के दौरान प्रधान मंत्री का मीडिया वक्तव्य (**13** मार्च) - प्रमुख बिंदु*

- लंका आईओसी और सिलोन पेट्रोलियम कॉरपोरेशन आपसी तय शर्तों पर त्रिंकोमाली में चीन की खाड़ी प्रतिष्ठान के अपर टैंक फार्म को संयुक्त रूप से विकसित करने पर राजी हो गए हैं और इसके तौर तरीकों के बारे में जल्द ही एक संयुक्त कार्यबल गठित किया जाएगा।
- त्रिंकोमाली को एक क्षेत्रीय पेट्रोलियम केन्द्र बनाने में भारत मदद के लिए तैयार है।

- भारत आशा करता है कि सिमपुर कोयला विद्युत परियोजना पर जल्द ही कार्य शुरू होगा। इस महत्वपूर्ण परियोजना से श्रीलंका की बिजली की आवश्यकता पूरी हो सकेगी।
- समुद्र आधारित अर्थव्यवस्था नया क्षेत्र है जो, दोनों देशों के लिए संभावना के नए द्वार खोलती है। दोनों देशों के लिए यह प्राथमिकता भी है। समुद्र आधारित अर्थव्यवस्था के लिए एक संयुक्त कार्य बल का गठन करने का हमारा निर्णय भी, खासकर हमारी निकटता को देखते हुए महत्वपूर्ण है।
- भारत श्रीलंका के नागरिकों के लिए सिंहाला तथा तमिल नववर्ष 14 अप्रैल, 2015 को आगमन पर वीजा और इलैक्ट्रॉनिक ऑथराइजेशन की सुविधा का विस्तार करेगा।
- हम श्रीलंका में रामायण से और भारत में महात्मा बुद्ध से जुड़े स्थलों के विकास के लिए सहयोग करेंगे।
- हम रेल क्षेत्र के लिए 318 मिलियन अमरीकी डॉलर तक का एक नया ऋण देंगे। इस राशि का उपयोग रोलिंग स्टॉक की खरीद तथा रेलवे पटरियों को दोबारा बिछाने और उन्हें उन्नत बनाने के लिए किया जायेगा।
- भारतीय रिजर्व बैंक और सैंट्रल बैंक ऑफ श्रीलंका 1.5 बिलियन अमरीकी डॉलर के मुद्रा विनिमय समझौता किया हैं।

*श्रीलंका की संसद में प्रधानमंत्री का संबोधन (मार्च **13, 2015**) - प्रमुख बिंदु*

- दक्षिण एशिया में सहयोग बढ़ाने के मामले में श्रीलंका की अग्रणी भूमिका है। यह हिंद महासागर क्षेत्र के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है।
- श्रीलंका की प्रगति और समृद्धि भारत के लिए भी शक्ति का स्रोत है। इसलिए श्रीलंका की सफलता भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण है।
- भारत ने श्रीलंका के साथ अपने सुरक्षा सहयोग को बहुत महत्व दिया है।
- हिंद महासागर में सुरक्षा सहयोग के महत्व को रेखांकित करते हुए, पीएम ने कहा कि हमें भारत, श्रीलंका और मालदीव के बीच समुद्री सुरक्षा सहयोग का विस्तार करना चाहिए ताकि हिंदमहासागर क्षेत्र के अन्य देशों को इसमें शामिल किया जा सके। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी की प्रगति हिंदमहासागर की धाराओं द्वारा निर्धारित होगी। शांतिपूर्ण, सुरक्षित, स्थिर और समृद्ध समुद्री पड़ोस के निर्माण के लिए श्रीलंका का नेतृत्व और उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण होगी।

3. प्रधानमंत्री की सेशेल्स, मॉरीशस और श्रीलंका की यात्रा पर राज्यसभा में विदेश मंत्री द्वारा वक्तव्य (**18** मार्च, **2015**) - प्रमुख बिंदु:

- इस दौरे से श्रीलंका में लोकतंत्र और सुधारों के लिए भारत का सुदृढ़ समर्थन व्यक्त हुआ। प्रधानमंत्री जी ने श्रीलंकाई संसद के अपने संबोधन में उल्लेख किया कि हाल के चुनाव से राष्ट्र की सामूहिक आवाज प्रदर्शित हुई है- परिवर्तन, मेल-मिलाप तथा एकता की आशा जगी है।
- प्रधानमंत्री ने यह भी घोषणा की कि हमारा मानना है कि 13वें संशोधन का शीघ्र तथा पूर्ण कार्यान्वयन और इससे आगे की यात्रा इस प्रक्रिया में सहायक होगी।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जाफ़ना जाने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री बने। भारत द्वारा दिए गए अनुदान से जाफना में निर्माण किए जाने वाले सांस्कृतिक केंद्र की आधारशिला का प्रधानमंत्री ने अनावरण किया।
- प्रधानमंत्री ने आंतरिक तौर पर विस्थापित लोगों के लिए भारतीय आवास परियोजना के लाभार्थियों को मकानों के प्रमाणपत्र सौंपे। उन्होंने तलाईमन्नार में मधु रोड के ट्रैक पर

चलने वाली पहली ट्रेन को झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रधानमंत्री ने जाफना में प्राचीन नागुलेश्वरम मंदिर का भी दौरा किया।

- वार्ता के दौरान मछुआरों की समस्याओं पर भी खुलकर विचार-विमर्श किया गया। प्रधानमंत्री ने यह भी उल्लेख किया कि यह एक जटिल मुद्दा है और इसमें दोनों पक्षों के आजीविका से संबंधित तथा मानवीय पहलू शामिल हैं और भारत तथा श्रीलंका को इसका स्थायी समाधान ढूंढने की आवश्यकता है। दोनों देशों के मछुआरा संघों को परस्पर स्वीकार्य व्यवस्था तैयार करने के लिए शीघ्र ही बैठक करनी चाहिए।
- श्रीलंका में प्रधानमंत्री की वार्ता के मुख्य परिणामों में (क) श्रीलंका में 14 अप्रैल से इलेक्ट्रॉनिक यात्रा प्रमाणीकरण सत्यापन (ईटीए) को शामिल करना, जो कि सिंहली और तमिल नव वर्ष भी है (ख) त्रिंकोमाली अपर तेल टैंक फार्म को विकसित करने के लिए संयुक्त कार्यबल की स्थापना; (ग) श्रीलंका रेलवे क्षेत्र के लिए 318 मिलियन अमरीकी डॉलर के लिए एक नई ऋण श्रृंखला की घोषणा; (घ) श्रीलंका के केंद्रीय बैंक को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 1.5 बिलियन अमरीकी डॉलर की मुद्रा विनिमय सुविधा का विस्तार; (ङ) समुद्री अर्थव्यवस्था में सहयोग के लिए संयुक्त कार्यबल का सृजन; (च) इस ग्रीष्म ऋतु से एअर इंडिया द्वारा दिल्ली और कोलंबो के मध्य सीधी उड़ानों की शुरुआत; (छ) श्रीलंका में भारत महोत्सव शुरू करना; और (ज) श्रीलंका में रामायण ट्रेल और भारत में बौद्ध सर्किट के विकास में सहयोग; शामिल हैं।
- यात्रा के दौरान सीमा शुल्क में सहयोग; राजनयिक और आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीज़ा में छूट; युवाओं का विकास; और मटारा, श्रीलंका में रुहाना विश्वविद्यालय में एक ऑडीटोरियम के निर्माण; से संबंधित 4 करार/ समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।

4. 14-16 सितंबर**, 2015** के दौरान श्रीलंका के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा

डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट रिपब्लिक ऑफ़ श्रीलंका के प्रधानमंत्री, रानिल विक्रमसिंघे, 14-16 सितंबर, 2015 तक भारत के दौरे पर आए। यात्रा के दौरान भारत और श्रीलंका ने चार समझौतों / एमओयू पर हस्ताक्षर किए। सार्क क्षेत्र के लिए उपग्रह की कक्षा आवृत्ति समन्वय पर द्विपक्षीय समझौता, स्थानीय निकायों, गैर-सरकारी संगठनों, धर्मार्थ ट्रस्टों और शिक्षा और व्यावसायिक संस्थानों और आपूर्ति के बारे में समझौता ज्ञापन के माध्यम से लघु विकास परियोजनाओं (एसडीपी) के कार्यान्वयन के लिए भारतीय अनुदान सहायता के बारे में एमओयू का नवीनीकरण, जिला सामान्य अस्पताल, वावुनिया में 200 बिस्तर वार्ड परिसर में चिकित्सा उपकरणों पर हस्ताक्षर किए गए। श्रीलंका में आपातकालीन एम्बुलेंस सेवाओं की स्थापना पर पत्रों का आदान-प्रदान भी किया गया था। भारत और श्रीलंका ने निकटता से जुड़े सुरक्षा हितों और एक-दूसरे की चिंताओं के प्रति संवेदनशील बने रहने की आवश्यकता का आह्वान किया। वे अपने सुरक्षा सहयोग को बढ़ाने पर सहमत हुए। श्रीलंकाई प्रधानमंत्री ने अपने देश के उत्तरी और पूर्वी प्रांतों में पुनर्वास और पुनर्निर्माण में मदद करने के लिए भारत को धन्यवाद दिया।

2. पूर्वी एशिया / आसियान

I. कंबोडिया

1. **15-17** सितंबर, **2015** को कंबोडिया के उपराष्ट्रपति का दौरा

उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने 15-17 सितंबर, 2015 तक कंबोडिया का दौरा किया। भारत के लिए, कंबोडिया के साथ संबंध आसियान के साथ जुड़ाव का एक प्रमुख घटक है। 2002 में, इसने पहले भारत-आसियान शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। यात्रा के दौरान पर्यटन पर समझौता ज्ञापन और त्वरित प्रभाव परियोजनाओं के लिए छाता समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। जल संसाधनों का दोहन सहयोग का पारस्परिक रूप से पहचाना गया क्षेत्र था। भारत सरकार ने स्वास्थ्य क्षेत्र, कृषि और महिला सशक्तिकरण को लक्षित करते हुए मेकांग गंगा सहयोग कार्यक्रम के तहत कई परियोजनाओं को समर्थन दिया है। कृषि और कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र, खनन, तेल और गैस और छोटे व मध्यम उद्यम भारतीय व्यापार घरानों द्वारा व्यापार और निवेश के अवसर प्रदान करते हैं।

II. इंडोनेशिया

1. उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी की इंडोनेशिया यात्रा (**02** नवंबर **2015)**

- दोनों ओर के नेतृत्व ने एक-दूसरे के निजी क्षेत्रों के माध्यम से एक-दूसरे के देश में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए द्विपक्षीय व्यापार में विविधता लाने और बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। दोनों पक्षों ने मौजूदा तंत्र के गहनता के माध्यम से रक्षा और आतंकवाद के खिलाफ सहयोग में विस्तार की संभावनाओं पर भी चर्चा की।
- दो समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए गए। भारत और इंडोनेशिया ने नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह सहयोग महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत और इंडोनेशिया दोनों ने ही 2030 तक कार्बन उत्सर्जन को क्रमशः 35% और 29% कम करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया है और दूसरा समझौता ज्ञापन सांस्कृतिक क्षेत्र में सहयोग पर था।

III. लाओ पीडीआर

1. **14** दिसंबर, **2015** को लाओ पीडीआर का उपराष्ट्रपति का दौरा

उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने 17-18 सितंबर, 2015 को लाओ पीडीआर के उपाध्यक्ष, श्री बौनांग वोरचिथ के निमंत्रण पर लाओ पीडीआर का दौरा किया। उपराष्ट्रपति के स्तर पर लाओस में यह पहली यात्रा थी। उनके साथ जल संसाधन राज्य मंत्री श्री सांवर लाल जाट, चार सांसद, वरिष्ठ अधिकारी और मीडिया भी थी। भारत ने लाओ को अर्थव्यवस्था, निवेश और प्रौद्योगिकी में अपनी क्षमताओं की पेशकश की। हवाई सेवाओं और कृषि सहयोग से संबंधित समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए गए। लाओस ने एक बार फिर से भारत को यूएनएससी की स्थायी सदस्यता के लिए अपना समर्थन दिया। लाओस एक आसियान सदस्य है और 2016 में आसियान राष्ट्रपति पद संभालने के लिए तैयार है। भारत और लाओस ने आसियान और मेकांग-गंगा सहयोग ढांचे में एक साथ काम करने पर चर्चा की।

IV. मलेशिया

1. **13**वें आसियान-भारत के विदेश मंत्रियों की कुआलालंपुर में बैठक में शामिल हुए विदेश राज्य मंत्री **(5** अगस्त **2015)**

- अपने भाषण में जनरल वी.के. सिंह ने 2016-2020 की अवधि के लिए अंतिम कार्य योजना (पीओए) के महत्व को बताया, जो शांति, प्रगति और साझा समृद्धि के लिए आसियान-भारत साझेदारी को आकार देगा और नवंबर 2015 में इसकी पुष्टि की जाएगी।
- आसियान-भारत रणनीतिक साझेदारी की व्यापक समीक्षा का आयोजन किया।

2. **5**वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) के विदेश मंत्रियों की बैठक में विदेश राज्य मंत्री**,** कुआलालंपुर **(06** अगस्त**, 2015)**

- जनरल वीके सिंह ने ईएएस के भीतर आसियान केंद्रीयता और नेतृत्व की भूमिका के लिए भारत का समर्थन दोहराया और आसियान सचिवालय के भीतर एक समर्पित ईएएस यूनिट की स्थापना का समर्थन किया और प्रभावी ढंग से और समय पर अनुवर्ती कार्रवाई सुनिश्चित करने हेतु जकार्ता में नेताओं के फैसले के तहत ईएएस राजदूतों की सेवाओं का आश्वासन दिया।
- उन्होंने यह भी कहा कि भारत दक्षिण चीन सागर सहित अंतरराष्ट्रीय जल में नेविगेशन की स्वतंत्रता का समर्थन करता है और उम्मीद करता है कि दक्षिण चीन सागर में विवादों के सभी पक्ष दक्षिण चीन सागर में आचरण के पक्ष में घोषणा के कार्यान्वयन पर दिशानिर्देशों का पालन करेंगे।

3. भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और दातो मोहम्मद**,** नजीब तुन अब्दुल रजाक**,** मलेशिया के प्रधान मंत्री द्वारा मलेशिया-भारत सामरिक साझेदारी **(23** नवंबर**, 2015)** पर संयुक्त वक्तव्य

दोनों देश दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को विकसित करने के प्रयासों के साथ: राजनीतिक परामर्श, आर्थिक, व्यापार और वित्तीय क्षेत्र, रक्षा और सुरक्षा, पर्यटन और शिक्षा, मानव संसाधन, स्वास्थ्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सार्वजनिक प्रशासन और क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर सहमत हुए।

तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए

- साइबर सुरक्षा (भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (सीईआरटी-आईएन के बीच), भारत और साइबर सुरक्षा, मलेशिया, निकट सहयोग और साइबर सुरक्षा घटना प्रबंधन, प्रौद्योगिकी सहयोग, साइबर हमलों, प्रचलित नीतियों से संबंधित सूचना के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए और सबसे अच्छी प्रथाओं तथा साइबर सुरक्षा घटनाओं के लिए आपसी प्रतिक्रिया पर एमओयू।
- सीईपी (संस्कृति मंत्रालय, भारत और पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, मलेशिया के बीच), दोनों देशों के बीच मौजूद दोस्ती को मजबूत करने के लिए और विभिन्न स्तरों और मंडलों में प्रतिनिधिमंडल के दौरे के माध्यम से अपने सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सहयोग को विकसित करना, कला प्रदर्शनियों का आयोजन, सम्मेलनों में विद्वानों और विशेषज्ञों की भागीदारी आदि पर समझौता ज्ञापन।
- नेशनल इंस्टीट्यूशन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया (नीति आयोग), भारत सरकार और पेमांडू, मलेशिया सरकार के बीच सार्वजनिक प्रबंधन सेवा को बढ़ाने के लिए सरकारी कार्यक्रमों से संबंधित प्रदर्शन प्रबंधन, परियोजना वितरण और निगरानी के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत

करने, बढ़ावा देने और विकसित करने, कार्यान्वयन के तरीकों और प्रक्रिया की दक्षता में सुधार और सरकारी कार्यक्रमों के प्रदर्शन की निगरानी के लिए टेम्पलेट्स और उपकरण विकसित करने पर समझौता ज्ञापन।

V. मंगोलिया

1. भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मंगोलिया दौरा

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17-18 मई 2015 को मंगोलिया का दौरा किया। इस यात्रा ने भारत और मंगोलिया के बीच राजनयिक संबंधों की 60वीं वर्षगांठ की पृष्ठभूमि में द्विपक्षीय संबंधों के महत्व को रेखांकित किया। यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा मंगोलिया-भारत संबंधों में एक नए युग की शुरुआत की पहली यात्रा थी। हालांकि मंगोलिया के साथ भारत का आर्थिक जुड़ाव कम है लेकिन खनिज क्षेत्र में सहयोग की संभावना है। मंगोलिया कोकिंग कोल, कॉपर, दुर्लभ पृथ्वी और यूरेनियम का खनिज समृद्ध देश है। भारत के पास पहले से ही नागरिक परमाणु समझौता है जो मंगोलिया में पूर्वेक्षण और खनन के घरेलू कानूनों के तहत भारत को यूरेनियम निर्यात के लिए प्रदान करता है।

भारत मंगोलियाई छात्रों को तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करता है। हर साल छात्रों के प्रवेश के लिए 150 स्लॉट दिए गए हैं जो भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के तहत मंगोलिया में रखे गए हैं। इसके अलावा, भारत में उच्च अध्ययन के लिए मंगोलियाई नागरिकों को भारत प्रति वर्ष 40 छात्रवृत्ति प्रदान करता है। हर साल आगरा में केंद्रीय हिंदी संस्थान में दो से चार छात्र हिंदी पढ़ने आते हैं।

प्रधानमंत्री की मंगोलिया यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच कई समझौतों / एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए थे। इनमें हवाई सेवा, पशु स्वास्थ्य और डेयरी, चिकित्सा और होम्योपैथी की पारंपरिक प्रणाली, दोनों देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के बीच रक्षा मंत्रालय, मंगोलिया में साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना और नवीकरणीय ऊर्जा शामिल हैं।

संयुक्त वक्तव्य में राजनीतिक और सुरक्षा साझेदारी तथा रक्षा, आर्थिक, स्वास्थ्य, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे अन्य पहलुओं के क्षेत्र में सहयोग के प्राथमिकता वाले क्षेत्र को रेखांकित किया।

VI. म्यांमार

1. भारत-म्यांमार संयुक्त सलाहकार आयोग (जे.सी.सी.) की पहली बैठक (15 जुलाई 2015)

भारत के विदेश मंत्री और म्यांमार के विदेश मंत्री की सह-अध्यक्षता में प्रथम भारत-म्यांमार संयुक्त सलाहकार आयोग (जे.सी.सी.) की बैठक 16 जुलाई, 2015 को आयोजित की गई थी। यह पहली जे.सी.सी. बैठक थी जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय पहलों की प्रगति की समीक्षा की गई, जोर देने के क्षेत्रों की पहचान की गई और द्विपक्षीय साझेदारी को आगे बढ़ाने के निर्देश दिए गए।

VII. फिलीपींस

1. 14 अक्टूबर, 2015 को संयुक्त वक्तव्य : द्विपक्षीय सहयोग पर तीसरा भारत-फिलीपींस संयुक्त आयोग

द्विपक्षीय सहयोग पर भारत - फिलीपींस संयुक्त आयोग की तीसरी बैठक 14 अक्टूबर, 2015 को नई दिल्ली में हुई। बैठक की सह अध्यक्षता भारत गणराज्य की विदेश मंत्री माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज

और फिलीपींस गणराज्य के विदेश मंत्री माननीय श्री अल्बर्ट एफ डेल रोसारियो द्वारा की गई।

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज और विदेश मंत्री श्री अल्बर्ट एफ डेल रोसारियो ने द्विपक्षीय सहयोग पर संयुक्त आयोग की दूसरी बैठक में लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने राजनीतिक – सुरक्षा, आर्थिक एवं सामाजिक – सांस्कृतिक सहयोग सहित आपसी महत्व के मुद्दों की व्यापक रेंज पर विस्तार से चर्चा की तथा व्यापार एवं निवेश, पर्यटन, कृषि, स्वास्थ्य एवं दवा पर संयुक्त कार्य समूहों के अलावा नवीकरणीय ऊर्जा पर संयुक्त समिति तथा संयुक्त रक्षा सहयोग समिति की प्रगति की समीक्षा की।

दोनों विदेश मंत्रियों ने भारत और फिलीपींस के बीच बढ़ती एवं गतिशील द्विपक्षीय साझेदारी को प्रतिबिंबित करने के लिए उच्च स्तर पर नियमित बैठकों के महत्व पर जोर दिया। दोनों विदेश मंत्रियों ने भारत के राष्ट्रपति की फिलीपींस की प्रस्तावित यात्रा तथा इसकी सफलता के लिए किए जा रहे प्रयासों का स्वागत किया।

संयुक्त वक्तव्य - मुख्य बिंदुः

- बैठक में संस्थानिक तंत्रों जैसे कि विदेश नीति परामर्श, कूटनीतिक वार्ता, तथा संयुक्त कांसुलर परामर्श की बैठकों के आयोजन को नोट किया गया। दोनों विदेश मंत्री इस बात पर राजी हुए कि सहयोग के लिए विभिन्न अभिचिन्हित क्षेत्रों में ठोस एवं समयबद्ध लक्ष्यों पर चर्चा करने एवं सहमत होने के लिए संयुक्त कार्य समूहों / संयुक्त समितियों, जो इन तंत्रों की मदद करती हैं, की बैठकें नियमित रूप से होनी चाहिए। इस संबंध में, दोनों विदेश मंत्री इस बात पर राजी हुए कि नीति परामर्श एवं कूटनीतिक वार्ता की अगली बैठकें 2016 में नई दिल्ली में होंगी।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने विशेष रूप से सैन्य प्रशिक्षण एवं शिक्षा में आदान – प्रदान, क्षमता निर्माण, और भारतीय नौसैन्य पोतों द्वारा फिलीपींस की नियमित सद्भाव दौरों में गहन हो रहे रक्षा सहयोग पर संतोष व्यक्त किया। दोनों पक्ष समुद्री क्षेत्र जागरूकता, आसूचना की हिस्सेदारी, क्षमता निर्माण, ह्वाइट शिपिंग एवं रक्षा उत्पादन के क्षेत्रों में रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग को और सुदृढ़ करने के लिए सहमत हुए। दोनों विदेश मंत्रियों ने इंटेलेक्स की नियमित बैठकों पर संतोष व्यक्त किया तथा भारत – फिलीपींस संयुक्त रक्षा समिति (जेडीसीसी) की दूसरी बैठक भारत में आयोजित होने की उम्मीद व्यक्त की।
- विदेश मंत्री डेल रोसारियो ने बंग्सामोरो पर व्यापक करार तथा बंग्सामोरो के बुनियादी कानून के बारे में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को जानकारी प्रदान की। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने मिंडानाव में उचित एवं स्थाई शांति की दिशा में फिलीपींस सरकार के प्रयासों के लिए भारत का समर्थन व्यक्त किया।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने सभी रूपों एवं अभिव्यक्तियों में आतंकवाद के आतंक से लड़ने के लिए अपनी साझी प्रतिबद्धता की पुष्टि की तथा आतंकवाद की खिलाफत पर अपने सहयोग का विस्तार करने एवं उसे गहन करने के अपने संकल्प को दोहराया। वे आतंकवाद तथा अन्य राष्ट्रपारीय अपराधों से संबंधित सभी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए नई दिल्ली में आतंकवाद की खिलाफत पर संयुक्त कार्य समूह की बैठक जल्दी से बुलाने पर सहमत हुए।

- राष्ट्रपारीय अपराधों से राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए साझे खतरों को स्वीकार करते हुए दोनों विदेश मंत्रियों ने आशा व्यक्त की कि आपराधिक मामलों में परस्पर कानूनी सहायता संधि (एमएलएटी) पर बातचीत जल्दी से पूरी हो जाएगी तथा सजायाफ्ता व्यक्ति अंतरण संधि (टीएसपीए) पर बातचीत जल्दी से आरंभ होगी।
- विदेश मंत्री डेल रोसारियो ने पश्चिम फिलीपींस सागर में गतिविधियों तथा हेग, नीदरलैंड स्थित स्थाई मध्यस्थता न्यायालय में फिलीपींस के मध्यस्थता मामले की वर्तमान स्थिति के बारे में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को जानकारी प्रदान की। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने पश्चिम फिलीपींस सागर / दक्षिण चीन सागर विवाद के शांतिपूर्ण समाधान के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया। दोनों पक्षों ने 1982 का यूएन सी एल ओ एस सहित अंतर्राष्ट्रीय कानून के सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सिद्धांतों के अनुसरण में शांतिपूर्ण साधनों के माध्यम से सभी विवादों का समाधान करने तथा बल का प्रयोग करने या बल का प्रयोग करने की धमकी देने से परहेज करने के महत्व को दोहराया। दोनों विदेश मंत्रियों ने दक्षिण चीन सागर में नौवहन तथा इसके ऊपर से उड़ान की आजादी की रक्षा करने के महत्व का उल्लेख किया। इस संबंध में, उन्होंने जल्दी से एक आचार संहिता तैयार करने तथा दक्षिण चीन सागर में पक्षकारों की आचार संहिता की 2002 की घोषणा के पूर्ण एवं कारगर कार्यान्वयन के महत्व को दोहराया।
- फिलीपींस ने स्थाई मध्यस्थता न्यायालय में मध्यस्थता के माध्यम से बंग्लादेश के साथ अपने समुद्री सीमा विवाद को हल करने के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदमों तथा 1982 का यूएन सी एल ओ एस सहित अंतर्राष्ट्रीय कानून के सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सिद्धांतों के अनुसरण में विवदों के शांतिपूर्ण समाधान के उदाहरण के रूप में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय की स्वीकृति के महत्व को स्वीकार किया।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने भारत और फिलीपींस के बीच बढ़ते आर्थिक संबंधों पर संतोष व्यक्त किया तथा उन्होंने द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश को और बढ़ाने की प्रतिबद्धता की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि संयुक्त व्यवसाय परिषद की बैठक के साथ व्यापार एवं निवेश पर संयुक्त कार्य समूह (जेडब्ल्यूजी) की अगली बैठक अगले साल के उत्तरार्ध में होगी जिससे हमारे द्विपक्षीय व्यापार में और तेजी आएगी। दोनों विदेश मंत्रियों ने दोनों देशों द्वारा आकर्षक आर्थिक प्रगति तथा आर्थिक सहयोग में वृद्धि पर आसियान आर्थिक समुदाय के प्रभाव को नोट किया। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने भारत – आसियान सेवा में व्यापार करार एवं भारत – आसियान निवेश करार की पुष्टि करने और दोहरा कराधान परिहार करार (डीटीएए) की समीक्षा करने का आह्वान किया।
- विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने फिलीपींस में भारतीय निवेश के लिए सक्रिय प्रोत्साहन तथा सुगमता के लिए फिलीपींस का धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त की कि स्मार्ट शहर तथा मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों के कार्यान्वयन से भारत में निवेश के लिए उपलब्ध अधिक अवसरों का फिलीपींस के निवेशक भी प्रयोग करेंगे। उन्होंने यह आशा भी व्यक्त की कि

फिलीपींस विशेष रूप से अवसंरचना के क्षेत्र में भारतीय कंपनियों की अधिक पहुंच को सुगम बनाएगा।

- दोनों विदेश मंत्रियों ने स्वास्थ्य एवं भेषज पदार्थ के क्षेत्र में संभावनाओं पर प्रकाश डाला। इस संभवना का अधिकतम उपयोग करने के लिए, दोनों विदेश मंत्रियों ने संगत मुद्दों पर विचार – विमर्श करने के लिए फार्मा जोन एवं भेषज पदार्थ पर गठित तकनीकी कार्य समूह की पहली बैठक और स्वास्थ्य एवं दवा पर गठित संयुक्त कार्य समूह की दूसरी बैठक आयोजित करने का आह्वान किया। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने फिलीपींस से आशा व्यक्त की कि वे फिलीपींस में अधिक भारतीय फार्मास्यूटिकल कंपनियों के प्रवेश को सुगम बनाएंगे।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने पर्यटन में वृद्धि पर भी संतोष व्यक्त किया, जैसा कि 2014 में फिलीपींस के लगभग 43,000 पर्यटकों ने भारत का दौरा किया और 2014 में भारत के लगभग 61,000 पर्यटकों ने फिलीपींस का दौरा किया। दोनों विदेश मंत्रियों ने 2016 में फिलीपींस में पर्यटन सहयोग पर संयुक्त कार्य समूह की प्रस्तावित अगली बैठक होने की आशा व्यक्त की।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने कृषि, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी तथा शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया तथा उन्होंने इन क्षेत्रों में सहयोग को और सुदृढ़ करने के लिए संगत संयुक्त कार्य समूहों की बैठक आयोजित करने को प्रोत्साहित किया।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने दोनों देशों के बीच विद्यमान सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत संबंधों को रेखांकित किया तथा जन दर जन आदान – प्रदान को और प्रोत्साहित करने के लिए चल रहे प्रयासों का स्वागत किया। उन्होंने यह धारणा व्यक्त की कि दोनों देशों के बीच वर्ष 2016 – 2018 के लिए कार्यपालक कार्यक्रम से द्विपक्षीय सांस्कृतिक सहयोग का और विस्तार होगा तथा यह साझेदारी को और सुदृढ़ करने में योगदान देगा।
- द्विपक्षीय कांसुलर परामर्शों तथा नियमित बैठकों के माध्यम से कांसुलर मुद्दों के समाधान के लिए दोनों पक्षों के बीच सहमति हुई।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने आसियान – भारत सहयोग, ई ए एस, ए पी ई सी, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार, जलवायु परिवर्तन तथा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में उम्मीदवारी सहित आपसी हित के क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर विचारों का आदान – प्रदान किया।
- विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने 18–19 नवंबर, 2015 को मनीला में अपेक आर्थिक नेता बैठक में फिलीपींस की सफल अध्यक्षता के लिए शुभकामना व्यक्त की।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने बैठक के दौरान वर्ष 2016 – 2018 के लिए सांस्कृतिक विनिमय के द्विपक्षीय कार्यपालक कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए तथा भारत – फिलीपींस प्रत्यर्पण संधि की पुष्टि के लिखतों का आदान – प्रदान किया।
- दोनों विदेश मंत्रियों के बीच इस बात पर सहमति हुई कि संयुक्त आयोग की चौथी बैठक 2017 में फिलीपींस में होगी।

VIII. कोरिया गणराज्य

1. **लोकतांत्रिक गणराज्य कोरिया के विदेश मंत्री का भारत दौरा (12-14 अप्रैल, 2015):**

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के निमंत्रण पर कोरिया लोकतांत्रिक जनवादी गणराज्य के विदेश मंत्री रि सु यांग इस समय भारत के यात्रा पर हैं (12-14 अप्रैल, 2015)। यह विदेश मंत्री के स्तर पर कोरिया लोकतांत्रिक जनवादी गणराज्य की ओर से भारत की पहली यात्रा है। बेबाक एवं मैत्रीपूर्ण परिवेश में विदेश मंत्री स्तरीय वार्ता हुई जहां भारत के सुरक्षा सरोकारों सहित आपसी हित के मुद्दों पर चर्चा हुई। विदेश मंत्री ने कोरिया के अपने समकक्ष को भारत की 'पूरब में काम करो' नीति के लिए कोरिया प्रायद्वीप में शांति एवं स्थिरता के महत्व के बारे में बताया। विदेश मंत्री रि सु यांग ने कोरिया लोकतांत्रिक जनवादी गणराज्य को भारत द्वारा प्रदान की गई मानवीय सहायता के लिए अपने देश की सराहना व्यक्त की तथा इस संबंध में अतिरिक्त सहायता की मांग की। विदेश मंत्री ने कोरिया लोकतांत्रिक जनवादी गणराज्य के अनुरोध पर सकारात्मक ढंग से विचार करने के लिए सहमति व्यक्त की। विदेश मंत्री को कोरिया लोकतांत्रिक जनवादी गणराज्य का दौरा करने का निमंत्रण दिया।

2. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने **18-19 मई, 2015** को कोरिया गणराज्य (आरओके) के राष्ट्रपति महामहिम एममे पार्क गियुन हाई के निमंत्रण पर कोरिया गणराज्य (आरओके) का राजकीय दौरा किया

यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति पार्क के साथ एक शिखर बैठक की।

भारत "एक्ट ईस्ट" रणनीति में कोरिया गणराज्य को अभिन्न सहयोगी मानता है। कोरिया गणराज्य और भारत द्विपक्षीय साझेदारी के महत्व तथा एशिया-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता तथा सुरक्षा में योगदान को मानते हैं। राष्ट्रपति पार्क ने कोरिया गणराज्य के उत्तर-पूर्व एशिया शांति तथा सहयोग प्रयास (एनएपीसीआई) के बारे में प्रधानमंत्री मोदी को जानकारी दी। प्रधानमंत्री ने एशिया प्रशांत क्षेत्र के देशों के बीच सहयोग और सुरक्षा बढ़ाने की कोरिया गणराज्य की इच्छा का स्वागत किया। दोनों नेता साझा लक्ष्यों को हासिल करने के लिए एनएपीसीआई तथा एक्ट ईस्ट नीति के बीच का पूरक मार्ग तलाशने के लिए मिलकर काम करने पर सहमत हुए। विशेष रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए दोनों पक्षों ने निम्नलिखित बातों पर सहमति व्यक्त की:

- एक-दूसरे देश में वार्षिक शिखर बैठक आयोजित करना या बहुपक्षीय आयोजनों के बीच शिखर बैठक का आयोजन;
- दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के नेतृत्व में वार्षिक रूप से संयुक्त आयोगों की बैठक;
- अपने-अपने क्षेत्रों में लोकतांत्रित संस्थानों को मजबूत बनाने के लिए संसदीय शिष्टमंडलों के आदान-प्रदान को सुगम बनाना।;
- एक-दूसरे देशों में सैन्य अधिकारियों को भेजकर नेशनल डिफेंस कॉलेज ऑफ इंडिया तथा नेशनल डिफेंस यूनिवर्सिटी ऑफ कोरिया सहित भारत तथा कोरिया की रक्षा शिक्षा में साझेदारी को मजबूत बनाना;
- सुरक्षा, रक्षा तथा साईबर संबंधी विषयों पर दोनों देशों की सुरक्षा परिषदों के बीच नियमित विचार विमर्श को और सुदृढ़ बनाना;
- "2+2" रूप में रक्षा तथा विदेशी मामलों पर संयुक्त उपमंत्री स्तरीय बातचीत;
- रक्षा आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे देश के पोतों के बीच बेहतर सहयोग;

- दोनों देशों की जल सेना के बीच अधिकारी स्तरीय बातचीत तथा दोनों देशों की सशस्त्र सेनाओं के अधिकारियों की नियमित यात्राओं से रक्षा सहयोग को और प्रगाढ़ बनाना;
- पारदेशीय साईबर खतरों से निपटने में तैयारी के लिए साईबर सुरक्षा सहयोग के उपाय तलाशना;
- संयुक्त राष्ट्र शांति अभियान के क्षेत्र में उचित सहयोग; तथा
- कोरिया गणराज्य के विदेशी मामलों तथा राष्ट्रीय सुरक्षा संस्थान और इंडिया काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स (आईसीडब्ल्यूए) के बीच वार्षिक रूप से ट्रैक 1.5 वार्ता आयोजित करना।

3. व्यापार और निवेश के क्षेत्र में दोनों देशों ने निम्न पर सहमति व्यक्त की:

- राष्ट्रपति पार्क ने भारत के "मेक इन इंडिया" पहल का स्वागत किया, क्योंकि इससे द्विपक्षीय संबंधों को ठोस बनाने के नये रास्ते मिलते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने "मेक इन इंडिया" में विशेष साझेदार बनने के लिए कोरिया गणराज्य को आमंत्रित किया। इस पर राष्ट्रपति पार्क ने सहमति व्यक्त की। दोनों नेताओं ने स्वीकार किया कि आगे विकास के लिए दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश की अपार संभावनायें हैं। दोनों नेताओं ने अपने अधिकारियों को कोरिया गणराज्य तथा भारत गणराज्य के बीच व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) से लाभ उठाने तथा सीईपीए के अंतर्गत संयुक्त समिति जैसी विचार-विमर्श व्यवस्था का पूरा उपयोग करने के लिए व्यापक विचार-विमर्श करने को कहा।
- कोरिया के वित्त मंत्रालय तथा कोरियाई निर्यात आयात बैंक ने अवसंरचना क्षेत्र में परस्पर सहयोग के लिए 10 बिलियन डॉलर की सहायता की पेशकश की। इसमें आर्थिक विकास सहयोग निधि (1 बिलियन डॉलर) तथा स्मार्ट सिटी, रेलवे, बिजली उत्पादन और सम्प्रेषण तथा अन्य क्षेत्रों सहित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के लिए निर्यात ऋण (9 बिलियन डॉलर) शामिल है।
- दोनों देश कई अन्य क्षेत्रों में सहयोग करने के लिए सहमत हुए जिनमें इस्पात, जहाज निर्माण और समुद्री परिवहन क्षेत्र शामिल हैं।

IX. सिंगापुर

1. State Visit of the President of the Republic of Singapore to India (09 February 2015)

सिंगापुर गणराज्य के राष्ट्रपति डॉ. टोनी टैन केंग याम ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के आमंत्रण पर श्रीमती मैरी टैन के साथ 8-11 फरवरी, 2015 तक भारत की राजकीय यात्रा की। उनकी यात्रा ने भारत और सिंगापुर के बीच राजनयिक रिश्तों की स्थापना की 50वीं जयंती के अवसर पर आयोजित समारोहों को रेखांकित किया। राष्ट्रपति टैन ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज से मुलाकात की। उनकी द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने और क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर सहयोग को मजबूत बनाने पर व्यापक बातचीत हुई, जिससे कि दोनों देशों के बीच साझेदारी को उच्चतर स्तर पर ले जाया जा सके।

चर्चाओं ने नए फोकस क्षेत्रों को शामिल किया गया:

- स्मार्ट सिटी का विकास और शहरी पुनरोत्थान, कौशल विकास संवर्धन, कनेक्टिविटी को बढ़ाने और तटीय तथा बंदरगाह विकास में तेजी लाने के उपायों, भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों के

साथ संपर्कों को मजबूत बनाने, भारत में शुरू की गई नई विकास पहलों में निवेश बढ़ाने से संबंधित परियोजनाएं और भारत सरकार के साथ आदान-प्रदानों को बढ़ावा देना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष तथा अन्य क्षेत्रों में अनुभवों को साझा करने की सहमति, साथ ही साथ आतंकवाद से लड़ने में सहयोग को विस्तारित करना।

- राष्ट्रपति टैन भारत में सिंगापुर पर्व का उद्घाटन किया और 'सिंगापुर एंड इंडियाः टूवार्ड्स ए शेयर्ड फ्यूचर' शीर्षक एक संस्मारक पुस्तक का विमोचन किया। उन्होंने राष्ट्रीय संग्रहालय में पेरानाकन प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया और 'सिंगापुर के स्वाद' नामक फूड फेस्टिवल की मेजबानी की। सिंगापुर में भारत का एक साल तक चलने वाला त्योहार अगस्त, 2014 से शुरू हुआ जो हमारी संस्कृति, नवाचार, युवा और राज्यों को प्रदर्शित करता है।

2. सिंगापुर के संस्थापक और प्रथम प्रधानमंत्री ली कुआन येव की 29 मार्च**,** 2015 को राज्य अंत्येष्टि सेवाओं में भाग लेने के लिए उनकी सिंगापुर यात्रा के अवसर पर प्रधानमंत्री की टिप्पणी

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक प्रेरणादायक नेता और वैश्विक विचारक के रूप में सिंगापुर के संस्थापक और पहले प्रधानमंत्री ली कुआन यू की प्रशंसा की।
- प्रधानमंत्री ने कहा कि वह एक वैश्विक विचारक थे, जिन्होंने आगे चीजों को देखा। वह आर्थिक प्रगति के पैरोकार थे, लेकिन इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता को आगे बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किए।
- प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सिंगापुर के साथ भारत के संबंध दुनिया के सबसे मजबूत रिश्तों में से एक हैं। सिंगापुर भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी का एक प्रमुख स्तंभ है।

3. भारत और सिंगापुर के बीच रणनीतिक साझेदारी पर संयुक्त वक्तव्य - जिसका शीर्षक था "रिन्यूड स्पिरिट**,** न्यू एनर्जी - नया उत्साह**,** नया जोश" **(24** नवंबर**, 2015),** भारतीय गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और सिंगापुर गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री ली सियन लूंग के बीच हस्ताक्षरित

- दोनों प्रधानमंत्रियों ने समुद्री सुरक्षा पर जोर देने के साथ अपनी सामरिक भागीदारी में भारत और सिंगापुर के बीच रक्षा संबंधों के महत्व की पुष्टि की।
- इस संबंध में 15 क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है: राजनीतिक आदान-प्रदान, रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग, व्यापार तथा निवेश को बढ़ाना, वायु परिवहन और समुद्री सहयोग को मजबूत करना, स्मार्ट सिटी का विकास और शहरी कायाकल्प, कौशल विकास एवं क्षमता निर्माण, व्यापार और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए राज्य का ध्यान केंद्रित, संस्कृति और लोगों से लोगों के बीच जुड़ाव का आदान-प्रदान, उच्च शिक्षा संस्थान सहयोग, सार्वजनिक प्रशासन में सहयोग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग, और अनुसंधान और नवाचार, कानूनी और न्यायिक सहयोग, वित्तीय सहयोग, बहुपक्षीय और क्षेत्रीय मंचों में सहयोग और संसदीय सहयोग।

रणनीतिक साझेदारी पर संयुक्त घोषणा: प्रमुख बिंदु

- भारत और सिंगापुर सहयोग के मौजूदा क्षेत्रों में सहयोग को गहरा और व्यापक बनाने के लिए रणनीतिक साझेदारी के लिए अपने द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाते हैं और राजनीतिक, रक्षा और सुरक्षा सहयोग से लेकर आर्थिक, सांस्कृतिक और लोगों से संपर्क करने वाले लोगों तक को उत्प्रेरित करते हैं। सामरिक भागीदारी अधिक क्षेत्रीय स्थिरता और विकास में योगदान करने के लिए रूपरेखा भी है।
- दोनों पक्षों ने 2005 में हस्ताक्षरित व्यापक आर्थिक सहयोग करार (सीईसीए) के महत्व को

स्वीकार करते हुए जो आज भी उनकी आर्थिक साझेदारी की नींव है। द्विपक्षीय सहयोग के लिए 2007 में हस्ताक्षरित संयुक्त मंत्री स्तरीय समिति (जे एम सी) की स्थापना पर करार के महत्व पर जोर देते हुए, जिसने उनके राजनीतिक संबंध में वृद्धि की है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के दौरान निम्न समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए

- दोनों देशों ने रक्षा सहयोग से संबंधित एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता रक्षा मंत्रियों के संवाद, सशस्त्र बलों के बीच संयुक्त अभ्यास, रक्षा उद्योगों के बीच सह-उत्पादन और संयुक्त विकास के क्षेत्रों की पहचान करने हेतु सहयोग प्रदान करता है।
- सिंगापुर के एशियाई सभ्यता संग्रहालय को शिल्पकृतियां उधार देने पर भारत गणराज्य की सरकार और सिंगापुर गणराज्य की सरकार के बीच समझौते पर भी हस्ताक्षर किए गए।

कार्यपालक कार्यक्रम / प्रचालन दस्तावेज

- वर्ष 2015-2018 के लिए भारत गणराज्य की सरकार और सिंगापुर गणराज्य की सरकार के बीच कला, विरासत, पुरालेख एवं पुस्तकालय के क्षेत्र में सहयोग पर कार्यपालक कार्यक्रम। इस कार्यक्रम के तहत 2015-2018 की अवधि के लिए कला, संग्रहालय, पुरालेख, स्मारक, पुस्तकालय एवं तकनीकी विशेषज्ञों व छात्रों के आदान – प्रदान के क्षेत्र में विस्तृत कार्य योजना एवं सहयोग की परिकल्पना है।
- 21 जुलाई, 2015 को भारतीय नौसेना तथा सिंगापुर गणराज्य की नौसेना के बीच श्वेत नौप्रेषण सूचना हिस्सेदारी पर हस्ताक्षरित तकनीकी करार को क्रियाशील बनाना। जुलाई 2015 में श्वेत नौप्रेषण सूचना हिस्सेदारी पर दोनों देशों की नौसेनाओं के बीच हस्ताक्षरित तकनीकी करार के बाद दोनों नौसेनाओं ने दो तरफा सहलग्नता स्थापित की है। इससे समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ा है।

निम्न समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए

- साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में भारत गणराज्य की भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रत्युत्तर टीम (सी ई आर टी – इंडिया), सूचना प्रौद्योगिकी विभाग तथा सिंगापुर गणराज्य की सिंगापुर कंप्यूटर आपातकालीन प्रत्युत्तर टीम (सीईआरटी – सिंगापुर), साइबर सुरक्षा एजेंसी के बीच समझौता ज्ञापन। यह समझौता ज्ञापन भावी वार्ता के लिए विस्तृत रूपरेखा की स्थापना; साइबर हमलों पर सूचना के आदान – प्रदान; स्मार्ट प्रौद्योगिकी में अनुसंधान सहयोग; प्रचलित साइबर सुरक्षा नीतियों एवं सर्वोत्तम प्रथाओं पर सूचना के आदान – प्रदान एवं पेशेवरों के आदान – प्रदान के माध्यम से दोनों देशों की कंप्यूटर आपातकालीन प्रत्युत्तर टीमों के बीच साइबर सुरक्षा से संबंधित सूचना के आदान – प्रदान एवं घनिष्ठ सहयोग को प्रोत्साहित करेगा।
- नागर विमानन में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) और सिंगापुर सहयोग उद्यम (एससीई) के बीच समझौता ज्ञापन। यह समझौता ज्ञापन नागर विमानन सेवाओं एवं विमानपत्तन प्रबंधन के अनेक परस्पर सहमत क्षेत्रों में परस्पर सहयोग को सुगम बनाएगा जिसकी शुरूआत जयपुर एवं अहमदाबाद एयरपोर्ट से होगी।
- आयोजना के क्षेत्र में सहयोग पर राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान (नीति आयोग) और सिंगापुर सहयोग उद्यम (एससीई) के बीच समझौता ज्ञापन। यह समझौता ज्ञापन दोनों संगठनों के बीच शहरी आयोजना; अपशिष्ट जल प्रबंधन; ठोस अपशिष्ट प्रबंधन तथा निजी

– सार्वजनिक साझेदारी जैसे क्षेत्रों में ज्ञान एवं सूचना के आदान – प्रदान को प्रोत्साहित करेगा।

- स्वापक दवाओं, मन:प्रभावी पदार्थों एवं उनके प्रणेताओं में अवैध व्यापार से लड़ने में सहयोग पर भारत गणराज्य के केंद्रीय स्वापक ब्यूरो (सीएनबी) और सिंगापुर गणराज्य के केंद्रीय स्वापक ब्यूरो (सीएनबी) के बीच समझौता ज्ञापन। यह समझौता ज्ञापन अवैध विनिर्माण की रूझानों तथा दवाओं के अवैध व्यापार के आरोप में गिरफ्तार लोगों पर सूचना के आदान – प्रदान के माध्यम से सहयोग को सुगम बनाएगा एवं बढ़ाएगा तथा दोनों ब्यूरो के बीच सीधे संपर्क बिंदु स्थापित करेगा। सहयोग के क्षेत्रों के रूप में क्षमता निर्माण, कौशल उन्नयन एवं ज्ञान विकास की भी पहचान की गई है।
- शहरी आयोजना एवं अभिशासन के क्षेत्र में क्षमता निर्माण पर भारत सरकार के कस्बा और देहात आयोजना संगठन तथा सिंगापुर सरकार के सिंगापुर सहयोग उद्यम (एससीई) के बीच समझौता ज्ञापन। यह समझौता ज्ञापन शहरी आयोजना एवं प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में क्षमता निर्माण के कार्यक्रमों में भारत से सरकारी अधिकारियों की भागीदारी का प्रावधान करता है।

X. थाईलैंड

1. करारों / समझौता ज्ञापनों की सूची जिन पर विदेश मंत्री की थाइलैंड की यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए **(27-29 जून, 2015)**

i. दोनों देशों ने द्विपक्षीय सहयोग के लिए थाईलैंड-भारत संयुक्त आयोग की सातवीं बैठक के कार्यवृत्त पर सहमति व्यक्त की। यह मंत्री स्तर पर द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा थी।

ii. दोनों देशों ने संधि में भगोड़े अपराधियों के प्रत्यर्पण की मांग करने के लिए कानूनी रूपरेखा का आदान-प्रदान किया, जिसमें आतंकवाद, राष्ट्रपारीय अपराधों, आर्थिक अपराधों में शामिल भगोड़े अपराधी शामिल हैं। यह संधि ऐसे किसी व्यक्ति के प्रत्यर्पण के लिए प्रावधान करती है जो एक संविदाकारी राज्य द्वारा ट्रायल के लिए या सजा देने के लिए या सजा के प्रवर्तन के लिए वांटेड है तथा दूसरे कॉन्ट्रैक्टिंग स्टेट के भूभाग में पाया जाता है। यह भगोड़ों के तेजी से प्रत्यर्पण में दोनों देशों की मदद करेगी। यह संधि उनके द्विपक्षीय सहयोग के लिए एक पक्का कानूनी आधार प्रदान करके दोनों देशों की कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच संबंध को और सुदृढ़ करेगी।

iii. नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते पर हस्ताक्षर करके, थाईलैंड नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना में अन्य पूर्व एशियाई शिखर सम्मेलन (ईएएस) देशों में शामिल हो गया।

iv. उन्होंने दोहरे कराधान से बचने और आय पर करों के संबंध में राजकोषीय चोरी को रोकने पर भी सहमति व्यक्त की। यह दोहरे कराधान से बचने और दो देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए आय पर करों के संबंध में राजकोषीय चोरी को रोकने के लिए ढांचा प्रदान करता है।

v. आयुर्वेद में "शैक्षिक पीठ" की स्थापना पर आयुष मंत्रालय, भारत गणराज्य की सरकार और रंगसित विश्वविद्यालय, थाइलैंड के बीच समझौता ज्ञापन। केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान संस्थान परिषद आयुर्वेद में शैक्षिक एवं अनुसंधान की गतिविधियां संपन्न करने के लिए रंगसित विश्वविद्यलाय, थाइलैंड में एक पीठ की स्थापना करेगी।

3. मध्य एशिया

भारत और मध्य एशियाई देश कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान पिछले कुछ वर्षों से राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद से अपने द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय जुड़ाव को बढ़ा रहे हैं, जो 1990 के दशक की शुरुआत में यू.एस.एस.आर. से उनकी स्वतंत्रता के बाद हुए थे। मध्य एशिया के साथ अपने संबंधों के दो दशक पूरे होने तथा 'विस्तारित पड़ोस' के साथ जुड़ाव को और गहरा करने हेतु भारत ने 2012 में बिश्केक, किर्गिज़ गणराज्य में आयोजित पहली भारत-मध्य एशिया वार्ता के दौरान 'कनेक्ट सेंट्रल एशिया' नीति की घोषणा की।

वर्ष 2015 को भारत-मध्य एशिया संबंधों के लिए महत्वपूर्ण वर्ष कहा जा सकता है। कई उच्च-स्तरीय दौरे किए गए, महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए और गहन बातचीत हेतु आधार तैयार किए गए। जुलाई 2015 के महीने में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण दौरा किया। इन गणतंत्रों की स्वतंत्रता के बाद यह पहली बार था कि जब किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने इस क्षेत्र की यात्रा के दौरान सभी पांच देशों का दौरा किया।

I. कजाखस्तान

7-8 जुलाई, 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की देश की यात्रा से भारत-कजाकिस्तान संबंधों को बढ़ावा मिला। भारत ने यूरेनियम खरीद अनुबंध के माध्यम से असैन्य परमाणु सहयोग पर एक और बड़े अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। प्रधानमंत्री ने भारतीय कजाख सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केंद्र का भी उद्घाटन किया, जिसमें एक परम नामक सुपर कंप्यूटर है, जो भारत द्वारा दिया गया है। उन्होंने औपचारिक रूप से कैस्पियन सागर में सस्पेव ब्लॉक में ड्रिलिंग का शुभारंभ किया, जो ओएनजीसी विदेश लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने बताया कि भारत ने कजाकिस्तान में भारतीय निवेश के साथ पहले तेल क्षेत्र में अन्वेषण हेतु ड्रिलिंग अभियान शुरू किया है। भारत ने अन्य खनिजों में सहयोग का विस्तार करने पर भी अपनी रुचि व्यक्त की। कजाकिस्तान के राष्ट्रपति नूरसुल्तान नज़रबायेव ने भारतीय निवेशों के लिए अतिरिक्त परिपक्व ब्लॉकों पर विचार करने के अनुरोध का सकारात्मक जवाब दिया।

दोनों पक्षों ने वाणिज्य और उद्योग मंडलों के संयुक्त व्यापार परिषद से सहयोग के लिए एक नया रोडमैप तैयार करने पर सहमति व्यक्त की। प्रशासन और विकास हेतु उनके आवेदन सहित अंतरिक्ष और सूचना प्रौद्योगिकी में सहयोग में वृद्धि पर भी सहमति हुई। यूरेशियन आर्थिक संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौते के लिए भारत के प्रस्ताव का अध्ययन करने के एक संयुक्त अध्ययन समूह की स्थापना की घोषणा भी की गई। भारत ने 2017-18 के लिए यूएनएससी में गैर-स्थायी सीट के लिए कजाकिस्तान की उम्मीदवारी के लिए अपना समर्थन दोहराया।

जिन समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, उनमें अगले पांच वर्षों में भारत के लिए 5,000 टन यूरेनियम की खरीद हेतु एक समझौता भी शामिल है। दोनों पक्षों के बीच रक्षा सहयोग पर एक समझौते पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो कि शांति प्रशिक्षण, अभ्यास और रक्षा क्षेत्र में उत्पादन और सह-उत्पादन में संभावित जुड़ाव की खोज से संबंधित है।

II. किर्गिज़स्तान

किर्गिस्तान में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11-12 जुलाई 2015 को देश की अपनी यात्रा के दौरान किर्गिस्तान के राष्ट्रपति अल्माज़बेक अताम्बेव के साथ चर्चा की। द्विपक्षीय चर्चा के दौरान आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे थे। प्रधानमंत्री मोदी ने महात्मा गांधी की एक मूर्ति का उद्घाटन किया,

जिसे राजधानी के एक प्रमुख स्थान पर रखा गया है। सह-उत्पादन और संयुक्त उद्यमों की संभावनाओं का भी पता लगाया गया।

स्वास्थ्य देखभाल द्विपक्षीय सहयोग का एक महत्वपूर्ण बिंदु था और प्रधानमंत्री ने स्वास्थ्य पर पहले भारत-मध्य एशिया ई-लिंक का उद्घाटन किया, जो किर्गिज़ और भारतीय अस्पतालों के बीच पहली बार वास्तविक परामर्श से जुड़ा हुआ है।

दोनों पक्षों ने वार्षिक आधार पर संयुक्त सैन्य अभ्यास करने के बारे में भी बात की। जिसमें भारतीय सैन्य अकादमियों में प्रशिक्षण देने हेतु किर्गिज़ कैडेट्स पर भी चर्चा की गई थी। प्रधानमंत्री ने माउंटेन बायो रिसर्च परियोजना के दूसरे चरण का उद्घाटन किया, जिसमें भारत के डीआरडीओ और किर्गिस्तान ने सैनिकों के सोने के पैटर्न और अन्य जैव कारकों पर उच्च ऊंचाई के प्रभावों का अध्ययन किया है।

हस्ताक्षर किए गए समझौतों में भारत के चुनाव आयोग और किर्गिज़ चुनाव प्राधिकरण के बीच सहयोग शामिल है।

III. तजाकिस्तान

1. ताजिकिस्तान के विदेश मंत्री श्री सिरोजिद्दीन आस्लॉव मुहरिदिनोविच **(11-15, मई 2015)**

भारत और ताजिकिस्तान के बीच संबंध पारंपरिक रूप से घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण रहे हैं। दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती प्रदान की है।

मई 2015 में भारत की अपनी यात्रा के दौरान, ताजिकिस्तान के विदेश मंत्री सिरोजिद्दीन ने विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ पारस्परिक हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की थी। मंत्रियों ने राजनीतिक, रक्षा, आर्थिक और सांस्कृतिक मुद्दों में द्विपक्षीय सहयोग की व्यापक समीक्षा की। भारत और ताजिकिस्तान के बीच अधिक से अधिक व्यापार एवं निवेश की सुविधा के उद्देश्य से, दोनों मंत्री अंतर्राष्ट्रीय उत्तर – दक्षिण परिवहन कोरिडोर (आईएनएसटीसी) और अन्य क्षेत्रीय पारगमन व्यवस्थाओं के माध्यम से दोनों देशों के बीच बढ़ी हुई कनेक्टिविटी की दिशा में काम करने के लिए सहमत हुए।

दोनों विदेश मंत्रियों ने वर्ष 2015-2017 के लिए दोनों देशों के विदेश मंत्रालयों के बीच एक नए सहयोग कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किया, जिसके तहत कांसुलर मामलों सहित अनेक द्विपक्षीय मुद्दों, भारत में ताजिकिस्तान के राजनयिक कार्मिकों के प्रशिक्षण और मीडिया आदान – प्रदान के साथ ही क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय मुद्दों पर नियमित एवं सुगठित परामर्श की परिकल्पना है।

2. प्रधानमंत्री मोदी की ताजिकिस्तान यात्रा

ताजिकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री एमोमाली रहमान के निमंत्रण पर भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी ने 12 और 13 जुलाई, 2015 को ताजिकिस्तान गणराज्य का राजकीय दौरा किया। दोनों नेताओं ने विश्व के अनेक भागों में तथा अपने सन्निकट पड़ोस में आतंकवाद एवं अतिवाद की बढ़ती रूझान को नोट किया, जो भारत एवं ताजिकिस्तान के लिए और पूरे क्षेत्र के लिए खतरा है। दोनों पक्षों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा ''अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय'' अपनाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने आतंकवाद एवं कट्टरवाद पर अंकुश लगाने में और धर्म निरपेक्ष अभिशासन का सुनिश्चित करने में ताजिकिस्तान के प्रयासों की प्रशंसा की, जो दोनों देशों के सामान्य आदर्श हैं।

भारत और ताजिकिस्तान ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए आतंकवाद की खिलाफत पर संयुक्त कार्य समूह (जेडब्ल्यूजी) की रूपरेखा में अधिकारियों के स्तर पर बातचीत को

सक्रिय करने का निर्णय लिया तथा हिदायत दी कि संयुक्त कार्य समूह की जल्दी से जल्दी बैठक होनी चाहिए। नेताओं ने आतंकवाद एवं अतिवाद की बढ़ती बुराई से निपटने के लिए सूचना का आदान – प्रदान करने वाले तंत्रों सहित अपनी सुरक्षा एजेंसियों के बीच सतत सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

ताजिकिस्तान ने अंतर्राष्ट्रीय उत्तर – दक्षिण परिवहन कोरिडोर (आईएनएसटीसी) के लिए अपने समर्थन को दोहराया।

भारत और ताजिकिस्तान ने इस बात को स्वीकार किया कि प्रस्तावित पाकिस्तान, अफगानिस्तान और ताजिकिस्तान त्रिपक्षीय ट्रांजिट व्यापार करार पर (पी.ए.टी.टी.टी.टी.ए.) ताजिकिस्तान तथा दक्षिण एशियाई क्षेत्र के देशों के बीच व्यापार को सुगत बनाएगा।

ताजिकिस्तान ने भारत के साथ कृषि सहयोग को सुगम बनाने की अपनी मंशा व्यक्त की और विशेष रूप से ताजिकिस्तान में कृषि क्षेत्र में भारतीय कंपनियों की अधिक भागीदारी का स्वागत किया ताजिकिस्तान ने भारत हैवी इलेक्टिकल्स लिमिटेड (भेल) और नेशनल हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर कारपोरेशन (एनएचपीसी) के माध्यम से वर्जोब-1 जल विद्युत केंद्र के सफल उन्नयन एवं आधुनिकीकरण के लिए तथा जल विद्युत के क्षेत्र में ताजिकिस्तान के विशेषज्ञों के लिए आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के लिए भारत का धन्यवाद किया।

ताकिस्तान ने भारत के प्रतिष्ठित मल्टी स्पेशियल्टी अस्पतालों को चिकित्सा परामर्श एवं शिक्षा प्रदान करने के लिए ताजिकिस्तान से अन्य क्षेत्रों तथा दूशांबे में अस्पतालों के साथ जोड़कर ताजिकिस्तान में एक टेली मेडिसीन परियोजना कार्यान्वित करने के लिए भारत के प्रस्ताव का स्वागत किया।

भारत और ताजिकिस्तान ने दोनों देशों में 2016-18 की अवधि के लिए कला एवं संस्कृति पर भारत और ताजिकिस्तान के बीच सहयोग कार्यक्रम को सक्रियता से लागू करने का आह्वान किया तथा वे इस बात पर सहमत हुए कि संगत संगठनों को एक – दूसरे के देश में "संस्कृति दिवस'' का आयोजन करना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति रहमोन ने नोट किया कि एशिया में अफगानिस्तान का एक महत्वपूर्ण स्थान है और उन्होंने अफगानिस्तान के नेतृत्व और अफगानिस्तान के स्वामित्व वाली प्रक्रिया के माध्यम से अफगानिस्तान में शांति एवं सुरक्षा के लिए अपने समर्थन की फिर से पुष्टि की।

ताजिकिस्तान ने विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए अपने समर्थन को दोहराया। प्रधानमंत्री मोदी ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) में भारत की सदस्यता के लिए ताजिकिस्तान के समर्थन के लिए ताजिकिस्तान का धन्यवाद किया।

IV. तुर्कमेनिस्तान

1. विदेश मंत्री का तुर्कमेनिस्तान का दौरा **(7-9 अप्रैल, 2015)**

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 8 अप्रैल, 2015 को अशगाबाद में आयोजित व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय सहयोग के लिए भारत – तुर्कमेनिस्तान अंतर्सरकारी आयोग (आईजीसी) की 5वीं बैठक में अंतर मंत्रालयी शिष्टमंडल का नेतृत्व किया।

- यात्रा के दौरान, विदेश मंत्री ने तुर्कमेनिस्तान के राष्ट्रपति महामहिम गुरबांगुली बेर्डिमुहामेदेव से मुलाकात की और ऊर्जा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, रक्षा, संस्कृति एवं संपर्क के क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों का और विकास करने के उपायों एवं पहलों पर विस्तार से चर्चा की।
- विदेश मंत्री ने अफगानिस्तान की घटनाओं सहित द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर

तुर्कमेनिस्तान की मंत्री परिषद के उपाध्यक्ष और विदेश मंत्री श्री राशिद मेरदोव के साथ भी विचार – विमर्श किया। दोनों मंत्रियों ने अंतर्सरकारी आयोग की सह अध्यक्षता की जिसमें व्यापार, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक सहयोग बढ़ाने के उपायों पर बल दिया गया। दोनों मंत्री टी ए पी आई पाइप लाइन परियोजना के कार्यान्वयन की गति तेज के लिए संयुक्त प्रयासों पर सहमत हुए। तुर्कमेनिस्तान पक्ष ने तुर्कमेनिस्तान में एक यूरिया विनिर्माण सुविधा स्थापित करने और अशगाबाद में ओएनजीसी विदेश लिमिटेड द्वारा एक प्रतिनिधि कार्यालय खोलने के लिए भारत के प्रस्ताव का स्वागत किया।

- विदेश मंत्री ने यात्रा के दौरान तुर्कमेनिस्तान की संस्कृति एवं मीडिया उप प्रधानमंत्री श्रीमती मायसा याज़मुहाम्मेदोव के साथ तुर्कमेनिस्तान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह सहित संस्कृति में द्विपक्षीय सहयोग पर भी चर्चा की। उन्होंने अशगाबाद में अज़ादी विश्व भाषा संस्थान में हिंदी पढ़ने वाले तुर्कमेनिस्तान के छात्रों के साथ भी बातचीत की।

2. प्रधानमंत्री मोदी की तुर्कमेनिस्तान की यात्रा **(10-11** जुलाई **2015)**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तुर्कमेनिस्तान का दौरा किया, जिसके पास दुनिया का चौथा सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भंडार है। 10-11 जुलाई 2015 को तुर्कमेनिस्तान के अशगाबाट की अपनी यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री ने तुर्कमेनिस्तान के राष्ट्रपति गुरबांगुली बर्डीमुहामेदेव के साथ द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ पारस्परिक हित के क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने हेतु चर्चा की। दोनों देशों ने रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो कि उर्वरकों पर समझौता ज्ञापन है।

- प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति बर्डीमुहामेदेव ने विभिन्न सुरक्षा खतरों का मुकाबला करने में वर्तमान में जारी सहयोग को गहरा करने का संकल्प लिया। वे आतंकवाद, संगठित अपराध और अवैध मादक पदार्थों के रूप में सीमा पार खतरों के खिलाफ प्रयासों को बढ़ाने के लिए भी सहमत हुए।
- तुर्कमेनिस्तान ने अशगाबाट ट्रांजिट कॉरिडोर में शामिल होने में भारत की रुचि का स्वागत किया, जो मध्य एशियाई देशों को पश्चिम एशियाई देशों और हिंद महासागर से जोड़ता है। तुर्कमेनिस्तान ने प्रधानमंत्री के सुझाव पर भी बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाई कि तुर्कमेनिस्तान को अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे में शामिल होने के लिए दक्षिण एशिया को मध्य एशिया और रूस से जोड़ना चाहिए।
- भारत और तुर्कमेनिस्तान ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने का संकल्प लिया और दोनों देशों के बीच सहयोग के संभावित क्षेत्रों के रूप में ऊर्जा, पेट्रोकेमिकल्स, परिवहन, संचार, सूचना और प्रौद्योगिकी, कपड़ा उद्योग, रासायनिक और दवा उद्योग, निर्माण और कृषि-प्रसंस्करण की पहचान की गई। दोनों देशों ने अनुकूल स्थिति बनाने और दोनों देशों की निजी कंपनियों की भागीदारी को बढ़ावा देने पर सहमति व्यक्त की।
- प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति बर्डीमुहामेदेव ने उल्लेख किया कि ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग, विशेष रूप से तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत (टीएपीआई) पाइपलाइन परियोजना, दोनों देशों के बीच आर्थिक जुड़ाव का एक प्रमुख स्तंभ है। उन्होंने माना कि दोनों देशों के बीच व्यापार पर टीएपीआई का परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ेगा।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तुर्कमेनिस्तान के राष्ट्रपति गुरबांगुली बर्डीमुहामेदेव और तुर्कमेनिस्तान सरकार को संयुक्त राष्ट्र में स्थायी तटस्थता अपनाने की 20वीं वर्षगांठ पर बधाई दी और कहा कि इस नीति ने बड़े पैमाने पर तुर्कमेनिस्तान और क्षेत्र में शांति, विकास और स्थिरता में योगदान दिया।
- अशगाबाट में योग और पारंपरिक चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन किया गया।

3. उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी की तुर्कमेनिस्तान की यात्रा

भारत के उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने 12 दिसंबर 2015 को तुर्कमेनिस्तान का दौरा किया। उन्होंने राष्ट्रपति गुरबांगुली बर्डीमुहामेदेव से मुलाकात की और दो कार्यक्रमों, अंतर्राष्ट्रीय न्यूट्रलिटी सम्मेलन और साथ ही टीएपीआई के ग्राउंड-ब्रेकिंग समारोह में भाग लिया।

राष्ट्रपति गुरबांगुली बर्डीमुहामेदेव ने तुर्कमेनिस्तान की न केवल तटस्थता पहल का समर्थन करने हेतु भारत का धन्यवाद दिया, बल्कि अन्य अंतर्राष्ट्रीय पहल भी जो कि तुर्कमेनिस्तान विशेष रूप से पारगमन ऊर्जा गलियारों और स्थिर ऊर्जा आपूर्ति पर आधारित है, बल्कि उसपर भी आभार व्यक्त किया।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि तुर्कमेनिस्तान के बाद तटस्थता क्षेत्रीय शांति और सुरक्षा के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण कारक थी, जिसके लिए भारत इस अवधारणा का समर्थक था। उन्होंने गुटनिरपेक्षता और तुर्कमेनिस्तान द्वारा अपनाई गई तटस्थता मुद्रा के बीच निकटता की पहचान की। टीएपीआई पर, उपराष्ट्रपति ने उल्लेख किया कि इसमें सिर्फ पाइपलाइन नहीं बल्कि एक क्षेत्र में विशेष रूप से एक क्षेत्रीय कनेक्टिविटी पहल भी शामिल है जिसमें क्षेत्रीय पहल आना आसान नहीं है।

बैठक ने अवसर प्रदान किया, रिश्ते के अन्य पहलुओं का अवलोकन करने के लिए, विशेष रूप से उर्वरक उत्पादन और यूरिया के दीर्घकालिक उत्थान, आतंकवाद निरोध में सहयोग और आईटी परियोजना में सहयोग शामिल है। उपराष्ट्रपति ने विभिन्न क्षेत्रों में तुर्कमेनिस्तान के युवाओं के क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण के लिए भारत के राष्ट्रपति को भी फिर से पेशकश की।

V. उज़्बेकिस्तान

1. प्रधानमंत्री मोदी का उज्बेकिस्तान का दौरा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 6-7 जुलाई 2015 को उजबेकिस्तान की यात्रा की। अफगानिस्तान में स्थिति सहित क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा के अलावा, दोनों पक्षों ने विस्तारित पड़ोस में चरमपंथ और आतंकवाद के बढ़ते खतरे पर भी चिंताओं को साझा किया। वे सुरक्षा सहयोग तथा आदान-प्रदान को तेज करने पर सहमत हुए। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि भारत और उज्बेकिस्तान के बीच एक मजबूत रणनीतिक साझेदारी मध्य एशिया के साथ भारत के जुड़ाव का एक प्रमुख स्तंभ है।

दोनों देशों ने कानून प्रवर्तन एजेंसियों और विशेष सेवाओं के बीच समन्वय को मजबूत करने का अपना इरादा व्यक्त किया, जिसमें आतंकवाद-निरोध पर उज़्बेकिस्तान-भारत संयुक्त कार्य समूह की रूपरेखा शामिल है। उन्होंने रक्षा और साइबर-सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग का विस्तार करने पर भी सहमति व्यक्त की।

भारत और उज्बेकिस्तान ने दोनों देशों के बीच निवेश सहयोग को और बढ़ावा देने का आह्वान किया, और उज़्बेकिस्तान में भारतीय कंपनियों द्वारा निवेश के लिए अनुकूल स्थिति बनाने में भागीदारी की, जिसमें एसईजेड नवोई, एग्रीन और जिज़ख की रूपरेखा शामिल है। उन्होंने फार्मास्यूटिकल्स, प्रकाश उद्योग, आईटी और संचार जैसे क्षेत्रों में संयुक्त निवेश परियोजनाओं के लिए संभावनाओं को नोट किया।

दोनों देशों ने स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा और फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्र में सहयोग के महत्व पर जोर दिया और चिकित्सा परामर्श हेतु उजबेकिस्तान तथा भारत में चिकित्सा संस्थानों को जोड़ने वाले टेलीमेडिसिन लिंक स्थापित करने की संभावना का पता लगाया।

भारत और उज्बेकिस्तान ने 2015-2017 की अवधि के दौरान सांस्कृतिक सहयोग के एक नए कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का विस्तार करने के लिए इसके पूर्ण और समयबद्ध कार्यान्वयन का आह्वान किया। यात्रा के दौरान पर्यटन में सहयोग पर भी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

अफगानिस्तान की स्थिति पर चर्चा हुई और यह ध्यान दिया गया कि उस देश में शांति लाने का पूरे क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता के लिए बहुत महत्व है। भारत और उज्बेकिस्तान दोनों ने देश के शांतिपूर्ण पुनर्निर्माण व पुनरुद्धार हेतु एक वास्तविक अफगान-स्वामित्व और अफगान के नेतृत्व वाली प्रक्रिया के लिए समर्थन व्यक्त किया।

उज्बेकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी पर अपने समर्थन की पुष्टि की। भारत और उज्बेकिस्तान ने शंघाई सहयोग संगठन के ढांचे के तहत आपसी सहयोग को और मजबूत करने पर भी सहमति व्यक्त की।

4. पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका

I. बहरीन

1. पहले भारत-बहरीन संयुक्त आयोग की बैठक के दौरान संयुक्त वक्तव्य (विदेश मंत्री और प्रवासी भारतीय मामलों की मंत्री, सुषमा स्वराज, भारत सरकार और महामहिम शेख खालिद बिन अहमद बिन मोहम्मद अल खलीफा, विदेश मामलों के मंत्री, बहरीन साम्राज्य द्वारा सह-अध्यक्षता), 23 फरवरी 2015)

   प्रमुख बिंदु:

   - 18 से 20 फरवरी, 2014 के दौरान किंगडम ऑफ बहरीन के महामहिम शाह हमाद बिन इशा अल खलीफा की भारत की ऐतिहासिक राजकीय यात्रा के दौरान भारत और बहरीन के हस्ताक्षरित एक समझौता ज्ञापन के माध्यम से उच्च संयुक्त आयोग स्थापित किया गया।
   - दोनों पक्षों ने अपने बीच के संबंधों का जश्न मनाया। यह निर्णय लिया गया कि आयोग को भारत और बहरीन में वैकल्पिक अंतराल पर नियमित रूप से बैठक करनी चाहिए।
   - दोनों पक्षों ने 20 फरवरी 2014 के संयुक्त वक्तव्य के नियमित पालन और कार्यान्वयन पर संतोष व्यक्त किया।
   - दोनों पक्षों ने साझे इतिहास पर आधारित घनिष्ठ द्विपक्षीय संबंधों तथा सांस्कृतिक भाई-चारे को रेखांकित किया जो बढ़ते आर्थिक संबंधों, बहु-आयामी सहयोग तथा जन दर जन संपर्कों के माध्यम से मजबूत हो रहें है। आपसी हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं बहु-पक्षीय मुद्दों पर विचारों के उपयोगी आदान - प्रदान के साथ निष्कपट, मैत्रीपूर्ण एवं अग्रदर्शी माहौल में व्यापक चर्चा हुई।
   - भारत ने बहरीन में भारतीय प्रवासी की भलाई के लिए आभार व्यक्त किया और बहरीन में भारतीय समुदाय के योगदान और परिश्रम के लिए उनकी सराहना की।
   - दोनों पक्ष रक्षा सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर बातचीत शुरू करने के लिए सहमत हुए। उन्होंने आंतरिक सुरक्षा सहयोग पर बातचीत किए गए समझौता ज्ञापन के प्रारंभिक हस्ताक्षर पर भी सहमति व्यक्त की। बहरीन के पक्ष ने दोहरे कराधान से बचने के लिए समझौते पर बातचीत फिर से शुरू करने का अनुरोध किया, क्योंकि यह 1998 में दोनों सरकारों के बीच शुरू हुआ था।
   - दोनों पक्षों ने दो तरफा निवेश की विद्यमान क्षमता को नोट किया तथा वे दोनों देशों से सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों के निवेशकों के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करने के लिए सहमत हुए। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की प्रचुर संभावना को स्वीकार करते हुए बहरीन ने भारत में निवेश करने पर विचार करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। बहरीन ने द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश को बढ़ावा देने के लिए मनामा में भारतीय उद्योग परिसंघ का एक क्षेत्रीय कार्यालय खोलने के निर्णय का स्वागत किया।
   - जल संसाधन विकास और प्रबंधन पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

II. मिस्र

1. विदेश मंत्री की मिस्र यात्रा (अगस्त **23-25, 2015)**

- यात्रा के दौरान, ईएएम ने मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फत्ताह अल सीसी, समीह शौरी, मिस्र के विदेश मंत्री और अरब राज्यों के लीग के विदेश महासचिव नबील अल-अराबी से मुलाकात की। उसने मंत्री शौकी के निमंत्रण पर मिस्र का दौरा किया;
- उन्होंने मिस्र की विदेश मामलों की परिषद और काहिरा में भारतीय सामुदायिक स्वागत समारोह में भाषण दिया।

2. करारों / एमओयू की सूची जिन पर विदेश मंत्री की मिस्र अरब गणराज्य की यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए -

- पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत गणराज्य की सरकार और मिस्र अरब गणराज्य की सरकार के बीच एमओयू - पर्यटन, अतिथि सत्कार एवं मानव संसाधन विकास में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाना; सहयोग बढ़ाने के लिए रोड मैप तैयार करना; एक संयुक्त कार्य समूह (जेडब्ल्यूजी) स्थापित करना।
- वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के लिए भारत गणराज्य की वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और मिस्र के राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र (एनआरसी) के बीच एमओयू - आपसी हित के क्षेत्रों में वैज्ञानिक अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास में सहयोग के संवर्धन एवं विस्तार का समर्थन करना; साझे बौद्धिक संपदा अधिकारों पर सहयोग करना; एम ओ यू के कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए कार्यकारी कार्यक्रम विकसित करना; संयुक्त समिति स्थापित करना; वैज्ञानिकों, विद्वानों, सूचना का आदान – प्रदान; जल विलवणीकरण, सौर ऊर्जा, दवा एवं सस्ती स्वास्थ्य देखरेख में संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रम; संयुक्त प्रयोगशालाओं की स्थापना आदि।

III. ईरान

1. इस्लामी गणतंत्र ईरान के विदेश मामलों के मंत्री की भारत यात्रा **(13-14 अगस्त, 2015)**

वीपी हामिद अंसारी, पीएम मोदी, जहाजरानी और सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री, नितिन गडकरी और विदेश मंत्री सुषमा स्वराज से मुलाकात।

IV. इराक

1. इराक में कैद भारतीयों के परिवारों से मिलने के बाद विदेश मंत्री का बयान **(22 फरवरी 2015)**

कैद में बंद कैदियों के परिवारों के साथ यह छठी बैठक थी; इसने भारत द्वारा उन बंदियों को वापस लाने के निरंतर प्रयासों का उल्लेख किया।

V. इजराइल

1. **16 अक्टूबर, 2015** को भारत के राष्ट्रपति का इज़राइल दौरा

इजरायल राज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री रूवेन रिवलिन के निमंत्रण पर भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणब मुखर्जी 13 से 15 अक्टूबर, 2015 के दौरान इजरायल की पहली राजकीय यात्रा की। राष्ट्रपति के साथ एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल भी गया था जिसमें केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री थावर चंद गहलोत, संसद सदस्य, वरिष्ठ अधिकारी, हमारे शैक्षिक एवं विद्वत संस्थाओं के वरिष्ठ प्रतिनिधि तथा मीडिया के प्रतिनिधि शामिल थे। इस यात्रा के दौरान, माननीय राष्ट्रपति ने, राष्ट्रपति

रिवलिन तथा प्रधानमंत्री श्री बेंजामिन नेतानयाहू के अलावा इजरायली संसद नेसेट के स्पीकर श्री यूली योइल इडेस्टिन के साथ बैठकें एवं बातचीत की। राष्ट्रपति ने अपनी यात्रा के दौरान नेसेट को संबोधित भी किया। दोनों पक्ष संस्कृति, शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में अनेक एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

करारों / एमओयू की सूची जिनपर राष्ट्रपति की इजरायल यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए

- आय पर एवं पूंजी पर करों के संबंध में राजकोषीय अपवंचन की रोकथाम के लिए तथा दोहरे कराधान के परिहार के लिए भारत गणराज्य एवं इजरायल राज्य के बीच अभिसमय एवं प्रोटोकॉल को संशोधित करने वाला प्रोटोकॉल।
- वर्ष 2015–2018 के लिए भारत गणराज्य की सरकार एवं इजरायल राज्य की सरकार के बीच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम।
- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत और नेगेव के बेन गुरियन विश्वविद्यालय के बीच एमओयू।
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर और येरूसलम के हिब्रू विश्वविद्यालय के बीच सहयोग करार।
- संस्थानिक सहयोग के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर और नेगेव के बेन गुरियन विश्वविद्यालय (बीजीयू) के बीच एमओयू।
- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत और येरूसलम के हिब्रू विश्वविद्यालय, इजरायल के बीच एमओयू।
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर, भारत और हाइफा विश्वविद्यालय, हाइफा, इजरायल के बीच शैक्षिक सहयोग के लिए रूपरेखा।
- दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत और नेगेव के बेन गुरियन विश्वविद्यालय (बीजीयू), बीर शिवा, इजरायल के बीच एमओयू।
- येरूसलम के हिब्रू विश्वविद्यालय, इजरायल और दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत के बीच सहयोग करार।
- दिल्ली विश्वविद्यालय तथा आईडीसी, भारत और हेर्जिल्या, इजरायल के बीच एमओयू।

2. येरूशलम**,** इजरायल में परंपरागत स्वागत समारोह के तुरंत बाद मीडिया और प्रतिनिधियों के लिए राष्ट्रपति की उद्घाटन टिप्पणी **(14** अक्टूबर**, 2015)**

- भारत इजरायल के साथ अपने संबंधों को बहुत महत्व देता है। भारत और इजरायल के बीच संबंधों ने पिछले कुछ वर्षों में काफी प्रगति की है। दोनों रक्षा और कृषि से लेकर विज्ञान, अनुसंधान और साइबर सुरक्षा तक कई क्षेत्रों में सहयोग और मदद कर रहे हैं।
- राष्ट्रपति रिवलिन, प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और राष्ट्रपति मुखर्जी ने कई वैश्विक चुनौतियों पर चर्चा की, जिनका आज दोनों देशों द्वारा सामना किया जा रहा है - जिसमें आतंकवाद और अतिवाद के बढ़ते खतरे, जलवायु परिवर्तन के बारे में आम चिंताएं और वैश्विक महत्व के संस्थानों के सुधार की तत्काल आवश्यकता शामिल है।
- राष्ट्रपति की यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के बीच उत्कृष्ट संबंधों को और मजबूत करना और मित्रता, आपसी विश्वास और समझ को बढ़ाना था। भारत अपने संबंधित समाजों की प्रगति और दुनिया के इस हिस्से में शांति के लिए इज़राइल के साथ निकट सहयोग बढ़ाने के लिए तत्पर है।

VI. जॉर्डन

1. **11** अक्टूबर**, 2015** को भारत के राष्ट्रपति का जॉर्डन दौरा

जॉर्डन के हाशमाइट साम्राज्य के राजा अब्दुल्ला- II इब्न अल हुसैन के निमंत्रण पर भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने 10-12 अक्टूबर 2015 तक जॉर्डन की राज्य यात्रा की। राष्ट्रपति की यात्रा दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद से पिछले 65 वर्षों में जॉर्डन में भारत के राष्ट्रपति द्वारा पहली यात्रा थी। 1988 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने जॉर्डन का दौरा किया।

***11** अक्टूबर **2015** को भारत गणराज्य और जॉर्डन के हाशमाइट साम्राज्य के बीच हस्ताक्षर किए गए समझौता ज्ञापन का विवरण*

- समुद्री परिवहन पर भारत गणराज्य की सरकार और किंगडम ऑफ जॉर्डन के बीच करार।
- भारत गणराज्य के विदेश मंत्रालय के विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई) और किंगडम ऑफ जॉर्डन के विदेश एवं प्रवासी मंत्रालय के जॉर्डन कूटनीति संस्थान (जेआईडी) के बीच एमओयू।
- सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रानिक के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य के संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा किंगडम जॉर्डन के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच एमओयू।
- 2015-17 के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम।
- मानकीकरण तथा अनुरूपता आकलन के क्षेत्रों में सहयोग के लिए भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) तथा जॉर्डन मानक एवं मौसम विज्ञान संगठन (जेएसएमओ) के बीच एमओयू।
- जॉर्डन न्यूज एजेंसी (पेट्रा) और प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पीटीआई) के बीच सहयोग करार।

VII. फिलिस्तीन

1. सचिव (पूर्व) की फिलीस्तीन यात्रा

अनिल वाधवा, सचिव, (पूर्व) ने फिलिस्तीन में 8 से 9 जुलाई, 2015 को फिलिस्तीन के राज्य के राष्ट्रपति से मुलाकात की। उन्होंने असेरा अल शामल्येह में लड़कियों के लिए जवाहरलाल नेहरू माध्यमिक विद्यालय का भी उद्घाटन किया। उन्होंने भारत सरकार की फिलीस्तीन में चल रही अन्य परियोजनाओं में अबु दीस में जवाहरलाल नेहरू माध्यमिक बालक विद्यालय, आई सी टी में भारत – फिलीस्तीन उत्कृष्टता केंद्र तथा अल कुदस विश्वविद्यालय में डिजीटल अध्ययन एवं नवाचार केंद्र (रमल्लाह में एक उपग्रह केंद्र के साथ) की स्थापना और फिलीस्तीन में 7 व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों को तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा प्रशिक्षण (टी वी ई टी) उपकरण एवं प्रशिक्षण सेवाओं की आपूर्ति शामिल है, का जायजा लिया।

2. **13** अक्टूबर**, 2015** को भारत के राष्ट्रपति का फिलिस्तीन दौरा

भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास के निमंत्रण पर 1213 अक्टूबर, 2015 से फिलिस्तीन की पहली राजकीय यात्रा की। यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति ने फिलिस्तीनी राष्ट्रपति अब्बास, प्रधानमंत्री रामी हमदल्ला और फिलिस्तीन के प्रमुख राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ मुलाकात की और बातचीत की।

यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित एमओयू का विवरण

- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) और संस्कृति मंत्रालय, फिलिस्तीन के बीच समझौता ज्ञापन।
- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) और बिरजीत विश्वविद्यालय के बीच समझौता

ज्ञापन

- जेएनयू और अल नजाह राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन
- जामिया मिल्लिया इस्लामिया और अल कुद्स विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन
- जामिया मिल्लिया इस्लामिया और अल इस्तिकलाल विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन
- जामिया मिल्लिया इस्लामिया और हेब्रोन विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन।

VIII. कतर

1. कतर राज्य के अमीर का भारत का राजकीय दौरा **(24-25 मार्च 2015)**

- महामहिम शेख तमीम बिन हमद अल-थानी, कतर राज्य ने 24-25 मार्च 2015 तक भारत की राजकीय यात्रा की। उनके साथ मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों और उद्योग के कप्तानों सहित एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी था।
- यात्रा के दौरान, महामहिम अमीन ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता की।

IX. सऊदी अरब

1. वार्षिक हज समझौता **(04 फरवरी 2015)**

जनरल वी.के. सिंह, विदेश राज्य मंत्री ने प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए हज 2015 के लिए वार्षिक हज समझौते पर हस्ताक्षर करने हेतु 03/02/2015 को सऊदी अरब का दौरा किया। मंत्री ने जेद्दाह में हज मंत्री इब्न मुहम्मद हजर, हज मंत्री से मुलाकात की और हज 2015 की व्यवस्था से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की।

- भारत और सऊदी अरब के बीच हज समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
- हज मंत्री के साथ बातचीत के दौरान, जनरल वी.के. सिंह ने ब्रिस्बेन (ऑस्ट्रेलिया) 16 नवंबर 2014 को दो पवित्र मस्जिदों, किंग अब्दुल्ला के दुखद निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त की और किंग सलमान बिन अब्दुल अजीज के लिए शुभकामनाएं दीं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और किंग सलमान बिन अब्दुल अजीज (तत्कालीन क्राउन प्रिंस) के बीच मुलाकात को याद किया।
- वर्ष 2015 के लिए भारत के लिए हज कोटा 1,36,020 होगा और 100,020 तीर्थयात्री हज कमेटी ऑफ इंडिया के माध्यम से आएंगे और शेष 36,000 निजी टूर ऑपरेटरों के माध्यम से आएंगे।

X. ओमान की सल्तनत

1. विदेश मंत्री और प्रवासी भारतीय मामलों के राज्य मंत्री की ओमान सल्तनत की आधिकारिक यात्रा**, 16 फरवरी 2015**

विदेश मंत्री और प्रवासी भारतीय मामलों की मंत्री, सुषमा स्वराज ने अपने ओमानी समकक्ष, यूसुफ बिन अलावी बिन अब्दुल्ला के निमंत्रण पर 17-18 फरवरी 2015 से ओमान की सल्तनत की पहली आधिकारिक द्विपक्षीय यात्रा की। दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और आपसी हित के अन्य मुद्दों पर चर्चा की।

भारत में खाड़ी क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता में महत्वपूर्ण दांव हैं, जिसमें लगभग 7 मिलियन भारतीय रहते हैं और इसका प्रमुख कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता है और अपने वैश्विक व्यापार के लगभग एक चौथाई के लिए भारत के लिए सबसे बड़ा व्यापारिक क्षेत्रीय ब्लॉक बनाते हैं।

2. मस्कट में भारतीय समुदाय के साथ बातचीत में विदेश मंत्री के टिप्पणी (**17** फरवरी **2015)**

- मंत्री स्वराज ने मेहनती, कानून का पालन करने वाले और अनुशासित व्यक्ति की प्रतिष्ठा का निर्माण करने पर भारतीय निवासियों को बधाई दी और बैंकिंग, आईटी और बीमा आदि के क्षेत्रों में पेशेवरों से शुरुआत में कुशल श्रमिकों से डायस्पोरा की प्रोफाइल में बदलाव का उल्लेख किया; भारत में वापस भेजे गए उनके निरंतर प्रेषण के लिए भी उन्हें धन्यवाद दिया।
- उन्होंने बेहतर और पारदर्शी शासन के लिए सरकार के संकल्प का उल्लेख किया और सभी एनआरआई उद्यमियों को 'मेक इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया प्रोग्राम' जैसी सरकार की पहल का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया; प्रवासी भारतीयों को 'प्रवासी भारतीय दिवस' में भाग लेने के लिए भी बधाई दी।
- उन्होंने भारतीय बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए सरकार के प्रयासों का भी उल्लेख किया।
- उसने विशेष रूप से खाड़ी में भारतीय डायस्पोरा की देखभाल करने के भारतीय प्रयासों पर प्रकाश डाला, इसने ओमानी सरकार, भारतीय सामुदायिक कल्याण कोष (आईसीडब्ल्यूएफ), मासिक खुले घरों और भारतीय दूतावास में एक दैनिक खुले घर के साथ निरंतर संवाद साथ ही संकट में भारतीयों के लिए एक टोल-फ्री सेवा सहित एक 24x7 हेल्पलाइन, और भारतीयों के लिए एक वेब-आधारित सेवा शुरू करने का उल्लेख किया, जिसे संकट में डायस्पोरा की सहायता या 'मदद' में विदेश मंत्रालय कहा जाता है।

XI. तुर्की

1. तुर्की के विदेश मंत्री के साथ विदेश मंत्री की बैठक (**16** जनवरी**, 2015)**

भारत के विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 16 जनवरी, 2015 को तुर्की के विदेश मंत्री मेवलुत कावुसोग्लू से मुलाकात की। द्विपक्षीय मुद्दों के अलावा, दोनों मंत्रियों ने क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर भी चर्चा की।

2. भारत द्वारा तुर्की में आतंकी हमले की निंदा की (**23** जुलाई **2015)**

भारत सरकार ने तुर्की के सुरूच शहर में निर्दोष नागरिकों पर हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की। बयान में कहा गया कि सुरूच में हमला अब आतंकवाद के संकट से लड़ने हेतु अंतरराष्ट्रीय समुदाय की ओर से ठोस कार्रवाई की आवश्यकता को दर्शाता है।

XII. संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)

1. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की संयुक्त यात्रा संयुक्त अरब अमीरात (अबू धाबी और दुबई) की आधिकारिक यात्रा - अगस्त **16-17, 2015**

संयुक्त अरब अमीरात और भारत गणराज्य के बीच संयुक्त वक्तव्य - प्रमुख बिंदु:

- महामहिम क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन जायेद बिन अल नाहयान के निमंत्रण पर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 16 और 17 अगस्त, 2015 को संयुक्त अरब अमीरात का दौरा

किया;

- 34 वर्षों के बाद यूएई में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली यात्रा थी;
- दोनों राष्ट्र अतिवाद तथा धर्म एवं आतंकवाद के बीच किसी संबंध को अस्वीकार करते हैं। वे दूसरे देशों के विरूद्ध आतंकवाद को उचित ठहराने, समर्थन करने और प्रायोजित करने के लिए राज्यों सहित धर्म के प्रयोग संबंधी प्रयासों की निंदा करते हैं। वे पश्चिम एवं दक्षिण एशिया सहित किसी भी क्षेत्र में राजनीतिक मुद्दों एवं विवादों को धार्मिक एवं अलगाववादी रंग देने के लिए देशों द्वारा किए जा रहे प्रयासों की भी निंदा करते हैं तथा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आतंकवाद के प्रयोग की भर्त्सना करते हैं।
- दोनों नेता निम्नलिखित पर सहमत हुए:
    - साझेदारी को व्यापक सामरिक साझेदारी के रूप में स्तरोन्नत करने;
    - नफरत फैलाने, आतंकवाद फैलाने एवं उसे उचित ठहराने या राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए समूहों एवं देशों द्वारा धर्म के दूरूपयोग तथा कट्टरवाद की खिलाफत करने वाले प्रयासों का समन्वय करने;
    - सभी रूपों एवं अभिव्यक्तियों के आतंकवाद की निंदा करते हैं और विरोध करते हैं, जहां कहीं भी और जिस किसी द्वारा भी किया गया हो, सभी देशों से दूसरे देशों के खिलाफ आतंकवाद के प्रयोग का त्याग करने एवं अस्वीकार करने का आह्वान करते हैं, आतंकवाद की अवसंरचनाओं को नष्ट करने का आह्वान करते हैं, जहां कहीं भी वे मौजूद हों, और आतंकवाद के दोषियों को दंडित करने का आह्वान करते हैं;
    - संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर भारत के प्रस्तावित व्यापक अभिसमय को अपनाने के लिए साथ मिलकर काम करते हुए आतंकवाद की खिलाफत से जुड़ी कार्यवाहियों, आसूचना की हिस्सेदारी तथा क्षमता निर्माण में सहयोग में वृद्धि करने;
    - ऐसी निधियों के प्रवाह को नियंत्रित करने, विनियमित करने और सूचना को साझा करने के लिए साथ मिलकर काम करना जिनका संबंध कट्टरवाद की गतिविधियों से हो सकता है तथा अवैध प्रवाह को रोकने में सहयोग करना तथा संबंधित व्यक्तियों एवं संगठनों के विरूद्ध कार्रवाई करने। कानून प्रवर्तन, धन शोधनरोधी प्रयासों, दवाओं की तस्करी तथा अन्य राष्ट्रपारीय अपराधों, जबरन वसूली की व्यवस्थाओं तथा पुलिस प्रशिक्षण में सहयोग को सुदृढ़ करने;
    - आतंकवाद, कट्टरवाद तथा सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने के लिए साइबर के उपयोग पर रोकथाम सहित साइबर सुरक्षा में सहयोग को बढ़ावा देने;
    - अपने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों तथा राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों के बीच वार्ता स्थापित करना। दोनों देशों से सुरक्षा के लिए अन्य उच्च स्तरीय प्रतिनिधियों के साथ मिलकर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की हर छह महीने में बैठक होगी। दोनों पक्ष प्रचालन संबंधी सहयोग में और सुधार के लिए अपनी – अपनी सुरक्षा एजेंसियों के बीच संपर्क बिंदु भी स्थापित करेंगे;
    - खाड़ी तथा हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा सुदृढ़ करने के लिए सहयोग करने जो दोनों देशों की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए बहूत महत्वपूर्ण है;
    - प्राकृतिक आपदाओं तथा संघर्ष की स्थितियों में मानवीय सहायता तथा रिक्तीकरण के लिए सहयोग एवं परस्पर प्रचालनीयता को बढ़ावा देने;
    - नौसेना, वायु सेना, थल सेना एवं विशेष बलों के नियमित अभ्यास एवं प्रशिक्षण के माध्यम से रक्षा संबंधों एवं तटीय सुरक्षा को सुदृढ़ करना। भारत ने फरवरी, 2016 में भारत में अंतर्राष्ट्रीय बेड़ा सुरक्षा में भाग लेने के लिए संयुक्त अरब अमीरात के

निर्णय का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया;

- भारत में रक्षा उपकरणों के विनिर्माण में सहयोग करने;
- वृहद दक्षिण एशिया, खाड़ी एवं पश्चिम एशिया क्षेत्र में शांति, सामंजस्य, स्थिरता, समावेशीपन तथा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए साथ मिलकर काम करने;
- संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए प्रयासों का समर्थन करना तथा राष्ट्रों के बीच संबंधों के संचालन तथा विवादों के समाधान में संप्रभुता तथा दखल न देने के सिद्धांतों का अनुपालन को बढ़ावा देने;
- सभी देशों से हिंसा एवं आतंकवाद का सहारा लिए बगैर द्विपक्षीय एवं शांतिपूर्ण ढंग से विवादों का समाधान करने के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं का पूरी तरह से सम्मान करने और निष्ठापूर्वक लागू करने का आह्वान करने;
- दोनों देशों की सरकारों के बीच एक सामरिक सुरक्षा वार्ता स्थापित करने;
- यह स्वीकार करते हुए कि भारत निवेश के अवसरों के नए फ्रंटीयर के रूप में उभर रहा है, विशेष रूप से व्यापार एवं निवेश को सुगम बनाने, भारत में अपना निवेश बढ़ाने के लिए संयुक्त अरब अमीरात की निवेश करने वाली संस्थाओं को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा नई पहलों देखते हुए, जिसमें भारत - संयुक्त अरब अमीरात अवसंरचना निवेश निधि के माध्यम से निवेश शामिल है, विशेष रूप से रेलवे, बंदरगाह, सड़क, हवाई अड्डा, और औद्योगिक कोरिडोर एवं पार्कों में अगली पीढ़ी की अवसंरचना के तेजी से विस्तार के लिए भारत की योजनाओं में निवेश का समर्थन करने के लिए 75 बिलियन अमरीकी डालर के लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से;
- संयुक्त अरब अमीरात में अवसंरचना विकास में भारत की कंपनियों की भागीदारी को सुगम बनाने
- ऊर्जा क्षेत्र में सामरिक साझेदारी को बढ़ावा देना जिसमें सामरिक पेट्रालियम भंडार के विकास, अपस्ट्रीम एवं डाउनस्ट्रीम पेट्रोलियम क्षेत्रों में भारत में संयुक्त अरब अमीरात की भागीदारी तथा तीसरे देशों में साझेदारियां शामिल हैं;
- दोनों देशों के बीच व्यापार को और बढ़ावा देना तथा इस क्षेत्र में तथा इससे परे व्यापार के विस्तार के लिए अपने – अपने स्थानों एवं अवसंरचना का प्रयोग करना और अगले पांच वर्षों में व्यापार में 60 प्रतिशत वृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त करने;
- संयुक्त अरब अमीरात में एक जीवंत औद्योगिक आधार का सृजन करने के लिए मध्यम और छोटे उद्यमों में भारत की विशेषज्ञता का उपयोग करने, जिससे भारत के उद्यमियों को भी लाभ हो सकता है;
- संयुक्त अरब अमीरात की उत्तरोत्तर परिष्कृत शैक्षिक संस्थाओं तथा भारत के विश्वविद्यालयों तथा उच्च अनुसंधान संस्थाओं के बीच सहयोग को सुदृढ़ करना। नवीकरणीय ऊर्जा, संपोषणीय विकास, मरूस्थलीय कृषि, मरूस्थल पारिस्थितिकी तथा शहरी विकास तथा उन्नत स्वास्थ्य देखरेख के क्षेत्रों सहित विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा देने;
- अंतरिक्ष में सहयोग को बढ़ावा देना जिसमें उपग्रहों का संयुक्त विकास एवं प्रक्षेपण, जमीनी अवसंरचना तथा अंतरिक्ष का अनुप्रयोग शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी ने 2021 में मंगल मिशन शुरू करने के लिए अल बिन में पश्चिम एशिया के पहले अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र को स्थापित करने संबंधी संयुक्त अरब अमीरात की योजना

का स्वागत किया;

- परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोगों में सहयोग करना जिसमें सुरक्षा, स्वास्थ्य, कृषि तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में परमाणु ऊर्जा का प्रयोग शामिल है;
- संयुक्त राष्ट्र की 70वीं वर्षगांठ संयुक्त राष्ट्र के जल्दी सुधारों पर दबाव बनाने के लिए एक अच्छा अवसर है, और यह कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधारों पर अंतर्सरकारी वार्ता को जल्दी से पूरा किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी ने संशोधित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए संयुक्त अरब अमीरात के समर्थन के लिए उनका धन्यवाद किया;
- प्रमुख उद्देश्य के रूप में 2030 तक गरीबी उन्मूलन के साथ 2015 पश्चात विकास एजेंडा का अंतिम रूप दिया जाना एक स्वागत योग्य घटना है;
- दिसंबर, 2015 में पेरिस में जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन से एक कारगर करार उत्पन्न होना चाहिए जिसमें स्वच्छ ऊर्जा में संक्रमण के लिए विकासशील देशों को साधनों एवं प्रौद्योगिकियों का प्रावधान शामिल हो;
- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए वैश्विक स्तर पर अत्यधिक समर्थन विश्व के लिए शांतिपूर्ण, अधिक संतुलित, स्वस्थ और संपोषणीय भविष्य की तलाश में साथ मिलकर काम करने की वैश्विक समुदाय की सामर्थ्य का प्रतीक है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस साल 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए संयुक्त अरब अमीरात के प्रबल समर्थन के लिए उनका धन्यवाद किया;
- भारत और संयुक्त अरब अमीरात एक दूसरे के देशों में सांस्कृतिक एवं खेल संबंधी आदान – प्रदान में भी वृद्धि करेंगे;
- जन दर जन संपर्क भारत - संयुक्त अरब अमीरात संबंधों के केंद्र में है तथा दोनों देशों की सरकारें इन संबंधों को और मजबूत करना तथा एक – दूसरे के देश में अपने नागरिकों, विशेष रूप से मजदूरों का कल्याण सुनिश्चित करने के लिए काम करना जारी रखेंगी और मानव द्व्यापार को रोकने के लिए भी साथ मिलकर काम करेंगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने आबू धाबी में मंदिर के निर्माण के लिए जमीन आवंटित करने के लिए महामहिम क्राउन प्रिंस के निर्णय के लिए उनका धन्यवाद किया।

2. 3-4 सितंबर**, 2015** को यूएई के विदेश मंत्री की भारत यात्रा

यूएई के विदेश मामलों के मंत्री, शेख अब्दुल्ला बिन जायद अल नाहयान 3 सितंबर 2015 को 11वीं भारत-यूएई संयुक्त आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए भारत आए थे। बैठक तीन साल बाद आयोजित की गई थी। भारत और यूएई आईटी तथा आईटी व्यवसायों में संबंधों को मजबूत करने, और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी हार्डवेयर के विनिर्माण को विकसित करने पर सहमत हुए हैं। यूएई ने भारत के रणनीतिक पेट्रोलियम रिजर्व में भाग लेने में रुचि व्यक्त की है। भारत और यूएई ने अपने सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों के बीच बातचीत पर भी सहमति व्यक्त की है।

5. अफ्रीका

I. मोजाम्बिक

1. मोजाम्बिक के राष्ट्रपति महामहिम श्री फिलिप जसिंटो न्यूसी का भारत का राज्यकीय दौरा **(4-8 अगस्त, 2015)**

अपनी पत्नी श्रीमती इसौरा न्यूसी के साथ मोजांबिक गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री फिलिप जसिंटो न्यूसी ने 4 से 8 अगस्त, 2015 तक भारत का राजकीय दौरा किया। राष्ट्रपति के साथ एक उच्चस्तरीय शिष्टमंडल भी आ था जिसमें मोजांबिक के विदेश मंत्री, खनिज एवं ऊर्जा मंत्री, कृषि मंत्री,परिवहन एवं संचार मंत्री तथा गृह मंत्री, अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा एक कारोबारी शिष्टमंडल शामिल था। यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति न्यूसी भारत के माननीय राष्ट्रपति से मुलाकात की तथा भारत के माननीय उप राष्ट्रपति के साथ बैठक की। वह माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। माननीय राष्ट्रपति आगंतुक मेहमानों के सम्मान में दावत भी दी। राष्ट्रपति न्यूसी तथा श्रीमती न्यूसी अपनी यात्रा के दौरान एक दिन के लिए अहमदाबाद भी गए। राष्ट्रपति न्यूसी भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम), अहमदाबाद के पुराने विद्यार्थी हैं, जहां उन्होंने 2003 में एक अल्पावधिक पाठ्यक्रम पूरा किया था। मोजांबिक के राष्ट्रपति इससे पहले 2011 में मोजांबिक के रक्षा मंत्री के रूप में भारत का दौरा कर चुके हैं।

2. मोजांबिक के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा मीडिया वक्तव्य के मुख्य आकर्षण हैं:

- प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति न्यासी का स्वागत किया जिन्होंने 2015 में पहले पद ग्रहण किया था। उन्होंने खुशी जताई कि पद संभालने के बाद भारत एशिया में उनका पहला गंतव्य-स्थान था।
- यह यात्रा खास थी क्योंकि यह मोजाम्बिक की स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ है और हमारे राजनयिक संबंधों की स्थापना की 40वीं वर्षगांठ है।
- अफ्रीका और हिंद महासागर हमारी विदेश नीति के लिए सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक हैं। मोजाम्बिक दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।
- मोजाम्बिक और भारत में सदियों पुराने व्यापार संबंध हैं। मोजाम्बिक में भारतीय मूल के 20,000 लोग हमारे बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। हमारे औपनिवेशिक अनुभवों और विकास आकांक्षाओं ने एक साझे दृष्टिकोण और एक मजबूत भागीदारी को अंजाम दिया है।
- मोजाम्बिक प्राकृतिक गैस, कोयला और अन्य खनिज पदार्थों का एक विशाल एवं समीपवर्ती स्रोत हो सकता है और ये सभी हमारे ग्रोथ को उत्प्रेरित करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यह कृषि क्षेत्र में भी अपार संभावनाएं पेश करता है।

- हाल के वर्षों में इन क्षेत्रों में भारतीय निवेश में काफी वृद्धि हुई है। अफ्रीका में भारतीय निवेश का लगभग 25% हिस्सा मोजाम्बिक में है। हमारा व्यापार पिछले पांच साल में पांच गुना बढ़ गया है।
- भारत कृषि, स्वास्थ्य, ऊर्जा, बुनियादी ढांचा और मानव संसाधन विकास सहित कई क्षेत्रों में मोजाम्बिक का विकास भागीदार बन कर काफी खुश है।
- अब जबकि हम मोजाम्बिक के साथ अपने संबंधों को और प्रगाढ़ करने और हिंद महासागर क्षेत्र और अफ्रीका में अपने संबंधों को बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं इसलिए, हमें इस बात की खुशी है कि राष्ट्रपति न्यूसी इस समय हमारे देश का दौरा कर रहे हैं।
- आज हमारे विचार विमर्श में, मैंने इस बात से अवगत करा दिया है कि अपने क्षेत्रीय भागीदार के रूप में हम मोजाम्बिक को कितना महत्व देते हैं। मैंने मोजाम्बिक की प्राथमिकताओं के अनुसार, अपनी विकास भागीदारी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता पर भी जोर दिया है।
- हमने अपने आर्थिक सहक्रियात्मक संबंधों और सहयोग के बारे में बात की। मैंने यह उम्मीद जताई कि मोजाम्बिक हाइड्रोकार्बन, खनिज पदार्थों और बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों के सहित भारत के निवेशों के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करता रहेगा। हम मापुटो में विद्युत आपूर्ति परियोजना के कार्यान्वयन में तेजी लाने के तरीके तलाशने के लिए सहमत हो गए हैं। यह परियोजना भारतीय ऋण-सुविधा द्वारा वित्त-पोषित की जा रही है।
- भारत ने कृषि और खाद्य सुरक्षा में भारत की पूरी सहायता और सहयोग का आश्वासन दिया है। बदले में, भारत भी मोजाम्बिक के कृषि क्षेत्र में होने वाले विकास से फायदा उठा सकता है।
- दोनों देशों ने आज अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप दिया। यह सतत विकास की दिशा में हमारे अपने-अपने प्रयासों का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसका इस साल विशेष महत्व हो जाता है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय समुदाय इस वर्ष बाद में पेरिस में जलवायु परिवर्तन पर एक समझौते को अंतिम रूप देने के लिए कदम आगे बढ़ा रहा है। भारत ने एक सौर पैनल असेम्बली संयंत्र स्थापित करने में मोजाम्बिक के साथ पहले ही भागीदारी की है।
- भारत और मोजाम्बिक में लम्बी-लम्बी सामुद्रिक तटरेखाएं हैं और ये दोनों हिंद महासागर से जुड़े हुए हैं। मैंने उन तौर-तरीकों पर चर्चा की है जिनके जरिए हम सामुद्रिक सुरक्षा और महासागरीय अर्थव्यवस्था में सहयोग में तेजी ला सकते हैं।
- हाल के वर्षों में, हमारे सहयोग में मोजाम्बिक के लिए जहाज यात्राएं और हाइड्रोग्राफी सर्वेक्षण शामिल रहे हैं।
- भारत और मोजाम्बिक ने 2011 में रक्षा मंत्री के रूप में भारत की उनकी पिछली यात्रा में मिली उपलब्धियों पर आगे बढ़ते हुए रक्षा के क्षेत्र में सहयोग के अन्य क्षेत्रों पर चर्चा की। भारत और मोजाम्बिक रक्षा सहयोग पर अपने संयुक्त कार्य समूह की अगली बैठक जल्द ही निर्धारित किए जाने पर सहमत हुए है।

- भारत और मोजाम्बिक आपसी हित के ढेरों क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी चर्चा की। भारत ने विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए मोजाम्बिक के समर्थन के प्रति उनका आभार व्यक्त किया।
- संयुक्त राष्ट्र के इस 70वें वर्ष में, प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र, विशेष रूप से सुरक्षा परिषद में तत्काल सुधार किए जाने की जरूरतों के प्रति दबाव बनाए जाने के लिए उनके समर्थन की मांग की।
- भारत को 2030 तक गरीबी के उन्मूलन पर ध्यान केन्द्रित किए जाने के साथ सतत विकास लक्ष्यों को अंतिम रूप दिए जाने का भी स्वागत करते हैं, सितंबर में 2015-उपरांत विकास कार्यसूची को अपनाए जाने की उम्मीद करते हैं।
- हमने इस साल बाद में पेरिस में एक प्रभावी जलवायु परिवर्तन समझौते की जरूरत पर भी बल दिया। यह समझौता विकासशील देशों को स्वच्छ ऊर्जा स्रोत अपनाने के लिए साधन और प्रौद्योगिकी प्रदान करेगा।

3. मोजाम्बिक के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित समझौतों / समझौता ज्ञापनों की सूची:

- नई और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग पर भारत सरकार के गणराज्य और मोजाम्बिक गणराज्य की सरकार के बीच समझौता ज्ञापन।

दक्षिण अफ्रीका

1. भारत-दक्षिण अफ्रीका संयुक्त मंत्रिस्तरीय आयोग के **9**वें सत्र में भाग लेने हेतु विदेश मंत्री ने **18-21** मई, **2015** को दक्षिण अफ्रीका की आधिकारिक यात्रा की।

मंत्री सुषमा स्वराज ने राष्ट्रपति जैकब जुमा से मुलाकात की और अक्टूबर 2015 में नई दिल्ली में होने वाले तीसरे भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन (आईएएफएस-III) में भाग लेने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति जैकब जुमा को निमंत्रण दिया। दक्षिण अफ्रीका ने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) की भारत की सदस्यता का समर्थन किया।

2. विदेश और प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्री सुषमा स्वराज और दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्री मैते नोकाना-मशाबेन द्वारा सह-अध्यक्षता में भारत-दक्षिण अफ्रीका संयुक्त मंत्रिस्तरीय आयोग (जेएमसी) का **9**वां सत्र **19** मई **2015** को डरबन में आयोजित किया गया था।

- दोनों विदेश मंत्री सहयोग के पांच वर्षीय सामरिक कार्यक्रम की रूपरेखा के तहत काम करने पर सहमत हुए। उन्होंने सहयोग के लिए प्राथमिकता के निम्नलिखित क्षेत्रों को चिन्हित किया : रक्षा, गहन खुदाई, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण तथा बीमा। इसे सुगम बनाने के लिए व्यापार एवं आर्थिक मामलों पर एक नए संयुक्त कार्य समूह का गठन किया जाएगा। इसके अलावा, दक्षिण अफ्रीकी पक्ष ने सुझाव दिया कि एक भारत - दक्षिण अफ्रीका तरजीही व्यापार करार (पीटीए) संपन्न करने के लिए वार्ता शुरू की जाए। भारतीय पक्ष ने इसका स्वागत किया।

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर एक नई उप-समिति का गठन करने और सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) में सहयोग को बढ़ावा देने का भी निर्णय लिया गया।
- दोनों मंत्रियों ने ब्रिक्स, आईबीएसए, आईओआरए, आतंकवाद विरोधी, साइबर सुरक्षा, बहुपक्षीय संस्थानों के सुधारों, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के तत्काल सुधार की आवश्यकता को स्वीकार किया और 2015 को सहमति व्यक्त की।
- मंत्री स्वराज और मंत्री माशाबेन ने 2017 में पारस्परिक रूप से सुविधाजनक तारीखों पर भारत में संयुक्त मंत्री आयोग का अगला सत्र आयोजित करने का निर्णय लिया।

3. दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति जुमा के साथ बैठक **(9 जुलाई 2015)**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति जुमा के नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीकी प्रतिनिधिमंडल के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। दोनों नेताओं ने चर्चा की कि भारत अफ्रीका शिखर सम्मेलन 2016 में भारत में आयोजित किया जाएगा। राष्ट्रपति जुमा ने आगामी शिखर सम्मेलन को भारत के साथ अफ्रीका की समस्याओं पर चर्चा करने और बहुपक्षीय बैठक के अलावा, भारतीय प्रधानमंत्री के साथ एक और द्विपक्षीय बैठक का अवसर प्रदान करने का एक बहुत ही उपयोगी अवसर बताया।

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधारों पर राष्ट्रपति जुमा ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अफ्रीका का प्रतिनिधित्व नहीं किया गया था और कहा कि सुधार आवश्यक थे। प्रधानमंत्री ने यह कहकर भी प्रतिक्रिया दी कि यह ऐसा नहीं था कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अफ्रीका जैसे महाद्वीप का प्रतिनिधित्व नहीं किया गया था।
- प्रधानमंत्री ने बुनियादी देशों के बीच सीओपी21 के लिए रणनीति मौजूद होने के महत्व का उल्लेख किया। दक्षिण अफ्रीका, फिर से ब्राजील की तरह, बेसिक का एक हिस्सा है।
- वह परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह के लिए भारत की सदस्यता के समर्थन में दक्षिण अफ्रीकी स्थिति के आगे की मुखरता के लिए भी तत्पर थे। भारत ने इस मुद्दे पर दक्षिण अफ्रीकी स्थिति की सराहना की और इस समर्थन को आगे बढ़ाने के लिए अनुरोध किया।
- दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंध के महत्वपूर्ण पहलुओं, विशेष रूप से रक्षा, नौसेना के संयुक्त अभ्यास में सहयोग पर चर्चा की। 2016 में आने वाली इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू में उल्लेख किया गया था कि दक्षिण अफ्रीका कहां मौजूद होगा। और प्रधानमंत्री ने आशा व्यक्त की कि उसके बाद संयुक्त अभ्यास का आयोजन हो सकता है।
- दोनों नेताओं ने रक्षा उत्पादन और संयुक्त उत्पादन और साथ ही खनन क्षेत्र में आगे सहयोग की संभावनाओं पर दोनों पक्षों की कंपनियों से ब्याज पर चर्चा की।

II. तंजानिया

1. संयुक्त गणराज्य तंजानिया की राष्ट्रपति महामहिम श्री जकाया किकवेटी और श्रीमती सलमा किक्वेते की भारत यात्रा, **17** से **21** जून**, 2015**

तंजानिया संयुक्त गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री जकाया मृशो किकवेटी ने 17 से 21 जून, 2015 के दौरान भारत का राजकीय दौरा किया। उनके साथ मंत्रियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों सहित एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल भी था और एक वरिष्ठ कारोबारी शिष्टमंडल भी आया था। तंजानिया के राष्ट्रपति इससे पहले भारत - अफ्रीकी मंच की पहली शिखर बैठक के अवसर पर अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष के रूप

में 2008 में भारत के दौरे पर आ चुके हैं। यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति किकवेटी भारत के माननीय राष्ट्रपति से मुलाकात की तथा माननीय उप राष्ट्रपति के साथ बैठक की। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। राष्ट्रपति किकवेटी के सम्मान में राष्ट्रपति ने दावत भी रखी।

2. प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त गणराज्य तंजानिया के राष्ट्रपति की राज्य यात्रा के दौरान मीडिया को संबोधित किया। उनके कथन की मुख्य विशेषताएं हैं:

- पीएम मोदी ने राष्ट्रपति किकवेटी की मेजबानी करने पर अपनी सरकार की खुशी जाहिर की।
- भारत, भारत के साथ संबंधों के लिए राष्ट्रपति किकवेते की मजबूत प्रतिबद्धता को महत्व देता है।
- भारत और तंजानिया हिंद महासागर के माध्यम से जुड़े हुए हैं, और इसकी धाराओं ने सदियों पुराने मानव संबंध है। यह रिश्ता तंजानिया में भारतीय मूल के लगभग 50,000 लोगों से जुड़ा है। दोनों में उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष के साझा इतिहास का एक भावनात्मक बंधन है।
- भारत तंजानिया का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और लंबे समय तक विकास भागीदार है। व्यापार 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का है और भारत के पक्ष में है। तंजानिया में भारतीय निवेश 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है और कई क्षेत्रों को कवर करता है।
- भारत में 2000 तंजानियाई छात्र हैं। भारत तंजानिया में ई-पर्यटक वीजा योजना का विस्तार करने वाला है।
- हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा और शांतिपूर्ण तथा समृद्ध अफ्रीका में दोनों की समान रुचि है। अपने-अपने क्षेत्रों में आतंकवाद दोनों देशों के लिए एक चिंता का विषय है। दोनों ने आतंकवाद का मुकाबला करने में सहयोग को मजबूत करने हेतु एक संयुक्त कार्यदल की स्थापना पर सहमति व्यक्त की है।
- तंजानिया में प्राकृतिक गैस क्षेत्र के क्षेत्र में सहयोग, महासागरीय अर्थव्यवस्था, तंजानिया में मानव संसाधन, स्वास्थ्य सेवा, कृषि, संस्थानों और बुनियादी ढाँचे के विकास, आपसी हित के क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी चर्चा की और आतंकवाद और समुद्री सुरक्षा में सहयोग का विस्तार किया।
- समुद्री अर्थव्यवस्था क्षेत्र में उनके सहयोग के लिए हाइड्रोग्राफी पर समझौता एक महत्वपूर्ण कदम है।
- आपसी हित के क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की और आतंकवाद और समुद्री सुरक्षा में सहयोग का विस्तार करने के लिए तैयार हैं।
- भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट के लिए भारत की उम्मीदवारी के लिए तंजानिया के समर्थन की बहुत सराहना करता है।

3. तंजानिया के साथ समझौता ज्ञापन / परियोजना पर हस्ताक्षर / आदान-प्रदान

यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने पांच समझौतों पर हस्ताक्षर किए। हस्ताक्षरित समझौतों की सूची और परियोजनाओं का विवरण इस प्रकार है:

- सरकारी सांख्यिकी में ईएएसटीसी तथा अफ्रीका के अन्य देशों के स्टाफ के क्षमता निर्माण के लिए सरकारी सांख्यिकी में सहयोगात्मक कार्यक्रम स्थापित करने के लिए तंजानिया के पूर्वी अफ्रीका सांख्यिकी प्रशिक्षण केन्द्र (ईएएसटीसी) और भारत की राष्ट्रीय सांख्यिकी प्रणाली प्रशिक्षण अकादमी (एनएसएसटीए) के बीच एमओयू।

- कृषि सांख्यिकी, कंप्यूटर एप्लीकेशन तथा जैव सूचना विज्ञान में ईएएसटीसी तथा अफ्रीका के अन्य देशों के स्टाफ के लिए क्षमता निर्माण हेतु ईएएसटीसी और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) - भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईएएसआरआई) के बीच एमओयू।
- पर्यटन तथा अतिथि सत्कार के क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग पर एमओयू।
- लेक विक्टोरिया पाइप लाइन परियोजना के विस्तार के लिए 268.35 मिलियन अमरीकी डालर के लिए एल ओ सी पर एग्जिम बैंक और तंजानिया सरकार के बीच ऋण करार तथा ऋण सहायता को शुरू करने के लिए एग्जिम बैंक एवं तंजानिया सरकार के बीच करार।
- लेक विक्टोरिया पाइप लाइन परियोजना के लिए डी पी आर तैयार करने के लिए वापकोस (जल संसाधन मंत्रालय के अधीन पी एस यू) और तंजानिया सरकार के बीच करार तथा वापकोस को पी एम सी के रूप में नियुक्त करने के लिए वापकोस एवं तंजानिया सरकार के बीच करार।
- सर्वेक्षण के आयोजन, डाटा के आदान प्रदान, क्षमता निर्माण और अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण के माध्यम से जल विज्ञान के क्षेत्र में विकास एवं सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत और तंजानिया के बीच जल विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग के लिए एम ओ यू तथा जल विज्ञानी डाटा के आदान प्रदान पर प्रोटोकाल।

6. हिंद महासागर द्वीप राज्य

I. मालदीव

1. विदेश मंत्री की मालदीव यात्रा, **11** अक्टूबर, **2015**

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 10 और 11 अक्टूबर, 2015 को मालदीव का दौरा किया। उन्होंने भारत – मालदीव संयुक्त आयोग की पांचवी बैठक की सह अध्यक्षता की। 1986 में आर्थिक और तकनीकी सहयोग करार के तहत संयुक्त आयोग का गठन किया गया था तथा इसकी पहली बैठक माले में 1990 में हुई थी। नवंबर, 2011 में हस्ताक्षरित रूपरेखा सहयोग करार ने रक्षा एवं सुरक्षा के मुद्दों को शामिल करने के लिए इसके क्षेत्रगत दायरे को विस्तृत करने के लिए संयुक्त आयोग को अधिदेश दिया।

मालदीव की अपनी यात्रा के दौरान विदेश मंत्री ने मालदीव गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री अब्दुल्ला यमीन अब्दुल गयूम से मुलाकात की। मालदीव के राष्ट्रपति के साथ चर्चा भारत और मालदीव के बीच विशेषाधिकारप्राप्त संबंध को दर्शाती है। विदेश मंत्री ने भारत सरकार की 'पड़ोसी पहले' की नीति पर जोर दिया। राष्ट्रपति यमीन ने भारत – मालदीव संबंधों को और मजबूत बनाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। राष्ट्रपति यमीन और विदेश मंत्री ने भारत और मालदीव के बीच बहु-आयामी संबंधों की गुणवत्ता बढ़ाने तथा हिंद महासागर क्षेत्र की साझी चुनौतियों से निपटने पर विचारों का आदान – प्रदान किया। राष्ट्रपति यमीन ने कहा कि मालदीव 2016 में भारत में एक निवेश फोरम का आयोजन करेगा, जो 'मालदीव आओ' वर्ष भी है। उन्होंने मालदीव की 'भारत पहले' की नीति को दोहराया।

संयुक्त आयोग के बाद विदेश मंत्री ने आर्थिक विकास मंत्री श्री मोहम्मद सईद और स्वास्थ्य मंत्री सुश्री इरथीशाम एडम के साथ बैठकें की। अपनी यात्रा के दौरान, विदेश मंत्री ने अतिथि सत्कार तथा पर्यटन अध्ययनों के लिए भारत – मालदीव मैत्री संकाय में मालदीव में भारतीय समुदाय के साथ भी बातचीत की।

संयुक्त आयोग की बैठक के दौरान अपनी चर्चाओं ने विदेश मंत्री तथा मालदीव की विदेश मंत्री माननीया श्रीमती दून्या मौमून ने संबंध के सभी क्षेत्रों की समीक्षा की। इन चर्चाओं का विशेष महत्व केवल इसलिए नहीं है कि संयुक्त आयोग की बैठक 15 साल के अंतराल के बाद हुई है अपितु इसलिए भी है कि यह बैठक भारत और मालदीव के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ के वर्ष में भी हुई है।

चर्चा परंपरागत गर्मजोशी एवं मैत्री के माहौल में, परस्पर सम्मान तथा एक – दूसरे के हितों के प्रति संवेदनशीलता के माहौल में हुई, जो भारत और मालदीव के बीच जीवंत एवं मजबूत संबंधों की विशेषता रही है।

- रक्षा और सुरक्षा संबंध पहली बार संयुक्त आयोग में अग्रदर्शी चर्चा का हिस्सा था। चल रहे सहयोग की समीक्षा की गई तथा भावी आवश्यकताओं पर विचार – विमर्श हुआ। भारत – मालदीव रक्षा सहयोग के तहत अन्य बातों के साथ मालदीव के राष्ट्रीय रक्षा बलों के लिए एक संयुक्त प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण, संयुक्त गश्त, भारत में एम एन डी एफ अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, चिकित्सा शिविर, संयुक्त अभ्यास आदि शामिल हैं। मालदीव पक्ष ने मालदीव में विमानन की क्षमता के विकास में भारत द्वारा प्रदान किए गए उन्नत लाइट हैलिकाप्टर की उपयोगिता को स्वीकार किया। हमने इस माह के उत्तरार्ध में गोवा में अगले दोस्ती अभ्यास में मालदीव की भागीदारी का स्वागत किया। दोनों मंत्रियों ने यह राय व्यक्त की कि द्विपक्षीय साझेदारी हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा बनाए रखने के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह महसूस किया गया कि सहयोग में वृद्धि से कट्टरवाद एवं आतंकवाद

से साझे खतरे से निपटने और इस क्षेत्र में दवाओं की तस्करी तथा आतंकवाद के वित्त पोषण की बढ़ती समस्या से लड़ने में मदद मिलेगी।

- संयुक्त आयोग की चर्चा में व्यापार एवं निवेश संबंधों में वृद्धि तथा दोनों देशों के बीच विकास साझेदारी का समर्थन किया गया। दोनों मंत्रियों ने विभिन्न उपायों पर चर्चा की जिनकी सिफारिश इस उद्देश्य के लिए की जा सकती है। मालदीव में भारतीय कंपनियों के अनुभव की समीक्षा की गई। संयुक्त आयोग ने एक संयुक्त व्यवसाय मंच की स्थापना का प्रस्ताव किया तथा सुझाव दिया कि 2016 के लिए एक निवेश उन्मुख फोरम कलेंडर का हिस्सा होना चाहिए। दोनों पक्षों ने व्यवसाय दर व्यवसाय संबंध में वृद्धि के सकारात्मक प्रभाव एवं निजी क्षेत्रों के लिए भागीदारी की अधिक भूमिका को सुगम बनाने के महत्व को स्वीकार किया। संयुक्त आयोग में माल एवं सेवाओं में व्यापार बढ़ाने के लिए और उपायों का पता लगाने और दोनों देशों के बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्रों में संबंधों को सुदृढ़ करने पर सहमति हुई। मालदीव पक्ष ने आई-हैवन और हुलहुलमेल यूथ सिटी परियोजनाओं के लिए भारत में निजी निवेशकों के साथ शामिल होने में अपनी रूचि को दोहराया। भावी सहयोग के लिए पर्यटन, मछली पालन, शिक्षा, आईटी, अवसंरचना विकास, ऊर्जा सहयोग एवं नवीकरणीय ऊर्जा तथा परंपरागत दवा जैसे क्षेत्रों की पहचान की गई। दोनों देश दोहरा कराधान परिहार तथा कर सूचना विनिमय पर जल्दी से करारों पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी हुए। वे जल्दी से अंतिम रूप देने के लिए निवेश संवर्धन एवं संरक्षण करार पर विचार करने के लिए भी राजी हुए।
- स्वास्थ्य क्षेत्र द्विपक्षीय सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। दोनों देशों ने अल्प, मध्यम एवं दीर्घ अवधि की साझेदारी पर 2014 में एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया था। संयुक्त आयोग में इस बात सहमति हुई कि इस एम ओ यू के कार्यान्वयन की निगरानी करने के लिए जल्दी से एक कार्य समूह का गठन किया जाना चाहिए। इंदिरा गांधी स्मारक अस्पताल (आई जी एम एच) में द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा की गई। आईजीएमएच तथा पी जी आई, चंडीगढ़ के बीच टेली मेडिसीन संबंध को सुदृढ़ करने और असांधा स्कीम के तहत मालदीव के नागरिकों को भारत में उपलब्ध स्पेशियलिटी अस्पतालों की संख्या बढ़ाने पर सहमति हुई। मालदीव पक्ष ने मालदीव में अधुनातन राष्ट्रीय नैदानिक केंद्र स्थापित करने के लिए भारतीय सहायता का अनुरोध किया। मालदीव के स्वास्थ्य पेशेवरों का प्रशिक्षण जारी रखने तथा आई जी एम एच ने भारतीय विशेषज्ञ डाक्टरों की प्रतिनियुक्ति पर सहमति थी। दोनों पक्ष परंपरागत दवा के क्षेत्र में एक सहयोग रूपरेखा तैयार करने पर सहमत हुए।
- साझे जनांकिकीय युवा लाभांश के साथ दोनों विदेश मंत्रियों ने मानव संसाधन विकास तथा शिक्षा, कौशल विकास एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण में सहयोग बढ़ाने पर विशेष बल दिया। अतिथि सत्कार तथा पर्यटन अध्ययन के संकाय में सहयोग आगे बढ़ाने पर सहमति हुई। मालदीव पक्ष ने मालदीव के विद्यालयों के लिए एक ई-लाइब्रेरी स्थापित करने के लिए संयुक्त पहल तथा मालदीव राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में एक हिंदी भाषा पीठ स्थापित करने के लिए भारतीय पहल का स्वागत किया।
- कांसुलर मामलों तथा सामुदायिक मुद्दों की भी समीक्षा की गई। भारतीय पक्ष ने सजायाफ्ता व्यक्तियों के अंतरण पर करार की मालदीव द्वारा पुष्टि का स्वागत किया। संयुक्त आयोग ने दोनों देशों के बीच मजदूरों के रोजगार पर एम ओ यू को जल्दी से अंतिम रूप देने की आवश्यकता के महत्व को स्वीकार किया।
- वर्ष 1983 से भारत और मालदीव के बीच एक सांस्कृतिक सहयोग करार है। संयुक्त आयोग ने इस करार को संशोधित करने का सुझाव दिया। दोनों पक्ष पुरातात्विक संरक्षण एवं जीर्णोद्धार के क्षेत्र में सहयोग पर एम ओ यू को अंतिम रूप देने के लिए सहमत हुए। संयुक्त आयोग ने दोनों देशों के बीच पर्यटकों की मात्रा और बढ़ाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक एम ओ यू की गति तेज करने का सुझाव दिया।

- संयुक्त आयोग ने संयुक्त आयोग की बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में भारत और मालदीव के विदेश सेवा संस्थानों के बीच एम ओ यू तथा युवा कार्यक्रम एवं खेल पर एम ओ यू पर हस्ताक्षर होने का स्वागत किया।
- मालदीव ने सार्क क्षेत्र के लिए उपग्रह के लिए आर्बिट फ्रीक्वेंसी समन्वय पर करार में शामिल होने के लिए आंतरिक प्रक्रियाओं में प्रगति के लिए भी भारत की प्रशंसा की।
- मालदीव ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य के रूप में भारत की उम्मीदवारी के लिए अपने मजबूत समर्थन को दोहराया।
- भारत – मालदीव संयुक्त आयोग की अगली बैठक भारत में 2017 में होगी। विदेश मंत्री तथा मालदीव के विदेश मंत्री दोनों ने संयुक्त आयोग की अगली बैठक की तैयारी के लिए 2016 में एक समीक्षा बैठक आयोजित करने का कार्य अपने वरिष्ठ अधिकारियों को सौंपा है।

II. मॉरीशस

1. पीएम नरेंद्र मोदी की मॉरीशस यात्रा, **10-11** मार्च **2015**

मॉरीशस की पीएम यात्रा के दौरान, भारत ने प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए मॉरीशस को 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट की पेशकश की। दोनों देशों ने महासागर अर्थव्यवस्था सहित पांच समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

- *प्रधान मंत्री की मॉरीशस यात्रा के दौरान भारत और मॉरीशस के बीच पांच समझौतों / समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं:*
  - महासागर अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भारत गणराज्य और मॉरीशस गणराज्य के बीच समझौता ज्ञापन। यह एमओयू महासागर अर्थव्यवस्था, जो हिंद महासागर क्षेत्र में संपोषणीय विकास का एक नया एवं महत्वपूर्ण क्षेत्र है, के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करेगा। इसमें समुद्री संसाधन, मछली पालन, हरित पर्यटन, महासागर प्रौद्योगिकी के अनुसंधान एवं विकास, विशेषज्ञों के आदान – प्रदान तथा अन्य संबंधित गतिविधियों के लिए परस्पर लाभप्रद सहयोग का प्रावधान है।
  - वर्ष 2015-18 के लिए भारत गणराज्य और मॉरीशस गणराज्य के बीच सांस्कृतिक सहयोग कार्यक्रम।
  - भारत से ताजे आम के आयात के लिए भारत गणराज्य के कृषि और सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय और मॉरीशस गणराज्य के कृषि उद्योग एवं खाद्य सुरक्षा मंत्रालय के बीच प्रोटोकाल।
  - मॉरीशस के अगालेगा द्वीप पर समुद्री एवं हवाई परिवहन की सुविधाओं में सुधार के लिए समझौता ज्ञापन
  - दवा एवं होमियोपैथी की परंपरागत पद्धति के क्षेत्र में सहयोग पर एमओयू।
- भारत ने दूसरे साइबर शहर के निर्माण के लिए समर्थन की पेशकश की। एक दशक पहले, भारत ने मॉरीशस में पहला साइबर सिटी बनाने में मदद की थी।
- भारत और मॉरीशस ने अपने दोहरे कराधान से बचाव कन्वेंशन के संशोधन पर चर्चा की।
- पीएम मोदी ने मॉरीशस द्वारा कराधान पर सूचना के आदान-प्रदान की पेशकश और सहयोग के लिए गहरी सराहना की।
- मॉरीशस ने अपनी महासागर अर्थव्यवस्था के विकास में - मछली पकड़ने से लेकर पर्यटन तक में बड़ा विजन दर्शाया है और भारत ने भी ऐसा करने की अपनी इच्छा दिखाई है।
- मॉरीशस में ऑफशोर पैट्रोल वेसल (ओपीवी) बाराकुडा (12 मार्च, 2015) के अवसर पर पीएम

ने भाग लेने और महासागर अर्थव्यवस्था को विकसित करने में शामिल होने के अपने इरादे के बारे में बताया।

2. प्रधानमंत्री की मॉरीशस यात्रा पर राज्यसभा में विदेश मंत्री द्वारा वक्तव्य (**18** मार्च**, 2015) -** मुख्य बातें:

यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री मोदी ने मॉरीशस सरकार द्वारा चिन्हित की जाने वाली परियोजना के लिए 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट की घोषणा की। भारत और मॉरीशस ने पांच द्विपक्षीय दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए: एजलेगा द्वीप पर समुद्र और वायु परिवहन सुविधाओं के विकास, समुद्र की अर्थव्यवस्था में सहयोग, चिकित्सा और होम्योपैथी की पारंपरिक प्रणालियों में सहयोग, 2015-18 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और भारत से आम का आयात।

III. सेशेल्स

1. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने **10** मार्च से **11** मार्च**, 2015** तक सेशेल्स की यात्रा की।

   यात्रा के दौरान, दोनों पक्षों ने चार प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर किए:

   - अन्य देशों को बिक्री के लिए हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा, बुनियादी ढांचे के विकास और संयुक्त रूप से नेविगेशन चार्ट और इलेक्ट्रॉनिक नेविगेशनल चार्ट विकसित करना।
   - सेशेल्स और भारत ने नीली अर्थव्यवस्था पर सहयोग का विस्तार करने के लिए एक संयुक्त कार्यदल की स्थापना पर सहमति व्यक्त की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इस सहयोग से समुद्री पारिस्थितिकी और संसाधनों के बारे में भारत की समझ बढ़ेगी, साथ ही यह एक स्थायी और संतुलित तरीके से महासागर की नई संभावनाओं का दोहन करने की अपनी क्षमता में सुधार करेगा।
   - प्रधानमंत्री को उम्मीद है कि सेशेल्स जल्द ही भारत, मालदीव और श्रीलंका के बीच समुद्री सुरक्षा सहयोग में एक पूर्ण भागीदार होगा। भारत सेशेल्स के नागरिकों को तीन महीने के लिए मुफ्त वीजा देने पर सहमत हुआ।

2. प्रधानमंत्री की सेशेल्स**,** मॉरीशस और श्रीलंका की यात्रा पर राज्यसभा में विदेश मंत्री द्वारा वक्तव्य **(18** मार्च**,2015) -** मुख्य बातें**:**

   - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति जेम्स माइकल के साथ द्विपक्षीय बैठक की। बैठक के दौरान आर्थिक, बुनियादी ढांचे और समुद्री सहयोग के मुद्दों पर चर्चा की गई।
   - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के सहयोग से स्थापित तटीय निगरानी रडार प्रणाली का उद्घाटन किया। पीएम ने सरकार के वरिष्ठ नेताओं के साथ मुलाकात की और भारतीय समुदाय को संबोधित किया।
   - एक दूसरे डोर्नियर विमान का उपहार, तीन महीने की अवधि के लिए वीज़ा प्रदान करने और इलेक्ट्रॉनिक यात्रा प्राधिकरण (ईटीए) योजना में सेशेल्स को शामिल करने के लिए यात्रा के कुछ प्रमुख परिणाम थे।
   - दोनों पक्षों ने चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए। हस्ताक्षर किए गए समझौतों / समझौता ज्ञापनों में शामिल हैं- धारण द्वीप पर अवस्थापना सुविधाओं का विकास, नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग, हाइड्रोग्राफी में सहयोग और नेविगेशनल चार्ट की बिक्री। भारत और सेशेल्स ने ब्लू इकोनॉमी में सहयोग पर एक संयुक्त कार्यकारी समूह स्थापित करने का निर्णय लिया।

3. सेशेल्स के राष्ट्रपति का भारत दौरा **(25-27** अगस्त**, 2015)**

करारों/एमओयू की सूची जिन पर सेशल्स गणराज्य के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए

- भारत और सेशल्स के बीच वायु सेवा करार;
- एक डोर्नियर समुद्री एयरक्राफ्ट प्रदान करने के लिए भारत और सेशल्स के बीच एमओयू;
- करों के संबंध में सूचना के आदान – प्रदान के लिए भारत और सेशल्स के बीच करार;
- कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा में सहयोग के लिए आई सी ए आर और सेशल्स कृषि एजेंसी के बीच एमओयू;
- नीली अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सहयोग की रूपरेखा पर भारत और सेशल्स के बीच प्रोटोकॉल;
- नौप्रेषण चार्ट की प्रस्तुति (अल्डाब्रा द्वीप से संबंधित)

7. लैटिन अमेरिका और कैरेबियन

I. अर्जेंटीना

अर्जेंटीना के विदेश मामलों के सचिव, राजदूत एडुआर्डो अंटोनियो ज़्यूइन ने सभी क्षेत्रों (02 जुलाई 2015) में भारत-अर्जेंटीना सहयोग के विस्तार को जानने हेतु भारतीय अधिकारियों के साथ मुलाकात की।

II. अंतिगुया और बार्बूडा

विदेश मंत्रालय के सचिव, आर. स्वामीनाथन ने 24-25 जुलाई, 2015 को अंतिगुआ और बार्बूडा का दौरा किया, जहां उन्होंने निवेश, पारंपरिक चिकित्सा, तकनीकी सहयोग का आदान-प्रदान, सीएआरआरआईसीओएम, सीईएलएसी और यूएनएससी सुधार सहित द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की।

III. ब्राजील

1. द्विपक्षीय बैठक, **09** जुलाई **2015**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उफा ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मौके पर ब्राजील की राष्ट्रपति डिल्मा रूसेफ के साथ द्विपक्षीय बैठक की। ब्राजील के फोर्टालेजा में ब्रिक्स की बैठक और फिर नवंबर में ब्रिस्बेन में जी20 शिखर सम्मेलन के बाद यह उनकी तीसरी बैठक थी।

- दोनों नेताओं ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि दोनों देशों के बीच रणनीतिक संबंध और मजबूत होने चाहिए। दोनों नेताओं ने विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जिसमें कृषि में सहयोग, रक्षा उद्योग में सहयोग की संभावनाएं शामिल थीं।
- प्रधानमंत्री ने ब्राजील के राष्ट्रपति से उस सूची के विस्तार में सहायता का अनुरोध किया, जिसे भारत-मर्कसुर अधिमान्य व्यापार समझौते द्वारा बनाया गया है। यह सूची वर्तमान में 450 मदों पर है, और भारत इसे लगभग 2,000 वस्तुओं तक बढ़ाना चाहेगा। यह भारत-ब्राजील द्विपक्षीय व्यापार को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करेगा। ब्राजील के राष्ट्रपति ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।
- ब्राजील के राष्ट्रपति ने 2016 में ब्राजील में आयोजित होने वाले इंटरनेट प्रशासन पर अगले सम्मेलन में प्रमुख भारतीय भागीदारी के लिए अनुरोध किया।
- प्रधानमंत्री मोदी ने ब्राजील के राष्ट्रपति को यह बताया कि उन्हें जलवायु परिवर्तन पर निकट सहयोग की आवश्यकता है और बीएएसआईसी देशों को एक साथ काम करना चाहिए और उनकी स्पष्ट रणनीति होनी चाहिए क्योंकि वे सीओपी21 की ओर जाते हैं, जो विकासशील देशों के हितों का ध्यान रखेंगे।

2. द्विपक्षीय वार्ता और पहला कांसुलर संवाद, **23** जुलाई **2015**

उफा में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग पर राष्ट्रपति डिल्मा रूसेफ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए निर्देशों के कार्यान्वयन पर चर्चा करने हेतु भारत और ब्राजील के बीच द्विपक्षीय वार्ता 20 जुलाई, 2015 को आयोजित की गई थी। दोनों पक्ष संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद

सुधार के लिए जी-4 के भीतर अपने प्रयासों में समन्वय करने; जलवायु परिवर्तन पर बीएएसआईसी में एक साथ मिलकर काम करने, और आईबीएसए को फिर से महत्वपूर्ण बनाने पर सहमत हुए।

3. 7वें भारत-ब्राजील संयुक्त आयोग की बैठक और सहमत कार्यवृत्त पर संयुक्त वक्तव्य **(18-19** नवंबर**, 2015)**

7वें भारत-ब्राजील संयुक्त आयोग की बैठक (जेसीएम) की अध्यक्षता विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और उनके ब्राजील के समकक्ष माउरो वीइरा ने 19 नवंबर 2015 को नई दिल्ली में की।

संयुक्त बयान में कहा गया है कि भारत और ब्राजील के बीच 2006 में स्थापित रणनीतिक साझेदारी ब्रिक्स, इब्सा, जी-4, जी-20, बेसिक तथा संयुक्त राष्ट्र के बहुपक्षीय संदर्भ में दोनों देशों के बीच घनिष्ठता से सहयोग और गहन हुआ है। सहमत कार्यवृत्त में रिश्ते के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई:

- सामरिक साझेदारी: मंत्रियों ने सहमति व्यक्त की कि द्विपक्षीय सहयोग, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों का जायजा लेने के लिए "विदेश कार्यालय परामर्श" आयोजित करने हेतु वरिष्ठ अधिकारी स्तर पर एक तंत्र होना चाहिए। दोनों पक्षों ने इंट्रा-आईबीएसए सहयोग को सुव्यवस्थित करने की प्राथमिकता को रेखांकित किया, जिससे उनकी प्रभावशीलता को बढ़ाते हुए, सहयोग की सबसे आशाजनक धाराओं को गहरा किया। उन्होंने सरकार दर सरकार, व्यवसाय दर व्यवसाय और व्यक्ति दर व्यक्ति क्षेत्राधिकार में व्यापक श्रेणी के मुद्दों पर परस्पर लाभप्रद सहयोग को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।
- सहयोग के अन्य क्षेत्रों में शामिल हैं: व्यापार और निवेश, खनन और ऊर्जा, कृषि और खाद्य प्रसंस्करण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, रक्षा, पर्यावरण और सतत विकास, तकनीकी सहयोग, स्वास्थ्य और चिकित्सा, शिक्षा, संस्कृति, पर्यटन, खेल, वाणिज्य सहयोग, संसदीय आदान-प्रदान, क्षेत्रीय कार्य समूह की बैठक, साइबर सुरक्षा, आतंकवाद और क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दे।

4. ब्राजील के राष्ट्रपति के साथ बैठक डिल्मा रूसेफ (9 जुलाई 2015)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उफा ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मौके पर ब्राजील की राष्ट्रपति डिल्मा रूसेफ के साथ द्विपक्षीय बैठक की। ब्राजील के फोर्टालेजा में ब्रिक्स की बैठक और फिर नवंबर में ब्रिस्बेन में जी20 शिखर सम्मेलन के बाद यह उनकी तीसरी बैठक थी।

- दोनों नेताओं ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि दोनों देशों के बीच रणनीतिक संबंध और मजबूत होने चाहिए। दोनों नेताओं ने विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जिसमें कृषि में सहयोग, रक्षा उद्योग में सहयोग की संभावनाएं शामिल थीं।
- प्रधानमंत्री ने ब्राजील के राष्ट्रपति से उस सूची के विस्तार में सहायता का अनुरोध किया, जिसे भारत-मर्कसुर अधिमान्य व्यापार समझौते द्वारा बनाया गया है। यह सूची वर्तमान में 450 मदों पर है, और भारत इसे लगभग 2,000 वस्तुओं तक बढ़ाना चाहेगा। यह भारत-ब्राजील द्विपक्षीय व्यापार को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करेगा। ब्राजील के राष्ट्रपति ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।
- ब्राजील के राष्ट्रपति ने 2016 में ब्राजील में आयोजित होने वाले इंटरनेट प्रशासन पर अगले सम्मेलन में प्रमुख भारतीय भागीदारी के लिए अनुरोध किया।
- प्रधानमंत्री मोदी ने ब्राजील के राष्ट्रपति को यह बताया कि उन्हें जलवायु परिवर्तन पर निकट

सहयोग की आवश्यकता है और बीएएसआईसी देशों को एक साथ काम करना चाहिए और उनकी स्पष्ट रणनीति होनी चाहिए क्योंकि वे सीओपी21 की ओर जाते हैं, जो विकासशील देशों के हितों का ध्यान रखेंगे।

5. भारत और ब्राजील के बीच द्विपक्षीय वार्ता, ब्रासीलिया, 20 जुलाई 2015

उफा में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग पर राष्ट्रपति डिल्मा रूसेफ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए निर्देशों के कार्यान्वयन पर चर्चा करने हेतु भारत और ब्राजील के बीच द्विपक्षीय वार्ता 20 जुलाई, 2015 को ब्रासीलिया में आयोजित की गई थी। दोनों पक्ष संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार के लिए जी-4 के भीतर अपने प्रयासों में समन्वय करने; जलवायु परिवर्तन पर बीएएसआईसी में एक साथ मिलकर काम करने, और आईबीएसए को फिर से महत्वपूर्ण बनाने पर सहमत हुए।

6. 7वें भारत-ब्राजील संयुक्त आयोग की बैठक पर संयुक्त वक्तव्य (18-19 नवंबर, 2015)

7वें भारत-ब्राजील संयुक्त आयोग की बैठक (जेसीएम) की अध्यक्षता विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और उनके ब्राजील के समकक्ष माउरो वीइरा ने 19 नवंबर 2015 को नई दिल्ली में की।

संयुक्त बयान में कहा गया है कि भारत और ब्राजील के बीच 2006 में स्थापित रणनीतिक साझेदारी ब्रिक्स, इब्सा, जी-4, जी-20, बेसिक तथा संयुक्त राष्ट्र के बहुपक्षीय संदर्भ में दोनों देशों के बीच घनिष्ठता से सहयोग और गहन हुआ है। सहमत कार्यवृत्त में रिश्ते के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई:

- सामरिक साझेदारी: मंत्रियों ने सहमति व्यक्त की कि द्विपक्षीय सहयोग, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों का जायजा लेने के लिए "विदेश कार्यालय परामर्श" आयोजित करने हेतु वरिष्ठ अधिकारी स्तर पर एक तंत्र होना चाहिए। दोनों पक्षों ने इंट्रा-आईबीएसए सहयोग को सुव्यवस्थित करने की प्राथमिकता को रेखांकित किया, जिससे उनकी प्रभावशीलता को बढ़ाते हुए, सहयोग की सबसे आशाजनक धाराओं को गहरा किया। उन्होंने सरकार दर सरकार, व्यवसाय दर व्यवसाय और व्यक्ति दर व्यक्ति क्षेत्राधिकार में व्यापक श्रेणी के मुद्दों पर परस्पर लाभप्रद सहयोग को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।
- सहयोग के अन्य क्षेत्रों में शामिल हैं: व्यापार और निवेश, खनन और ऊर्जा, कृषि और खाद्य प्रसंस्करण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, रक्षा, पर्यावरण और सतत विकास, तकनीकी सहयोग, स्वास्थ्य और चिकित्सा, शिक्षा, संस्कृति, पर्यटन, खेल, वाणिज्य सहयोग, संसदीय आदान-प्रदान, क्षेत्रीय कार्य समूह की बैठक, साइबर सुरक्षा, आतंकवाद और क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दे।

IV. गुयाना के सहकारी गणराज्य

1. गुयाना सहकारी गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम डोनाल्ड रबींद्रनाथ रामोतार 7 से 12 जनवरी, 2015 के दौरान भारत की आधिकारिक यात्रा की।

वह 8-9 जनवरी, 2015 को गुजरात के गांधीनगर में आयोजित होने वाले प्रवासी भारतीय दिवस में मुख्य अतिथि थे। उन्हें इस आयोजन के दौरान प्रवासी भारतीय सम्मान से सम्मानित किया गया था। यात्रा के दौरान यूएस 59 मिलियन अमेरिकी डॉलर के बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं के लिए भारतीय लाइन्स ऑफ क्रेडिट (एलओसी) की घोषणा की गई थी। एलओसी पर नए ईस्ट बैंक डेमेरारा-ईस्ट कोस्ट डेमेरारा बाईपास रोड पर 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर और गुयाना के लिए 9 मिलियन अमेरिकी डॉलर में एक यात्री नौका के वित्त पोषण की उम्मीद है। भारत सरकार द्वारा गुयाना में आईटी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस

की स्थापना हेतु यात्रा के दौरान और भारत आने वाले गुयाना नागरिकों के लिए भारत में 'वीजा ऑन अराइवल' की भी घोषणा की गई।

V. कोस्टा रिका

1. विदेश राज्य मंत्री की सैन जोस, कोस्टा रिका की आधिकारिक यात्रा (**23** जुलाई **2015)**

जनरल वी. के. सिंह, विदेश राज्य मंत्री ने 21 से 22 जुलाई, 2015 तक सैन जोस, कोस्टा रिका की आधिकारिक यात्रा की, जहां उन्होंने भारत-कोस्टा रिका द्विपक्षीय संबंधों की पूरी श्रृंखला पर चर्चा की और विशेष रूप से भारत-एसआईसीए (मध्य अमेरिकी एकीकरण प्रणाली) से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की और मई 2015 में आयोजित अंतिम मंत्रिस्तरीय बैठक के अनुगमन पर भी चर्चा की गई।

VI. जमैका

1. विदेश राज्य मंत्री का जमैका दौरा (**19** फरवरी **2015)**

- विदेश राज्य मंत्री जनरल वी. के. सिंह, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन प्रभाग के संयुक्त सचिव रीवा गांगुली दास और मंत्री कार्यालय में उप सचिव अंजनी कुमार के साथ 17-19 फरवरी, 2015 तक जमैका गए।
- मंत्री सिंह ने जमैका के प्रधानमंत्री, पोर्टिया सिम्पसन मिलर और जमैका के विदेश मंत्री, अर्नोल्ड जे. निकोलसन से मुलाकात की और राजनीतिक, आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों और विकास साझेदारी सहित द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की।
- भारत ने जमैका को 15 मिलियन अमेरिकी डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट की पेशकश की।
- जमैका पक्ष ने प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भारत द्वारा प्रदान की गई सहायता के साथ-साथ सबीना पार्क क्रिकेट स्टेडियम में फ्लड लाइट की स्थापना तथा जमैका के नागरिकों के लिए आईटीईसी छात्रवृत्ति जैसी परियोजनाओं के प्रति भी सराहना व्यक्त की।
- मंत्री सिंह ने कई मंत्रियों सहित भारतीय समुदाय के सदस्यों के साथ भी बातचीत की।

VII. सूरीनाम गणराज्य

सूरीनाम गणराज्य और भारत गणराज्य के बीच पांचवें संयुक्त आयोग की बैठक (जेसीएम) 13 जनवरी, 2015 को नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। बैठक की सह-अध्यक्षता विदेश राज्य मंत्री जनरल वी.के. सिंह और सूरीनाम गणराज्य के विदेश मामलों के मंत्री विंस्टन जी. लाकिन ने की।

राजनीतिक, आर्थिक और व्यापार, पारंपरिक दवाओं, तकनीकी सहयोग, शिक्षा, कांसुलर और सांस्कृतिक मुद्दों सहित द्विपक्षीय संबंधों के मुद्दों की पूरी श्रृंखला पर दोनों मंत्रियों द्वारा चर्चा की गई। उन्होंने महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर भी चर्चा की।

VIII. साल्वाडोर

1. लोकतंत्र समुदाय का **8**वां मंत्रिस्तरीय सम्मेलन, **25** जुलाई **2015**

भारत ने लोकतंत्र समुदाय की गवर्निंग काउंसिल के सदस्य के रूप में अपने 8वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लिया, जिसकी मेजबानी समूह के वर्तमान अध्यक्ष अल सल्वाडोर द्वारा की गई थी। जनरल वी. के. सिंह, विदेश राज्य मंत्री ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया और ग्वाटेमाला, मंगोलिया, माली

और अल सल्वाडोर के विदेश मंत्रियों के साथ पूर्ण सत्र में बात की।

IX. विविध

1. लैटिन अमरीका की गणमान्य हस्तियों के लिए डिनर के अवसर पर विदेश मंत्री द्वारा टिप्पणियां **(8 अक्टूबर, 2015)** - अंश:

   - मंत्री ने उल्लेख किया कि एलएसी क्षेत्र के साथ हमारे संबंध परंपरागत रूप से सौहार्दपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में, ये राजनीतिक व्यस्तताओं के साथ-साथ व्यापार और वाणिज्यिक बातचीत के मामले में तेज हो गए हैं।
   - यह उल्लेख किया गया था कि लैटिन अमेरिकी और कैरेबियाई क्षेत्र के साथ भारतीय व्यापार ने हाल के दिनों में प्रभावशाली वृद्धि दिखाई है और अब यह लगभग 46 बिलियन डॉलर है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि 2000 में भारत का व्यापार केवल 2 बिलियन डॉलर था, इस क्षेत्र के साथ इसके द्विपक्षीय व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।
   - भारत ने मर्कोसुर के साथ और चिली के साथ एक अधिमान्य व्यापार समझौता किया है और भारत का निवेश लगभग 20 बिलियन डॉलर है, जो मुख्य रूप से आईटी क्षेत्र, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, खनन और हाइड्रोकार्बन में है।
   - मंत्री ने कहा कि लैटिन अमेरिकी क्षेत्र भारतीय उत्पादों जैसे फार्मास्यूटिकल्स, चमड़ा, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, इंजीनियरिंग सामान, कपड़ा, सूचना प्रौद्योगिकी के लिए एक बाजार प्रदान करता है। दूसरी ओर, एलएसी क्षेत्र तेल और गैस, खनिज और धातु, अनाज, दालें, तेल बीज, सोया, ताजे फल और कई अन्य उत्पाद प्रदान करता है।
   - यह कहा गया कि वर्ष 2015 इस तथ्य के मद्देनजर महत्वपूर्ण था कि भारत ने तीन प्रमुख क्षेत्रीय समूहों अर्थात सीईएलएसी, एसआईसीए और कैरिकॉम के साथ मंत्री स्तर पर बातचीत की है।
   - संबोधन में कहा गया है कि इस तरह की यात्राओं का ध्यान अर्थशास्त्र और वाणिज्य है। लेकिन तीन अन्य मुद्दों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया। पहला, आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए निरंतर सबसे गंभीर खतरा बना हुआ है। हमें आतंकवाद का सामना करने के लिए ठोस कदम उठाना चाहिए। इस संबंध में, हम संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय के लिए आप सभी का समर्थन चाहते हैं। दूसरा, जलवायु परिवर्तन एक प्रमुख वैश्विक समस्या है जिससे हम जूझ रहे हैं। हमने हाल ही में अपनी आई एन डी सी की घोषणा की है तथा हम आशा करते हैं कि इस साल के उत्तरार्ध में पेरिस में सी ओ पी-21 में एक व्यापक, संतुलित एवं साम्यपूर्ण करार होगा। तीसरा, सुरक्षा परिषद का सुधार तथा स्थायी एवं अस्थायी दोनों श्रेणियों में इसका विस्तार आज की एक अपरिहार्यता है। पिछली संयुक्त राष्ट्र महासभा में उसके अध्यक्ष द्वारा प्रस्तुत पाठ को 70वें सत्र में ले जाने का निर्णय लिया गया था।

8. उत्तरी अमेरिका

I. कनाडा

1. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कनाडा यात्रा **(14-17 अप्रैल, 2015)**

कनाडा के प्रधानमंत्री माननीय श्री स्टीफन हार्पर ने अप्रैल 2015 में कनाडा की अपनी द्विपक्षीय यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी की मेजबानी की। यह 42 साल में भारत के किसी प्रधानमंत्री द्वारा कनाडा की पहली यात्रा है। यात्रा में ओटावा, टोरंटो और वैंकूवर में स्टॉपओवर भी शामिल थे। प्रधानमंत्री मोदी ने कनाडा के गवर्नर जनरल, श्री डेविड जॉनसन से भी मुलाकात की।

यात्रा के तहत कनाडा के राजनीतिक, कारोबारी एवं शैक्षिक नेतृत्व के साथ व्यापक चर्चा तथा भारतीय डायसपोरा के साथ विस्तृत बातचीत शामिल है।

इस यात्रा का समापन सरकार के दो प्रमुखों "भारत-कनाडा संयुक्त वक्तव्य: नए उत्साह, नए कदम: नई शक्ति, नए कदम" को नोट करने के रूप में हुआ। संयुक्त वक्तव्य में निम्नलिखित प्रमुख थे:

- दोनों नेता अर्थव्यवस्था, व्यापार एवं निवेश, असैन्य परमाणु सहयोग, ऊर्जा, शिक्षा एवं कौशल विकास, कृषि, रक्षा एवं सुरक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार एवं अंतरिक्ष, संस्कृति, जन दर जन संपर्क तथा क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों सहित प्रमुख क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग का विस्तार करने के लिए ठोस कदम उठाने पर सहमत हुए।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने यह स्वीकार किया कि द्विपक्षीय कारोबार तथा वाणिज्यिक संबंध व्यापक भारत - कनाडा साझेदारी के प्रमुख संचालक हैं। इस संबंध में, प्रधानमंत्री हार्पर ने भारतीय अर्थव्यवस्था में जोश भरने के उनके अग्रदर्शी विजन के लिए प्रधानमंत्री मोदी की सराहना की तथा भारत में कारोबार करना सरल बनाने में सुधार के लिए अपनाई गई नीतिगत उपायों एवं विशिष्ट पहलों का स्वागत किया।
- इस संदर्भ में, दोनों प्रधानमंत्रियों ने नोट किया कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शुरू की गई विशिष्ट पहलें जैसे कि 'मेक इन इंडिया', '2022 तक सबके लिए सस्ते आवास' और 'स्मार्ट शहर' भारत और कनाडा के कारोबारियों एवं उद्योग के लिए महत्वपूर्ण सहयोग हेतु वाणिज्यिक अवसर प्रदान करती हैं। उन्होंने यह भी नोट किया कि कनाडा की वैश्विक बाजार कार्य योजना में कनाडा द्वारा भारत को प्राथमिकता देना द्विपक्षीय उद्देश्यों के बिल्कुल अनुरूप है। दोनों प्रधानमंत्रियों ने दोतरफा व्यापार एवं निवेश संबंधों को पूरी क्षमता पर ले जाने की आवश्यकता की फिर से पुष्टि की। वे माल एवं सेवाओं के दोतरफा प्रवाह को बढ़ाने के लिए द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश सहयोग को गहन करने एवं विविधता लाने के लिए विशिष्ट कदम अपनाने पर सहमत हुए।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने परस्पर लाभप्रद असैन्य परमाणु सहयोग के लिए प्रचुर संभावना को रेखांकित किया। उन्होंने भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग और कनाडा के केमेको के बीच भारत को यूरेनियम की दीर्घावधिक आपूर्ति के लिए एक करार पर हस्ताक्षर होने का स्वागत किया ताकि भारत अपनी ऊर्जा संबंधी जरूरतों को पूरा कर सके। उन्होंने यह स्वीकार किया कि यह करार भारत - कनाडा असैन्य परमाणु सहयोग को एक नया महत्व प्रदान करेगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने कनाडा, जो भारत जैसे नए बाजारों को ऊर्जा का निर्यातक बनने के लिए क्षमता के साथ एक जिम्मेदार संसाधन उत्पादक है, और भारत, जो आपूर्ति के अपने स्रोतों में विविधता के माध्यम से अपनी ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के लिए कनाडा से उम्मीद लगाए बैठा है, के बीच मजबूत संपूरकताओं को नोट किया। इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए भारत

- कनाडा ऊर्जा वार्ता की अगली मंत्री स्तरीय बैठक बुलाए जाने का स्वागत किया। दोनों प्रधानमंत्रियों ने ब्रिटिश कोलंबिया में एक प्रस्तावित नई तरलीकृत प्राकृतिक गैस परियोजना में निवेश करने के संबंध में इंडियन ऑयल कारपोरेशन द्वारा लिए गए निर्णय का स्वागत किया।

- दोनों प्रधानमंत्री इस बात पर सहमत हुए कि आतंकवाद, अतिवाद एवं कट्टरवाद दोनों देशों की शांति, स्थिरता एवं खुशहाली के लिए तथा पूरी मानव जाति के लिए चुनौती है। दोनों प्रधानमंत्रियों ने नए क्षेत्रीय एवं वैश्विक सामरिक लैंड स्केप का आकलन किया जिसमें विशेष रूप से वैश्विक स्तर पर आतंकी खतरों का उद्भव, सीरिया एवं इराक में संघर्ष तथा क्षेत्रीय सुरक्षा पर इसके प्रभाव तथा अफगानिस्तान में मेल-मिलाप एवं आर्थिक समुत्थान का समर्थन शामिल है।
- 2014 में ब्रिस्बेन में जी-20 शिखर बैठक में अपनी शुरूआती बैठक को याद करते हुए दोनों प्रधानमंत्रियों ने वैश्विक विकास एवं समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए जी-20 के माध्यम से सहयोगात्मक प्रयासों के महत्व की पुष्टि की।

9. प्रमुख शक्तियाँ

I. चीन

1. विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की चीनी जनवादी गणराज्य की यात्रा, **1-3** फरवरी, **2015**

विदेश मंत्री, सुषमा स्वराज ने 1-3 फरवरी 2015 से चीनी जनवादी गणराज्य का आधिकारिक दौरा किया। उन्होंने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की, विदेश मंत्री वांग यी के साथ औपचारिक बातचीत की और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति का अंतर्राष्ट्रीय विभाग के मंत्री वांग जियारुई, के साथ एक बैठक भी की।

विदेश मंत्री ने द्वितीय भारत-चीन उच्च-स्तरीय मीडिया फोरम का भी उद्घाटन किया और बीजिंग प्रवास के दौरान भेंट भारत वर्ष के शुभारंभ में भाग लिया। 2 फरवरी को, विदेश मंत्री ने रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव के साथ बैठक के दौरान रूस-भारत-चीन त्रिपक्षीय के 13वें विदेश मंत्रियों की बैठक में भी भाग लिया।

- दूसरे भारत-चीन मीडिया मंच, बीजिंग के शुभारंभ पर विदेश मंत्री की टिप्पणी, **01** फरवरी, **2015** - मुख्य बातें:

  - मीडिया मंच की परिकल्पना हमारे संबंधित मीडिया में एक - दूसरे के समाज की समझ पैदा करने तथा सराहना की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए एक मंच के रूप में की थी।
  - एक-दूसरे के हितों और दृष्टिकोण के बारे में अच्छी समझ रखने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था।
  - कई महत्त्वपूर्ण पहलों को सामने लाने पर केंद्रित भाषण जिसमें महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित किया गया था, जो चीन-भारत के उच्च-स्तरीय आदान-प्रदान की आवृत्ति और पहले से ही द्विपक्षीय द्विपक्षीय एजेंडा के विस्तार से स्पष्ट किया जा रहा था।
  - इसने द्वि-पार्श्व संबंधों की प्रकृति में परिवर्तन को उजागर किया जो अर्थव्यवस्था में वृद्धि, कनेक्टिविटी की आवश्यकता और आर्थिक सहयोग को गुणात्मक रूप से एक नए स्तर पर ले जाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।
  - भारत और चीन और रेलवे और औद्योगिक पार्कों में सहयोग के विभिन्न नए क्षेत्रों 'मेक इन इंडिया' अभियान के सौजन्य से 'क्लोजर डेवलपमेंट पार्टनरशिप' पर प्रकाश डाला।
  - सांस्कृतिक आदान-प्रदान की अधिक आवश्यकता और गुजरात और ग्वांगडोंग के बीच बहन प्रांत संबंधों की स्थापना के बारे में बात की और वार्षिक कैलाश- मानसरोवर यात्रा का उल्लेख किया।
  - यह रेखांकित किया गया कि भारत और चीन के बीच संबंध ब्रिक्स, बेसिक और जी-20 में भारत-चीन साझेदारी का उल्लेख करते हुए अपने द्विपक्षीय और क्षेत्रीय आयाम से परे हो गए हैं।
  - भारत और चीन की सभ्यता की शक्तियों के रूप में स्थिति और उनके साझा हितों का उल्लेख किया गया था।
  - एशियाई शताब्दी के सपने को साकार करने हेतु छह सूत्री टेम्पलेट पर प्रकाश डाला गया:

    क. कार्य उन्मुख दृष्टिकोण

ख. विस्तृत द्विपक्षीय भागीदारी

ग. सामान्य क्षेत्रीय एवं वैश्विक हितों में समानता

घ. सहयोग के नए क्षेत्रों का विकास करना

ङ. सामरिक संचार का विस्तार करना

च. एशियाई शताब्दी का मार्ग प्रशस्त करने के लिए साझी आकांक्षाओं को पूरा करना

- बीजिंग में **02** फरवरी**, 2015** को "भारत वर्ष **2015** की यात्रा" के उद्घाटन के अवसर पर विदेश मंत्री का भाषण - मुख्य बातें:

  - भाषण पर्यटन को प्रोत्साहित करने और लोगों से लोगों के बीच संपर्क के महत्व पर केंद्रित है।
  - यह घोषणा की गई थी (प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच चर्चा के बाद) कि 2016 को "चीन की यात्रा वर्ष" के रूप में मनाया जाएगा।
  - भाषण में ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों, प्राकृतिक स्थलों, विविध मौसम तथा पाक प्रसन्नता का उल्लेख करते हुए भारत के विभिन्न पर्यटक आकर्षण पर प्रकाश डाला गया।
  - इसने 'एकता और विविधता' की अवधारणा पर प्रकाश डाला जो पूरे भारत में अनुभव किया जा सकता है और 'अतिथि देवो भव' की अवधारणा है जिसके तहत भारत सभी अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों का स्वागत करता है।

2. सीमा विवाद पर नई दिल्ली में भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों के बीच **18**वें दौर की वार्ता**, 23** मार्च**, 2015**

सीमा विवाद पर भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों के बीच 18वें दौर की वार्ता, अजित डोभाल, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और यांग जिएची, राज्य पार्षद की अध्यक्षता में नई दिल्ली में 23 मार्च, 2015 को आयोजित की गई थी।

- उन्होंने वार्ता में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और जल्द से जल्द सीमा विवाद का उचित और पारस्परिक रूप से स्वीकार्य समाधान की तलाश हेतु तीन-चरण की प्रक्रिया के लिए प्रतिबद्धता पर जोर दिया।
- विशेष प्रतिनिधियों ने राजनीतिक पैरामीटर और मार्गदर्शक सिद्धांतों पर समझौते के आधार पर सीमा विवाद के समाधान हेतु पारस्परिक रूप से स्वीकार्य ढांचे तक पहुंचने के लिए चर्चा जारी रखी।
- दोनों पक्ष सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने पर सहमत हुए जो द्विपक्षीय संबंधों की निरंतर वृद्धि के लिए पूर्व-आवश्यकता है।
- विशेष प्रतिनिधियों ने दोनों देशों की सीमा बलों के बीच बढ़ती बातचीत पर संतोष व्यक्त किया और इस तरह के संपर्कों को और विस्तारित करने पर सहमति व्यक्त की क्योंकि ये सीमा क्षेत्रों में शांति और शांति बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण विश्वास निर्माण उपायों का गठन करते हैं।

3. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चीन यात्रा**, 14-16** मई**, 2015 -** मुख्य बातें:

प्रधानमंत्री मोदी ने 14-16 मई 2015 तक चीनी जनवादी गणराज्य का दौरा किया। अपनी 3 दिवसीय चीन यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति जिनपिंग, बीजिंग और शंघाई के गृह शहर शीआन का दौरा किया। यात्रा के दौरान द्विपक्षीय व्यस्तताओं के अलावा, प्रधानमंत्री मोदी ने शंघाई में भारत-चीन व्यापार मंच में भाग लिया, शंघाई में भारतीय समुदाय को संबोधित किया और बीजिंग के तिंगहुआ विश्वविद्यालय

में व्याख्यान भी दिया।

- **15 मई, 2015** को बीजिंग के सिंघुआ विश्वविद्यालय में प्रधानमंत्री मोदी का भाषण

  - दो महान सभ्यताओं के सांस्कृतिक संबंधों और देश में आर्थिक समृद्धि लाने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई पहल पर प्रकाश डाला गया।
  - प्रधानमंत्री मोदी ने सरकार द्वारा अनावश्यक नियमों को समाप्त करने और प्रक्रियाओं को सरल बनाने हेतु शुरू किए गए आर्थिक सुधार उपायों के बारे में बात की।
  - उन्होंने कहा कि भारत सरकार एक कर व्यवस्था का निर्माण कर रही है, जो अनुमान लगाने योग्य, स्थिर तथा प्रतिस्पर्धी है और यह भारतीय बाजार को एकीकृत करेगी। और अगली पीढ़ी के बुनियादी ढांचे - सड़क, बंदरगाह, रेलवे, हवाई अड्डे, दूरसंचार, डिजिटल नेटवर्क और स्वच्छ ऊर्जा में निवेश को भी बढ़ाया जा रहा है। भारत विश्व स्तर के विनिर्माण क्षेत्र के साथ एक आधुनिक अर्थव्यवस्था स्थापित करने हेतु वैश्विक कौशल निकाय का निर्माण कर रहा है।
  - बदलती दुनिया ने नए अवसरों और चुनौतियों का निर्माण किया है। भारत और चीन दोनों ही अपने साझा पड़ोस में अस्थिरता का सामना करते हैं जो उनकी सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है और अर्थव्यवस्थाओं को धीमा कर सकता है।
  - अतिवाद तथा आतंकवाद का प्रसार एक खतरा है जिसका सामना भारत और चीन दोनों देश कर रहे हैं; दोनों के लिए, इसका स्रोत एक ही क्षेत्र में है।
  - भारत और चीन एक ही समुद्री लेन पर अपने अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य का संचालन करते हैं। समुद्री लेन की सुरक्षा दोनों अर्थव्यवस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण है; और, इसे प्राप्त करने हेतु द्विपक्षीय सहयोग आवश्यक है।
  - भूगोल और इतिहास यह स्पष्ट करते हैं कि परस्पर जुड़े एशिया का सपना तब सफल होगा, जब भारत और चीन साथ मिलकर काम करेंगे।
  - 21वीं सदी के एशियाई सदी बनने की संभावनाएं इस बात पर निर्भर करती हैं कि भारत तथा चीन व्यक्तिगत रूप से क्या हासिल करते हैं और क्या करते हैं।
  - जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय वार्ता में भारत तथा चीन के बीच बहुत बड़े दांव हैं। इन मंचों में उनका सहयोग उनके परिणामों को आकार देने के लिए महत्वपूर्ण होगा।
  - प्रधानमंत्री ने स्पष्ट रूप से कहा कि अगर इन दोनों देशों को अपनी साझेदारी की असाधारण क्षमता का अनुभव करना है, तो उन्हें उन मुद्दों को भी संबोधित करना चाहिए जो उनके रिश्ते में अविश्वास और संदेह पैदा करते हैं। उन्हें सीमा विवाद को जल्दी से हल करने की कोशिश करनी चाहिए।
  - उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत तथा चीन दोनों साझा पड़ोस में अपनी व्यस्तता बढ़ा रहे हैं। यह आपसी विश्वास और विश्वास का निर्माण करने हेतु गहन रणनीतिक संचार का आह्वान करता है और दोनों देशों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अन्य देशों के साथ उनके रिश्ते एक-दूसरे के लिए चिंता का विषय न बनें।
  - यदि पिछली सदी गठबंधनों का समय था, तो यह अंतर-निर्भरता का युग है। इसलिए, एक दूसरे के खिलाफ गठबंधनों की बातचीत की कोई नींव नहीं है।
  - अंतर्राष्ट्रीय मंचों में चीन-भारतीय साझेदारी दूसरों की चिंताओं से नहीं, बल्कि दोनों देशों के हितों से निर्धारित होनी चाहिए।
  - संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के लिए चीन का समर्थन, और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह जैसे निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं के लिए भारत की सदस्यता उनके अंतरराष्ट्रीय सहयोग को और अधिक मजबूत बनाने के बजाय और अधिक करेगी।

- प्रांतीय नेताओं के भारत-चीन मंच के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री की टिप्पणी, **15 मई, 2015**

- प्रधानमंत्री मोदी ने दोनों देशों के बीच सहयोग को आगे बढ़ाने हेतु नए साधनों की शुरुआत करने के महत्व पर जोर दिया।
- यह दोनों देशों के लोगों के बीच उनकी आर्थिक भागीदारी तथा संपर्क को गहरा करने हेतु सबसे महत्वपूर्ण साधनों में से एक बन जाएगा।
- उन्होंने जोर देकर कहा कि राष्ट्रीय विकास में राज्यों की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- प्रत्येक राष्ट्र को अपनी प्रगति हेतु मजबूत अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी की आवश्यकता है। एकीकृत दुनिया में जुड़ाव गहरा महत्व रखता है। व्यापार, निवेश, नवाचार, प्रौद्योगिकी, पर्यटन, शिक्षा, कौशल तथा स्वास्थ्य विकास में अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी के रूप में; राज्य सरकारों में उनकी हिस्सेदारी है और उनकी सफलता की जिम्मेदारी है। पीएम मोदी ने कहा कि, आउटबाउंड और इनबाउंड दोनों राज्य प्रतिनिधिमंडलों के माध्यम से, कि राज्य स्तर की बातचीत अक्सर अधिक केंद्रित और उत्पादक हो सकती है।
- राज्य सरकारों द्वारा कई निर्णय जल्दी से लिए जा सकते हैं। ये इंटरैक्शन राज्य सरकारों को अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता और आवश्यकताओं के प्रति अधिक संवेदनशील और जागरूक बनाते हैं।
- प्रधानमंत्री मोदी का माननाथा कि प्रांतीय और राज्य सरकारों के निकट संपर्क में आने पर चीन-भारतीय दृष्टि का वास्तविकता में परिवर्तन करना अधिक आसान होगा। यह उनके अन्य हितों को भी पूरा करेगा - विशेष रूप से अधिक से अधिक लोगों से लोगों के संपर्क को बढ़ावा देना, जो सभी रिश्तों के मूल में है।

- शंघाई के फुडन विश्वविद्यालय में गांधीवाद और भारतीय अध्ययन केंद्र के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन

    - भारत का मूल चिंतन रहा और भारत के वेदों से कहा गया कि चारों दिशाओं से ज्ञान का प्रकाश आने दो, "ज्ञान भद्रो" कहकर के हमारे यहां यह कल्पना की गई। विचार को, ज्ञान को, न पूरब होता है, न पश्चिम होता है - वो सनातन होता है और दुनिया के किसी भी भू-भाग का ज्ञान मानव संस्कृति के विकास के लिए काम आता है।
    - महात्मा गांधी का अध्ययन या भारत का अध्ययन, हमारा चीन और भारत का पुराना सांस्कृतिक विरासत का अगर पुराना इतिहास देखें, तो दोनों देश ज्ञान पिपासु थे, ज्ञान पाने के लिए साहस करते थे, कष्ट उठाते थे। 1400 साल पहले वेनसांग भारत पहुंचे होंगे और भारत के विद्वत लोग चीन पहुंचे होंगे सिर्फ और सिर्फ ज्ञान के लिए, सांस्कृति को जानने के लिए, परंपराओं को जानने के लिए, कितना साहस किया जाता था।
    - ज्ञान के लिए दरवाजा खोलना उसके लिए भीतर एक बहुत बड़ी ताकत लगती है। अगर भीतर बड़ी ताकत नहीं होती है, तो दूसरे विचारों का डर लगता है कहीं वो आकर हमें खा तो नहीं जाएंगे। हमारे ऊपर सवार तो नहीं हो जाएंगे? अपने आप में जब ताकत होती है तब व्यक्ति और विचारों को सुनने समझने की इच्छा करता है। और आज चीन फिर से एक बार भगवान बुद्ध के कालखंड के बाद गांधी के माध्यमम से उस महान सांस्कृतिक विरासत को जानने के लिए उत्सुक हुआ है, मैं अपने आप में एक बहुत बड़ी अहम घटना मानता हूं।
    - आज दुनिया दो प्रमुख संकटों से गुजर रही है - एक ग्लोबल वार्मिंग और दूसरा टेररिजम। गांधी के विचारों-आचार में इन दोनों के उपाय मौजूद हैं और इस अर्थ में गांधीयन स्टडी के माध्यम से इस यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी न सिर्फ चीन को, लेकिन मानवजात के माध्यम से भी संदेश देने में समर्थ होंगे कि आज भी गांधी कितने रिलिवेंट हैं।
    - 21वीं सदी एशिया की सदी है। चीन और भारत मिलकर के दुनिया की एक तिहाई जनसंख्या

है। अगर यह एक-तिहाई जनसंख्या का भला होता है, वो समस्याओं से मुक्त होती है, मतलब दुनिया का एक तिहाई हिस्सा संकटों से मुक्तत हो जाता है। और इसलिए चीन और भारत मिलकर के प्रगति के ऊंचाईयों को पार करें, जिसमें मानवीय संवेदना हो, मानवता हो, बुद्ध का चिंतन हो, गांधी के प्रयोग हों, ताकि हम विश्व को एक ऐसा जीवन जीने के लिए प्रेरित करें जो जीवन जनकल्याण से समर्पित हो।

- शंघाई में भारत-चीन व्यापार मंच में प्रधानमंत्री द्वारा मुख्य भाषण, **16** मई**, 2015**

  - एशियाई देशों में बौद्ध धर्म की पवित्रता और शुद्धता सफलता का बीज मंत्र साबित हुई। उन्होंने कहा कि मेरा अडिग विश्वास है कि यह शताब्दी एशिया की शताब्दी है और बौद्ध धर्म एशियाई देशों के बीच और अधिक एकता और प्रेरक शक्ति के रूप में मौजूद रहेगा।
  - भारत देश के 65 प्रतिशत युवाओं के लिए रोजगार सृजन करने हेतु विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देना चाहते हैं। इसके लिए हमने 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की शुरुआत की है। देश में नवोन्मेष, अनुसंधान विकास और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार प्रयास कर रही है।
  - चीन की कई कंपनियों द्वारा भारत की क्षमताओं का फायदा उठाने के लिए हमारे देश में निवेश करने की संभावना है। यह संभावनाएं विनिर्माण, प्रसंस्करण और बुनियादी ढांचे क्षेत्र में हैं।
  - उन्होंने विश्वास दिलाया कि भारत में आर्थिक माहौल बदल गया है और नियामक तंत्र अब अधिक पारदर्शी, सहयोगी और स्थिर है।
  - उन्होंने कहा कि बहुत सारे प्रयास किए गए हैं और अभी भी 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में सुधार करने के लिए चल रहे हैं।
  - उन्होंने कहा कि भारत की वृद्धि दर सात प्रतिशत से अधिक है। विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, ओइसीडी समेत अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों ने आने वाले समय में भारत की तेज़ वृद्धि का अनुमान लगाया है। हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेंसी मूडीज़ ने भारत की रेटिंग को अनुकूल बताया है क्योंकि विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में हमारी सरकार ने ठोस कदम उठाये हैं।
  - भारत में हिस्से पुर्जों और घटकों का विनिर्माण करने वालों को अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल है और उनकी जानी-मानी उच्च गुणवत्ता है और चीन के विनिर्माताओं ने बड़े पैमाने पर माल तैयार करने की कला में दक्षता हासिल की है। भारतीय इंजीनियरों की हिस्से पुर्जों और घटकों के डिजाइन की विशेषज्ञता और चीन के बड़े पैमाने पर माल तैयार करने की कम लागत बेहतर तरीके से वैश्विक बाजार के लिए फायदेमंद हो सकती है। चीन और भारत की यह औद्योगिक भागीदारी अधिक निवेश, रोजगार और लोगों की संतुष्टि का आधार बन सकती है।

प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, जैसे कि:

- चेन्नई, भारत और चेंगदू, चीन में महावाणिज्य दूतावास की स्थापना, जियांग्शी प्रांत को शामिल करने के लिए ग्वांगझू में भारत के महावाणिज्य दूतावास जिले का विस्तार।
- पर्यटन, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में समझौता;
- गुजरात में महात्मा गांधी राष्ट्रीय कौशल विकास और उद्यमिता संस्थान की स्थापना में सहयोग के लिए कार्य योजना; और रेलवे में सहयोग बढ़ाने के लिए कार्य योजना।
- विश्व व्यापार संगठन में व्यापार वार्ता में सहयोग के लिए परामर्शी तंत्र पर समझौता ज्ञापन;
- विदेश मंत्रालय, भारत और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अंतर्राष्ट्रीय विभाग

के बीच समझौता ज्ञापन;

- क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के समकालीन मुद्दों पर विचार-विमर्श करने हेतु भारतीय और चीनी विद्वानों को एक साथ लाने के लिए भारत-चीन थिंक-टैंक मंच की स्थापना, प्रसारण के क्षेत्र में शिक्षा, खनन, अंतरिक्ष सहयोग, दूरदर्शन और चीन सेंट्रल टेलीविजन के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन;
- जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया और चाइना जियोलॉजिकल सर्वे के बीच भी, समुद्र विज्ञान, महासागर प्रौद्योगिकी और संबंधित डोमेन के क्षेत्र में सहयोग के लिए रूपरेखा बनाने पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- इसके अलावा, भारत सरकार के नीति आयोग और विकास अनुसंधान केंद्र, स्टेट काउंसिल ऑफ़ पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना ने रणनीतिक वृहद आर्थिक और नीतिगत मुद्दों पर सहयोग और समझ को आगे बढ़ाने के व्यापक उद्देश्य के साथ, दो संस्थानों के बीच सहकारी संबंध बनाने पर सहमति व्यक्त की।
- भू-विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार और चीन भूकंप प्रशासन, पी. आर. चीन ने भूकंप विज्ञान और भूकंप इंजीनियरिंग, जलवायु परिवर्तन, ध्रुवीय विज्ञान और क्रायोस्फीयर के क्षेत्र में सहयोग हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।
- कर्नाटक और सिचुआन और सिस्टर सिटी के बीच सिस्टर राज्य / प्रांत के लिए समझौते पर चेन्नई-चोंगकिंग, हैदराबाद-किंगदाओ, औरंगाबाद-दुनांग के बीच संबंधों पर भी हस्ताक्षर किए गए। इसके अलावा गांधीवाद और भारतीय अध्ययन केंद्र की स्थापना के लिए आईसीसीआर और फुडान विश्वविद्यालय और योग कॉलेज में युन्नान मिंज़ू विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

जारी किए गए संयुक्त वक्तव्य में विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर जोर दिया गया क्योंकि भारत-चीन द्विपक्षीय संबंध 21वीं सदी में एशिया और वास्तव में विश्व स्तर पर परिभाषित भूमिका निभाने हेतु तैयार हैं। नेताओं ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि दोनों देशों द्वारा अपने-अपने राष्ट्रीय विकासात्मक लक्ष्यों और सुरक्षा हितों का पालन करने की प्रक्रिया को पारस्परिक रूप से सहायक तरीके से प्रकट करना चाहिए, जिसमें दोनों पक्ष एक-दूसरे की चिंताओं, हितों और आकांक्षाओं के प्रति परस्पर सम्मान और संवेदनशीलता दिखाते हैं।

प्रमुख बिंदु:

- दोनों पक्ष राष्ट्राध्यक्षों / शासनाध्यक्षों के स्तर पर नियमित यात्राओं के लिए सहमत हुए। क्षेत्रीय एवं वैश्विक महत्व के मुद्दों तथा द्विपक्षीय संबंधों पर परामर्शों के आयोजन के लिए विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर उनके नेताओं की उपस्थिति द्वारा प्रदत्त अवसरों का पूर्ण उपयोग किया जाएगा।
- दोनों पक्षों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति एवं अमनचैन बनाए रखने में उन करारों एवं प्रोटोकॉल की सकारात्मक भूमिका के महत्व को स्वीकार किया जिन पर अब तक हस्ताक्षर किए गए हैं। सीमा रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध दोनों पक्ष दोनों देशों के सेना मुख्यालयों तथा पड़ोसी सैन्य कमानों के बीच वार्षिक यात्राओं एवं आदान - प्रदान को संपन्न करेंगे, दोनों देशों के सेना मुख्यालयों के बीच हॉट लाइन को चालू करने का प्रयास करेंगे, सीमा कमांडरों के बीच आदान - प्रदान का विस्तार करेंगे और भारत - चीन सीमा क्षेत्रों के सभी सेक्टरों में सीमा कर्मी बैठक बिंदुओं की स्थापना करेंगे। दोनों पक्षों ने इस बात की पुष्टि की कि सीमा प्रश्न का जल्दी से समाधान दोनों देशों के बुनियादी हितों को पूरा करेगा तथा दोनों देशों की सरकारों द्वारा इसे एक सामरिक उद्देश्य के रूप में आगे बढ़ाया जाना चाहिए। समग्र द्विपक्षीय संबंधों तथा दोनों देशों के लोगों के दीर्घावधिक हितों को ध्यान में रखते हुए दोनों पक्ष सीमा प्रश्न का राजनीतिक समाधान सक्रियता से ढूंढने के लिए कृत संकल्प

हैं।

- रेलवे क्षेत्र में सहयोग में उठाए गए कदम तथा इस संबंध में हुई प्रगति को दोनों नेताओं ने संतोष के साथ नोट किया जिसने विद्यमान चेन्नई - बंगलुरू - मैसूर लाइन पर ट्रेन की स्पीड बढ़ाने से संबंधित परियोजनाएं, हाई स्पीड रेल लिंक के दिल्ली - नागपुर खंड के लिए प्रस्तावित संभाव्यता अध्ययन, भुवनेश्वर एवं बैयाप्पनाहल्ली के लिए स्टेशन विकास आयोजना, हैवी हॉल परिवहन प्रशिक्षण तथा एक रेल विश्वविद्यालय की स्थापना शामिल है। उन्होंने अवसंरचना के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में साझेदारी के तहत अगले कदम को रेखांकित करने वाली कार्य योजना का स्वागत किया।
- दोनों पक्ष उपग्रह दूर संवेदी, अंतरिक्ष आधारित मौसम विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, चांद एवं गहन अंतरिक्ष अन्वेषण, उपग्रह नेविगेशन, अंतरिक्ष घटक, पिग्गी बैक लांच सेवा तथा शिक्षा एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग को सुदृढ़ करने पर सहमत हुए।
- दोनों पक्षों ने इस बात को स्वीकार किया कि सीमा व्यापार के माध्यम से सीमावर्ती क्षेत्रों में सहयोग में वृद्धि, दोनों देशों के लोगों द्वारा तीर्थयात्रा तथा अन्य आदान - प्रदान से परस्पर विश्वास में कारगर ढंग से वृद्धि हो सकती है तथा वे इस सहयोग को और विस्तृत करने पर सहमत हुए ताकि सीमा को सहयोग एवं आदान - प्रदान के सेतु में परिवर्तित किया जा सके। दोनों पक्ष व्यापार की वस्तुओं की सूची में वृद्धि करने के लिए वार्ता का आयोजन करने तथा नथुला, किंगला / लिपु लेख दर्रा तथा शिप्किला पर सीमा व्यापार का विस्तार करने पर सहमत हुए।
- दोनों पक्षों ने सभी रूपों एवं अभिव्यक्तियों के आतंकवाद की कठोर शब्दों में अपनी निंदा तथा दृढ़ता के साथ इसकी खिलाफत करने के अपने वायदे को दोहराया तथा आतंकवाद की खिलाफत पर आपस में सहयोग करने की प्रतिबद्धता की। वे इस बात पर सहमत हुए कि आतंकवाद का कोई औचित्य नहीं है तथा सभी देशों एवं संस्थाओं से आतंकी नेटवर्क एवं उनके वित्त पोषण को नष्ट करने तथा आतंकियों की सीमा पारीय आवाजाही को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के संगत कानूनों एवं प्रयोजनों तथा अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के अनुसरण में रोकने के लिए ईमानदारी से काम करने का आग्रह किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय के लिए चल रही वार्ता को जल्दी पूरा करने का आह्वान किया।
- दोनों पक्ष शंघाई सहयोग संगठन की रूपरेखा के तहत सहयोग जारी रखने के लिए तैयार हैं। चीन ने शंघाई सहयोग संगठन की पूर्ण सदस्यता के लिए भारत के आवेदन का स्वागत किया और क्षेत्रीय अवसंरचना एवं आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एशियाई अवसंरचना निवेश बैंक के गठन के लिए तैयारी की गति तेज करने के लिए संगत पक्षकारों के साथ काम करने पर सहमत हुए।
- दोनों पक्षों ने बीसीआईएम (बंग्लादेश, चीन, भारत और म्यांमार) आर्थिक कोरिडोर की रूपरेखा के तहत सहयोग को बढ़ावा देने में हुई प्रगति का स्वागत किया। दोनों पक्षों ने बी सी आई एम आर्थिक कोरिडोर के संयुक्त अध्ययन समूह की दूसरी बैठक को याद किया तथा वे इस बैठक में हुई सहमति को लागू करने के लिए अपने - अपने प्रयासों को जारी रखने पर सहमत हुए।
- दोनों पक्षों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि जलवायु परिवर्तन के मुद्दे से निपटना आज के विश्व और भावी पीढ़ियों के हित को ध्यान में रखते हुए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस साल के उत्तरार्ध में पेरिस में आयोजित होने वाले यूएनएफसीसीसी की आगामी सीओपी-21 में एक महत्वाकांक्षी, व्यापक, सार्वभौमिक, संतुलित एवं साम्यपूर्ण जलवायु करार को संपन्न करने के लिए साथ मिलकर तथा अन्य देशों के साथ काम करने के महत्व को रेखांकित किया, जिससे असली प्रौद्योगिकी अंतरण, इस साझी वैश्विक चुनौती से निपटने में अनुकूलन एवं उपशमन तथा वित्तीय सहायता के लिए सहयोग को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

➢ जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त वक्तव्य - प्रमुख बिंदु

- दोनों पक्षों ने इस यात्रा के दौरान भारत गणराज्य की सरकार तथा चीन जनवादी गणराज्य की सरकार के बीच जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त वक्तव्य जारी किया।
- जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त वक्तव्य में जोर दिया कि जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने हेतु संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसीसी) और इसके क्योटो प्रोटोकॉल अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए सबसे उपयुक्त ढांचा हैं।
- उन्होंने इक्विटी और सामान्य लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों के सिद्धांतों की पुष्टि की और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और विकासशील देशों को वित्त, प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण सहायता प्रदान करने में विकसित देशों के नेतृत्व का आह्वान किया।
- दोनों पक्षों ने पुष्टि की कि 2015 का समझौता (पेरिस में सीओपी21) यूएनएफसीसीसी के सिद्धांतों, प्रावधानों और संरचना के अनुसार पूर्ण रूप से होगा, विशेष रूप से इक्विटी और विकसित तथा विकासशील देशों के बीच विकास के चरण और राष्ट्रीय परिस्थितियाँ लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों और संबंधित क्षमताओं के सिद्धांत, विभिन्न ऐतिहासिक जिम्मेदारियों को दर्शाते हैं।
- दो पक्षों ने घरेलू जलवायु नीतियों और बहुपक्षीय वार्ता पर उच्चस्तरीय द्विपक्षीय वार्ता को बढ़ाने तथा स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों, ऊर्जा संरक्षण, ऊर्जा दक्षता, नवीकरणीय ऊर्जा, बिजली के वाहनों सहित टिकाऊ परिवहन, कम परिवहन, कार्बन शहरीकरण और अनुकूलन सहित क्षेत्रों में व्यावहारिक द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत करने का निर्णय लिया।

4. राष्ट्रीय पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष झांग देजियांग के नेतृत्व में चीन के पीपुल्स रिपब्लिक के संसदीय प्रतिनिधिमंडल का भारत दौरा**, 13-16** जून**, 2015**

नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष झांग देजियांग के नेतृत्व में चीनी संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, उपराष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन से मुलाकात की।

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने कहा कि क्योंकि राष्ट्रीय पीपुल्स कांग्रेस के अध्यक्ष की अंतिम यात्रा 14 साल पहले हुई थी, इसलिए यह यात्रा विशेष रूप से भारत-चीन संसदीय आदान-प्रदान को पुनर्जीवित करने में मदद करेगी। 2006 में लोकसभा अध्यक्ष की अंतिम यात्रा भी 2006 में हुई थी।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि संसदीय आदान-प्रदान द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। उन्होंने राज्य-स्तरीय विधायिकाओं के बीच आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर भारत चीन संबंधों की नींव को व्यापक बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रधानमंत्री मोदी और झांग देजियांग ने निवेश, व्यापार, पर्यटन को बढ़ावा देने और लोगों से लोगों को जोड़ने, और रणनीतिक संचार तथा समन्वय को बढ़ाने के महत्व पर बल दिया।

5. प्रधानमंत्री मोदी की पीआरसी के अध्यक्ष शी जिनपिंग से ब्रिक्स शिखर सम्मेलन**,** उफा**,** रूस में मुलाकात**, 8** जुलाई**, 2015**

प्रधानमंत्री मोदी ने रूस के ऊफ़ा में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मौके पर चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की। चर्चा के महत्वपूर्ण मुद्दों में निवेश के मामले में, मुख्य रूप से आर्थिक पक्ष में, औद्योगिक पार्कों में संबंधों में मई 2015 से हुई प्रगति थी।

दोनों नेताओं ने इस तथ्य का स्वागत किया कि नाथू ला के रास्ते कैलाश मानसरोवर यात्रा शुरू हो गई है। वार्ता में सीमा मुद्दों को भी शामिल किया गया है, विशेष प्रतिनिधियों के साथ जो काम किया गया है, उनके त्वरित प्रगति, शांति और शांति के मुद्दों, विश्वास-निर्माण उपायों की संभावनाएं। चीन के मामले में कुछ वैश्विक मुद्दे विशेष रूप से सामने आए - संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, उनकी एनएसजी सदस्यता की खोज, और कुछ मुद्दे आतंकवाद से संबंधित हैं। भारत-चीन नेपाल के सामने आने वाले पुनर्निर्माण

की चुनौती का सामना कैसे कर रहे हैं, इसका भी कुछ उल्लेख किया गया था।

6. गृह मंत्री राजनाथ सिंह का चीन दौरा, नवंबर**, 18-23, 2015**

गृह राज्य मंत्री राजनाथ सिंह ने 18 नवंबर से 23 नवंबर, 2015 तक चीन (बीजिंग और शंघाई) की आधिकारिक यात्रा की।

गृह मंत्रालय, भारत और सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय, चीन के बीच संयुक्त वक्तव्य - प्रमुख बिंदु:

- दोनों पक्षों ने सितंबर 2014 में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच यात्राओं का सफल आदान-प्रदान, मई 2015 में भारत के प्रधानमंत्री और चीन ने दोनों देशों के बीच घनिष्ठ विकास साझेदारी बनाने के लिए महत्वपूर्ण सहमति प्रदान की, जो द्विपक्षीय संबंधों के विकास के लिए दिशा प्रदान करता है और भारत-चीन कानून प्रवर्तन सहयोग के विकास के लिए अनुकूल अवसर पैदा करता है।
- दोनों पक्ष उच्च स्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान करेंगे और भारत के गृह मंत्री तथा चीन के सार्वजनिक सुरक्षा मंत्री के नेतृत्व में हर दो साल में एक बार भारत-चीन उच्च स्तरीय बैठक तंत्र स्थापित करेंगे।
- मंत्री-स्तरीय बैठक तंत्र की सहायता हेतु दो मंत्रालयों के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग विभागों के नेतृत्व में एक संयुक्त सचिव / महानिदेशक स्तर की बैठक तंत्र स्थापित किया जाएगा। यह तंत्र साल में एक बार बीजिंग और नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।
- दोनों पक्ष (क) आतंकवादी गतिविधियों, आतंकवादी समूहों और उनके संपर्कों पर सूचनाओं के आदान-प्रदान; (ख) विरोधी अपहरण, बंधक स्थितियों और अन्य आतंकवाद संबंधी अपराधों पर अनुभवों के आदान-प्रदान; (ग) क्षेत्रीय और बहुपक्षीय स्तरों पर आतंकवाद विरोधी प्रयासों पर समन्वयकारी स्थितियों और एक दूसरे के समर्थन के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से निपटने में सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए। दोनों पक्ष आतंकवाद-रोधी सहयोग पर चर्चा करने के लिए आतंकवाद-रोधी विशेषज्ञों के समूहों द्वारा आदान-प्रदान करने पर भी सहमत हुए।
- दोनों पक्ष कानून प्रवर्तन क्षमता निर्माण के क्षेत्र में आदान-प्रदान और सहयोग को मजबूत करेंगे।

7. केंद्रीय सैन्य आयोग के उपाध्यक्ष जनरल फैन चांगलोंग के नेतृत्व में चीनी सैन्य प्रतिनिधिमंडल का भारत दौरा, **15-17** नवंबर**, 2015**

केंद्रीय सैन्य आयोग के उपाध्यक्ष जनरल फैन चांगलोंग के नेतृत्व में एक चीनी सैन्य प्रतिनिधिमंडल ने 15-17 नवंबर 2015 तक भारत का दौरा किया। जनरल फैन चांगलोंग ने रक्षा मंत्री और थल सेनाध्यक्ष के साथ वार्ता की और प्रधानमंत्री से मुलाकात की।

- दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति और स्थिरता द्विपक्षीय संबंधों के सुचारू विकास की आधारशिला है।
- वे दो सशस्त्र बलों के बीच संचार और आदान-प्रदान को बढ़ाने तथा अतिरिक्त सीमा कार्मिक बैठकों को संचालित करने पर भी सहमत हुए।

8. भारतीय उत्तरी सेना के कमांडर के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल का चीन नेतृत्व दौरा, **14-20** दिसंबर**, 2015**

भारतीय सेना के उत्तरी कमान के छह सदस्यीय उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने उत्तरी कमान के सेना

कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल डीएस हुड्डा के नेतृत्व में चीन का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल ने पीएलए के जनरल चीफ ऑफ जनरल स्टाफ, जनरल क्यूई जियांगुओ के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक की।

- दोनों पक्षों ने सीमाओं के साथ शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया और आशा व्यक्त की कि दोनों पक्ष दोनों सेनाओं के बीच बातचीत की संख्या को बढ़ाकर द्विपक्षीय रक्षा आदान-प्रदान को मजबूत करेंगे।
- आतंकवाद से लड़ने के मुद्दों पर आगे सहयोग करने पर भी सहमति हुई जो दोनों देशों को प्रभावित कर रहा है।

9. संयुक्त सैन्य अभ्यास: ऑपरेशन 'हैंड-इन-हैंड'

आतंकवाद निरोध पर 12 से 22 अक्टूबर 2015 तक कुनमिंग, चीन में बटालियन स्तर पर संयुक्त भारत-चीन सेना अभ्यास ऑपरेशन 'हैंड-इन-हैंड' और 'मानवीय सहायता और आपदा राहत' का आयोजन किया गया। दोनों पक्षों के सैनिकों को एक साथ प्रशिक्षित किया गया और विशेष रूप से आतंकवाद निरोधी परिदृश्य में बेसिक इंडिविजुअल स्किल्स (कॉम्बेट बॉक्सिंग, बेसिक माउंटेनियरिंग और शूटिंग), कॉम्प्रिहेंसिव कॉम्बैट स्किल्स (बाधा पार करना, कॉम्बैट शूटिंग, विध्वंस, उच्च तीव्रता शारीरिक प्रशिक्षण) और यूनिट / सब यूनिट रणनीति पर मिश्रित समूहों में एक-दूसरे से सीखा। भारत-चीन सीमा क्षेत्रों पर आतंकवाद-रोधी अभियानों का चित्रण करने वाला एक संयुक्त क्षेत्र अभ्यास 21 से 22 अक्टूबर 2015 तक आयोजित किया गया था।

II. यूरोपीय संघ

A. बेलारूस

भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी बेलारूस की यात्रा **(2-4 जून, 2015)**

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 2 जून से 4 जून 2015 तक बेलारूस की यात्रा की। यह राष्ट्रपति का बेलारूस का पहला दौरा था। दोनों देशों ने भारत-बेलारूस सहयोग हेतु एक रोडमैप पर हस्ताक्षर किए। भारत और बेलारूस ने 27 सितंबर, 1997 को आय पर कर (संपत्ति) पर कर के संबंध में दोहरे कराधान से बचने और राजकोषीय चोरी की रोकथाम के लिए समझौते में संशोधन करने वाले प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए। बेलारूस गणराज्य के मानकीकरण हेतु भारतीय मानक ब्यूरो और राज्य समिति के बीच अन्य समझौता ज्ञापन, मानकीकरण और सूचना सहायता के क्षेत्र में सहयोग; प्रसार भारती (पीबी) और नेशनल स्टेट टेलीविज़न और बेलारूस गणराज्य की रेडियो कंपनी (बेलेटेल रेडियो कंपनी) प्रसारण पर सहयोग; भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड और बेलारूस गणराज्य के वित्त मंत्रालय और भारत गणराज्य के कपड़ा मंत्रालय और हल्की उद्योग माल के विनिर्माण और विपणन के लिए बेलारूसी राज्य की चिंता के बीच द्विपक्षीय सहयोग पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत और बेलारूस ने शिक्षा तथा वैज्ञानिक सहयोग में सात समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए। अनुसंधान सहयोग, छात्र और संकाय विनिमय के क्षेत्र में आईआईटी गुवाहाटी और बेलारूसी राष्ट्रीय तकनीकी विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन; आईआईटी गुवाहाटी और बेलारूस राज्य सूचना विज्ञान और रेडियोइलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान सहयोग, छात्र और संकाय विनिमय के क्षेत्र में; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, भारत और बेलारूस के संस्कृति और कला के बेलारूसी राज्य विश्वविद्यालय अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षणिक सहयोग के विकास के लिए, ट्विनिंग और यूजीसी के अनुसार दोहरी डिग्री कार्यक्रम; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, और शैक्षणिक और वैज्ञानिक सहयोग के लिए सूचना विज्ञान और रेडियोइलेक्ट्रॉनिक के बेलारूसी राज्य

विश्वविद्यालय; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय और भौतिक विज्ञान के बेलारूसी राज्य विश्वविद्यालय, विश्वेश्वरैया राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (वीएनआईटी), और इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी तथा वीएनआईटी और बेलारूसी राष्ट्रीय तकनीकी विश्वविद्यालय, बेलारूस के क्षेत्र में सूचना विज्ञान तथा रेडियोइलेक्ट्रॉनिक के बेलारूसी राज्य विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र पर हस्ताक्षर किए गए।

ख. फ्रांस

1. प्रधानमंत्री की फ्रांस यात्रा (10-11 अप्रैल, 2015)

फ्रांस गणराज्य के राष्ट्रपति श्री फ्रांकोस ओलांद के निमंत्रण पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 10-11 अप्रैल, 2015 को फ्रांस का आधिकारिक दौरा किया। इस यात्रा के दौरान एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया जिसमें निम्नलिखित प्रमुख बिंदु शामिल थे:

- उन्होंने सामरिक साझेदारी के लिए अपनी प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि की तथा वे लोकतंत्र, स्वतंत्रता, कानून का शासन तथा मानवाधिकारों के लिए सम्मान से संबंधित साझे मूल्यों एवं सिद्धांतों के आधार पर द्विपक्षीय संबंधों को और गहन एवं सुदृढ़ करने पर सहमत हुए।
- वैश्विक साझेदार के रूप में भारत और फ्रांस ने संयुक्त राष्ट्र के तात्कालिक सुधार की आवश्यकता को दोहराया जिसमें सदस्यता की दोनों श्रेणियों में विस्तार के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का सुधार भी शामिल है ताकि इसे समकालीन विश्व के अनुसार अधिक प्रतिनिधिमूलक बनाया जा सके।
- भारत और फ्रांस ने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एन एस जी), मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एम टी सी आर), वासेनार व्यवस्था तथा आस्ट्रेलिया ग्रुप नामक बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं में भारत के चरणबद्ध प्रवेश की दिशा में काम करना जारी रखने की प्रतिबद्धता की।
- प्रधानमंत्री मोदी ने पेरिस में आयोजित होने वाले यूएनएफसीसी के लिए 21 को-सीओपी को सफल बनाने के लिए फ्रांस को अपना पूर्ण समर्थन दिया। नेताओं ने विश्वास व्यक्त किया कि पेरिस सम्मेलन (नवंबर 30- दिसंबर 11, 2015) 2020 के बाद की अवधि के लिए ऐतिहासिक समझौते को अंतिम रूप देगा।
- फ्रांस ने स्मार्ट शहर विकास स्कीम का साझेदार बनने के लिए भारत के प्रस्ताव का स्वागत किया तथा यह अपने सर्वोत्तम प्रौद्योगिकीय समाधानों को लागू करने तथा एकीकृत संपोषणीय शहरों, विशेष रूप से शहरी आयोजना, शहरी ग्रिड, जल एवं स्वच्छता, संपोषणीय गतिशीलता एवं डिजिटल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने अनुभवों को साझा करने के लिए तैयार है।
- वे इस बात पर सहमत हुए कि भारत और फ्रांस को आतंकवाद की खिलाफत पर संयुक्त कार्य समूह की रूपरेखा के अंदर अपने सहयोग को गहन करना चाहिए जिसमें आतंकी नेटवर्कों पर सूचना एवं आसूचना की साझेदारी शामिल है तथा कट्टरवाद की बढ़ती घटना से निपटने पर अनुभवों को साझा करने के लिए साथ मिलकर काम करना चाहिए।
- दोनों नेताओं ने अपनी थल सेना (शक्ति), नेवी (वरूण) और वायु सेना (गरूड़) के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास के महत्व पर जोर दिया तथा आने वाले सप्ताहों में हिंद महासागर में वरूण अभ्यास में फ्रांसीसी वाहक बैटल ग्रुप की भागीदारी का स्वागत किया।

*प्रधानमंत्री की फ्रांस यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित / सहमति के कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियों / पहलों / घोषणाओं की सूची इस प्रकार है: **(10-11** अप्रैल)*

- एल एंड टी तथा अरेवा के बीच एमओयू

- एनपीसीआईएल और अरेवा के बीच इंजीनियरिंग पूर्व करार
- मेघा ट्रापिक्यू पर इसरो और सी एन ई एस के बीच एमओयू
- भारतीय उष्णकटिबंधीय क्षेत्र पर कबांड प्रसार प्रयोग के लिए इसरो, सीएनईएन और ओनेरा के बीच एमओयू
- इसरो तथा फ्रांसीसी राष्ट्रीय अंतरिक्ष अध्ययन केंद्र (सीएनईएस) के बीच कार्यक्रम
- भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) और फ्रांस सरकार के पारिस्थितिकी,संपोषणीय विकास एवं ऊर्जा मंत्रालय के बीच नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू)

ग. जर्मनी

1. प्रधानमंत्री की जर्मनी यात्रा **(12-14 अप्रैल, 2015)**

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12-14 अप्रैल 2015 को जर्मनी की आधिकारिक यात्रा की।

इस यात्रा के दौरान एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया, जिसमें निम्नलिखित प्रमुख बिंदु शामिल थे:

- विनिर्माण: भारत की मेक इन इंडिया पहल का समर्थन करने के लिए दोनों देशों के बिजनस और उद्योग के बीच मजबूत संबंधों को प्रोत्साहन देने के लिए हैनो मेस्सी में भारत की भागीदारी के जरिए हुई प्रगति का उपयोग।
- कौशल विकास: जर्मन ड्युअल पद्धति के रूप में कौशल विकास में शामिल उद्योग को मजबूत करने के जरिए प्रशिक्षुओं और अप्रेंटिसेज की संभावना बढ़ाने के लिए रूपरेखा सहित नई पहल के जरिए विद्यमान भारत-जर्मन सहयोग का विस्तार।
- शहरी विकास: क) शहरी विकास के बारे में कार्यकारी समूह की स्थापना के जरिए आपसी सहयोग को मजबूत करना। ख) प्रत्यक्ष सहयोग के लिए नगरपालिकाओं के समकक्ष नेटवर्क की स्थापना और किफायती आवास के क्षेत्र में सहायता।
- पर्यावरण: जल और कचरा प्रबंधन के क्षेत्रों में दो कार्य समूहों की स्थापना के जरिए आपसी सहयोग को मजबूत करना।
- रेलवे: सेमी हाई-स्पीड एवं हाई-स्पीड रेलवे की स्थापना और सिगनलिंग एवं दूरसंचार एवं हाई-स्पीड रेल सिस्टम की शुरुआत के साथ रेल क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं कर्मचारियों के कौशल विकास सहित रेलवे के बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण के लिए समर्थन।
- नदियों की सफाई: जर्मनी की ओर से अक्तूबर 2014 में गंगा स्कोपिंग मिशन को पूरा करने के बाद, गंगा नदी संरक्षण रणनीतियों के बारे में सहयोग विकसित करना, शहरी स्वच्छता को समर्थन, औद्योगिक प्रदूषण के बारे में मानकों और दृष्टिकोण की स्थापना तथा नवाचार वित्तीय मॉडल की स्थापना।
- नवीकरणीय ऊर्जा: भारत में छतों पर सौर ऊर्जा की व्यापक व्यवस्था एवं पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा गलियारा परियोजनाओं के विकास के लिए तकनीकी एवं वित्तीय सहायता के जरिए 2022 तक 175 गीगा वॉट नवीकरणीय ऊर्जा के भारत के प्रस्तावित लक्ष्य में समर्थन।
- शिक्षा: उच्च शिक्षा कार्यक्रम में भारत-जर्मन महत्वपूर्ण भागीदारी और भारत की ज्ञान पहल की रूपरेखा में दोनों देशों के बीच वैज्ञानिकों के आदान-प्रदान को बढ़ाने के जरिए भारत और जर्मनी में विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग को मजबूत करने तथा मानव विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में अंतर्राष्ट्रीय एडवान्स अध्ययन केंद्र की स्थापना सहित शिक्षा के क्षेत्र में आदान-प्रदान को प्रोत्साहन।
- भाषा: प्रत्येक देश की राष्ट्रीय नीति के अनुरूप युवाओं में एक दूसरे की भाषाओं के ज्ञान

को व्यापक करने के लिए भारत और जर्मनी में संबंधित कार्यक्रमों एवं प्रयासों को समर्थन।

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी (एस एंड टी): दोनों पक्षों ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में निकट अनुसंधान और विकास सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अपनी मंशा घोषित की, विशेष रूप से उपयुक्त संसाधनों के साथ भारत में द्वि-राष्ट्रीय इंडो-जर्मन विज्ञान और प्रौद्योगिकी केंद्र के कार्यकाल का विस्तार करने के माध्यम से, भू-विज्ञान के क्षेत्र में संस्थागत सहयोग के लिए पृथ्वी विज्ञान, भारत और हेलमहोल्ट एसोसिएशन, जर्मनी के बीच सहयोग व्यवस्था, और विज्ञान संचार में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद और लाइबनिज एसोसिएशन, जर्मनी के बीच समझदारी।

2. विदेश मंत्री की जर्मनी की यात्रा **(25-27** अगस्त**, 2015)**

विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने जर्मन विदेश मंत्री फ्रैंक वाल्टर स्टाइनमीयर और कई अन्य नेताओं से मुलाकात की। जर्मनी में भारतीय प्रवासी का प्रतिनिधित्व करने वाले गणमान्य व्यक्तियों का एक छोटा समूह भी मंत्री से मिला। हर्षा ग्राममिंगर ने यूरोप में आयुर्वेद और आयुष चिकित्सा पद्धति की प्रगति में यूरोपीय आयुर्वेद संघ (ईयूएए) और इसके कार्य को प्रस्तुत किया। ग्राममिंगर ने द्वितीय यूरोपीय विश्व आयुर्वेद कांग्रेस, अक्टूबर 2016, कोब्लेंज़, जर्मनी के लिए मंत्री की संक्षिप्त योजनाओं के साथ भी साझा किया।

3. जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल का भारत दौरा, **4-6** अक्टूबर**, 2015**

जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल ने भारत और जर्मनी के बीच तीसरे अंतर सरकारी परामर्श (आईजीसी) के लिए 4-6 अक्टूबर 2015 तक भारत का दौरा किया।

यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित एमओयू की सूची:

- भारत में एक विदेशी भाषा के रूप में जर्मन को बढ़ावा देने तथा जर्मनी में आधुनिक भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के संबंध में भारत गणराज्य के मानव संसाधन विकास मंत्रालय और जर्मनी संघीय गणराज्य के संघीय विदेश कार्यालय के बीच संयुक्त मंशा घोषणा।
- भारत सरकार तथा जर्मनी संघीय गणराज्य की सरकार के बीच विकास सहयोग पर वार्ता का सारांश रिकार्ड।
- भारत – जर्मनी सौर ऊर्जा साझेदारी के संबंध में भारत – जर्मनी विकास सहयोग पर जर्मनी संघीय गणराज्य के संघीय आर्थिक सहयोग एवं विकास मंत्रालय तथा भारत गणराज्य के नवीन एवं नवीकरण ऊर्जा मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन।
- कौशल विकास तथा व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक ओर भारत गणराज्य के कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय और दूसरी ओर जर्मनी संघीय गणराज्य के संघीय आर्थिक सहयोग एवं विकास मंत्रालय तथा संघीय शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन।
- सुरक्षा सहयोग पर भारत गणराज्य के गृह मंत्रालय और जर्मनी संघीय गणराज्य के संघीय आतंरिक मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन।
- विमानन सुरक्षा पर भारत गणराज्य के नागर विमानन मंत्रालय और जर्मनी संघीय गणराज्य के संघीय आंतरिक मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन।
- आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य के गृह मंत्रालय और जर्मनी संघीय गणराज्य के संघीय आंतरिक मंत्रालय के बीच संयुक्त मंशा घोषणा।
- भारत – जर्मनी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (आई.जी.एस.टी.सी.) का कार्यकाल बढ़ाने पर

भारत गणराज्य के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा जर्मनी संघीय गणराज्य की सरकार के संघीय शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्रालय के बीच संयुक्त घोषणा।

- उक्त शिक्षा में भारत – जर्मनी साझेदारी (आईजीपी) पर विश्वविद्यालय अनुसंधान आयोग (यूजीसी) और जर्मनी शैक्षिक विनिमय सेवा (डीएएडी), जर्मनी के बीच समझौता ज्ञापन।
- पादप संरक्षण उत्पादों पर भारत सरकार के कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय (एमओए एंड एफडब्ल्यू) तथा जर्मनी संघीय गणराज्य के संघीय उपभोक्ता संरक्षण एवं खाद्य सुरक्षा कार्यालय (बीवीएल) के बीच संयुक्त मंशा घोषणा।
- रेलवे के क्षेत्र में सहयोग के और विकास पर भारत गणराज्य के रेल मंत्रालय और जर्मनी संघीय गणराज्य के संघीय परिवहन एवं डिजिटल अवसंरचना मंत्रालय के बीच संयुक्त मंशा घोषणा।
- विनिर्माण के क्षेत्र में सहयोग पर भारत सरकार के भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम विभाग तथा फ्राउनहूफर सोसायटी, जर्मनी के बीच समझौता ज्ञापन।
- भारत में जर्मनी की कंपनियों के लिए एक फास्ट ट्रैक सिस्टम गठित करने पर संयुक्त घोषणा।
- भारत से कारपोरेट कार्यपालकों तथा कनिष्ठ कार्यपालकों के उन्नत प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग जारी रखने पर जर्मनी संघीय गणराज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच संयुक्त घोषणा।
- संघीय जोखिम आंकलन संस्थान (बीएफआर) और भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) के बीच खाद्य सुरक्षा में सहयोग पर संयुक्त मंशा वक्तव्य।
- खाद्य सुरक्षा में सहयोग पर भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) और संघीय उपभोक्ता संरक्षण एवं खाद्य सुरक्षा कार्यालय (बीवीएल) के बीच संयुक्त मंशा वक्तव्य।
- कृषि अध्ययन में सहयोग पर जर्मनी कृषि व्यवसाय गठबंधन और भारतीय कृषि कौशल परिषद (एएससीआई) के बीच समझौता ज्ञापन।
- लेंडाऊ नोबल पुरस्कार विजेता बैठकों के लिए प्राकृतिक विज्ञानों में युवा भारतीय वैज्ञानिकों की भागीदारी की मदद पर भारत गणराज्य की सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), लेंडाऊ नोबल पुरस्कार विजेता बैठक परिषद (परिषद) और लेंडाऊ नोबल पुरस्कार विजेता बैठक प्रतिष्ठान (प्रतिष्ठान) के बीच मंशा पत्र।

4. जलवायु परिवर्तन तथा ऊर्जा प्रौद्योगिकी सहयोग पर भारत-जर्मनी संयुक्त वक्तव्य **(05** अक्टूबर**, 2015)**

- दोनों देशों का दीर्घावधिक लक्ष्य पूर्व औद्योगिक स्तरों से दो डिग्री सेल्सियस नीचे विश्व के औसत तापमान में वृद्धि को बनाए रखना है।
- जर्मनी विशेष रूप से सौर ऊर्जा में, 2022 तक 175 गीगावाट की नवीकरणीय ऊर्जा के इसके लक्ष्य के साथ संगत विद्युत उत्पादन में नवीकरणीय ऊर्जा के शेयर को बढ़ाकर इसके ऊर्जा क्षेत्र में परिवर्तन की भारत की मंशा का स्वागत करता है।
- भारत और जर्मनी जलवायु वित्त पोषण के महत्व को रेखांकित करते हैं तथा विकासशील देशों के लिए 2020 तक हर साल सार्वजनिक एवं निजी स्रोतों से संयुक्त रूप से 100 बिलियन अमरीकी डालर जुटाने के लिए विकसित देशों द्वारा प्रतिबद्धता पर बल देते हैं।
- भारत और जर्मनी ने जलवायु नीति पर नियमित रूप से चर्चा करने और न्यून कार्बन अर्थव्यवस्थाओं में भारत और जर्मनी के संक्रमण तथा संपोषणीय विकास के लिए इससे संबद्ध लाभों के संबंध में विचारों का आदान-प्रदान करने के उद्देश्य से भारत-जर्मनी पर्यावरण फोरम के तहत जलवायु परिवर्तन पर एक भारत-जर्मनी कार्य समूह का गठन किया है।
- भारत और जर्मनी ने भारत-जर्मनी जलवायु और नवीकरणीय गठबंधन का गठन करने का

निर्णय लिया है जो सबके लिए सस्ती, स्वच्छ एवं नवीकरणीय ऊर्जा को सुगम बनाने तथा दोनों देशों में जलवायु परिवर्तन के उपशमन संबंधी प्रयासों को पोषित करने के उद्देश्य से प्रौद्योगिकी, नवाचार और वित्त पोषण का उपयोग करने के लिए एक व्यापक साझेदारी है।

- भारत और जर्मनी स्वीकार करते हैं कि जलवायु परिवर्तन प्रतिक्रियाएं और समाधान नए अवसर और सह-लाभ उत्पन्न करते हैं।
- दोनों देश इस बात की पुष्टि करते हैं पहले से ही स्थापित अनेक द्विपक्षीय वार्ता संरचनाएं, जैसे कि भारत-जर्मनी ऊर्जा मंच (आई जी ई एफ), भारत-जर्मनी उच्च प्रौद्योगिकी साझेदारी समूह, मानकीकरण, अनुरूपता आकलन और उत्पाद सुरक्षा में सहयोग के लिए गुणवत्ता अवसंरचना पर भारत – जर्मनी कार्य समूह तथा भारत – जर्मनी परामर्श समूह न्यून कार्बन वाली अर्थव्यवस्थाओं में संक्रमण के लिए पहले से ही महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।
- प्रधानमंत्री मोदी तथा संघीय चांसलर मर्केल ने नवाचार को बढ़ावा देने के लिए पारदर्शी एवं अनुमेय नीतिगत परिवेश प्रदान करने के महत्व की फिर से पुष्टि की। प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसे बाजार का माहौल सृजित करने के लिए भारत के चल रहे प्रयासों पर जोर दिया जो जलवायु प्रौद्योगिकी में व्यापार एवं निवेश को बढ़ावा देगा। जर्मनी नवीकरणीय, विशेष रूप से सौर, ऊर्जा प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करने के लिए भारत के प्रयासों में उसका और समर्थन करने तथा आकर्षक रूपरेखा की स्थितियां (उदाहरण के लिए भारत-जर्मनी ऊर्जा मंच, भारत-जर्मनी सौर साझेदारी, आई जी ई एन के माध्यम से) सृजित करने के लिए तैयार है।
- भारत और जर्मनी राजनीतिक कार्यान्वयन रणनीतियों पर अनुभवों का आदान-प्रदान करने के महत्व को स्वीकार करते हैं, जो न्यून कार्बन, जलवायु अनुकूल ऊर्जा उत्पादन एवं उपभोग की दिशा में आगे बढ़ने में देशों की मदद कर सकती हैं। इसलिए, दोनों नेता न्यून कार्बन विकास प्रापत करने की दिशा में उनके प्रयासों में अन्य विकासशील देशों की मदद करने के लिए अपने प्रयासों का विस्तार करने पर सहमत हुए।
- भारत और जर्मनी ऐसे समाधानों का विकास करने और लागू करने के लिए साथ मिलकर काम करेंगे जो जलवायु अनुकूल शहरी विकास को सुदृढ़ करते हैं जिसमें अन्य बातों के साथ, शहरों में ऊर्जा संक्रमण की पहलें, जलवायु अनुकूल शहरी गतिशीलता, आवास क्षेत्र में ऊर्जा दक्षता, शहरी जलापूर्ति में ऊर्जा दक्षता और प्रमुख भारतीय शहरों में पुनर्चक्रण एवं अपशिष्ट प्रबंधन शामिल हैं।

5. संयुक्त वक्तव्य - नई दिल्ली में तीसरा भारत जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श (आईजीसी) **(05 अक्टूबर, 2015)**

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और जर्मनी चांसलर डा. एंजिला मर्केल के बीच भारत और जर्मनी के बीच सामरिक साझेदारी को एक नए चरण में ले जाने पर सहमति हुई जिसके लिए दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए संपूरकताओं पर तथा विदेश एवं सुरक्षा मुद्दों पर बढ़ते अभिसरण को सुदृढ़ किया जाएगा।

उन्होंने पिछले साल अप्रैल में प्रधानमंत्री मोदी की बर्लिन एवं हन्नोवर 2015 की यात्राओं तथा दोनों देशों की ओर से मंत्री स्तर पर अनेक यात्राओं के माध्यम से 2013 में पिछली आई जी सी के बाद से उच्च स्तर पर भागीदारी के तीव्र होने का स्वागत किया। उन्होंने अगले दो वर्षों में आदान – प्रदान के मोमेंटम को बनाए रखने की प्रतिबद्धता की। उन्होंने नोट किया कि सामरिक साझेदारी के 15 वर्षों में भारत – जर्मनी सहयोग साझे लोकतांत्रिक मूल्यों पर टिका है, जिसकी विशेषता विश्वास एवं परस्पर सम्मान है तथा यह सुरक्षा में घनिष्ठ सहयोग एवं वार्ता, व्यापार एवं निवेश में वृद्धि, विनिर्माण, कौशल विकास, स्वच्छ ऊर्जा, अवसंरचना, नवाचार एवं शिक्षा में साझेदारी के माध्यम से स्थिरता, समृद्धि एवं संपोषणीय विकास की ओर केंद्रित है। आने वाले दो वर्षों की ओर देखते हुए भारत और जर्मनी ने इन

लक्ष्यों को संयुक्त रूप से पूरा करने के लिए एक महत्वकांक्षी द्विपक्षीय एजेंडा की प्रतिबद्धता की है।

- सुरक्षा को मजबूत करना और स्थिर वैश्विक व्यवस्था का निर्माण करना
- समावेशी तथा कौशल आधारित समृद्धि की दिशा में व्यवसायों के साथ काम करना
- संपोषणीय जीविका तथा स्वच्छ पर्यावरण का निर्माण
- नवाचार एवं शिक्षा को एक साथ गति देना
- परस्पर समझ एवं आदान – प्रदान में वृद्धि

घ. ग्रेट ब्रिटेन

1. यूके - भारत शिखर बैठक **2015** पर विजन वक्तव्य **(12** नवंबर**, 2015)**

यूके-भारत शिखर सम्मेलन 2015 (12 नवंबर, 2015) पर प्रधानमंत्री मोदी और यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री डेविड कैमरन के विजन वक्तव्य का अनुलेखन।

- विजन वक्तव्य उन बातों को समर्थन करता जो मौलिक सिद्धांतों को प्रतिपादित करता है जिन पर यूके - भारत साझेदारी निर्मित है और यह सहयोग को गहन करने के लिए एक रोड मैप को रेखांकित करता है। उन्होंने इस साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री स्तर पर द्विवार्षिक शिखर बैठकों का आयोजन करने का संकल्प किया। उन्होंने एक नई रक्षा एवं अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा साझेदारी पर सहमत होने का भी संकल्प किया जिससे साइबर सुरक्षा, आतंकवाद की खिलाफत एवं समुद्री सुरक्षा सहित रक्षा एवं सुरक्षा पर सहयोग गहन होगा।
- विजन वक्तव्य में सहयोग के निम्नलिखित क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है: वैश्विक साझेदारी का निर्माण, आर्थिक विकास और वित्त, मेक इन इंडिया, व्यवसाय, स्मार्ट शहर और शहरी नवीकरण, शिक्षा, कौशल, विज्ञान और अनुसंधान, स्वास्थ्य, संस्कृति और अपराध में सहयोग।

2. यूके - भारत शिखर बैठक **2015** पर संयुक्त वक्तव्य **(12** नवंबर**, 2015)**

- इस सदी के लिए कौशल में निवेश और लोगों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली नौकरियों का सृजन। मानव विकास को आगे बढ़ाने हेतु स्वास्थ्य और शिक्षा में सहयोग। पृथ्वी पर सबसे उपयुक्त संभव पदचिह्न के साथ बुनियादी ढांचे में निवेश और विनिर्माण को बढ़ावा देना, जिसमें उन्नत प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र शामिल हैं। सेवाओं में क्रांति लाने, लोगों की समृद्धि बढ़ाने और साझा चुनौतियों का समाधान करने हेतु डिजिटल युग के विशाल नए अवसरों का उपयोग करना। लोगों की विकास आकांक्षाओं को पूरा करते हुए, कम कार्बन भविष्य की दृष्टि को साकार करने में अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के अग्रणी छोर का निर्माण करना। सस्ती और सुलभ स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देना। नदियों को साफ-सुथरा बनाने के लिए, स्वस्थ जीवन स्थल और स्मार्ट, स्थायी शहरों का निर्माण जिसमें सभी लोग समृद्ध हो सकते हैं।
- दोनों देश कानून के अंतरराष्ट्रीय शासन को बनाए रखने और संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों के ढांचे के भीतर वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए प्रतिबद्ध हैं। यूके भारत के अंतरराष्ट्रीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं की सदस्यता का समर्थन करता है, ताकि हम एक साथ मिलकर, जिस तरह की वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, उसका जवाब देने के लिए हम नियमों पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली को नए सिरे से स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त कर सकें। सुरक्षा और रक्षा सहयोग में अग्रगामी कदमों पर सहमति।

3. तीसरे देशों में सहयोग के लिए साझेदारी पर इरादे का वक्तव्य

दोनों प्रधानमंत्री "तीसरे देशों में सहयोग के लिए साझेदारी पर मंशा वक्तव्य" के माध्यम से विकास के लिए वैश्विक साझेदारी में द्विपक्षीय सहयोग की मात्रा बढ़ाने पर भी सहमत हुए जो तीसरे देशों के साझेदारों के लाभ के लिए साथ मिलकर काम करने को सुगम बनाएगा जिसके तहत पूर्णतया मांग पर आधारित ढंग से उनकी विकास चुनौतियों से निपटने में उनकी मदद की जाएगी।

4. ऊर्जा एवं जलवायु परिवर्तन पर भारत - यूके संयुक्त वक्तव्य

- प्रधानमंत्री कैमरन ने इस बात को रेखांकित किया कि यूके 2050 तक ग्रीन हाउस गैस के अपने उत्सर्जन में कम से कम 80 प्रतिशत की कटौती करने के लिए प्रतिबद्ध है, जैसा कि जलवायु परिवर्तन अधिनियम 2008 में प्रतिपादित किया गया है तथा वह सर्वाधिक लागत प्रभावी ढंग से अपने कार्बन बजट को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात को उजागर किया कि भारत 2030 तक 2005 के स्तरों की तुलना में अपने उत्सर्जन में 33 से 35 प्रतिशत की कटौती करने के लिए प्रतिबद्ध है और राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित विकास के उपायों एवं प्राथमिकता के माध्यम से 2030 तक गैर जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा स्रोतों से संचयी रूप में अपनी 40 प्रतिशत विद्युत क्षमता स्थापित करेगा।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने जलवायु वित्त पोषण तथा विकसित देशों द्वारा व्यापक श्रेणी के सार्वजनिक एवं निजी दोनों स्रोतों से वर्ष 2020 तक प्रतिवर्ष 100 बिलियन अमरीकी डालर की राशि संयुक्त रूप से जुटाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता के महत्व पर जोर दिया जो उपशमन के सार्थक कदमों तथा कार्यान्वयन में पारदर्शिता के संदर्भ में है। भारत और यूके ने विकासशील देशों में उपशमन एवं अनुकूलन के प्रयासों की सहायता करने के लिए अनुमेय एवं अधिक सार्वजनिक एवं निजी जलवायु वित्त पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया।
- प्रधानमंत्री मोदी एवं प्रधानमंत्री कैमरन ने दोनों देशों के बीच ऊर्जा सहयोग सुदृढ़ करने लिए एक समझौता ज्ञापन (एम ओ यू) पर हस्ताक्षर होने का स्वागत किया जो विद्युत बाजार सुधार, ऊर्जा दक्षता, आफशोर विंड, सौर विद्युत, स्मार्ट ग्रिड, ऊर्जा भंडार और आफ ग्रिड नवीकरणीय ऊर्जा सेवाओं जैसे क्षेत्रों में विद्यमान सफलताओं को सुदृढ़ करेगा और भविष्य में घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा देगा। उन्होंने द्विपक्षीय असैन्य परमाणु सहयोग करार पर वार्ता की सफल समाप्ति का भी स्वागत किया जो भावी सहयोग की रूपरेखा प्रदान करेगा तथा परमाणु ऊर्जा साझेदारी के लिए भारतीय वैश्विक केंद्र के साथ असैन्य परमाणु पर संयुक्त प्रशिक्षण एवं अनुभव की साझेदार को प्रोत्साहित करने के लिए यूके तथा भारत के परमाणु ऊर्जा विभाग के बीच एक एमओयू पर हस्ताक्षर होने की घोषणा की।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने सबके लिए सुरक्षित, सस्ती एवं संपोषणीय ऊर्जा प्रदान करने में कौशल एवं विशेषज्ञता की साझेदारी के महत्व की फिर से पुष्टि की। प्रधानमंत्री कैमरन ने भारत के विद्युत क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय सुधारों की सहायता के लिए तकनीकी सहायता के पांच वर्षीय कार्यक्रम के लिए 10 मिलियन पाउंड की घोषणा की।

5. रक्षा और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा साझेदारी

भारत और यूके ने अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली को मजबूत करने और वैश्विक खतरों का बेहतर मुकाबला करने हेतु गहन साझेदारी विकसित करने का संकल्प लिया। प्रमुख क्षेत्रों में रक्षा सहयोग, मेक इन इंडिया, संयुक्त राष्ट्र सुधार, आतंकवाद, साइबर, गंभीर और संगठित अपराध और समुद्री सुरक्षा जैसे वैश्विक मुद्दे होंगे।

सहयोग तंत्र पर अनुलग्नक में यह कहा गया था कि भारत और यूके अपने वार्षिक विदेश कार्यालय संवाद और एनएसए-एनएसए वार्ता द्वारा समर्थित द्विवार्षिक पीएम-पीएम शिखर सम्मेलन के माध्यम से अपने

द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करेंगे। दोनों देश रक्षा मंत्रियों के बीच और संयुक्त / एकीकृत और एकल सेवा प्रमुखों के बीच वार्षिक रणनीतिक संवाद करेंगे। यह प्रस्ताव भारत में 2017 के लिए नौसेना, सेना और वायु सेना के अभ्यास 2017 के साथ शुरू होने वाले उनके द्विवार्षिक सैन्य अभ्यास कार्यक्रम को तेज करने हेतु है। और निरस्त्रीकरण और अप्रसार मुद्दों पर नियमित परामर्श आयोजित करेगा।

ङ. आयरलैंड

1. प्रधानमंत्री की आयरलैंड यात्रा, **23** सितंबर**, 2015**

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने आयरलैंड का दौरा किया और प्रधानमंत्री एंडा केनी से मुलाकात की। यह 59 वर्षों के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की आयरलैंड यात्रा थी। दोनों नेताओं ने संयुक्त प्रेस वार्ता की। सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और शिक्षा सहयोग के प्रमुख क्षेत्र थे। भारत ने यूएनएससी की स्थायी सदस्यता के लिए आयरलैंड का समर्थन मांगा। आयरलैंड में लगभग 26,000 भारतीय रहते हैं, जो जीवंत समुदाय का निर्माण करते हैं।

च. नॉर्वे का साम्राज्य

1. किंगडम ऑफ नार्वे के विदेश मामलों के मंत्री**,** बोर्ग ब्रेंडे के नेतृत्व में भारत नॉर्वे संयुक्त आयोग की बैठक (जेसीएम) के लिए वरिष्ठ अधिकारियों के एक शिष्टमंडल ने भारत का दौरा किया (नई दिल्ली में **02** नवंबर **2015)**

चर्चा के दौरान, दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि नॉर्वे-भारत व्यापार और निवेश संबंधों में गतिशीलता और ऊर्जा है, हालांकि अभी इस दिशा में बहुत कुछ हासिल किया जाना बाकी है। भारत चाहेगा कि नॉर्वे बंदरगाहों, सड़कों और रेलवे सहित अगली पीढ़ी के बुनियादी ढांचे के निर्माण में संलग्न हो, जिसमें मत्स्य पालन / समुद्री संसाधनों में सक्रिय सहयोग जैसे कि क्रिल फिशिंग, ट्राउट खेती, समुद्री पिंजरे की संस्कृति और स्टॉक की मैपिंग शामिल है। संयुक्त प्रयास का एक उद्देश्य शिपबिल्डिंग और शिपिंग को अधिक कुशल और पर्यावरण के अनुकूल बनाना है। शिक्षा में द्विपक्षीय सहयोग ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, महासागर और आर्कटिक / ध्रुवीय अनुसंधान, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सूचना सुरक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में स्नातकोत्तर स्तर पर संयुक्त अनुसंधान और उच्च शिक्षा; शहरी नियोजन और विकास; वातावरण; जैव प्रौद्योगिकी और चिकित्सा विज्ञान; समुद्री विज्ञान; नवाचार और भू-खतरों तक फैला हुआ है।

छ. नीदरलैंड

नीदरलैंड के प्रधानमंत्री महामहिम श्री मार्क रूट ने 5-6 जून, 2015 को भारत का दौरा किया। बैठक के दौरान दोनों प्रधानमंत्रियों ने दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे मैत्री के ऐतिहासिक संबंधों पर संतोष व्यक्त किया जो चार शताब्दी से अधिक समय से चला आ रहा है तथा लोकतंत्र, बहुलवाद, बहुसंस्कृतिवाद, मानवाधिकार तथा कानून के शासन के साझे मूल्यों पर आधारित है। बढ़ते राजनीतिक, आर्थिक, संस्थानिक और जन दर जन आदान-प्रदान एवं सहयोग पर संतोष व्यक्त करते हुए उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों में नई गति का स्वागत किया। उन्होंने विशेष रूप से पिछले दशक में आर्थिक एवं वाणिज्यिक भागीदारी में महत्वपूर्ण विस्तार तथा आपसी हित के अनेक प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग को तेज करने के लिए दोनों पक्षों की गंभीर रूचि को नोट किया जहां ऐसी संपूरकताएं हैं जिनका अभी तक दोहन नहीं है तथा परस्पर सिनर्जी है। शांति एवं सुरक्षा, अबाध एवं निष्पक्ष व्यापार तथा खुली, न्यायोचित,

समावेशी एवं कानून पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था सहित अनेक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के समाधान में अपने साझे हितों एवं जिम्मेदारियों को स्वीकार करते हुए दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर गहन चर्चा की। चुनौतियों एवं खतरों के उत्तरोत्तर वैश्विक स्वरूप तथा एक-दूसरे की सुरक्षा में साझे हित को स्वीकार करते हुए दोनों प्रधानमंत्री भारत एवं नीदरलैंड के बीच रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग का विस्तार करने पर सहमत हुए। दोनों प्रधानमंत्रियों ने रक्षा क्षेत्र में भारत की मेक इन इंडिया पहल में नीदरलैंड की भागीदारी की संभावना का स्वागत किया।

दोनों देशों के लिए हिंसक अतिवाद एवं आतंकवाद के विस्तार से उत्पन्न गंभीर खतरे के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए दोनों प्रधानमंत्रियों ने सभी रूपों एवं अभिव्यक्तियों के आतंकवाद से लड़ने में अपनी – अपनी प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि की तथा आतंकवाद की खिलाफत पर संयुक्त राष्ट्र वैश्विक रणनीति का कार्यान्वयन तथा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय को जल्दी से संपन्न करने सहित एक समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से आतंकवाद के उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा एकीकृत एवं सामूहिक प्रयास की आवश्यकता को दोहराया। इस क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए उन्होंने आतंकवाद की खिलाफत पर एक संयुक्त कार्य समूह के गठन तथा इस समूह की पहली बैठक के आयोजन का स्वागत किया।

ज. स्पेन

1. भारत-स्पेन विदेश कार्यालय परामर्श का तीसरा दौर, मार्च **02, 2015**

- भारत-स्पेन विदेश कार्यालय परामर्श का तीसरा दौर 02 मार्च, 2015 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) नवतेज सिंह सरना और स्पेन के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व स्पेन के विदेश मामलों के राज्य सचिव इगनसियो यबानेज़ ने किया।
- उन्होंने मौजूदा द्विपक्षीय समझौतों पर प्रगति की समीक्षा की और विचाराधीन समझौतों पर चर्चा की। दोनों पक्षों द्वारा दिए गए द्विपक्षीय सहयोग पर सहमति व्यक्त की गई कि वर्ष 2016 उच्च स्तरीय यात्राओं, सांस्कृतिक गतिविधियों, व्यापारिक आदान-प्रदान आदि का आयोजन करके भारत और स्पेन के बीच राजनयिक संबंधों की 60वीं वर्षगांठ को चिह्नित करेगा।

2. स्पेन के विदेश मामले एवं सहयोग मंत्री की भारत यात्रा (26-28 अप्रैल, 2015)

भारत की विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज और स्पेन के विदेश मामले और सहयोग मंत्री श्री जोस मैनुएल गार्सिया - मार्गेलो ने भारत की स्पेन के विदेश मंत्री की आधिकारिक यात्रा के दौरान 27 अप्रैल, 2015 को मुलाकात की। मंत्रियों ने आर्थिक सहयोग बढ़ाने, द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने और दक्षिण एशिया तथा यूरोप की स्थिरता व समृद्धि में योगदान करने हेतु कई कार्यों का निर्णय लिया। उनमें से प्रमुख हैं:

- दोनों विदेश मंत्री परस्पर सुविधा के अनुसार शासनाध्यक्षों के स्तर पर दोनों देशों के बीच जल्दी से एक शिखर बैठक की सिफारिश की।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने दक्षिण एशिया, मध्य - पूर्व, मघरेब तथा उप सहारा अफ्रीका में स्थिति के अलावा वैश्विक मुद्दों जैसे कि आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद एजेंडा के संबंध में सूचना का आदान - प्रदान तथा नीतिगत समन्वय तीव्र करने का निर्णय लिया।
- दोनों पक्ष साझी सामरिक सुरक्षा चुनौतियों का आकलन करने, विचारों को आदान - प्रदान करने और द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय स्तर पर सहयोग बढ़ाने के लिए भारत के विदेश मंत्री तथा स्पेन के विदेश मामले एवं सहयोग मंत्री के नेतृत्व में एक नियमित सुरक्षा नीति

वार्ता शुरू करने पर सहमत हुए।

- दोनों विदेश मंत्रियों ने अपने - अपने थिंक टैंक एवं शैक्षिक संस्थाओं से विदेश मामले एवं सुरक्षा के क्षेत्रों में विशेषज्ञों के आदान - प्रदान का स्वागत किया तथा विश्वास व्यक्त किया कि ऐसे सहयोग से आपसी हित के सुरक्षा एवं सामरिक मुद्दों पर आपसी समझ में वृद्धि होगी। दोनों विदेश मंत्रियों ने द्विपक्षीय संबंध को आगे बढ़ाने में लोक राजनय एवं साझेदार के महत्वपूर्ण हितधारकों के रूप में "कासा एशिया" और "रेड डी कासास" नेटवर्क की प्रासंगिकता पर जोर दिया। इस संदर्भ में, स्पेन - भारत अधिकरण तंत्र के माध्यम से दोनों देशों के बीच लोक राजनय के संबंधों को फिर से जिंदा करने पर सहमति हुई। दोनों देशों के राजनयिक प्रशिक्षण संस्थानों के बीच सहयोग का पता लगाने पर भी सहमति हुई।
- 2016 में राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ मनाने के संदर्भ में इस बात पर सहमति हुई कि दोनों देश संगत संस्थाओं के साथ घनिष्ठ सहयोग में संस्मारक कार्यक्रमों के लिए यथा संभव सहायता प्रदान करेंगे। दोनों पक्ष अर्थव्यवस्था, संस्कृति, शैक्षिक संस्था तथा शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पर्यटन के क्षेत्रों में परस्पर आदान - प्रदान को सक्रियता से बढ़ावा देने तथा अपने लोगों के बीच परस्पर समझ एवं मैत्री बढ़ाने के तरीकों का पता लगाने पर सहमत हुए।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने व्यवसाय एवं सभ्य समाज के बीच नेटवर्क का विस्तार करने के लिए पहलों के महत्व को भी स्वीकार किया तथा भारत - स्पेन परिषद प्रतिष्ठान के लिए अपना पूर्ण समर्थन व्यक्तिकया। इस संबंध में, उन्होंने स्पेन में 3-4 दिसंबर, 2014 को पहले भारत - स्पेन मंच के सफल आयोजन पर संतोष व्यक्त किया जिसमें संपोषणीय शहरों तथा परिवहन नेटवर्कों पर ध्यान केंद्रित किया गया था।
- दोनों विदेश मंत्रियों ने निम्नलिखित करारों पर बातचीत में उत्साहवर्धक प्रगति को भी नोट किया : सजायाफ्ता व्यक्तियों के हस्तांतरण के लिए करार, राजनयिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा से छूट पर करार, राजनयिक मिशन या कांसुलर पद के सदस्यों के आश्रितों के लिए लाभप्रद रोजगार पर करार, सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में करार, नागर विमानन एवं सुरक्षा पर करार, प्रत्यारोपण सेवाओं पर सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन तथा पत्तन मामलों पर सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन तथा उम्मीद व्यक्त की कि शीघ्र ही इनको संपन्न किया जाएगा।

I. स्वीडन

1. मई-जून **2015** में राष्ट्रपति की स्वीडन यात्रा (**31** मई -**2** जून **2015)**

संयोग से, यह भारत से किसी राज्य प्रमुख का पहला स्वीडन दौरा था। यात्रा के दौरान, दोनों देशों के बीच सतत विकास के क्षेत्र, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में, राजनयिक पासपोर्ट के लिए वीजा छूट, विशेष रूप से ध्रुवीय और महासागर अनुसंधान में स्वास्थ्य पर शोध और स्वास्थ्य पर कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। आपसी सहयोग हेतु दोनों देशों के प्रमुख विश्वविद्यालयों के बीच कई शिक्षा संबंधी समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

2. **1** जून को भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी स्वीडन ने राजकीय यात्रा की

अपने महाभोज भाषण में राष्ट्रपति ने कि भारत और स्वीडन के बीच लंबे समय से चली आ रही दोस्ती की सराहना की। भौगोलिक रूप से दूर होने के बावजूद, दोनों देश लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रथाओं के लिए अपनी प्रतिबद्धता से बाध्य हैं। दोनों ओपन हैं, बहुलवादी समाज, भारत और स्वीडन मानव अधिकारों और कानून के शासन के संरक्षण हेतु प्रतिबद्ध हैं। वर्षों से, भारत और स्वीडन ने आपसी विश्वास और

सद्भावना विकसित की है, जिससे दोनों देशों के लोगों को कई क्षेत्रों में सामान्य लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिली है। राष्ट्रपति ने जोर देकर कहा कि भारत और स्वीडन दोनों पूर्ण क्षमता हेतु अपना सहयोग बढ़ाने की इच्छा रखते हैं।

III. जापान

1. विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के निमंत्रण पर, जापान की विदेश मंत्री फुमियो किशिदा ने 16 से 18 जनवरी, 2015 तक नई दिल्ली की आधिकारिक यात्रा की। विदेश मंत्री ने जापानी विदेश मंत्री के साथ 17 जनवरी 2015 को 8वीं भारत-जापान रणनीतिक वार्ता की सह-अध्यक्षता की। दोनों मंत्रियों ने बैठक में द्विपक्षीय संबंधों, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सहयोग और रणनीतिक क्षेत्रीय सहयोग पर विचारों का आदान-प्रदान किया। दोनों मंत्रियों ने जापान-भारत-यू.एस. सहित त्रिपक्षीय सहयोग, और संयुक्त समुद्री अभ्यास जैसे सुरक्षा सहयोग राजनीतिक संवाद को बढ़ावा देने की भी पुष्टि की।
2. जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने 11 से 13 दिसंबर 2015 तक भारत का दौरा किया। भारत और जापान विजन 2025 का संयुक्त वक्तव्य: विशेष सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी - हिंद महासागर - प्रशांत क्षेत्र तथा पूरी दुनिया में शांति एवं समृद्धि के लिए साथ मिलकर काम करने पर संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया। कुछ मुद्दों पर चर्चा और सहमति के क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

    - दोनों नेताओं ने भारत - जापान विशेष सामरिक एवं वैश्विक साझेदारी, जो विकास के लिए सबसे अधिक संभावना के साथ एक प्रमुख संबंध है, को एक गहन, विस्तृत एवं कार्योन्मुख साझेदारी में परिवर्तित करने का संकल्प किया जो उनके दीर्घावधिक राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक लक्ष्यों में विस्तृत तालमेल को प्रतिबिंबित करता है।
    - भारत और जापान विजन 2025 के उद्देश्यों को साकार करने के विचार से दोनों नेताओं ने एक व्यापक एवं ठोस मध्यम एवं दीर्घावधिक कार्य योजना तैयार करने का निर्णय लिया।
    - भारत और जापान क्षेत्रीय आर्थिक एवं सुरक्षा मंचों को सुदृढ़ करने के लिए काम करेंगे तथा संयुक्त राष्ट्र का सुधार, जलवायु परिवर्तन एवं आतंकवाद सहित वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी कार्रवाइयों में समन्वय स्थापित करेंगे।
    - भारत-जापान की भविष्योन्मुख साझेदारी अवसंरचना, विनिर्माण तथा उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में हमारे सहयोग को एक नए स्तर पर ले जाती है जिसमें उन्नत परिवहन प्रणालियां, असैन्य परमाणु ऊर्जा, सौर ऊर्जा उत्पादन, अंतरिक्ष, जैव प्रौद्योगिकी, दुर्लभ मृदा एवं उन्नत सामग्री शामिल हैं।
    - रक्षा उपकरण और प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण से संबंधित समझौता और वर्गीकृत सैन्य सुरक्षा की सुरक्षा के लिए सुरक्षा उपायों से संबंधित समझौता हुआ।
    - सुरक्षा एवं रक्षा के क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच वार्ता एवं आदान - प्रदान और विकसित करने की अपनी इच्छा की फिर से पुष्टि की, जिसमें '2+2 वार्ता' का पूर्ण उपयोग, रक्षा नीति वार्ता, सैन्य दर सैन्य वार्ता और तटरक्षक दर तटरक्षक सहयोग शामिल है।
    - त्रिपक्षीय वार्ता को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्ट द्विपक्षीय संबंधों का लाभ उठाने और क्षेत्र में प्रमुख भागीदारों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया क्योंकि यह भारत-प्रशांत क्षेत्र में एक खुला, समावेशी, स्थिर और पारदर्शी आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा वास्तुकला विकसित करने में योगदान देगा।
    - भारत की पूरब में काम करो नीति और जापान की कोटिपरक अवसंरचना के लिए साझेदारी के बीच तालमेल स्थापित करने का प्रयास करते हुए दोनों प्रधानमंत्रियों ने विश्वसनीय, संपोषणीय और लोचपूर्ण अवसंरचनाओं का विकास करने और सुदृढ़ करने का निर्णय लिया जिससे भारत के अंदर और भारत तथा इस क्षेत्र के अन्य देशों के बीच संपर्क बढ़ेगा।
    - परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग के लिए एक समझौता किया गया था, और

आवश्यक आंतरिक प्रक्रियाओं से संबंधित लोगों सहित तकनीकी विवरणों को अंतिम रूप देने के बाद इस पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

- ज्ञापन पर तकनीकी सहयोग, और रेलवे क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास सहयोग पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- जापान के हाई स्पीड रेलवे (एचएसआर) प्रौद्योगिकियों (शिंकानसेन सिस्टम) को मुंबई-अहमदाबाद मार्ग पर लाने के लिए सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसकी लागत लगभग 15 बिलियन डॉलर होगी। जापान 80 प्रतिशत फंड देगा। प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई-अहमदाबाद मार्ग पर एचएसआर के लिए अत्यधिक रियायती येन ऋण प्रदान करने के जापान के विचार की सराहना की।
- जापान मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्वच्छ भारत, डिजिटल इंडिया पर भारत के प्रयासों का अपने उन्नत कौशल तथा प्रौद्योगिकियों को साझा करके तथा आधिकारिक विकास सहायता (ओडीए) सहित जापानी सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की भागीदारी के सक्रिय विकास के माध्यम से समर्थन करेगा।
- फ्लैगशिप परियोजनाओं जैसे कि पश्चिमी समर्पित फ्रेट कोरिडोर (डी एफ सी) में प्रगति का भी स्वागत किया तथा दिल्ली - मुंबई औद्योगिक कोरिडोर (डी एम आई सी) परियोजनाओं की गति तेज करने के लिए अपने दृढ़ निश्चय की फिर से पुष्टि की। दोनों प्रधानमंत्रियों ने ठोस कार्यान्वयन के लिए चेन्नई - बंगलुरू औद्योगिक कोरिडोर (सी बी आई सी) परियोजना को अगले चरण पर ले जाने के लिए भी सहमति व्यक्त की जिसमें ओ डी ए ऋण स्कीमों तथा अन्य उपायों का उपयोग शामिल है।
- एक अन्य महत्वपूर्ण परिणाम निप्पन निर्यात और निवेश बीमा (एन ई एक्स आई) और जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बैंक (जे बी आई सी) द्वारा 1.5 ट्रिलियन येन तक की जापान - भारत मेक इन इंडिया विशेष वित्त पोषण सुविधा का निर्माण है, जिसका उद्देश्य जापानी कंपनियों के प्रत्यक्ष निवेश तथा जापान से भारत में व्यापार को बढ़ावा देना, आवश्यक अवसंरचना का विकास सहित भारत में समकक्षों के साथ उनकी कारोबारी गतिविधियों का समर्थन करना और भारत सरकार की मेक इन इंडिया पालिसी को साकार करने में मदद करना है।
- वित्त वर्ष 2015 में भारत को जापानी ओडीए येन ऋण के लिए कुल प्रतिबद्धता लगभग 400 बिलियन येन तक पहुंच सकती है, जो भारत को प्रदान की गई अब तक की सबसे अधिक ऋण है। चेन्नई तथा अहमदाबाद दोनों में मेट्रो परियोजनाओं के लिए 100 बिलियन येन का उपयोग किया जाएगा। ओडीए ऋण के साथ किए जाने वाले प्रोजेक्ट भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में सड़क नेटवर्क कनेक्टिविटी, बेंगलुरु के आसपास परिधीय रिंग रोड, झारखंड में बागवानी सिंचाई, मुंबई ट्रांस हार्बर लिंक, गुजरात और तूतीकोरिन बाहरी हार्बर में जहाज रीसाइक्लिंग यार्ड के आधुनिकीकरण में सुधार हैं।
- जापान ने औद्योगिक टाउनशिप (जे आई टी) विकसित करने के लिए अपनी मंशा की फिर से पुष्टि की जो वियमान नीतिगत रूपरेखा जैसे कि विशेष आर्थिक क्षेत्र (एस ई जेड) और राष्ट्रीय निवेश एवं विनिर्माण क्षेत्र (एन आई एम जेड) के तहत निवेश से कम नहीं होगा।
- कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में "कोर ग्रुप" को समन्वय के लिए बनाया गया है और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रिया की निगरानी करता है कि भारत-जापान निवेश संवर्धन साझेदारी में परिकल्पित जापान से निवेश की सुविधा है।
- जापानी ने भारत से जापान को इंटरनेट जैसी चीजों (आई ओ टी) संबद्ध क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए जापान - भारत आई ओ टी निवेश पहल नामक एक नया तंत्र स्थापित करने की मंशा व्यक्त की।
- संयुक्त अनुसंधान प्रयोगशालाओं की स्थापना; युवा वैज्ञानिकों तथा विज्ञान में जापान - एशिया युवा आदान - प्रदान कार्यक्रम के तहत वैज्ञानिकों के बीच आदान - प्रदान में वृद्धि; आई सी टी के क्षेत्र में भारत में संयुक्त अनुसंधान केंद्रों की स्थापना; स्टेम सेल अनुसंधान

सहयोग; और युवा शोधकर्ताओं के लिए संयुक्त फेलोशिप कार्यक्रम के माध्यम से अपनी महत्वाकांक्षा का स्तर ऊपर उठाने की अपनी मंशा साझा की।

- अगले पांच वर्षों में छात्र आदान - प्रदान, आई टी प्रशिक्षण एवं अल्पावधिक आदान - प्रदान जैसी रूपरेखाओं के तहत 10,000 युवा भारतीय प्रतिभाएं जापान का दौरा करेंगी और आशा व्यक्त की कि यह हमारे भावी संबंधों के लिए एक ठोस बंधन प्रदान करेगा।
- भारतीय राज्यों और जापान साझेदारी के शहरों ने स्वागत किया। उदाहरण के लिए, क्योटो और वाराणसी शहर के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए, दो प्राचीन और ऐतिहासिक शहर अपनी-अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़े हैं।
- दोनों प्रधानमंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र सुधारों को जल्दी से साकार करने के लिए साथ मिलकर काम करने की अपनी मंशा की फिर से पुष्टि की, विशेष रूप से सुरक्षा परिषद सुधार ताकि 21वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की सच्चाइयां बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित हों। उन्होंने पाठ आधारित वार्ता शुरू करने के लिए अंतर्सरकारी वार्ता (आई जी एन) प्रक्रिया में हाल की उपलब्धियों का स्वागत किया तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा के 70वें सत्र के दौरान ठोस परिणाम प्राप्त करने की दिशा में अपने प्रयासों को फिर से दोगुना करने के अपने दृढ़ निश्चय की फिर से पुष्टि की।
- भारत और जापान ने चार निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं में भारत के पूर्ण सदस्य बनने के लिए साथ मिलकर काम करने की अपनी प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि की : परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह, मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था, वासेनार व्यवस्था और आस्ट्रेलिया समूह, जिसका उद्देश्य अप्रसार के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को सुदृढ़ करना है।

IV. रूस

भारत के राष्ट्रपति ने द्वितीय विश्व युद्ध में रूस की जीत को चिह्नित करने हेतु विजय दिवस की 70वीं वर्षगांठ मनाने के रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के निमंत्रण पर रूस का दौरा किया। राष्ट्रपति के साथ रेल राज्य मंत्री मनोज सिन्हा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी थे।

1. बीजिंग, चीन (2 फरवरी) में 13वीं रूस-भारत-चीन (आरआईसी) बैठक में भारत, रूस और चीन के विदेश मंत्री

- विदेश मंत्रियों के बीच इस बात पर सहमति हुई कि अंतर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तरों पर महत्वपूर्ण प्रभाव वाले देश के रूप में तथा उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं के रूप में खुलेपन, भाईचारा, परस्पर सूझ-बूझ एवं विश्वास की भावना के साथ उनको वैश्विक मुद्दों पर समन्वय और सुदृढ़ करने तथा व्यावहारिक सहयोग करने की जरूरत है।
- विदेश मंत्रियों ने इस बात पर जोर दिया कि उनके देशों के बीच सहयोग अंतर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता बनाए रखने और वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास एवं समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए जरूरी है।
- रूस, भारत और चीन द्वारा थिंक टैंक, व्यवसाय, कृषि, आपदा उपशमन एवं राहत, चिकित्सा सेवा एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्रों में अपने सहयोग को बढ़ाने की जरूरत पर ध्यान केन्द्रित किया गया।
- मंत्रियों ने युवा राजनयिकों की यात्राओं सहित संसदीय, मीडिया, सांस्कृतिक और युवा आदान-प्रदान को बढ़ावा देने पर सहमति व्यक्त की।
- विदेश मंत्रियों ने एक नए प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की दिशा में काम करने के महत्व पर जोर दिया जो लाभप्रद सहयोग पर आधारित हो।
- विदेश मंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव तथा उनके विशेष दूत द्वारा मध्यस्थता के प्रयासों का समर्थन किया ताकि "अधिकाधिक फ्रीज जोन'' सुरक्षित हों और सीरियाई नागरिकों तक मानवीय सहायता पहुंच सके।

- विदेश मंत्रियों ने जनवरी, 2015 में सीरिया सरकार तथा विपक्षी गुटों के प्रतिनिधियों के बीच अंतर-सीरिया परामर्श की पहली बैठक बुलाने के लिए रूस के प्रयासों को बहुत अधिक महत्व दिया।
- विदेश मंत्रियों ने सीरिया के रासायनिक हथियारों को समाप्त करने में हुई महत्वपूर्ण उपलब्धियों का स्वागत किया तथा सीरिया में रासायनिक हथियारों के उन्मूलन एवं विनाश के लिए रासायनिक हथियार निषेध संगठन (ओपीस डब्ल्यू) के प्रयासों के लिए उसे बधाई दी।
- मंत्रियों ने आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए सीरियाई सरकार के प्रयासों पर समर्थन व्यक्त किया।

2. मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी, मॉस्को में भारतीय और रूसी विश्वविद्यालयों की बैठक में राष्ट्रपति (**8** मई)

- भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने आज (8 मई, 2015) मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी का दौरा किया और उच्च शिक्षा के भारतीय और रूसी संस्थानों के नेटवर्क के शुभारंभ का गवाह बने। इस अवसर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार और रूसी विज्ञान फाउंडेशन के साथ-साथ भारतीय और रूसी विश्वविद्यालय के बीच कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।
- इस कार्यक्रम में बोलते हुए, राष्ट्रपति ने कहा कि भारत और रूस का शैक्षिक सहयोग का एक लंबा इतिहास है। 1950 के दशक के उत्तरार्ध में, सोवियत संघ ने अपने प्रारंभिक वर्षों में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे का समर्थन किया। 1970, 80 और 90 के दशक में रूस में दसियों हजार भारतीय छात्रों ने अध्ययन किया। हालांकि हाल के वर्षों में इस संख्या में कुछ हद तक गिरावट आई है, अब भी, चार हजार से अधिक भारतीय छात्र रूसी विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते हैं। कुछ भारतीय संस्थानों में सहयोग के सक्रिय कार्यक्रम हैं - छात्रों, शोधकर्ताओं और संकाय सदस्यों के आदान-प्रदान, और शोध प्रकाशनों को साझा करना।
- राष्ट्रपति ने कहा कि रूस के शैक्षिक संस्थानों में उपलब्धि की एक महान विरासत है। 1930 में, सोवियत संघ की अपनी यात्रा के दौरान, रवींद्रनाथ टैगोर ने रूसी विश्वविद्यालयों को "शिक्षा के क्षेत्र में चमत्कार" के रूप में वर्णित किया था। यह शिक्षा प्रणाली है जिसने रूस को शिक्षण के एक राष्ट्र के रूप में सफलता दी है। इसने भौतिक विज्ञान, एयरोस्पेस, परमाणु विज्ञान, पेट्रोकेमिकल, खनन और भारी इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में रूस की तकनीकी उपलब्धियों को सक्षम किया है।
- राष्ट्रपति ने कहा कि भारत और रूस के शैक्षिक संस्थानों के बीच व्यापक और संस्थागत जुड़ाव की आवश्यकता है। दिसंबर 2014 में भारत और रूस के बीच आखिरी शिखर बैठक में दोनों देशों ने अपने विश्वविद्यालयों के बीच साझेदारी के नेटवर्क का समर्थन करने का फैसला किया था। कई विश्वविद्यालय सहयोग के अवसरों की पहचान करने में अपने समकक्षों के साथ शामिल रहे हैं और भविष्य में व्यवस्थित सहयोग के लिए व्यवस्था को औपचारिक रूप देने के लिए तैयार हैं। भारतीय और रूसी विश्वविद्यालयों के एक नेटवर्क की स्थापना से संकाय, शोधकर्ताओं और छात्रों, संयुक्त अनुसंधान गतिविधियों और वैज्ञानिक सम्मेलनों और संगोष्ठियों के आदान-प्रदान सहित अधिक संस्थागत संबंधों की स्थापना की सुविधा होगी।

3. रूस डिप्लोमैटिक अकादमी, मास्को में मुख्य भाषण (**8** मई **2015)**

- रूसी विदेश मंत्रालय के डिप्लोमैटिक एकेडमी में मानद डॉक्टरेट प्राप्त करने के बाद अपने मुख्य भाषण में, भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने कहा कि रूस भारत के इतिहास में

मुश्किल क्षणों में ताकत का स्तंभ रहा है।

- राष्ट्रपति ने कहा भारत – रूस संबंध, जो हमारे अपने ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर गढ़े गए हैं, सांस्कृतिक भाई-चारा, राजनीतिक सहमति तथा आर्थिक अवसर क्षणिक वैश्विक राजनीतिक रूझानों के झंझावातों द्वारा प्रभावित नहीं होंगे। भारत के इतिहास में, मुश्किल के क्षणों में रूस मजबूती का एक स्तंभ रहा है। आपने भारत के विकास, प्रगति एवं सुरक्षा में योगदान दिया है। भारत हमेशा इस सहायता को लौटाने का प्रयास करेगा। पूरे भारतीय समाज में तथा इसकी राजनीतिक संरचनाओं में इस बात पर सर्वसम्मति है कि रूस के साथ मैत्री भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। भारत रक्षा, परमाणु ऊर्जा एवं सुरक्षा के क्षेत्रों में रूस के साथ अपने घनिष्ठ एवं व्यापक सहयोग को बहुत अहमियत देता है। रूस हमारा सबसे महत्वपूर्ण रक्षा साझेदार है और रहेगा। यह हमारी ऊर्जा सुरक्षा के लिए भी एक प्रमुख साझेदार है तथा भारत में परमाणु विद्युत उत्पादन के विकास में अपनी अग्रणी भूमिका को सुदृढ़ कर रहा है।
- राष्ट्रपति ने कहा हमारी सामरिक साझेदारी का महत्वपूर्ण विकास राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन के विजन एवं नेतृत्व का काफी ऋणी है। उनकी निजी प्रतिबद्धता की वजह से हमारा संबंध एक नई ऊंचाई पर पहुंचा है। हम राष्ट्रपति पुतिन को भारत के महान मित्र के रूप में मानते हैं। मुझे उम्मीद है कि इस यात्रा पर उनके साथ मेरा संबंध और मजबूत होगा।

4. रूस के प्रमुख वैज्ञानिकों के साथ राष्ट्रपति की बैठक **(10** मई **2015)**

- विशिष्ट वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए, राष्ट्रपति ने कहा कि हालांकि उनका काम यह सुनिश्चित करता है कि वे हमेशा भारत और इसके इतिहास, संस्कृति, विरासत, राजनीति और कलाओं के साथ जुड़े रहे हैं। भारत रूस में भारत की बेहतर समझ को बढ़ावा देने में उनके योगदान की सराहना करता है। साथ ही, युवा पीढ़ी को समकालीन प्रासंगिकता देकर और इसे न केवल बौद्धिक रूप से उत्तेजक, बल्कि पेशेवर रूप से पुरस्कृत करने के लिए इसे वैज्ञानिक अनुसंधान में संलग्न करने के लिए प्रेरित करना भी महत्वपूर्ण है।
- राष्ट्रपति ने घोषणा की कि भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) भारतीय विद्या के प्रसार के लिए एक वार्षिक प्रतिष्ठित इंडोलॉजिस्ट पुरस्कार प्रदान करेगा। उन्होंने यह भी घोषणा की कि आईसीसीआर रूस में संस्कृत और भारत पर एक क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित करेगा। आईसीसीआर से रूसी एकेडमी ऑफ सोशल साइंसेज के दर्शन संस्थान में भारतीय अध्यक्ष के लिए समर्थन को अगले दो वर्षों के लिए भी जारी रखा जाएगा।

5. प्रधानमंत्री की रूस (ब्रिक्स और एससीओ शिखर सम्मेलन के लिए) और मध्य एशियाई देशों की यात्रा **(06** जुलाई**, 2015)**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 6 जुलाई 2015 को उजबेकिस्तान से शुरू होने वाले छह देशों की यात्रा पर गए। विदेशी मंत्रालयों के बीच सहयोग पर तीन समझौतों, संस्कृति में सहयोग, पर्यटन में सहयोग पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

6. रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बैठक **(8** जुलाई **2015)**

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के लिए ऊफ़ा पहुंचने के बाद, प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की।

- राष्ट्रपति पुतिन के साथ, प्रधानमंत्री मोदी ने व्यापार से संबंधित मुद्दों, बाजार तक पहुंच, एक-दूसरे द्वारा निवेश, वीजा की उदारीकरण सहित कुछ प्रक्रिया चुनौतियों तथा प्रगति, यूरेशियन आर्थिक क्षेत्र के साथ एफटीए पर चर्चा सहित आर्थिक मुद्दों पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने

भारत-रूस रक्षा सहयोग की भी व्यापक समीक्षा की।

- परमाणु पक्ष में, उन्होंने सहयोग की स्थिति की समीक्षा की और उसमें आगे की संभावनाओं पर चर्चा की। भारत-रूस अंतरिक्ष सहयोग और हाइड्रोकार्बन पर कुछ चर्चा हुई।

7. रूसी संघ और भारत गणराज्य के बीच संयुक्त वक्तव्य: साझा भरोसा, नए क्षितिज **(24 दिसंबर, 2015)**

रूसी संघ के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के निमंत्रण पर भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी ने द्विपक्षीय वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए 23-24 दिसंबर, 2015 को रूसी संघ का सरकारी दौरा किया।

प्रमुख बिंदु:

- द्विपक्षीय आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने पर निरंतर बल देते हुए राष्ट्रपति पुतिन और प्रधानमंत्री मोदी जी ने संयुक्त रूप से रूस और भारत की अग्रणी कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों को संबोधित किया।
- दौरे के दौरान रूसी और भारतीय कंपनियों के बीच अनेक वाणिज्यिक करारों सहित, द्विपक्षीय सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक महत्वपूर्ण करारों पर हस्ताक्षर किए गए।
- प्रधानमंत्री मोदी ने रूस में भारतीय समुदाय के सदस्यों को संबोधित किया।
- दोनों नेताओं ने उच्च स्तरीय दौरों, संस्थागत आदान-प्रदानों और पिछले वर्ष हुए अन्य संपर्कों, जिनके चलते रूस और भारत का रणनीतिक सहयोग और अधिक सुदृढ़ हुआ है, को शामिल करते हुए अन्य निरंतर द्विपक्षीय आदान-प्रदानों पर संतोष जताया।
- ग्रेट पैट्रीयोटिक वार में रूस की विजय की 70वीं वर्षगांठ के समारोह में भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी की भागदारी ने दोनों देशों के बीच पारस्परिक एकजुटता,सहानुभूति और सद्भाव के लिए एक उदाहरण पेश किया है।
- ग्रेट पैट्रीयोटिक वार में रूस की विजय की 70वीं वर्षगांठ पर भारतीय सशस्त्र बलों की एक टुकड़ी ने भी स्मरणोत्सव में भाग लिया।
- निरंतर संसदीय आदान-प्रदानों का स्वागत किया विशेषकर रूसी संघ की संघीय असेंबली के स्टेट डुमा के स्पीकर श्री सर्गेई नैरिशकिन का फरवरी, 2015 में रूस-भारत अंतर-संसदीय आयोग के लिए भारत का दौरा उल्लेखनीय है।
- दोनों नेताओं ने अपने मंत्रालयों, सुरक्षा परिषदों और अन्य विशिष्ट एजेंसियों के बीच गहन और प्रभावी बातचीत का उल्लेख किया, जो 2015 में हुई थीं।
- दोनों पक्षों ने पिछले वार्षिक सम्मेलन में तय किए गए वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुन: पुष्टि की और दोनों सरकारों द्वारा सतत सुगमता के साथ-साथ निर्णयों के तीव्र कार्यान्वयन और तत्संबंधी नियमों और विनियमों के उदारीकरण की आवश्यकता पर बल दिया।
- इस संदर्भ में, दोनों राज्यों के व्यापारियों के लिए यात्रा शासन के उदारीकरण पर पहुंचने के लिए एक समझौते पर इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सहमति व्यक्त की गई थी।
- 20 अक्टूबर, 2015 को मास्को में आयोजित व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग पर रूसी-भारतीय अंतर सरकारी आयोग (आईजीसी) की इक्कीसवीं बैठक के परिणाम, साथ ही आयोग के विभिन्न कार्य समूहों के निर्णय विशेष रूप से व्यापार और आर्थिक सहयोग, आधुनिकीकरण और औद्योगिक सहयोग का स्वागत किया गया।
- संयुक्त कार्यदल ने आशाजनक क्षेत्रों जैसे कि तेल और गैस, औषधि, रसायन उद्योग, खनन, मशीन निर्माण, अवसंरचना परियोजनाओं का कार्यान्वयन, रेलवे क्षेत्र में सहयोग, ऊर्वरक उत्पादन, वाहन और वायुयान निर्माण में नए और महत्वाकांक्षी निवेश प्रस्तावों को अंतिम रूप देने के लिए दोनों देशों की कंपनियों के साथ-साथ एक दूसरे की औद्योगिक सुविधाओं

के आधुनिकीकरण के लिए सहयोगी उद्यमों का आह्वान किया। दोनों नेताओं द्वारा प्रासंगिक प्रस्तावों को जल्दी अंतिम रूप देने के लिए पहल को प्रोत्साहित किया गया।

- रूस और भारत में उच्च प्रौद्योगिकी निवेश की सुविधा के लिए निवेश कोष की भूमिका को प्रोत्साहित किया गया।
- भारत इंजीनियरिंग सोर्सिंग शो 2017 में भागीदार देश के रूप में रूस की भागीदारी को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा गया जो द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को गति प्रदान कर सकता है।
- भारत गणराज्य के सदस्य और यूरेशियन आर्थिक संघ के सदस्य देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौते की व्यवहार्यता पर विचार करने हेतु संयुक्त अध्ययन समूह की रिपोर्ट के मसौदे को जल्दी प्रोत्साहित किया गया।
- दोनों देशों ने थोक वस्तुओं और माल के आवागमन के साथ-साथ दोनों देशों के बीच व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए अपनी अर्थव्यवस्थाओं के बीच नए मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी की खोज करने को महत्व दिया।
- बैठक के दौरान इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर (आई.एन.एस.टी.सी.) के कार्यान्वयन पर जोर दिया गया।
- दोनों नेताओं ने जोर देकर कहा कि आई.एन.एस.टी.सी. विकास के नए केंद्रों के साथ-साथ संयुक्त औद्योगिक और बुनियादी ढाँचा सुविधाओं का निर्माण करके हिंद महासागर से बाल्टिक सागर तक फैले क्षेत्र में आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- भारत और रूस के बीच ग्रीन कॉरिडोर के सुचारू कार्यान्वयन के लिए, सीमा शुल्क अधिकारियों ने कानूनी तंत्र बनाया था जिसे जल्द ही परीक्षण मोड में डाला जाएगा।
- पीजेएससी अलरोसा के साथ कच्चे हीरों की आपूर्ति के लिए दीर्घावधिक करारों पर हस्ताक्षर करने वाली भारतीय निवासी कंपनियों की संख्या वर्ष 2014 में 9 से बढ़कर वर्ष 2015 में 12 तक पहुंचने तथा रूस और भारत के बीच हीरों के व्यापार को बढ़ावा देने वाली पहलों का स्वागत किया गया।
- भारत डायमंड बोर्स में विशेष अधिसूचित क्षेत्र (एस.एन.जेड) के सृजन और अलसोरा ग्रुप द्वारा अपने परिसर में हीरों का प्रदर्शन प्रारंभ करने का सहमत हुए। वे एस.एन.जेड. और इसके कच्चे हीरों की नीलामी-तंत्र के विकास को और अधिक बढ़ावा देने पर सहमत हुए।
- डेयरी उत्पादों सहित कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों, जो द्विपक्षीय व्यापार के विकास और विविधीकरण के लिए एक नया और आशाजनक क्षेत्र है, के लिए पारस्परिक बाजार अभिगम्यता को अंतिम रूप देने के लिए दोनों देशों के फाइटोसैनिटरी और पशु चिकित्सा प्राधिकरणों के बीच करारों के सकारात्मक परिणामों का स्वागत किया गया। वे अपनी विनियामक एजेंसियों के बीच चल रहे परामर्शों को जारी रखने और द्विपक्षीय व्यापार के लिए इन उत्पादों की श्रृंखला को व्यापक बनाने के लिए कदम उठाने पर सहमति हुई।
- रूस के सहयोग से अतिरिक्त छह परमाणु रिएक्टर इकाइयों की स्थापना के लिए भारत में दूसरी साइट की पहचान पर सहमति हुई।
- रुसी पक्ष ने गाइडन प्रायद्वीप और अंशत: ओब खाड़ी में स्थित क्षेत्रों के संसाधन आधार पर जेएससी नोवाटेक परियोजना आर्कटिक एलएनजी की ओर से भारत को एलएनजी की आपूर्ति की संभावना की गारंटी देने वाली संयुक्त परियोजनाओं में सहयोग को लेकर भारतीय सहभागियों की रूचि और संलिप्तता का स्वागत किया।
- रोसनेफ्ट और ओएनजीसी विदेश लिमिटेड के बीच रोसनेफ्ट के वैंकोर्नफाइट ऑयल फील्ड में ओवीएल द्वारा 15% दांव लगाने के लिए समझौते का स्वागत किया गया।
- दोनों पक्षों ने रूस में तेल और पेट्रोलियम के क्षेत्र में पाठ्यक्रमों को आगे बढ़ाने में रुचि रखने वाले भारतीय छात्रों को छात्रवृत्ति के रोसनेफ्ट द्वारा की गई पेशकश की सराहना की।

- दोनों पक्षों ने हाइड्रो, थर्मल और सौर ऊर्जा संयंत्रों सहित विद्युत ऊर्जा परियोजनाओं के संयुक्त कार्यान्वयन में सहयोग विकसित करने में परस्पर रुचि दिखाई, साथ ही भारत को रूस के बिजली उपकरणों की आपूर्ति भी की।
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में सहयोग के लिए संगठनों के लिए रूसी-भारतीय परिषद की स्थापना का निर्णय का स्वागत किया गया।
- रूसी-भारतीय अनुसंधान केंद्रों के बीच सहयोग की प्रभावशीलता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण उपाय के रूप में, दोनों पक्षों ने वैज्ञानिक और शैक्षिक संस्थानों तथा संयुक्त परियोजनाओं के रूसी-भारतीय डेटा बेस के निर्माण का आह्वान किया।
- दोनों पक्षों ने मुंबई में टॉम्स्क राज्य विश्वविद्यालय और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान को "रूस-भारत संसाधन केंद्र" के रूप में पहल के समन्वयक के रूप में नामित किया।
- आर्कटिक परिषद (एसी) के सदस्य के रूप में रूस की स्थिति और इस संगठन में 2013 से ही अवलोकक के रूप में भारत की स्थिति पर विचार करते हुए, दोनों देशों ने आर्कटिक परिषद के ढांचे मे संयुक्त क्रियाकलापों के महत्व पर बल दिया। उन्होंने आर्कटिक क्षेत्र में, विशेषकर स्पिट्स्बर्गन (स्वलबार्ड) द्वीप समूह पर रूसी वैज्ञानिक केंद्र में संयुक्त वैज्ञानिक अनुसंधान के विकास की संभाव्यता को स्वीकारा।
- शिक्षा क्षेत्र में, भारतीय पक्ष ने इस संबंध में ग्लोबल इनिशिएटिव फॉर एकेडमिक्स नेटवर्क (जीआईएएन) के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला और रूस में विभिन्न विश्वविद्यालयों के संकाय को उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।
- दोनों देशों ने रूसी संघ के संस्कृति मंत्रालय और भारत गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय के बीच वर्ष 2016-18 के सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के शीघ्र निष्पादन का आह्वान किया और सांस्कृतिक सहयोग को और प्रगाढ़ बनाने में अपनी इच्छा की पुष्टि की। इस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम में दोनों देशों के संस्कृति और कला क्षेत्र में कार्यरत अकादमी और अनुसंधान संगठनों के बीच करार भी शामिल हैं।
- 2015 में रूस में भारतीय संस्कृति के उत्सव की सफलता को ध्यान में रखते हुए, 2016 में भारत में रूसी संस्कृति महोत्सव का निर्णय लिया गया।
- दोनों पक्षों ने पारस्परिकता के आधार पर छह महीने के कई प्रवेश पर्यटक वीजा जारी करने के लिए अंतिम समझौते का स्वागत किया, जो पर्यटन और लोगों से लोगों के संपर्क को और बढ़ाएगा।
- रूस ने यूएनएससी में भारत की सदस्यता के लिए अपने समर्थन की पुष्टि की।
- उन्होंने सुरक्षा के लिए खतरों और चुनौतियों, जिनमें अफगानिस्तान के राज्य क्षेत्र से उभर रहे खतरे और चुनौतियां भी शामिल हैं, का सामना करने के लिए और इस क्षेत्र में आर्थिक, सांस्कृतिक और मानवतावादी सहयोग को बढ़ाने के लिए एससीओ ढांचे में संयुक्त प्रयासों को और प्रभावी बनाने के लिए मिलकर कार्य करने पर सहमति जताई।
- दोनों पक्षों ने एशिया प्रशांत में सुरक्षा तथा स्थिरता के लिए खुले, समावेशी और विकासवादी क्षेत्रीय अवसंरचना को बढ़ावा देने हेतु एक साथ काम करने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें राजनीतिक प्रणालियों और विकास विकल्पों की विविधता का सम्मान करते हुए, बातचीत के माध्यम से विवादों के शांतिपूर्ण समाधान पर जोर दिया गया।
- दोनों पक्ष आसियान क्षेत्रीय मंच और आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक प्लस के ढांचे के भीतर सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए और एशिया प्रशांत में शांति तथा स्थिरता बनाए रखने के तरीकों और साधनों की पहचान करने पर व्यावहारिक बातचीत के प्रमुख तंत्र को मजबूत करने में योगदान दिया।
- दोनों नेताओं ने सहमति व्यक्त की कि पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) में सहयोग के लिए एक प्राथमिकता क्षेत्र के रूप में समुद्री सहयोग को शामिल करने पर विचार किया गया है।

- रूस ने अपेक में शामिल होने के लिए भारत के आवेदन के लिए अपना समर्थन और इस मुद्दे पर भारत के साथ मिलकर काम करने की प्रतिबद्धा को दोहराया।
- दोनों पक्षों ने आईसीटी के प्रयोग में सार्वभौमिक रूप से मान्य सिद्धांतों, विशेषकर,संयुक्त राष्ट्र चार्टर, देशों की राजनीतिक स्वतंत्रता, राज्य-क्षेत्र की अखंडता और प्रभुसत्ता की समानता का सिद्धांत, अन्य देशों के आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप और निजता का अधिकार सहित मानवाधिकारों और मूलभूत स्वतंत्रता का सम्मान करने के महत्व को रेखांकित किया।
- इस पर पुनः बल देते हुए कि भारत को अंतर्राष्ट्रीय निर्यात-नियंत्रण विनियम के मानंदडों के निर्माण में पूरी तरह भागीदार होना चाहिए, रूस ने नाभिकीय आपूर्तिकर्ता समूह में पूर्ण सदस्यता के लिए भारत की इच्छा का समर्थन करने की अपनी तत्परता व्यक्त की।
- रूस ने वास्सनेनार व्यवस्था में पूर्ण सदस्यता के लिए भारत की रूचि का भी समर्थन किया।
- दोनों पक्षों ने सीरिया और इराक के घटनाक्रम पर गंभीर चिंता व्यक्त की, जहां इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड लेवंत (आईएसआईएल), अल नुसरा फ्रंट और इसी तरह के अन्य समूह हिंसा का कारण बन रहे हैं।
- दोनों पक्षों ने आतंकवाद से लड़ने के लिए वैश्विक प्रयासों और प्रासंगिक यूएनएससी के प्रस्तावों के लिए "विदेशी आतंकवादी लड़ाकों" सहित आतंकवादी समूहों की गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को बढ़ाने के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया।
- रूस और भारत ने सीरिया की संप्रभुता, एकता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए अपना मजबूत समर्थन दिया।
- दोनों पक्षों ने यह सामान्य विचार व्यक्त किया कि सीरिया में आंतरिक सशस्त्र टकराव को बल के प्रयोग द्वारा हल नहीं किया जा सकता, परंतु बिना पूर्व शर्तों के या बाह्य हस्तक्षेप के इसे अंतरा-सीरियाई सारभूत वार्तालाप के माध्यम से 30 जून, 2012 के जेनेवा कम्युनिक आदि पर आधारित राजनीतिक और कूटनीतिक साधनों के माध्यम से हल किया जा सकता है।
- दोनों पक्षों ने एक समावेशी राज्य प्रणाली के निर्माण और क्षमता निर्माण के माध्यम से राष्ट्रीय लोकतांत्रिक संस्थानों को मजबूत करने के द्वारा इराक में राष्ट्रीय सामंजस्य और एकता के महत्व पर जोर दिया।
- रूस और भारत दक्षिण-पूर्वी यूक्रेन में संघर्ष विराम शासन के रखरखाव के साथ-साथ मिन्स्क समझौते पर हस्ताक्षर करने सहित सुरक्षा के क्षेत्र में प्राप्त प्रगति का स्वागत करते हैं।
- मादक पदार्थों के प्रसार का मुकाबला करने के लिए, शंघाई सहयोग संगठन, ब्रिक्स और पेरिस समझौते की रूपरेखा के भीतर सहयोग के महत्व पर जोर दिया गया।

सहमति ज्ञापन/समझौता/ करार

यात्रा के दौरान, भारत और रूस के दो नेताओं के बीच 10 समझौता ज्ञापनों और पांच समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। शिखर सम्मेलन के दौरान जिन अनुबंध को पूरा करने की पुष्टि की गई। वो थे:

- 21 दिसंबर 2010 की दोनों देशों के नागरिकों की कुछ श्रेणियों की परस्पर यात्रा के लिए आवश्यकताओं के सरलीकरण पर भारत गणराज्य की सरकार और रूसी संघ की सरकार के बीच समझौते का संशोधनकारी प्रोटोकॉल।
- 3 दिसंबर 2004 के राजनयिक और आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए परस्पर यात्रा व्यवस्था पर भारत गणराज्य की सरकार और रूसी संघ की सरकार के बीच समझौते का संशोधनकारी प्रोटोकॉल।

- हेलीकॉप्टर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और रूसी संघ की सरकार के बीच समझौता।
- 2015-2017 में सीमाशुल्कों के उल्लंघन का मुकाबला करने के लिए केंद्रीय उत्पाद और सीमाशुल्क बोर्ड, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत गणराज्य और रूसी संघ की संघीय सीमाशुल्क सेवा के बीच सहयोग की योजना।
- रूस में डिजाइन की गई परमाणु रिएक्टर इकाइयों के लिए भारत में विनिर्माण के स्थानीयकरण के लिए भारतीय परमाणु ऊर्जा विभाग और रूसी राष्ट्र परमाणु ऊर्जा निगम "रोसाटॉम" के बीच सहमत कार्य योजना।
- रेलवे क्षेत्र में तकनीकी सहयोग पर भारत गणराज्य के रेल मंत्रालय और संयुक्त स्टॉक कंपनी "रूसी रेलवे" के बीच समझौता ज्ञापन।
- भारत गणराज्य में सौर ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण के संबंध में भारतीय सौर ऊर्जा निगम और रूसी ऊर्जा एजेंसी के बीच समझौता ज्ञापन।
- एचईसी में भारी इंजीनियरिंग डिजाइन के लिए उत्कृष्टता केंद्र के विकास के लिए एचईसी और सीएनआईआईटीएमएएसएच के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन।
- एचईसी की विनिर्माण सुविधाओं के उन्नयन और आधुनिकीकरण के लिए एचईसी और सीएनआईआईटीएमएएसएच के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन।
- प्रसारण के क्षेत्र में सहयोग पर प्रसार भारती और डिजिटल टेलीविजन रूस के बीच समझौता ज्ञापन।
- प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलौर (आईआईएससी) और लोमोनोसोव मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी (एमएसयू) के बीच त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन।
- प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), ओजेएससी ''ग्लोनास'' और ग्लोनास यूनियन के बीच त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन।
- टाटा पावर कंपनी लिमिटेड और रूसी सुदूर पूर्व विकास मंत्रालय के बीच रूसी सुदूर पूर्व में निवेश सहयोग के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन।
- रूसी संघ के भूगर्भीय सर्वेक्षण, तटवर्ती और महाद्वीपीय शेल्फ में हाइड्रोकार्बन की खोज और उत्पादन के लिए सहयोग हेतु समझौता ज्ञापन।
- जेएससी वेंकोरनेफ्त में एक संयुक्त उद्यम के सृजन के संबंध में प्रथम चरण समापन-पूर्व कार्यों के सफल समापन की पुष्टि।
- रोजनेफ्त ऑयल कंपनी, ऑयल इंडिया लिमिटेड और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के बीच रूसी संघ के भूगर्भीय सर्वेक्षण, तटवर्ती और महाद्वीपीय शेल्फ में हाइड्रोकार्बन की खोज और उत्पादन के लिए सहयोग हेतु समझौता ज्ञापन।

रूस की अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा मीडिया वक्तव्य ***(24 दिसंबर, 2015)***

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी रूस यात्रा में कहा था कि वह:

- रूस को भारत के आर्थिक परिवर्तन में और संतुलित, स्थिर, समावेशी और बहु-ध्रुवीय दुनिया को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में देखते हैं।
- मेक इन इंडिया मिशन के तहत प्रमुख रक्षा मंच हेतु पहली परियोजना के रूप में भारत में कामोव 226 हेलीकॉप्टर के निर्माण पर अंतर-सरकारी समझौते के माध्यम से रूस के साथ पहल की प्रशंसा की गई।
- ब्रिक्स की भारत और रूस की सदस्यता, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, जी20 और अब शंघाई सहयोग संगठन ने भारत-रूस साझेदारी को एक वैश्विक चरित्र दिया है। यह मध्य एशिया और अफगानिस्तान सहित यूरेशिया से एशिया प्रशांत तक के आर्क में विशेष रूप से

महत्वपूर्ण है।

V. संयुक्त राष्ट्र अमेरिका

1. संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति, बराक ओबामा, प्रथम महिला मिशेल ओबामा के साथ, **25-27** जनवरी, **2015** को भारत के 66वें गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारत आए, वह इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने वाले पहले यूएस राष्ट्रपति हैं।

- राष्ट्रपति ओबामा और प्रधानमंत्री मोदी ने एक नए भारत-अमेरिका दिल्ली मैत्री घोषणा के समर्थन के माध्यम से द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाया। यह घोषणा उच्च स्तर के विश्वास और समन्वय को दर्शाती है जो दो सरकारों तथा लोगों को बेहतर दुनिया के लिए मानव प्रयास के स्पेक्ट्रम में एक साथ शामिल करना जारी रखेगा। घोषणा भारत के प्रधानमंत्री और संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों के बीच सुरक्षित हॉटलाइन स्थापित करती है।
- भारत और अमेरिका ने एशिया-प्रशांत तथा हिंद महासागर क्षेत्र के लिए यूएस-भारत संयुक्त रणनीतिक विजन पर हस्ताक्षर किए। रणनीतिक विजन क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण का समर्थन करता है, और दक्षिण, दक्षिण एवं मध्य एशिया को जोड़ने वाले त्वरित बुनियादी ढांचे की कनेक्टिविटी और आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है, ऊर्जा संचरण को बढ़ाती है और मुक्त व्यापार तथा अधिक से अधिक लोगों से लोगों को जोड़ने हेतु प्रोत्साहित करती है। विज़न दस्तावेज़ समुद्री सुरक्षा की सुरक्षा और पूरे क्षेत्र में, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर में नेविगेशन और उड़ान की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के महत्व की पुष्टि करता है और आतंकवाद का विरोध, पाइरेसी, और क्षेत्र से या भीतर से सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार का विरोध करता है।
- दोनों नेताओं ने "चलें साथ-साथ" की अपनी - अपनी प्रतिबद्धता को अमली जामा पहनाने की प्रतिज्ञा की : सितंबर के "हम साथ - साथ आगे बढ़ेंगे" को "साझा प्रयास; सबका विकास" के माध्यम से कार्य रूप देना : "साझा प्रयास; सबका विकास"।
- प्रधानमंत्री मोदी तथा राष्ट्रपति ओबामा ने सामरिक साझेदारी में फिर से जान फूंकने के लिए हाल के महीनों में दोनों पक्षों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण प्रयासों की संयुक्त रूप से सराहना की तथा हमारी विविध द्विपक्षीय सामरिक साझेदारी की सारवान नींव का विस्तार करने का समर्थन किया जिसमें विस्तारित सामरिक परामर्श, अधिक रक्षा सुरक्षा एवं आर्थिक सहयोग शामिल हैं।
- संयुक्त वक्तव्य में उल्लेख किया गया है कि नेताओं ने अन्य विकासशील देशों की सहायता हेतु अपने प्रयासों का विस्तार करने और व्यापक क्षेत्र एवं दुनिया के लाभ के लिए वैश्विक विकास चुनौतियों का समाधान करने पर सहमति व्यक्त की।

  • दोनों नेताओं ने सितंबर 2014 में शिखर बैठक के दौरान लिए गए निर्णयों पर दोनों पक्षों द्वारा केंद्रित कार्रवाई एवं उपलब्धियों की सराहना की और इस संबंध में उन्होंने निम्नलिखित का स्वागत किया :
    - आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान की राज्य सरकारों तथा यूएस व्यापार एवं विकास एजेंसी के बीच 25 जनवरी, 2015 को सितंबर को यूएस उद्योग की भागीदारी से स्मार्ट शहर के रूप में विशाखापत्तनम, इलाहाबाद एवं अजमेर को विकसित करने के लिए 25 जनवरी, 2015 को *तीन एमओयू* पर हस्ताक्षर;
    - निवेश के वित्त पोषण के लिए अनुकूल पूंजी बाजार के विकास को सुगम बनाने, भारत में विभिन्न क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा देने वाला माहौल सृजित करने तथा ऐसे निवेश के लिए किसी बाधा को दूर करने के लिए काम करने को सुगम बनाने

पर संयुक्त रूप से सहयोग करने के लिए 12 से 15 जनवरी, 2015 के दौरान वाशिंगटन में भारत - यूएस निवेश पहल का उद्घाटन तथा रूपरेखा करार पर हस्ताक्षर;

- भारतीय रिजर्व बैंक तथा संघीय डिपॉजिट बीमा निगम (एफ डी आई सी), संघीय रिजर्व प्रणाली तथा मुद्रा नियंत्रक कार्यालय (ओ सी सी) के बीच पर्यवेक्षी सहयोग तथा पर्यवेक्षी सूचना के आदान - प्रदान के लिए सहयोग के वक्तव्य पर हस्ताक्षर;
- 23 जनवरी को डिजीटल इंडिया कार्यक्रम के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाने तथा द्विपक्षीय वाणिज्यिक आई सी टी सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए संयुक्त मंशा घोषणा पर हस्ताक्षर;

  30 सितंबर, 2014 - संयुक्त नासा - इसरो सिंथेटिक अपरचर रडार (एन आई एस ए आर) मिशन संचालित करने के लिए राष्ट्रीय एयरोनॉटिक्स एवं अंतरिक्ष प्रशासन (नासा) तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान परिषद (इसरो) के बीच एक कार्यान्वयन करार पर हस्ताक्षर;
- संयुक्त राज्य अमेरिका और भारतीय राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालयों के बीच सहयोगात्मक गतिविधियों को आगे बढ़ाने और रक्षा प्रौद्योगिकी और व्यापार पहल (डीटीटीआई) पर द्विपक्षीय जुड़ाव जारी रखने की साझा इच्छा व्यक्त करते हुए रक्षा अध्ययन में एक ज्ञान साझेदारी की शुरूआत, जिसमें 22 जनवरी, 2015 को सिद्धांत रूप में समझौता शामिल है, जिसमें सैद्धांतिक रूप से चार पथ-प्रदर्शक परियोजनाओं के सह उत्पादन एवं सह विकास पर सहमति हुई है, एयरक्राफ्ट कैरियर प्रौद्योगिकी की हिस्सेदारी एवं डिजाइन में सहयोग की संभावना का पता लगाने और जेट इंजन प्रौद्योगिकी के विकास पर संभावित सहयोग की संभावना का पता लगाने के लिए एक कार्य समूह का गठन।

2. विदेश मंत्री की अमेरिका यात्रा**,** सितंबर **2015**

- संयुक्त राज्य अमेरिका के सचिव जॉन केरी और वाणिज्य सचिव पेनी प्रिट्जकर ने भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री, निर्मला सीतारमण का स्वागत किया जो वाशिंगटन डीसी में 22 सितंबर 2015 को आयोजित पहले अमेरिका-भारत सामरिक और वाणिज्यिक संवाद में शामिल हुए। विदेश मंत्री, सुषमा स्वराज और विदेश मंत्री जॉन केरी ने 22 सितंबर, 2015 को आतंकवाद को मिलाने के संबंध में यूएस-भारत जॉइंट डिक्लेरेशन जारी किया। एशिया में सफल सहयोग पर दोनों पक्षों ने संयुक्त रणनीतिक के तहत निरंतर सहयोग का स्वागत किया। एशिया-प्रशांत और हिंद महासागर क्षेत्र के लिए विजन राष्ट्रपति ओबामा और प्रधान मंत्री मोदी द्वारा सहमत हुए।
- विदेश मामलों के ब्रिक्स मंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के वार्षिक सत्र के मार्जिन पर 29 सितंबर, 2015 को न्यूयॉर्क में अपनी नियमित बैठक की।429 सितंबर, 2015 को विदेश राज्य मंत्री श्रीमती केरी ने विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज और जापान के विदेश मंत्री फुमियो किशिदा ने न्यूयॉर्क में 70वें संयुक्त राष्ट्र महासभा के मौके पर भारत-जापान त्रिपक्षीय मंत्री वार्ता का उद्घाटन किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय कानून और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के महत्व को रेखांकित किया; नेविगेशन और उड़ान की स्वतंत्रता; और निर्बाध वैध वाणिज्य, जिसमें दक्षिण चीन सागर भी शामिल है। उन्होंने एशिया-प्रशांत क्षेत्र में बहुपक्षीय राजनीतिक और सुरक्षा वास्तुकला में आसियान की केंद्रीयता के लिए अपना समर्थन दोहराया।
- यूएनजीए में विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज द्वारा भाषण - 'द यूएन एट 70: ए टाइम फॉर एक्शन'। मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सुरक्षा परिषद में सुधार सबसे जरूरी और दबाव की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र को सुरक्षा परिषद के निर्णय लेने वाली संरचनाओं में अधिक विकासशील राष्ट्रों को शामिल करने की आवश्यकता है।

3. पहले अमेरिकी-भारत रणनीतिक और वाणिज्यिक संवाद पर संयुक्त वक्तव्य**,** वाशिंगटन डी.सी. **22** सितंबर**, 2015**

पहला यूएस- भारत सामरिक और वाणिज्यिक संवाद 22 सितंबर, 2015 को वाशिंगटन में आयोजित किया गया था। अमेरिका ने अपनी आगामी प्लेनरी, परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह तथा अन्य वैश्विक अप्रसार निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं में मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था में भारत की सदस्यता हेतु अपने समर्थन की पुष्टि की। भारत और अमेरिका अमेरिका के नेतृत्व में राज्य के उप सचिव और भारत के विदेश सचिव नए उच्च स्तरीय परामर्श शुरू करने के लिए सहमत हुए। उन्होंने व्यापार करने में आसानी के लिए एक संयुक्त कार्य प्रवाह शुरू किया। दोनों देश ऊर्जा सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन पर नए पांच साल के एमओयू पर जल्द हस्ताक्षर करने के लिए तत्पर थे।

4. अमेरिकी-भारत संयुक्त आतंकवाद पर संयुक्त घोषणा

22 सितंबर, 2015 को संयुक्त आतंकवाद पर अमेरिका-भारत की संयुक्त घोषणा। भारत के विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और अमेरिकी विदेश मंत्री जॉन केरी ने उद्घाटन के अवसर पर भारत-अमेरिका रणनीतिक और वाणिज्यिक वार्ता में भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा अपने सभी रूपों में आतंकवाद का मुकाबला करने की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। वे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों 2178, 2170 और 2199 के प्रावधानों के अनुसार इस खतरे को कम करने हेतु वैश्विक सुरक्षा के लिए आईएसआईएल / दाएश द्वारा उत्पन्न गंभीर खतरे की पहचान की हैं।

5. प्रधानमंत्री की संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा, **23-28** सितंबर**, 2015**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 23 से 28 सितंबर 2015 तक अमेरिका का दौरा किया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित किया और दुनिया के कई नेताओं के साथ बातचीत की।

- 25 सितंबर 2015 को, प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र सतत विकास शिखर सम्मेलन में अपना भाषण दिया। उन्होंने कहा कि सतत विकास के लिए राष्ट्रों की राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। उन्हें नीति स्पेस भी चाहिए। भारत का अधिकांश विकास एजेंडा सतत विकास लक्ष्यों में दिखाया गया है और देश मूल बातों: आवास, बिजली, पानी और स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।
- 26 सितंबर 2015 को, प्रधानमंत्री मोदी ने न्यूयॉर्क में जी-4 की बैठक के लिए ब्राजील की राष्ट्रपति, एंजेला मर्केल, जर्मनी की चांसलर एंजेला मार्केल तथा जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे को आमंत्रित किया। जी-4 नेताओं ने जोर दिया कि एक से अधिक प्रतिनिधि, वैध और प्रभावी सुरक्षा परिषद की आवश्यकता है। नेताओं ने जोर दिया कि जी-4 देश विस्तारित और सुधार परिषद में स्थायी सदस्यता हेतु वैध उम्मीदवार हैं और एक-दूसरे की उम्मीदवारी का समर्थन करते हैं।
- 27 सितंबर, 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सैन जोस में डिजिटल इंडिया डिनर में भाषण दिया। उन्होंने कहा कि सरकार सशक्तिकरण और समावेश के एक नए युग की शुरूआत करने हेतु नेटवर्क और मोबाइल फोन की शक्ति का उपयोग करके गरीबी को कम करने का प्रयास कर रही है। कुछ महीनों में लगभग 180 मिलियन नए बैंक खाते, गरीबों को लाभ का सीधा हस्तांतरण, सबसे गरीबों की पहुंच के भीतर बीमा और सभी के लिए अंतिम वर्षों के लिए पेंशन, ऐसी पहल और डिजिटल इंडिया के दर्शन हैं।
- 27 सितंबर 2015 को, प्रधानमंत्री मोदी ने सैन जोस में भारत-अमेरिका स्टार्ट-अप कोनेक्ट 2015 में भाषण दिया। उन्होंने आज की दुनिया में स्टार्ट-अप के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि भारत का स्टार्ट-अप का अपना पारिस्थितिकी तंत्र तेजी से विकसित हो रहा है। यह अपने युवाओं की ऊर्जा, उद्यम और नवाचार से प्रेरित है। उन्होंने भारत फंड भी

लॉन्च किया - जो न केवल भारत के लिए, बल्कि बेहतर स्वास्थ्य, कृषि, नवीकरणीय और प्रौद्योगिकी के लिए भी है।

- 29 सितंबर 2015 को, प्रधानमंत्री मोदी ने न्यूयॉर्क में पीसकीपिंग पर शिखर सम्मेलन में एक बयान दिया। 180,000 से अधिक भारतीय सैनिकों ने संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में भाग लिया है - किसी भी अन्य देश से अधिक। भारत पहला देश था जिसने लाइबेरिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन में एक महिला गठित पुलिस इकाई का योगदान दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सैन्य योगदान देने वाले देशों की निर्णय लेने की प्रक्रिया में कोई भूमिका नहीं है और वरिष्ठ प्रबंधन और बल कमांडरों में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है।
- नई दिल्ली के लिए रवाना होने से पहले प्रधानमंत्री मोदी की न्यूयॉर्क में अंतिम दो जुड़ाव, फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास और मेक्सिको के राष्ट्रपति एनरिक पेना नीटो के साथ द्विपक्षीय बैठकें थीं।

10. बहुपक्षीय संस्थान

I. आसियान-भारत शिखर सम्मेलन

1. क्वालालंपुर में 13वीं भारत-आसियान शिखर बैठक में प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन वक्तव्य (21 नवंबर, 2015)

प्रधानमंत्री ने कहा कि व्यापार 2014-15 में लगभग 76.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ गया; और इसी तरह दोनों दिशाओं में निवेश में भी वृद्धि हुई है। आसियान सबसे बड़ा निवेश साझेदार बना हुआ है – अंत:प्रवाह और बहिर्प्रवाह दोनों दृष्टि से। विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार हमारे सहयोग का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है तथा यह हमारी आर्थिक साझेदारी का समर्थन करता है और आसियान – भारत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास निधि की राशि वर्तमान में एक मिलियन अमरीकी डालर से बढ़ाकर 5 मिलियन अमरीकी डालर हो गई है और हम लागत की प्रौद्योगिकियों के वाणिज्यीकरण को सुगम बनाने, प्रौद्योगिकी अंतरण तथा सहयोगात्मक अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं के लिए एक आसियान – भारत नवाचार प्लेटफार्म गठित करने का भी इरादा रखते हैं। भारत आसियान देशों को हमारी देशज रूप में विकसित जीपीएस सहायता प्राप्त भू-संवर्धित नौवहन या गगन सेवाओं का भी प्रस्ताव करता है, जो उन्नत नौवहन तथा लोकेशन सहायता एवं सूचना सुविधाएं प्रदान करती है। और यह भी प्रस्ताव करता है कि भारत और आसियान महासागर या नीली अर्थव्यवस्था के सतत विकास में सहयोग करें।

II. बेसिक 20वीं मंत्रिस्तरीय बैठक (27-28 जून 2015)

जलवायु परिवर्तन पर 20वीं बेसिक मंत्रीस्तरीय बैठक 27-28 जून, 2015 को न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र के लिए ब्राजील के स्थाई मिशन में हुई। इस बैठक में ब्राजील की पर्यावरण मंत्री माननीया सुश्री ईजाबेला टेक्सीरा, दक्षिण अफ्रीका की पर्यावरण मंत्री माननीय सुश्री एडना मोलेवा, चीन के जलवायु परिवर्तन के लिए विशेष प्रतिनिधि माननीय श्री सी झेन्हुआ और भारत के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री रवि एस प्रसाद ने भाग लिया। सभी मंत्रियों ने इस बात की फिर से पुष्टि की कि अधिक कार्रवाई के लिए डरबन प्लेटफार्म (एडीपी) की प्रक्रिया एवं परिणाम यू एन एफ सी सी सी के सभी सिद्धांतों एवं प्रावधानों द्वारा मार्गदर्शित होने चाहिए तथा पूरी तरह इसके अनुसरण में होने चाहिए। सभी मंत्रियों ने डरबन अधिदेश में अभिचिन्हित सभी छह घटकों पर संतुलित ढंग से ध्यान देने के लिए पेरिस करार की आवश्यकता को रेखांकित किया – उपशमन, अनुकूलन, वित्त पोषण, क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी विकास एवं अंतरण, कार्रवाई एवं सहायता में पारदर्शिता। इस संबंध में, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एडीपी के महत्वाकांक्षी परिणाम के तहत केवल उपशमन पर बल नहीं दिया जाना चाहिए, अपितु संतुलित एवं व्यापक ढंग से अन्य घटकों पर भी ध्यान देना चाहिए।

III. बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल (बीबीआईएन)

1. बंग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल (बीबीआईएन) के बीच उप-क्षेत्रीय सहयोग पर जल संसाधन प्रबंधन तथा विद्युत / जल विद्युत संबंधी और संपर्क एवं पारगमन संबंधी संयुक्त कार्य समूहों की दूसरी बैठक

बंग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल (बीबीआईएन) के बीच उप-क्षेत्रीय सहयोग पर जल संसाधन प्रबंधन तथा विद्युत / जल विद्युत संबंधी और संपर्क एवं पारगमन संबंधी संयुक्त कार्य समूहों की दूसरी बैठक

30-31 जनवरी, 2015 को नई दिल्ली में हुई।

- इसमें चार देशों के बीच बिजली व्यापार तथा अंतर-ग्रिड कनेक्टिविटी की गुंजाइश के साथ-साथ भविष्य की विद्युत परियोजनाओं में घनिष्ठ सहयोग की संभावना पर चर्चा की गई।
- यह सहमति व्यक्त की गई कि जल-स्रोतों सहित जल संसाधनों के दोहन हेतु संयुक्त प्रयास किए जाएंगे, जो उप-क्षेत्र में उपलब्ध अन्य स्रोतों से जल और विद्युत सहित होंगे।
- जेडब्ल्यूजी को समान आधार पर कम से कम तीन देशों को संयुक्त रूप से शामिल करने हेतु संभावित भविष्य की जलविद्युत / बिजली परियोजनाओं की सूचियों का आदान-प्रदान करने पर भी सहमति हुई।
- कनेक्टिविटी और ट्रांजिट पर जेडब्ल्यूजी ने मौजूदा व्यवस्थाओं की समीक्षा की। यह मोटर वाहनों और रेलवे के आवागमन को सक्षम करने के लिए बीबीआईएन समझौतों के महत्व पर सहमत हुआ।
- जेडब्ल्यूजी प्रतिनिधिमंडल ने मौजूदा द्विपक्षीय मार्गों के अलावा कम से कम तीन देशों को शामिल करते हुए संभावित कार्गो (सड़कों और रेलवे दोनों) और बस मार्गों पर विचारों का आदान-प्रदान किया और इस संबंध में सुझाव साझा करने के लिए भी सहमत हुए। वाणिज्यिक और साथ ही पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बहु-मोडल परिवहन का उपयोग करने की संभावना तलाशने का भी निर्णय लिया गया।

IV. ब्राज़ील, रूस, भारत और दक्षिण अफ्रीका (ब्रिक्स) (15 नवंबर, 2015)

1. ब्रिक्स नेता बैठक में प्रधानमंत्री द्वारा आरंभिक टिप्पणी, एंटाल्या, तुर्की **(15 नवंबर, 2015)**

भारत ब्रिक्स को सबसे अधिक महत्व देता है। हमें 1 फरवरी, 2016 से ब्रिक्स की अध्यक्षता ग्रहण करने और अन्य सदस्यों द्वारा किए गए महान कार्य को सुदृढ़ करने का सम्मान प्राप्त हो रहा है। जब भारत ब्रिक्स का अध्यक्ष होगा तब ब्रिक्स का विषय "अनुक्रियाशील, समावेशी एवं सामूहिक समाधानों का निर्माण करना" होगा जो संक्षेप में बी आर आई सी एस होगा। यह हमारे समूह के लोकाचार को उपयुक्त ढंग से वर्णित करता है। यह उपयुक्त रूप से समूह के लोकाचार को दर्शाता है।

2. ब्रिक्स शिखर सम्मेलन (9 जुलाई 2015)

दस विशिष्ट प्रस्ताव, जिन्हें दस कदम कहा जाता है, भारत ने उठाये हैं। चूंकि भारत ब्रिक्स शिखर सम्मेलन का अगला मेजबान होगा और फरवरी 2016 से दिसंबर 2016 तक इसका अध्यक्ष रहेगा। भारत इन पहलों और घोषणाओं को आगे बढ़ाने की कोशिश करेगा जो प्रधानमंत्री द्वारा की गई थीं। ये प्रस्ताव हैं:

1. 2016 के दौरान ब्रिक्स व्यापार मेला
2. ब्रिक्स रेलवे रिसर्च सेंटर
3. सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों के बीच सहयोग,
4. ब्रिक्स डिजिटल पहल
5. ब्रिक्स कृषि अनुसंधान केंद्र
6. राज्य और स्थानीय सरकार फोरम
7. शहरीकरण के क्षेत्र में शहरों के बीच सहयोग
8. ब्रिक्स स्पोर्ट्स काउंसिल और वार्षिक ब्रिक्स स्पोर्ट्स मीट

9. न्यू डेवलपमेंट बैंक की पहली बड़ी परियोजना स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में होनी चाहिए

10. ब्रिक्स फिल्म महोत्सव

इस अवसर पर जारी घोषणा में 77 अनुच्छेद शामिल हैं जिनमें विभिन्न विषयों में सबसे महत्वपूर्ण हैं:

- संयुक्त राष्ट्र में सहयोग पर एक अच्छा अनुच्छेद, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधार के संबंध में।
- आतंकवाद के खिलाफ सहयोग के विषय पर अनुच्छेद का समूह है। ड्रग्स समस्या के खिलाफ प्रयासों में ब्रिक्स सदस्यों के बीच सहयोग का प्रतिबिंब।
- आईसीटी क्षेत्र में सहयोग से संबंधित कई अनुच्छेद।
- आईएमएफ सुधार और विश्व बैंक प्रशासन संरचनाओं के सुधार के महत्व पर इस घोषणा में प्रतिबिंब है।
- विश्व व्यापार संगठन में सहयोग, जलवायु परिवर्तन के विषय पर सहयोग का संदर्भ है।

3. ब्रिक्स नेताओं की बैठक में प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन वक्तव्य, एंटाल्या, तुर्की (**15** नवंबर, **2015)**

भारत ब्रिक्स को सबसे अधिक महत्व देता है। हमें 1 फरवरी, 2016 से ब्रिक्स की अध्यक्षता ग्रहण करने और अन्य सदस्यों द्वारा किए गए महान कार्य को सुदृढ़ करने का सम्मान प्राप्त हो रहा है। जब भारत ब्रिक्स का अध्यक्ष होगा तब ब्रिक्स का विषय "अनुक्रियाशील, समावेशी एवं सामूहिक समाधानों का निर्माण करना" होगा जो संक्षेप में बी आर आई सी एस होगा। यह हमारे समूह के लोकाचार को उपयुक्त ढंग से वर्णित करता है। यह उपयुक्त रूप से समूह के लोकाचार को दर्शाता है।

V. लोकतंत्र समुदाय का 8 वां मंत्रिस्तरीय सम्मेलन

27 जुलाई 2015 को, भारत ने लोकतंत्र समुदाय की गवर्निंग काउंसिल के सदस्य के रूप में अपने 8वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लिया, जिसे समूह के वर्तमान अध्यक्ष के रूप में अल सल्वाडोर द्वारा आयोजित किया गया था। जनरल वी. के. सिंह, विदेश राज्य मंत्री ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया और ग्वाटेमाला, मंगोलिया, माली, और अल सल्वाडोर के विदेश मंत्रियों के साथ पूर्ण सत्र में चर्चा की।

VI. सीओपी 21

1. पेरिस में सीओपी-**21** के पूर्ण सत्र में प्रधानमंत्री द्वारा वक्तव्य **(30** नवंबर, **2015)**

- 2030 तक, भारत 2005 के स्तर से 33 – 35 प्रतिशत प्रति यूनिट उत्सर्जन कम करेगा और भारत की 40 प्रतिशत संस्थापित क्षमता गैर जीवाश्म ईंधनों से होगी। भारत नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार करके इसे प्राप्त करेगा – उदाहरण के लिए, 2022 तक 175 गीगावाट की नवीकरणीय ऊर्जा शामिल करके। भारत कम से कम 2.5 बिलियन टन मूल्य कार्बन डाइ आक्साइड को अवशोषित करने के लिए अपने वनाच्छादन का विस्तार करेगा।
- समता तथा साझी किंतु अलग – अलग जिम्मेदारियों के सिद्धांत सभी क्षेत्रों में हमारे सामूहिक प्रयासों के आधार होने चाहिए – उपशमन, अनुकूलन तथा कार्यान्वयन के उपाय। यदि कोई और चीज होती है, तो नैतिक रूप से गलत होगी तथा विषमता बढ़ेगी।

VII. पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस)

1. **9-10** नवंबर **2015** को समुद्री सुरक्षा और सहयोग पर ईएएस सम्मेलन

सम्मेलन में विभिन्न घटकों पर चर्चा की गई, उनका विश्लेषण किया गया और भारत तथा अन्य पूर्वी एशियाई देशों को समुद्री क्षेत्र में ईएएस के भाग लेने वाले देशों के बीच सहयोग को मजबूत करने में मदद की, जिसमें समुद्र आधारित नीली अर्थव्यवस्था के समग्र विकास के माध्यम से समुद्री सुरक्षा तथा इस क्षेत्र के लिए अधिक सहकारी और एकीकृत भविष्य शामिल है।

2. क्वालालंपुर में **10**वीं पूर्वी एशिया शिखर बैठक में प्रधानमंत्री द्वारा टिप्पणियां **(22** नवंबर**, 2015)**

प्रधानमंत्री ने कहा कि पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन क्षेत्र के सामूहिक भविष्य को आकार देने का महत्वपूर्ण मंच बना हुआ है। पहला, पूर्वी एशिया शिखर बैठक को सुरक्षा एवं सहयोग के लिए एक समावेशी, संतुलित, पारदर्शी तथा खुले क्षेत्रीय वास्तुशिल्प के विकास का समर्थन जारी रखना चाहिए। दूसरा, आसियान के साथ भारत समुद्र के कानून पर 1982 का संयुक्त राष्ट्र अभिसमय सहित अंतर्राष्ट्रीय कानून के स्वीकृत सिद्धांतों के अनुसरण में नौवहन की आजादी, ओवर फ्लाइट तथा बाधा मुक्त वाणिज्य के लिए प्रतिबद्ध है। तीसरा, हमें साइबर सुरक्षा पर मजबूत प्रतिबद्धता एवं घनिष्ठ सहयोग की जरूरत है। चौथा, हमें एक संतुलित एवं विस्तृत क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी पर जल्दी से निर्णय लेने की दिशा में काम करना चाहिए। पांचवां, विकास सहयोग पूर्वी एशिया शिखर बैठक के केंद्र में है। भारत अपने साझेदार देशों के प्रयासों का समर्थन करना जारी रखेगा।

VII. जी-20

1. जी **-20** बैठक **(15-16** नवंबर **2015)**
   - तुर्की के राष्ट्रपति, एर्दोगन के साथ अपनी बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने चार निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओं की भारत की सदस्यता के लिए तुर्की का समर्थन मांगा। चर्चा में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार को भी शामिल किया गया, क्योंकि इससे आतंकवाद से संबंधित खतरा भी था। इस संदर्भ में, दोनों पक्ष आतंकवाद विरोधी सहयोग को देखने के लिए सहमत हुए।
   - स्पेन के प्रधानमंत्री मारियाना राहॉय के साथ उनकी बैठक में आतंकवाद के मुद्दे पर चर्चा हुई। सुरक्षा सहित, भारत द्वारा विशेष रूप से रेलवे क्षेत्र में सहयोग के अन्य क्षेत्रों पर भी प्रकाश डाला गया। भारत अपने मौजूदा नेटवर्क को उन्नत करना चाहता है, मौजूदा रेल नेटवर्क की गति में सुधार करना और बढ़ाना चाहता है और स्पेन में अपेक्षित ऐसी प्रौद्योगिकियां हैं, उनके रेल नेटवर्क को यूरोप में सबसे अच्छा और कुशल माना जाता है। अन्य क्षेत्र के प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि रक्षा विनिर्माण और समुद्री सुरक्षा भी थी।
   - ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री टर्नबुल के साथ अपनी बैठक में, वित्त और बैंकिंग क्षेत्र पर सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया था। मार्च 2016 में वित्त मंत्री अरुण जेटली की प्रस्तावित ऑस्ट्रेलिया यात्रा के मद्देनजर इस पर चर्चा की गई।

IX. भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक (26-29 अक्तूबर, 2015)

नई दिल्ली (26-29 अक्टूबर) में आयोजित तीसरे भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन ने आपसी सशक्तीकरण और पारस्परिक पुनरुत्थान के "गतिशील और परिवर्तनकारी एजेंडे" की शुरुआत की जो आने वाले वर्षों और दशकों में भारत तथा अफ्रीका को करीब लाएगा। इस मंच के माध्यम से पहली बार ऐतिहासिक शिखर बैठक हेतु पहली बार गतिशील अफ्रीकी देशों के सभी 54 देशों के नेता और प्रतिनिधि एक साथ आए, जो भारत-अफ्रीका साझेदारी को नवीन करने और बदलने हेतु तैयार है। यह अब तक भारतीय सरजमीं पर अफ्रीकी नेताओं का सबसे बड़ा जमावड़ा था और इस दौरान व्यापार,

प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी, क्षमता निर्माण और विकास साझेदारी के आसपास भारत-अफ्रीका संबंधों के कई आयामों को प्रदर्शित किया गया था। भारत के साथ स्थायी भागीदारी के निर्माण के लिए उनकी अस्थिर प्रतिबद्धता की स्पष्ट पुनः पुष्टि में, 41 देशों का प्रतिनिधित्व राज्य / सरकार के प्रमुखों के स्तर पर किया गया था।

शिखर सम्मेलन की शुरुआत बहु-मीडिया सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुई, जिसमें भारत के पुनरोद्धार हेतु 'चांस ऑफ फेथ' सेकिंग ब्लेसिंग शामिल था और अफ्रीकी वैदिक गीत केलीबोग के साथ घुलमिल गए वैदिक अवतारों ने भारत की विविधता और अफ्रीका के जागरण का जश्न मनाया गया। इस शो का समापन वन बीट, वन रिदम और वन विज़न के साथ हुआ। आईएएफएस-III ने विश्व के दो विकास ध्रुवों के बीच हितों, पदों, मूल्यों और जीत की साझेदारी के एक बोझिल वेब के बढ़ते अभिसरण को ज्वलंत रूप से सामने लाया, जो कि संयुक्त राष्ट्र परिषद से लेकर वैश्विक स्तर पर क्रॉस-कटिंग, बहुपक्षीय व्यापार वार्ता, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास के लिए सुधार, समुद्री डकैती / समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद के वैश्विक मुद्दों को संबोधित करता है।

'दिल्ली घोषणा 2015' और 'रणनीतिक सहयोग के लिए भारत-अफ्रीका ढांचा' नामक विजन दस्तावेज में आपसी पुनरुत्थान को बढ़ावा देने के लिए अफ्रीका की एजेंडा 2063 के साथ भारत की विकास की कहानी के विकास के लिए बहुआयामी रणनीति की रूपरेखा तैयार की गई।

1. तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक की मंत्री स्तरीय बैठक में विदेश मंत्री द्वारा वक्तव्य **(27** अक्टूबर**, 2015)** मुख्य आकर्षण हैं:

- भारत जन केन्द्रित दृष्टिकोण के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो क्षमता निर्माण, मानव संसाधन विकास तथा हमारी परस्पर सहमत प्राथमिकताओं के लिए तकनीकी एवं वित्तीय सहायता पर केन्द्रित है। पिछले सात वर्षों में भारत सरकार द्वारा अफ्रीका को कुल 40,000 छात्रवृत्तियां प्रदान की गई हैं। 2011 में दूसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक के बाद से ही छात्रवृत्तियों का यह आंकड़ा 24,000 से अधिक है। भारत के छात्रवृत्ति एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत 60 से अधिक प्रतिष्ठित संस्थाओं में 300 से अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं।
- अखिल अफ्रीका ई-नेटवर्क के माध्यम से विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं में उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियां भी प्रदान की गई हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से हमने समुद्री जल विज्ञान, नवीकरणीय ऊर्जा, ग्रामीण विकास और साइबर सुरक्षा आदि जैसे क्षेत्रों में अफ्रीकी क्षमता विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है।
- अफ्रीका में आर्थिक एवं अवसंरचना विकास को पोषित करने के लिए ऋण सहायता के माध्यम का भी उपयोग किया गया है। पिछले दशक में भारत सरकार द्वारा 40 से अधिक अफ्रीकी देशों और इकोवास में लगभग 140 परियोजनाओं के लिए रियायती ऋण के तहत लगभग 9 बिलियन अमरीकी डालर की कुल राशि अनुमोदित की गई है। अब तक लगभग 60 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं। इन परियोजनाओं के तहत बुर्किनाफासो एवं मेडागास्कर में कृषि परियोजनाएं, सीएआर एवं सेनेगल में सड़क परिवहन की परियोजनाएं तथा अंगोला और बेनिन में रेलवे पुनर्वास की परियोजनाएं तथा इथोपिया एवं सूडान में चीनी उद्योग के पुनर्वास की परियोजनाएं शामिल हैं।
- भारत और अफ्रीका विश्व में सबसे तेजी से विकास करने वाली अर्थव्यवस्थाएं हैं। हमें हाल के वर्षों में भारत - अफ्रीका आर्थिक भागीदारी के गहन होने को नोट करते हुए बड़ी प्रसन्नता होती है। पिछले 15 वर्षों में हमारे द्विपक्षीय व्यापार में 20 गुना वृद्धि हुई है तथा पिछले 5 वर्षों में यह दोगुना होकर 2014-15 में लगभग 72 बिलियन अमरीकी डालर हो गया है।
- भारत ऐसी पहली उभरतीय अर्थव्यवस्थाओं में से एक था जिसने सबसे कम विकसित देशों के लिए एकपक्षीय रूप से ड्यूटी फ्री बाजार पहुंच स्कीम को लागू किया। 2014 में हमने

इस स्कीम का विस्तार किया तथा आज इसके तहत 98 प्रतिशत टैरिफ लाइनें शामिल हैं। भारत में अपना निर्यात बढ़ाने के लिए इस स्कीम का लाभ अफ्रीका के 34 देश उठा रहे हैं।

- विकासशील देशों, विशेष रूप से सबसे कम विकसित देशों के जायज हितों की रक्षा करने एवं बढ़ावा देने के लिए डब्ल्यूटीओ सहित वैश्विक व्यापार मुद्दों पर प्रशिक्षण एवं बातचीत के माध्यम से हमारा मजबूत सतत सहयोग भी है।
- भारत ने अफ्रीकी संघ द्वारा इस साल जुलाई में एजेंडा 2063 के अंगीकरण को भी रुचि के साथ देखा है, जो भविष्य के लिए एक स्पष्ट रोडमैप प्रदान करता है। भारत और अफ्रीका समान और साझे अनुभव तथ संघर्ष उत्तरोत्तर भूमंडलीकृत विश्व में राष्ट्रीय प्राथमिकताओं तथा सामूहिक हितों दोनों के स्तर पर समान तरह की चुनौतियों एवं सरोकारों में अनूदित होते हैं।
- प्राथमिक स्वास्थ्य देखरेख तक सबको पहुंच प्रदान करना तथा बीमारियों से लड़ना विशेष रूप से भारत और अफ्रीका दोनों के लिए तात्कालिक प्राथमिकताएं हैं। पिछले कई वर्षों से अफ्रीका में इबोला तथा एच आई वी / एड्स जैसी महामारियों से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों में भारत सक्रियता से भाग ले रहा है। अखिल अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना भारत और अफ्रीका दोनों में भारी संख्या में सुपर स्पेशिलिटी अस्पतालों को जोड़ती है।
- अफ्रीका के साथ भारत का सहयोग अन्य क्षेत्रों तक भी फैला हुआ है। इनमें कृषि, शिक्षा तथा कौशल विकास, ऊर्जा एवं अवसंरचना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि शामिल हैं। नीली या महासागर अर्थव्यवस्था, समुद्री सुरक्षा तथा आतंकवाद की खिलाफत भी ऐसे क्षेत्र हैं जहां हमें अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

2. तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक में विदेश मंत्री द्वारा उद्घाटन टिप्पणी (29 अक्टूबर, 2015)

- भारत और अफ्रीका हिंद महासागर से जुड़े हुए हैं और अफ्रीका में 2.7 मिलियन मजबूत भारतीय प्रवासी से जुड़े हुए हैं, जो अपनी गोद ली हुई मातृभूमि के आर्थिक विकास में सक्रिय योगदान दे रहा है।
- भारत ने हमेशा अफ्रीका का साथ दिया है और अफ्रीका के साथ खड़ा हुआ है। हमारा संबंध ऐसा है जो साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नस्लीय भेदभाव एवं रंगभेद के खिलाफ हमारे साझे संघर्ष पर निर्मित हुआ है। यह युग आज हमारे पीछे है परंतु हमारी एकता इस वजह से खतरे में है कि साझा संघर्ष जारी है।
- हमारी आधुनिक साझेदारी आर्थिक प्रगति, विकास एवं सशक्तीकरण के स्तंभों पर टिकी है और यह विभिन्न क्षेत्रों - द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अखिल अफीकी क्षेत्र में हमारी भागीदारी का सुदृढ़ीकरण है।
- प्राचीन एवं बहुआयामी भारत - अफ्रीका विकास साझेदारी समानता, मैत्री एवं बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित है। यह दक्षिण - दक्षिण सहयोग के सबसे सुंदर उदाहरणों में से एक का प्रतिनिधित्व करती है।
- तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक हमारे भावी सहयोग के लिए एक निर्भीक नया पथ तैयार करेगी।

3. एसोचैम, सीआईआई और फिक्की द्वारा आयोजित भारत-अफ्रीका व्यवसाय मंच में विदेश मंत्री द्वारा भाषण, **28** अक्टूबर, **2015**, मुख्य आकर्षण हैं:

- भारत के शीर्ष व्यवसाय चैंबरों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित भारत - अफ्रीका व्यवसाय मंच 2015 व्यापार एवं निवेश संबंधों को विस्तृत एवं गहन करने के लिए हमारे सतत

प्रयासों के अंग के रूप में भारत और अफ्रीका दोनों के सरकारी एवं कारोबारी क्षेत्र से नेताओं को एक मंच पर लाने के लिए एक प्रशंसनीय पहल है। मैं सभी प्रतिभागियों, विशेष रूप से उन प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत करती हूं जो हमारे देश में आने के लिए अफ्रीका के भिन्न भिन्न देशों से चलकर आए हैं।

- व्यवसाय तथा उससे संबंधित आर्थिक गतिविधि अफ्रीका के साथ भारत के घनिष्ठ एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों का एक प्रमुख चालक है। इसलिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है कि एक प्रमुख कार्यक्रम के रूप में इस व्यवसाय मंच का आयोजन किया गया है जिसका चर्मोत्सकर्ष तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक (आईएएफएस-III) के रूप में होगा।
- भारत और अफ्रीका के बीच व्यापार एवं आर्थिक आदान प्रदान इस उत्थानशील महाद्वीप के साथ हमारी चहुंमुखी साझेदारी का एक महत्वपूर्ण घटक है। 2014-15 में लगभग 72 बिलियन अमरीकी डालर के कुल व्यापार का आंकड़ा हालांकि आकर्षक है क्योंकि यह एक दशक में 10 गुना से अधिक वृद्धि को दर्शाता है परंतु यह अभी भी भारत और अफ्रीका के आकार और 2.3 बिलियन की सम्मिलित आबादी को देखते हुए अपनी क्षमता से काफी कम है, जो सभी प्रकार के माल एवं सेवाओं के लिए एक विशाल उपभोक्ता बाजार का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- कई शताब्दियों से अफ्रीका में भारत की उपस्थिति है। भारतीय डायसपोरा, जिन्होंने अफ्रीका को अपना घर बना लिया है, की कारोबारी चतुराई ने पूरे महाद्वीप में विकास एवं प्रगति की गाथा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज एक अनुमान के अनुसार, कृषि, विनिर्माण और सेवा जैसे अनेक क्षेत्रों में पूरे अफ्रीका में 32 से 35 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश फैला हुआ है। चूंकि भारतीय अर्थव्यवस्था विकसित हुई है और परिपक्व हुई है, भारत में सृजित पूंजी में से काफी मात्रा में ऐसी पूंजी भी है जो देश के बाहर अफ्रीका सहित नए गंतव्यों की तलाश कर रही है।

4. नई दिल्ली में तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री द्वारा भाषण **(29** अक्टूबर**, 2015)**

- आज 1.25 बिलियन भारतीयों और 1.25 बिलियन अफ्रीकियों की धड़कन एक लय में है। भारत और अफ्रीका विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक हैं। हममें से प्रत्येक भाषा, धर्म और संस्कृति का एक जीवंत मोजैक है।
- भारत और अफ्रीका ने विश्व में एक सुर में अपनी आवाज बुलंद की है; आपस में समृद्धि के लिए साझेदारी का निर्माण किया है; शांति बनाए रखने के लिए हम नीला हेलमेट पहनकर एक साथ खड़े हुए हैं और हमने भुखमरी एवं बीमारी के विरुद्ध एक साथ संघर्ष किया है।
- जब हम भविष्य की ओर देखते हैं तो कुछ ऐसी बहुमूल्य चीजें हैं जो हमें एकजुट करती हैं : यह हमारा युवावर्ग है। दो तिहाई भारतीयों और दो तिहाई अफ्रीकियों की आयु 35 साल से कम है। और यदि भविष्य युवाओं का है तो इस शताब्दी को आकार देना एवं निर्मित करना हमारी जिम्मेदारी है।
- हमें आर्थिक सुधारों, अवसंरचना विकास तथा संसाधनों के संपोषणीय उपयोग के अनेक सफल उदाहरण दिख रहे हैं। वे अवरुद्ध अर्थव्यवस्थाओं को गतिशील अर्थव्यवस्थाओं में परिवर्तित कर रही हैं। 2013 में अफ्रीका में 4 लाख नए व्यवसाय पंजीकृत हुए और अनेक स्थानों में आज मोबाइल टेलीफोन 95 प्रतिशत आबादी तक पहुंच गया है।
- अब अफ्रीका वैश्विक नवाचार की मुख्य धारा से जुड़ रहा है। मपेसा की मोबाइल बैंकिंग, मेड अफ्रीका, का स्वास्थ्य देखरेख नवाचार या एग्रीमनाग्र और किलिमो सलमा का कृषि नवाचार - ये सभी अफ्रीका में जीवन को परिवर्तित करने के लिए मोबाइल एवं डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहे हैं।
- अपने पूरे भव्य लैंडस्केप में अफ्रीका वन्यजीव संरक्षण एवं इको टूरिज्म के क्षेत्र में मानक

स्थापित कर रहा है। अफ्रीका के खेलों, कला एवं संगीत से पूरा विश्व आनंदित होता है।

- शेष विकासशील देशों की तरह अफ्रीका की भी विकास से जुड़ी अपनी चुनौतियां हैं। और विश्व के अन्य विकासशील देशों की तरह विशेष रूप से आतंकवाद एवं अतिवाद के कारण सुरक्षा एवं स्थिरता को लेकर इसके अपने सरोकार हैं। परंतु मुझे अफ्रीका के नेतृत्व और अफ्रीका के लोगों में पूर्ण विश्वास है कि वे इन चुनौतियों से बाहर निकलेंगे।
- एक दशक से भी कम समय में हमारा व्यापार दोगुना से अधिक हो गया है तथा आज यह 70 बिलियन डालर से अधिक है। आज भारत अफ्रीका में कारोबारी निवेश का एक प्रमुख स्रोत है। आज अफ्रीका के 34 देशों को भारतीय बाजार में ड्यूटी फ्री एक्सेस प्राप्त है।
- भारत ने 2008 में पहली भारत - अफ्रीका शिखर बैठक के समय से अब तक रियायती ऋण में 7.4 बिलियन डालन और अनुदान में 1.2 बिलियन डालर की प्रतिबद्धता की है। यह संपूर्ण अफ्रीका में क्षमता निर्माण के लिए 100 संस्थाओं का सृजन कर रहा है तथा अवसंरचना, सार्वजनिक परिवहन, स्वच्छ ऊर्जा, सिंचाई, कृषि तथा विनिर्माण क्षमता का विकास कर रहा है। सिर्फ पिछले तीन वर्षों में अफ्रीका के लगभग 25,000 युवाओं को भारत में शिक्षित और प्रशिक्षित किया गया है। वे हमारे बीच 25,000 नए लिंक हैं।
- भारत अपनी अंतरिक्ष परिसंपत्तियां एवं प्रौद्योगिकी उपलब्ध करायेगा। भारत विकास, जन सेवाओं, अभिशासन, आपदा प्रत्युत्तर, संसाधन प्रबंधन एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी की संभावनाओं का प्रयोग करेगा। भारत स्वर्गीय राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम की संकल्पना के अनुसार हम अखिल अफ्रीका ई-नेटवर्क का विस्तार करेगा, जो अफ्रीका के 48 देशों को भारत से और एक दूसरे से जोड़ता है। इससे आपके अखिल अफ्रीका वर्चुअल विश्वविद्यालय के गठन में भी मदद मिलेगी।
- इस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में मानव पूंजी का विकास भारत - अफ्रीका साझेदारी के केन्द्र में होगा।
- प्रौद्योगिकी हमारी साझेदारी का एक मजबूत आधार होगी।
- भारत अफ्रीका के कृषि क्षेत्र को विकसित करने में मदद करेगा। अफ्रीका में विश्व की 60 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि है और इसका वैश्विक उत्पादन मात्र 10 प्रतिशत है। अफ्रीका में कृषि समृद्धि के पथ पर इस महाद्वीप को अग्रसर कर सकती है और वैश्विक खाद्य सुरक्षा में भी सहायता प्रदान कर सकती है।
- स्वास्थ्य देखरेख एवं सस्ती दवाओं में भारत की विशेषज्ञता कई बीमारियों के विरुद्ध लड़ाई में नई उम्मीद की किरण जगा सकती है और किसी नवजात को जिंदा रहने का बेहतर मौका प्रदान कर सकती है। हम भारत और अफ्रीका के परंपरागत ज्ञान एवं दवाओं की धरोहर को विकसित करने में भी आपस में सहयोग करेंगे।
- भारत अपनी अंतरिक्ष परिसंपत्तियां एवं प्रौद्योगिकी उपलब्ध करायेगा। भारत विकास, जन सेवाओं, अभिशासन, आपदा प्रत्युत्तर, संसाधन प्रबंधन एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी की संभावनाओं का प्रयोग करेगा। भारत स्वर्गीय राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम की संकल्पना के अनुसार हम अखिल अफ्रीका ई-नेटवर्क का विस्तार करेगा, जो अफ्रीका के 48 देशों को भारत से और एक दूसरे से जोड़ता है। इससे आपके अखिल अफ्रीका वर्चुअल विश्वविद्यालय के गठन में भी मदद मिलेगी।
- भारत नीली अर्थव्यवस्था के संपोषणीय विकास के लिए सहयोग करेगा, जो भविष्य में हमारी समृद्धि का एक महत्वपूर्ण संचालक होगी।
- भारत प्रत्येक जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपने साधारण संसाधनों के साथ प्रचुर प्रयास कर रहा है। भारत के लिए 2022 तक 175 गीगावाट की अतिरिक्त नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता तथा 2030 तक उत्सर्जन में 33 से 35 प्रतिशत की कटौती हमारे प्रयासों के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं।
- दोनों पक्ष स्वच्छ ऊर्जा, संपोषणीय अधिवास, सार्वजनिक परिवहन, जलवायु के अनुकूल कृषि पर भी भारत - अफ्रीका साझेदारी को वहन करेंगे।

- जब दिसंबर में पेरिस में पूरी दुनिया के नेताओं की बैठक होगी तब हम एक व्यापक एवं ठोस परिणाम देखने का प्रयास करेंगे जो जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय के सुस्थापित सिद्धांतों पर आधारित हो।
- भारत एक खरी वैश्विक सार्वजनिक साझेदारी भी देखना चाहता है जिससे ऊर्जा सस्ती हो, विकासशील देशों को वित्त एवं प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को अनुकूलित करने के लिए साधन उपलब्ध हो।
- अफ्रीकी देश सौर समृद्ध देशों के एक गठबंधन में शामिल होने के लिए भी आप सभी को आमंत्रित हैं, जिसका सी ओ पी-21 बैठक के समय 30 नवंबर को पेरिस में शुरू करने का प्रस्ताव किया गया है। हमारा लक्ष्य सौर ऊर्जा को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना और इसे ऐसे गांवों और समुदायों तक पहुंचाना है जो सबसे अधिक कटे हुए हैं।
- दिसंबर में डब्ल्यू टी ओ में नैरूबी में मंत्री स्तरीय बैठक में हमें यह जरूर सुनिश्चित करना चाहिए कि 2001 का दोहा विकास एजेंडा इन मौलिक उद्देश्यों को प्राप्त किए बगैर बंद न हो।
- विकासशील देशों के लिए खाद्य सुरक्षा और कृषि में विशेष सुरक्षा कवच के लिए सार्वजनिक स्टाक होल्डिंग पर कोई न कोई स्थायी समाधान भी प्राप्त करना चाहिए।
- भारत वैश्विक संस्थाओं में सुधार का पक्षधर है। यह विश्व स्वतंत्र देशों तथा जागरूक आकांक्षाओं का विश्व है। यदि हमारी संस्थाएं एक तिहाई से अधिक यू एन सदस्यता से वाले अफ्रीका को या मानवता के छठवें भाग वाले विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र को प्रतिनिधित्व नहीं प्रदान करेंगी तो वे हमारे विश्व का प्रतिनिधि नहीं हो सकती हैं। इसी वजह से भारत और अफ्रीका को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित संयुक्त राष्ट्र के सुधारों के लिए एक आवाज में बोलना चाहिए।
- साझेदारी को और सुदृढ़ करने के लिए भारत अगले पांच वर्षों में 10 बिलियन अमरीकी डालर का रियायती ऋण प्रदान करेगा। यह हमारे चल रहे ऋण कार्यक्रम के अलावा होगा।
- भारत 600 मिलियन अमरीकी डालर की अनुदान सहायता भी प्रदान करेगा। इसके तहत 100 मिलियन अमरीकी डालर का भारत - अफ्रीका विकास कोष और 10 मिलियन अमरीकी डालर का एक भारत - अफ्रीका स्वास्थ्य कोष शामिल होगा। इसके तहत अगले 5 वर्षों में भारत में 50,000 छात्रवृत्तियां भी शामिल होंगी। और यह अखिल अफ्रीका ई नेटवर्क के विस्तार तथा पूरे अफ्रीका में कौशल, प्रशिक्षण एवं अधिगम की संस्थाओं के विस्तार में मदद करेगा।
- इसलिए जब सुरक्षा की बात करते हैं तो दूरी एक दूसरे से हमें रोककर नहीं रखती है।
- इसी वजह से समुद्री सुरक्षा और जल विज्ञान तथा आतंकवाद एवं अतिवाद की खिलाफत में अपने सहयोग को गहन करना चाहते हैं और इसी वजह से हमें अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर संयुक्त राष्ट्र के व्यापक अभिसमय का समर्थन करना चाहिए।
- भारत अफ्रीका संघ के शांति रक्षा के प्रयासों के लिए भी सहायता प्रदान करेगा। और अफ्रीका में अफ्रीका के शांति रक्षकों को प्रशिक्षण देगा। संयुक्त राष्ट्र के शांति रक्षा मिशनों के बारे में निर्णय में भी भारत और अफ्रीका का मजबूत प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

5. नई दिल्ली में भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक **2015** में प्रधानमंत्री की समापन टिप्पणी **(29** अक्टूबर**, 2015)**

- आज का दिन सही मायने में एक ऐतिहासिक दिन है। हमें संपूर्ण अफ्रीका को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ है। हमारी पहली दो शिखर बैठकें बांजुल फार्मूला के आधार पर कुछ देशों तक सीमित थीं।

  भारत अफ्रीका के विकास में मदद करने के लिए प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर और अधिक ध्यान देगा : अभिशासन में बदलाव लाना, नागरिकों को सशक्त बनाना, विकास की मात्रा

एवं गति बढ़ाना, सेवाओं में सुधार लाना, स्वास्थ्य एवं शिक्षा तक पहुंच में वृद्धि करना, ऐसे उत्पाद तैयार करना जिनको गरीब खरीदने में समर्थ हो सके, विशिष्ट समूहों की आवश्यकताओं के अनुसार सेवाओं को अनुकूलित करना और हमारे ग्रह के लिए अधिक टिकाऊ भविष्य का निर्माण करना।

- भारत और अफ्रीका के बीच व्यापार एवं निवेश के प्रवाह में वृद्धि को उच्च प्राथमिकता दी गई। अपने व्यापार को और संतुलित बनाया जाएगा। भारतीय बाजार में अफ्रीका की पहुंच को सुगम बनाया जाएघा। 34 देशों को प्रदान किए गए ड्यूटी फ्री अक्सेस के पूर्ण एवं कारगर कार्यान्वयन का सुनिश्चय होगा।
- संयुक्त राष्ट्र में सुधार लाने, वैश्विक व्यापार में अपने साझे लक्ष्यों को प्राप्त करने, विकास एजेंडा 2030 के लिए वैश्विक साझेदारी का निर्माण करने और जलवायु परिवर्तन पर पेरिस बैठक से अपनी आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए अपने सहयोग तथा साझेदारी को गहन करना चाहिए। हमारे विजन एवं आकांक्षाओं के अनुसार निर्मित विश्व हम सभी को सफलता प्राप्त करने का बेहतर अवसर प्रदान करेगा।

6. आधिकारिक प्रवक्ता द्वारा मीडिया ब्रीफिंग**, 30** अक्टूबर**, 2015**

- प्रधानमंत्री की पहली द्विपक्षीय मुलाकात मोरक्को के राजा महामहिम राजा मोहम्मद VI के साथ हुई थी। आर्थिक मुद्दों के संबंध में, उन्होंने कहा कि संस्थागत निवेशकों के लिए मोरक्को बहुत आकर्षक है। मोरक्को के पास एक बहुत बड़ा संप्रभु धन कोष है। प्रधानमंत्री ने अवसंरचना बांड के प्रावधान सहित अधिक एफडीआई और संप्रभु धन निधि को आकर्षित करने हेतु सरकार द्वारा की गई कुछ पहलों को रेखांकित किया।
- उन्होंने कहा कि भारत को उर्वरकों के लिए फॉस्फेट की आवश्यकता थी और मोरक्को में फॉस्फेट की प्रचुरता थी, इसलिए इस क्षेत्र में सहयोग दोनों पक्षों के लाभ की साझेदारी होगी। महामहिम ने द्विपक्षीय संबंधों को एक नए स्तर पर ले जाने हेतु एक उच्च स्तरीय संयुक्त आयोग के गठन का सुझाव दिया। प्रधानमंत्री इस सुझाव से पूरी तरह सहमत थे।
- प्रधानमंत्री की अगली बैठक नामीबिया गणराज्य के राष्ट्रपति डॉ. हेज गिंगोब के साथ थी। चर्चा रक्षा, ऊर्जा और कृषि पर केंद्रित ती। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत के किसान निश्चित रूप से नामीबिया में परियोजनाएं शुरु करने पर विचार करेंगे। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में नामीबिया के राष्ट्रपति के साथ सुधार पर चर्चा का एक विषय यह भी था कि भारत जैसे शक्तिशाली देशों को सुरक्षा परिषद में होना चाहिए।
- प्रधानमंत्री की तीसरी बैठक अरब गणराज्य मिस्र के राष्ट्रपति श्री अब्देल फतेह अल-सिसी के साथ थी। दो महीने में यह इनकी दूसरी बैठक थी। वे पिछली बार सितंबर में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र के मौके पर मिले थे। राष्ट्रपति सिसी ने कहा कि मिस्र भारतीय निवेश और अधिक संयुक्त उद्यमों का स्वागत करता है। उन्होंने नई स्वेज नहर को एकीकृत विकास के पूर्ण गलियारे के रूप में संदर्भित किया और कहा कि मिस्र में कई औद्योगिक क्षेत्र भारतीय व्यवसायों के लिए बहुत आकर्षक होंगे। उन्होंने राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा और रक्षा क्षेत्रों में भारत के साथ निकट सहयोग की मांग की। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत कृषि, मानव संसाधन विकास, पशुपालन और डेयरी में भी सहायता कर सकता है।
- प्रधानमंत्री ने इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ मॉरिटानिया के राष्ट्रपति श्री मोहम्मद बिन अब्दुल अजीज से मुलाकात की, जिन्होंने अपने देश में दूध कारखाने, पानी के कुओं, ग्रामीण विद्युतीकरण और स्वच्छ ऊर्जा की ड्रिलिंग से संबंधित परियोजनाओं के लिए भारत सरकार को धन्यवाद दिया। उन्होंने सौर तथा स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने की दिशा में प्रधानमंत्री की पहल का स्वागत किया। प्रधानमंत्री ने उन्हें सौर गठबंधन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जिसे वह सीओपी-21 के दौरान पेरिस में लॉन्च करेंगे। श्री अजीज ने कृषि के क्षेत्र में भारत की हरित क्रांति से भी सीखने की बात की। अंत में, उन्होंने कहा

कि यह नई दिल्ली में शीघ्र ही एक मिशन खोलेगा और उसने अनुरोध किया कि भारत को मॉरिटानिया में समान निवासी मिशन का प्रयास करना चाहिए।

- प्रधानमंत्री ने माली गणराज्य के राष्ट्रपति श्री इब्राहिम बाउबकर कीता के साथ मुलाकात की थी और उन्होंने भारत के विकास सहायता और लाइन्स ऑफ क्रेडिट के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया। श्री कीता ने माली के पुनर्निर्माण और विकास के लिए सहायता की मांग की, जो आतंकवादी गतिविधियों से बुरी तरह प्रभावित है। उन्होंने आतंकवाद से मुकाबले में भारत की सहायता मांगी। प्रधानमंत्री ने आतंक से लड़ने और वृद्धि की दिशा में देश को आगे बढ़ाने के लिए माली के प्रयासों की सराहना की और भारत की पूर्ण सहायता की पेशकश की। माली के राष्ट्रपति ने कहा कि वह पूर्ण द्विपक्षीय यात्रा पर भारत आना चाहेंगे। उन्होंने प्रधानमंत्री को माली की यात्रा के लिए आमंत्रित किया और कहा कि जब वह आएंगे, तो वह उन्हें विशेष रूप से टिम्बकटू ले जाएंगे जो सांस्कृतिक विरासत स्थल है और जिसे आतंकवादी उड़ाना चाहते हैं।
- प्रधानमंत्री ने इथियोपिया के संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री हलीमारीम देसालेगन से मुलाकात की। श्री देसालेगन ने कहा कि इथियोपिया ने भारतीय लोकतंत्र और संघवाद का अनुकरण किया है और इथियोपिया की पूरी पीढ़ियों को भारतीय शिक्षकों द्वारा सिखाया गया है। आधुनिक साझेदारी के संदर्भ में, उन्होंने उन 150 भारतीय कंपनियों का उल्लेख किया जो वर्तमान में इथियोपिया में सक्रिय हैं और उन्होंने कहा कि वे ऐसी कंपनियों की संख्या और बढ़ाना चाहते थे। उन्होंने क्षमता निर्माण एग्रो-प्रोसेसिंग, फार्मा और आईटी में भारत की सहायता मांगी। उन्होंने भारतीय निवेशकों को दाल तथा तिलहन उत्पादन के लिए इथियोपिया में उपलब्ध विशाल कृषि योग्य भूमि का लाभ उठाने हेतु आमंत्रित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि वह इथियोपिया का दौरा करने हेतु एक विशेषज्ञ दल भेजेंगे।
- प्रधानमंत्री ने रिपब्लिक ऑफ अंगोला मैनुअल के उपाध्यक्ष डोमिंगोस विसेंट के साथ मुलाकात की, जिन्होंने गहरे ऐतिहासिक दौर और अंगोला की स्वतंत्रता के लिए भारत के समर्थन का उल्लेख किया। उन्होंने कृषि, आईटी, नवीकरणीय ऊर्जा, पारंपरिक ऊर्जा, चिकित्सा, फार्मा और अन्य क्षेत्रों में भारत की सहायता मांगी। तेल क्षेत्र में सहयोग पर भी चर्चा हुई, विशेष रूप से अंगोला के उपराष्ट्रपति 12 वर्षों तक सोनांगोल के सीईओ रहे।
- प्रधानमंत्री ने तंजानिया के उपराष्ट्रपति श्री मोहम्मद घारीब बिलाल के साथ बैठक की। उन्होंने चुनाव में जीत पर उन्हें बधाई दी जो अभी-अभी आए चुने गए थे, वास्तव में उस दिन जब वो यहां उपराष्ट्रपति थे। उपराष्ट्रपति ने डार एस सलाम में ट्रैफिक को कम करने हेतु रेलवे लाइन के लिए लाइन्स ऑफ क्रेडिट की मांग की और उन्होंने कहा कि हम पीपीपी मॉडल के तहत ऐसा कर सकते हैं। उन्होंने औद्योगिक इन्क्यूबेटरों की भी मांग की। प्रधानमंत्री ने उन्हें सूचित किया कि एनएसआईसी इस विशेष विषय पर व्यवहार्यता अध्ययन हेतु नवंबर में तंजानिया का दौरा करेगा। तंजानिया ने भी फिर से आतंकवाद से लड़ाई में सहयोग मांगा। उपराष्ट्रपति ने कहा कि समुद्री डकैती के खतरे से काफी हद तक निपटा जा चुका है, लेकिन आतंकवाद का खतरा काफी बढ़ गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें इस विशेष क्षेत्र में प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी और खुफिया साझाकरण प्रदान करके खुशी होगी।
- प्रधानमंत्री ने सोमालिया के संघीय गणराज्य के राष्ट्रपति श्री हसन शेख महमूद के साथ बहुत गर्मजोशी से मुलाकात की, जिन्होंने बहुत गर्व से कहा कि वो भारत-अफ्रीका सहयोग के एक जीवंत उदाहरण हैं। राष्ट्रपति ने भारत को शांति के प्रयासों और भारतीय नौसेना की भूमिका के लिए धन्यवाद दिया, जो सोमालिया के तट पर समुद्री डकैती को नियंत्रित करने में सफल रहा था। उन्होंने कहा कि सोमालिया में आतंकवाद अब कम हो गया है और राष्ट्र निर्माण का कार्य शुरू हो चुका है। हालांकि उन्होंने उन चुनौतियों का भी हवाला दिया, जैसे कि आवर्ती ऊर्जा की कमी और 200 से अधिक कारखानों को बंद करना। उन्होंने कहा कि अल शबाब जिस तरह से दुर्गम स्थानों में पनपा था, अब वह पीछे हट गया है, उन्होंने कहा

कि सरकार उन क्षेत्रों में संघीय संस्थाओं की स्थापना कर रही है। उन्होंने भारत के साथ व्यापार संबंधों का भी जिक्र किया।

- प्रधानमंत्री की अंतिम द्विपक्षीय बैठक कोमोरोस के राष्ट्रपति डॉ. इकीलिलो ढोइनिन के साथ हुई। भारत द्वारा कोमोरोस को दी जाने वाली 42 मिलियन अमेरिकी डालर की ऋण राशि पर चर्चा चल रही थी, जिसका उपयोग राजधानी मोरीनी में 18 मेगावाट बिजली संयंत्र स्थापित करने के लिए किया जा रहा है। राष्ट्रपति ने विशेष रूप से विज्ञान विषयों के लिए अधिक छात्रवृत्ति का अनुरोध किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि कोमोरोस एक समुद्री पड़ोसी है और हम सभी क्षेत्रों में सहायता के लिए तैयार हैं। कई कोमोरोस नागरिक चिकित्सा के लिए भारत आ रहे थे।

7. आईएएफएस-**III** में अपनाया गया द्विपक्षीय दस्तावेज

चार दिवसीय शिखर सम्मेलन के समापन दिवस पर दो दस्तावेजों - दिल्ली घोषणा 2015 और सामरिक सहयोग हेतु भारत-अफ्रीका फ्रेमवर्क - को अपनाया गया था, जो राजनीतिक, सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को प्रतिबिंबित करता है।

- दिल्ली घोषणा 2015 भारत और अफ्रीका के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय हितों और प्राथमिकताओं के मुद्दों की पहचान करता है, और आम दृष्टि, आकांक्षाओं, अपेक्षाओं, और पहलों का मंत्र देता है। घोषणा में सहयोग के कई क्षेत्रों को शामिल करते हुए 34 बिंदु शामिल हैं जिनपर दोनों क्षेत्रों को एक साथ काम करना चाहिए।
- रणनीतिक सहयोग के लिए भारत-अफ्रीका फ्रेमवर्क साझा कोर प्राथमिकताओं और विस्तार से संबंधित सामान्य चुनौतियों और सहयोग के सामान्य और विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित चुनौतियों और प्रस्तावों को संबोधित करने पर सहमत हुए। यह सहयोग के मौजूदा क्षेत्रों में सहयोग को तेज करने के लिए कई नई पहलों को रेखांकित करता है और सहयोग के कुछ नए क्षेत्रों की पहचान भी करता है जो भविष्य के लिए विस्तृत संभावना रखते हैं।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार, जलवायु परिवर्तन, रक्षा और सुरक्षा, संतुलित व्यापार संबंध, नवीकरणीय ऊर्जा, नीली अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी और नवाचार, स्वास्थ्य और शिक्षा, दोनों पक्षों के सहयोग के कुछ क्षेत्रों पर एक साथ काम करने के लिए सहमत हुए हैं।

X. हिंद महासागर तटीय क्षेत्रीय सहयोग संघ (आई.ओ.आर.ए.)

1. **23** अक्टूबर**, 2015** को पदांग**,** इंडोनेशिया में आईओआर मंत्रिपरिषद (सीओएम) की **15**वीं बैठक में विदेश राज्य मंत्री द्वारा देश वक्तव्य

भारत इंडोनेशिया में अगले मंत्रीस्तरीय तक 15वीं आईओआरए मंत्रिस्तरीय के बीच 10-सूत्रीय दृष्टिकोण अपनाएगा। भारत के 10 प्रस्तावों में शामिल होंगे:

- भारत विशिष्ट आईओआरए निकाय के रूप में औषधीय पौधों पर केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव करता है। प्रस्तावित केंद्र विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हेतु क्षेत्रीय केंद्र के साथ मिलकर काम करेगा। भारत जल्द ही इस संबंध में सभी भागीदारों के विचार के लिए समझौता ज्ञापन का प्रस्ताव करेगा।
- भारत 2017 में आईओआरए की अपनी 20वीं वर्षगांठ के अवसर पर इसे लॉन्च करने के उद्देश्य से आईओआरए आभासी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मॉरीशस और अन्य

आईओआरए भागीदारों के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार है।

- ब्लू इकोनॉमी डायलॉग को संस्थागत रूप दिया जाएगा और इसका दूसरा संस्करण अगस्त 2016 में भारत में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने आईओआरए भागीदारों से अनुरोध किया कि वे इस आयोजन के समय सीमा पर ध्यान दें और उच्चतम स्तर की भागीदारी सुनिश्चित करें।
- भारत हैदराबाद में महासागर सूचना पर भारतीय राष्ट्रीय केंद्र में आईओआरए भागीदारों के वैज्ञानिकों को क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों की पेशकश करना चाहता है। रिमोट सेंसिंग एंड पोटेंशियल फिशिंग ज़ोन (पीएफजेड), ओशन स्टेट फोरकास्टिंग (ओएसएफ), ओशन कलर (डेटा, प्रोसेसिंग एंड एप्लिकेशंस), ओशन क्लाइमेट मॉडलिंग, सुनामी वार्निंग और इमरजेंसी रिस्पांस के लिए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर इन प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से संबोधित कुछ प्रमुख विषय हैं। इन कार्यक्रमों का विवरण सचिवालय के माध्यम से साझा किया जाएगा।
- भारत नई दिल्ली में विदेशी सेवा संस्थान में आईओआरए राजनयिकों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान करेगा।
- भारत 2016 में भारत में महिला सशक्तिकरण पर एक कार्यशाला आयोजित करेगा।
- भारत में 2016 में कौशल विकास पर एक कार्यशाला आयोजित की जाएगी। समय-सीमा और अन्य विवरण शीघ्र ही साझा किए जाएंगे।
- भारत सलाहकार-सह-अनुसंधान विश्लेषक की प्रतिनियुक्ति के माध्यम से आईओआरए सचिवालय को मजबूत करने हेतु प्रतिबद्ध है। हम जल्द ही इस प्रतिबद्धता को पूरा करने की उम्मीद करते हैं।
- भारत को 6 लैपटॉप और आईओआरए सचिवालय को एक फोटोकॉपी मशीन सहित कार्यालय में उपकरण प्रदान करने में खुशी होगी।
- अंत में आईओआरए विशेष निधि के लिए 100,000/- यूएसडी के योगदान की घोषणा करते हुए मुझे खुशी हो रही है।

XI. रूस-भारत-चीन (आर.आई.सी.)

1. 13वीं आरआईसी विदेश मामलों के मंत्रियों की बैठक **(02** फरवरी **2015)**

*बीजिंग में **13**वें आरआईसी के विदेश मंत्रियों की बैठक के दौरान संयुक्त प्रेस वार्ता में विदेश मंत्री द्वारा टिप्पणी - मुख्य बातें:*

- संयुक्त राष्ट्र वर्ष की 70वीं वर्षगाँठ और द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति की वर्षगाँठ मनाने पर हमने सहमति व्यक्त की है।
- भारत रूस और चीन ने पारस्परिक रूप से संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के 70वें वर्ष का जश्न मनाने का फैसला किया और द्वितीय विश्व युद्ध के अंत की सालगिरह भी मनाई, जो इस क्षेत्र में शांति की गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- रूस और चीन ने संयुक्त राष्ट्र में विस्तृत भूमिका की भारत की आकांक्षा पर अपना समर्थन दोहराया।
- भारतीय विदेश मंत्री ने अपने कानूनी और प्रक्रियात्मक औपचारिकताओं के समाप्त होने के बाद शंघाई के संगठन और प्रबंधन में भारत की सदस्यता का समर्थन करने हेतु अपने विदेश मंत्री के समकक्षों को धन्यवाद दिया।
- रूस और चीन ने एशिया-प्रशांत आर्थिक मंच, अपेक में भारत की भागीदारी का स्वागत किया।
- अर्थव्यवस्था के प्रशासन में सुधार तीनों देशों के लिए साझा हित के विषय के रूप में

उभरा।

- भारतीय और चीनी विदेश मंत्री रूस के विदेश मंत्री लावरोव के इस वर्ष के अंत में रूस में अगली आरआईसी बैठक आयोजित करने के निमंत्रण पर सहमत हुए।
- इस अवसर पर एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गई थी जो विभिन्न मुद्दों पर चर्चा को रेखांकित करती है और विभिन्न विषयों पर सहमति पर विवरण देती है।
- अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और आम सहमति पर आयोजित चर्चा निम्नलिखित विषयों पर थी:

    - विचाधारा, धर्म, राजनीति, जातिवाद या आतंकवाद से संबंधित किसी भी प्रकार की अन्य प्रमाणिकता के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।
    - आतंकवाद के अपराधियों, आयोजकों, वित्तदाताओं और प्रायोजकों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए और लोगों को न्याय मिलना चाहिए।
    - अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक समझौते में इस समस्या को लेकर होने वाली बातचीत पर जल्द-से-जल्द निर्णय लिया जाना चाहिए।

2. रूसी परिसंघ**,** भारत गणराज्य तथा चीन जनवादी गणराज्य के विदेश मंत्रियों की **13**वीं बैठक की संयुक्त विज्ञप्ति

- सभी मंत्री इस बात पर सहमत हुए कि रूस, भारत और चीन को थिंक टैंक, व्यवसाय, कृषि, आपदा उपशमन एवं राहत, चिकित्सा सेवा एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्रों में अपने सहयोग को बढ़ाने की जरूरत है। विदेश मंत्रियों ने तेल एवं प्राकृतिक गैस उत्पादन एवं परिवहन के अलावा, ऊर्जा, उच्च प्रौद्योगिकी, पर्यावरण संरक्षण तथा संपर्क के अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग की संभावना का पता लगाया। वे युवा राजनयिकों की यात्रा सहित संसद सदस्यों, मीडिया, सांस्कृतिक एवं युवा आदान – प्रदान के लिए सहमत हुए। उन्होंने जुलाई, 2014 में मास्को में 13वें त्रिपक्षीय शैक्षिक सम्मेलन के परिणाम पर संतोष व्यक्त किया तथा मई, 2015 में चीन में 14वें त्रिपक्षीय शैक्षिक सम्मेलन के आयोजन का स्वागत किया।
- उन्होंने यह रेखांकित किया कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विकेंद्रीकरण तथा बहुध्रुवत्व के लिए प्रतिबद्ध बना रहना चाहिए। उन्होंने एक नए प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की दिशा में काम करने के महत्व पर जोर दिया जो लाभप्रद सहयोग पर आधारित हो। उन्होंने बाहर से किसी भी देश में जबरन शासन परिवर्तन का विरोध किया।
- मंत्रियों ने वर्ष 2015 को संयुक्त राष्ट्र और रूस की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ के रुप में चिन्हित किया, भारत और चीन ने मानव इतिहास में महान महत्व के उन ऐतिहासिक क्षणों को मनाने और निष्पक्ष तथा न्यायसंगत अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की रक्षा के लिए उनकी प्रतिबद्धता की पुष्टि करने की आवश्यकता की पुष्टि की। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उद्देश्यों तथा सिद्धांतों के आधार पर मंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र के लिए अपनी मजबूत प्रतिबद्धता दोहराई।
- उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के व्यापक सुधार की आवश्यकता की फिर से पुष्टि की जिसमें इसकी सुरक्षा परिषद भी शामिल है ताकि इसे अधिक प्रतिनिधिमूलक एवं दक्ष बनाया जा सके जिससे कि यह वैश्विक चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना कर सके। चीन और रूस के विदेश मंत्रियों ने उस महत्व को दोहराया जो वे अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत के स्टेटस को देते हैं तथा संयुक्त राष्ट्र में अधिक भूमिका निभाने की इसकी आकांक्षा का समर्थन किया।
- विदेश मंत्रियों ने एशिया – प्रशांत क्षेत्र में स्थाई रूप से शांति एवं स्थिरता बनाए रखने के लिए एक संयुक्त प्रयास के तहत समन्वय एवं सहयोग सुदृढ़ करने की अपनी – अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया, एशिया में अंत:क्रिया एवं विश्वासोत्पादक उपायों पर सम्मेलन (सीआईसीए) की चौथी शिखर बैठक तथा इस शिखर बैठक में अपनाई गई शंघाई घोषणा का स्वागत किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत सिद्धांतों के आधार पर इस क्षेत्र में एक खुले, समावेशी, अविभाज्य एवं पारदर्शी सुरक्षा एवं सहयोग

वास्तुशिल्प के विकास का आह्वान किया और उन्होंने पूर्वी एशिया शिखर बैठक की रूपरेखा के तहत एशिया – प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुशिल्प पर सतत रूप से चल रही चर्चा का स्वागत किया।

- विदेश मंत्रियों ने विभिन्न क्षेत्रीय मंचों एवं संगठनों जैसे कि आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ), आसियान रक्षा मंत्री बैठक प्लस (एडीएमएम-प्लस), एशिया-यूरोप बैठक (असेम) तथा एशिया सहयोग वार्ता (एसीडी) में समन्वय एवं सहयोग सुदृढ़ करने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया ताकि क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता को बनाए रखने एवं क्षेत्रीय विकास एवं समृद्धि को बढ़ावा देने में योगदान दिया जा सके। इस सिलसिले में, वे एशिया – प्रशांत मामलों पर एक त्रिपक्षीय रूस-भारत-चीन परामर्श तंत्र स्थापित करने पर सहमत हुए जिसकी पहली बैठक जल्दी से जल्दी होगी।
- चीन और रूस ने एससीओ की पूर्ण सदस्यता के लिए भारत के आवेदन का स्वागत किया तथा सभी आवश्यक बातचीत एवं कानूनी प्रक्रियाओं को पूरा करने के बाद एस सी ओ में शामिल होने के लिए भारत का समर्थन किया।
- मंत्रियों ने सभी रूपों एवं अभिव्यक्तियों में आतंकवाद, चाहे जिस किसी भी द्वारा यह किया जाए, जहां कहीं भी किया जाए तथा इसका प्रयोजन चाहे जो भी हो, अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए खतरा, मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन तथा मानवता के खिलाफ अपराध है। और इस बात को दोहराया कि आतंकवाद के कृत्यों का कोई वैचारिक, धार्मिक, राजनीतिक, जातीय, नस्लीय या कोई अन्य औचित्य नहीं हो सकता है। उन्होंने न्यायिक अपराधियों, आयोजकों और आतंकवादी कृत्यों के प्रायोजकों को लाने की आवश्यकता को रेखांकित किया।
- विदेश मंत्रियों की यह राय थी कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को परस्पर सम्मान, समानता एवं परस्पर लाभ के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय आदान – प्रदान एवं सहयोग के माध्यम से सैन्य, राजनीतिक, आपराधिक एवं आतंकी प्रयोजनों के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रयोग के खतरे से निपटने के लिए तथा शांतिपूर्ण, सुरक्षित, खुला एवं सहयोगात्मक सूचना स्पेस निर्मित करने के लिए संयुक्त रूप से प्रयास करना चाहिए।
- विदेश मंत्रियों ने इस बात को नोट किया कि बाहरी अंतरिक्ष में हथियारों की दौड़ को रोकना, अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखने तथा शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए बाहरी अंतरिक्ष के अन्वेषण एवं प्रयोग में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने एवं सुदृढ़ करने, इसके मुख्य अवयवों में से एक के रूप में बाहरी अंतरिक्ष में किसी प्रकार के हथियार को स्थापित करने पर रोक लगाने पर जोर देने के हित में है। विदेश मंत्रियों ने बाहरी अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण प्रयोग पर यूएन समिति वैज्ञानिक एवं तकनीकी उप समिति (सीओपीयूओए) के कार्य को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से रूस, चीन और भारत के प्रतिनिधियों के बीच अधिक केंद्रित वार्ता एवं सहयोग के घनिष्ठ संबंध को स्थापित करने एवं विकसित करने के महत्व को भी नोट किया।

  विदेश मंत्रियों ने राष्ट्रपति के चुनाव के माध्यम से अफगानिस्तान में राजनीतिक परिवर्तन तथा अफगान राष्ट्रीय सुरक्षा बलों (एएनएसएफ) के लिए अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहायता बल (आईएसएएफ) से सुरक्षा ट्रांजिशन का समर्थन किया और विदेश मंत्रियों ने बीजिंग में स्तंबुल प्रक्रिया की चौथी मंत्री स्तरीय बैठक के सकारात्मक परिणामों को बहुत अधिक महत्व दिया, जिसने क्षेत्रीय सहयोग को सुदृढ़ करने, अफगानिस्तान में शांति, पुनर्वास एवं आर्थिक पुनर्गठन को सुगम बनाने में योगदान दिया।
- विदेश मंत्रियों ने राजनीतिक एवं राजनयिक चैनलों के माध्यम से ईरान के परमाणु मुद्दे के व्यापक एवं दीर्घावधिक समाधान का प्रयास करने के लिए प्रयासों के लिए अपने – अपने समर्थन की पुष्टि की। उन्होंने पी5+1 तथा ईरान के बीच वार्ता के विस्तार का स्वागत किया।
- विदेश मंत्रियों ने इजरायल-फिलीस्तीन संघर्ष की घटनाओं पर चर्चा की। उन्होंने इजरायल

एवं फिलीस्तीन से संयम बरतने एवं तनाव और न बढ़ने देने से परहेज करने के लिए कारगर उपाय करने का आग्रह किया।

- विदेश मंत्रियों ने सीरिया की नवीनतम घटनाओं पर चर्चा की। उन्होंने इस बात को दोहराया कि सीरिया संकट का कोई सैन्य समाधान नहीं है तथा सभी पक्षकारों से हिंसा छोड़ने और जून, 2012 की 'जिनेवा विज्ञप्ति' के आधार पर शांति वार्ता बहाल करने का आग्रह किया, और उन्होंने सीरिया के रासायनिक हथियारों को समाप्त करने में हुई महत्वपूर्ण उपलब्धियों का स्वागत किया तथा सीरिया में रासायनिक हथियारों के उन्मूलन एवं विनाश के लिए रासायनिक हथियार निषेध संगठन (ओपीसीडब्ल्यू) के प्रयासों के लिए उसे बधाई दी।
- विदेश मंत्रियों ने इराक में निरंतर चल रही उथल-पुथल तथा इसके स्पिलओवर प्रभावों पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त की तथा इराक की स्वतंत्रता, संप्रभुता एवं भौगोलिक अंखडता के लिए अपने सम्मान तथा घरेलू स्थिरता बनाए रखने एवं आतंकवाद से लड़ने के लिए इराकी सरकार के प्रयासों के लिए अपने समर्थन पर जोर दिया। उन्होंने उम्मीद व्यक्त की कि इराक में सभी पक्षकार एकता एवं सामंजस्य को बढ़ावा देंगे ताकि शीघ्रता से राष्ट्रीय स्थिरता एवं सामाजिक व्यवस्था बहाल हो सके।
- विदेश मंत्रियों ने यूक्रेन में वर्तमान संकट के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की तथा अंतर-यूक्रेन संघर्ष के सभी पक्षकारों से संयम बरतने और मिंस्क प्रोटोकॉल को पूरी तरह लागू करने, व्यापक वार्ता में शामिल होने और राजनीतिक बातचीत के माध्यम से संकट का शांतिपूर्ण समाधान निकालने का आग्रह किया।
- विदेश मंत्रियों ने वैश्विक आर्थिक अभिशासन में सुधार के लिए अपने समर्थन को दोहराया ताकि विश्व अर्थव्यवस्था की ठोस एवं स्थिर प्रगति का सुनिश्चय किया जा सके। उन्होंने इस साल के अंत तक आई एम एफ कोटा एवं अभिशासन सुधार 2010 के कार्यान्वयन पर बल के साथ उभरते बाजारों एवं विकासशील देशों की आवाज एवं प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली में तुरंत सुधार का आह्वान किया। 2016 के जी20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी के लिए चीन के प्रयासों का रूस तथा भारत ने स्वागत और समर्थन किया।
- मंत्रियों ने विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि की, उन्होंने दोहा विकास एजेंडा के साथ-साथ डब्ल्यूटीओ दोहा दौर के नियमित कार्य के लिए प्रतिबद्धता की पुष्टि की, उन्होंने विश्व व्यापार संगठन के एक सफल निष्कर्ष की ओर सम्मेलन में मूर्त प्रगति के महत्व को रेखांकित किया।
- उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से एमडीजी की प्राप्ति की दिशा में अपने प्रयासों की गति तेज करने और लोकतंत्र, पारदर्शिता, सदस्य राज्यों द्वारा चालित एवं सर्वसम्मति के सिद्धांतों के तहत 2015 पश्चात विकास एजेंडा तैयार करने का आह्वान किया और उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से "साझी किंतु विभेदीकृत जिम्मेदारियों" के सिद्धांत के अनुसरण में संपोषणीय विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, 2012 की अनुवर्तन प्रक्रिया को सक्रिय रूप से लागू करने का आह्वान किया।
- विदेश मंत्रियों ने पक्षकारों के जलवायु परिवर्तन पर 20वें संयुक्त राष्ट्र रूपरेखा अभिसमय (यूएनएफसीसीसी) द्वारा ''जलवायु कार्रवाई के लिए लीमा आह्वान'' के अपनाए जाने का स्वागत किया।
- विदेश मंत्रियों ने ब्रिक्स की छठवीं बैठक के सफलता के साथ पूरा होने का स्वागत किया, विशेष रूप से नए विकास बैंक के लिए करार तथा ब्रिक्स आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था की स्थापना के लिए संधि पर हस्ताक्षर होने का स्वागत किया और उन्होंने ने ब्रिक्स के बीच घनिष्ठ आर्थिक सहयोग के लिए बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग एवं रूपरेखा की प्रारूप रणनीति पर वार्ता आरंभ होने के संबंध में फोर्टालेजा शिखर बैठक द्वारा लिए गए निर्णय का स्वागत किया। भारत और चीन ने जुलाई, 2015 में, ब्रिक्स नेताओं की सफल सातवीं शिखर बैठक के लिए रूस को अपना पूरा समर्थन व्यक्त किया।

- विदेश मंत्रियों ने 22वीं एपीईसी आर्थिक नेता बैठक की सार्थक उपलब्धियों को बहुत महत्व दिया जिसमें एशिया-प्रशांत के मुक्त व्यापार क्षेत्र (एफटीएएपी) की प्रक्रिया शुरू करना, नवाचारी विकास, आर्थिक सुधार तथा प्रगति को बढ़ावा देना और एशिया – प्रशांत के बीच संपर्क में वृद्धि करना शामिल है और वैश्विक आर्थिक प्रगति को गति देने तथा एपीईसी के खुलेपन का समर्थन करने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए चीन और रूस एपीईसी में भारत की भागीदारी का स्वागत किया।
- विदेश मंत्रियों ने क्षेत्रीय संपर्कों के महत्व पर जोर दिया जिससे परस्पर राजनीतिक विश्वास, आर्थिक सहयोग में वृद्धि करने तथा सांस्कृतिक एवं जन दर जन आदान – प्रदान को बढ़ावा देने में काफी तेजी आएगी। इस संदर्भ में, उन्होंने पहलों पर चर्चा की जिसमें सिल्क रोड आर्थिक बेल्ट के लिए चीन की पहल तथा 21वीं शताब्दी के समुद्रीय सिल्क रोड की पहल शामिल है। उन्होंने एशिया में क्षेत्रीय संपर्क में सुधार लाने के लिए विभिन्न पहलों का स्वागत किया।
- विदेश मंत्रियों ने अफ्रीका के कुछ देशों में इबोला वायरस के फैलने तथा स्थानीय लोगों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के लिए इससे उत्पन्न नुकसान पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने इबोला वायरस के प्रसार को नियंत्रित करने एवं रोकने के लिए अफ्रीकी देशों की मदद करने में साथ मिलकर काम करना जारी रखने का निर्णय लिया।

XII. संयुक्त राष्ट्र

1. संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून ने **10-13** जनवरी **2015** तक भारत की आधिकारिक यात्रा की।

    - महासचिव और उनके प्रतिनिधिमंडल ने गेस्ट ऑफ़ ऑनर और मुख्य वक्ता के रूप में वाइब्रेंट गुजरात समिट 2015 में भाग लेने हेतु गांधीनगर का दौरा किया। 'वाइब्रेंट गुजरात' को संबोधित करते हुए, बान की मून ने कहा "भारत व्यापक दुनिया में स्थिरता की दिशा में आगे बढ़ने की एक अद्वितीय स्थिति में है। यह वर्ष उभरती शक्तियों को एक बदलते वैश्विक परिदृश्य में खुद को स्थिति में लाने का एक दुर्जेय अवसर प्रदान करेगा"।
    - बान की मून ने तेरहवें सप्रू हाउस - संयुक्त राष्ट्र आईसीडब्ल्यूए, नई दिल्ली में व्याख्यान दिया और कहा कि भारत दुनिया में प्रमुख तीन भूमिका निभा सकता है। सबसे पहला, क्षेत्र तथा दुनिया में शांति के चालक के रूप में। दूसरा, मानवाधिकारों के हिमायती के रूप में और तीसरा स्वच्छ विकास - स्वच्छ टिकाऊ विकास के एक अग्रणी के रूप में।

2. **21** जून **2015** को, विदेश मंत्री, सुषमा स्वराज ने संयुक्त राष्ट्र में पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह को संबोधित किया

उन्होंने कहा कि, योग न तो कोई धर्म है, और न ही इसे किसी खास धर्म से जुड़े के रूप में देखा जाना चाहिए। यह विज्ञान है, सेहत का विज्ञान है, मन, शरीर एवं आत्मा को एक करने का विज्ञान है, अपनी सच्ची क्षमता को साकार करने का विज्ञान है। जिस समय मैं बोल रही हूँ, न्यूयार्क के हजारों लोग योगाभ्यास कर रहे हैं, टाइम्स स्क्वैयर से मात्र एक मील की दूरी पर। पूरी दुनिया के 192 देशों में लाखों अन्य लोगों ने इस ऐतिहासिक दिवस के अपने स्वयं के अनोखे राष्ट्रीय समारोहों में उनका साथ दिया है। हमारे अपने देश भारत में, प्रधानमंत्री मोदी ने इतिहास में योग की सबसे बड़ी कक्षा का नेतृत्व किया, जब उन्होंने कुछ घंटे पहले राजपथ पर 35,000 से अधिक लोगों को संबोधित किया। यह वास्तव में योग के अंतर्राष्ट्रीय चरित्र के साथ ही आयोजित करने की इसकी शक्ति की पुष्टि है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को एक साथ मनाकर, भारत ने सभी के साथ आम मानवता का जश्न मनाया।

उन्होंने कहा, "पिछले साल महासभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि योग मन एवं शरीर, विचार एवं कार्य, संयम एवं उपलब्धि के बीच एकता तथा इंसान एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य का प्रतीक है। संयुक्त राष्ट्र इसलिए है कि सभी देश एक-दूसरे के साथ सामंजस्य में रहें। संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना कर, मुझे यकीन है कि हम एक-दूसरे के सामंजस्य में रह रहे पुरूषों एवं महिलाओं तथा प्रकृति के साथ भी सामंजस्य में रह रहे पुरूषों एवं महिलाओं के बारे में सशक्त संदेश भेज रहे हैं।"

उन्होंने आगे कहा, "ऐसे समय में जब जातीय संघर्षों तथा अतिवादी हिंसा से समाजों के अस्थिर होने का खतरा पैदा हो रहा है, योग ऐसी नकारात्मक प्रवृत्तियों को जड़ से समाप्त करने तथा सामंजस्य एवं शांति के पथ पर हमें ले जाने के लिए रामबाण के रूप में काम कर सकता है।"

3. संयुक्त राष्ट्र की महासभा के निर्वाचित अध्यक्ष मॉर्गन लाइकेटॉफ्ट का भारत दौरा - **29** अगस्त-सितंबर **2015**

उन्होंने पीएम मोदी, विदेश मंत्री स्वराज और सुजाता मेहता, सचिव, विदेश मंत्रालय से मुलाकात की, साथ ही आईसीडब्ल्यूए में "यूएन एट 70" पर व्याख्यान दिया।

4. विदेश मंत्री का संयुक्त राष्ट्र आम सभा मे सम्बोधन : **70** के पड़ाव पर संयुक्त राष्ट्र - बदलाव का समय अक्टूबर **01 , 2015**

भाषण के मुख्य बिंदुः

- संयुक्त राष्ट्र इस साल 70 साल पूरे कर रहा है। इसलिए, महासभा की यह बैठक ऐतिहासिक है। उन्होंने उम्मीद जताई कि यह वर्ष संयुक्त राष्ट्र के परिणामों के दृष्टिकोण से भी ऐतिहासिक होगा और उन्होंने ऐसे प्रयासों में भारत के पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया।
- संयुक्त राष्ट्र तीसरे महायुद्ध को रोकने, विघटन में सहायता करने और रंगभेद को खत्म करने, वैश्विक महामारी से निपटने और वैश्विक भूख को कम करने और लोकतंत्र तथा मानवाधिकारों को बढ़ावा देने में सफल रहा है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के क्षेत्र में एक अप्रभावी संस्था के रूप में दिखाई देता है। यह अंतरराष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा के लिए नई चुनौतियों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने में विफल रहा है।
- शांति स्थापना का लक्ष्य बहुत महत्वपूर्ण है। नीले झंडे के नीचे, संघर्ष को रोकने, नागरिकों की सुरक्षा और शांति प्रक्रियाओं को बनाए रखने हेतु कई पुरुष और महिलाएं लगातार काम कर रहे हैं। 180,000 शांति सैनिकों की तैनाती के साथ, भारत संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा का सबसे बड़ा प्रदाता रहा है। आज भी, लगभग 8000 भारतीय सैन्य और पुलिस कर्मी 10 मिशनों में भाग ले रहे हैं, जो बेहद चुनौतीपूर्ण वातावरण में किए जा रहे हैं।
- भारत संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों का समर्थन जारी रखने और यहां तककि अपने योगदान को बढ़ाने हेतु प्रतिबद्ध है, जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने शांति स्थापना पर नेताओं के शिखर सम्मेलन में कहा था। भारत के नए योगदान में शांति व्यवस्था के सभी पहलुओं को शामिल किया जाएगा - कर्मियों, समर्थक और प्रशिक्षण। साथ ही, यह चिंता का विषय है कि जनादेश के निर्माण में सैन्य योगदान देने वाले देशों की कोई भूमिका नहीं है, जिन्हें अक्सर परामर्श के बिना संशोधित किया जाता है। यह संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 44 का स्पष्ट उल्लंघन है।
- संयुक्त राष्ट्र की 70वीं वर्षगांठ पर मंत्री स्वराज ने भारत के 161 सहित 3,300 से अधिक

शांति सैनिकों को श्रद्धांजलि दी जिन्होंने अपना बलिदान दिया है। भारत शांति सेना मेमोरियल वॉल में योगदान करने हेतु तैयार है, जिसे 69वीं महासभा द्वारा अनुमोदित किया गया है।

- अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद को केवल संगठित अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई से हराया जा सकता है। दुनिया को यह दिखाना चाहिए कि इसमें आतंकवादियों के प्रति शून्य सहिष्णुता है, जो निर्दोष नागरिकों को मारने वालों और उन पर मुकदमा चलाने या प्रत्यर्पण के सिद्धांत के आधार पर कार्रवाई करते हैं। ऐसे देश जो आतंकवादियों को वित्तपोषण प्रदान करते हैं और उनके प्रशिक्षण, हथियार और संचालन के लिए सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराते हैं, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा भारी दंड दिया जाना चाहिए। मंत्री स्वराज ने सभी से संयुक्त राष्ट्र के इस 70वीं वर्षगांठ वर्ष में एक साथ आने और सीसीआईटी (अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक सम्मेलन) को अपनाने की सर्वसम्मति से अपील की।
- इसके अलावा, वास्तविक सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। बुनियादी मानवता का उन्मूलन लगभग शांतिपूर्ण रूप से अधिक शांतिपूर्ण समाजों की ओर जाता है, जैसा कि दुनिया के कुछ हिस्सों में व्याप्त संघर्षों से स्पष्ट है।
- दुनिया के भविष्य को अपने बच्चों के लिए एक स्थायी ग्रह बनाने पर आधारित करना चाहिए और जलवायु परिवर्तन पर महत्वाकांक्षी और विश्वसनीय समझौता करने हेतु प्रतिबद्धता होनी चाहिए।
- स्वास्थ्य आपात स्थितियों के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाएं और मानव निर्मित संघर्ष भी समन्वित प्रतिक्रिया के बिन्दु हैं। हाल के महीनों में, अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने सीरिया, इराक और लीबिया में संघर्ष की स्थितियों के कारण शरणार्थी संकट पर काम किया है। राजनीतिक इच्छा से समर्थित त्वरित प्रतिक्रिया समय की मांग है। मानवीय संकटों के लिए अपने पड़ोस में भारत की प्रतिक्रिया त्वरित, उत्तरदायी और समग्र रही है। चाहे वह नेपाल हो या यमन, भारत शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में उभरा है, जो न केवल भारतीय नागरिकों बल्कि अन्य देशों की सहायता करता है जो उनकी मदद मांगते हैं। भारत नवंबर 2016 में आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर सेंदाई फ्रेमवर्क पर आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर पहले एशियाई मंत्रिस्तरीय सम्मेलन की मेजबानी करेगा।
- एक ऐसे दुनिया में जिसपर धनी और प्रभावशाली राष्ट्र हावी हैं, संयुक्त राष्ट्र की संप्रभु समानता की धारणा ने विकासशील दुनिया को कुछ अनुचित मानदंडों पर सवाल उठाने पर मजबुर किया है। लेकिन इसने दुनिया के लिए बनी प्रणाली की असमानता हेतु एक बुनियादी चुनौती की अनुमति नहीं दी है जो अब मौजूद है। यदि किसी को वैश्विक शांति, सुरक्षा और विकास के संरक्षक के रूप में संयुक्त राष्ट्र की केंद्रीयता तथा वैधता को संरक्षित करना है, तो सुरक्षा परिषद का सुधार इसकी सबसे जरूरी और दबाव की आवश्यकता है। सुरक्षा परिषद के निर्णय लेने की संरचनाओं में अधिक विकासशील राष्ट्रों को शामिल करना और पुराने तथा गैर-पारदर्शी कामकाज के तरीकों से दूर रहकर व्यापार करने के तरीके को संशोधित करना चाहिए।
- संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठन का 70 वर्षों का एक अनूठा महत्व है। यह पुनरोद्धार और नवीकरण का एक अवसर है। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के विचार को एक साथ के रूप में विचार करने हेतु सभी देशों को आमंत्रित किया।

11. गैर-पारंपरिक सुरक्षा के मुद्दे

I. साइबर सुरक्षा

1. संयुक्त वक्तव्य : औपचारिक भारत - आस्ट्रेलिया साइबर नीति वार्ता- अगस्त **31, 2015**

पहली भारत - आस्ट्रेलिया साइबर नीति वार्ता 24 अगस्त 2015 को नई दिल्ली में हुई। वार्ता प्रधानमंत्री मोदी की कैनबरा यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री एबाट और प्रधानमंत्री मोदी के बीच सहमत सुरक्षा सहयोग रूपरेखा से उत्पन्न हुई है। वार्ता का नेतृत्व भारत के लिए संतोष झा, संयुक्त सचिव, नीति आयोजना, आतंकवाद की खिलाफत तथा वैश्विक सुरक्षा मुद्दे, विदेश मंत्रालय द्वारा और आस्ट्रेलिया की ओर से आयन बिग्स, सहायक सचिव, सामरिक मामले और आसूचना शाखा, विदेश मामले एवं व्यापार विभाग द्वारा किया गया। इस वार्ता में भारत की ओर से सी ई आर टी - इंडिया, गृह मंत्रालय, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय, रक्षा मंत्रालय, केंद्रीय जांच ब्यूरो, दूर संचार विभाग तथा विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधि शामिल हुए। आस्ट्रेलिया की ओर से वार्ता में प्रधानमंत्री विभाग एवं मंत्रीमंडल, संचार विभाग, महाधिवक्ता विभाग (सी ई आर टी - आस्ट्रेलिया) और आस्ट्रेलियाई संघीय पुलिस के प्रतिनिधि शामिल हुए।

दोनों पक्षों ने साइबर मुद्दों की पूरी श्रृंखला पर चर्चा की, साइबर खतरे से जुड़ी धारणाओं, नीतियों एवं रणनीतियों का आदान - प्रदान किया, डिजिटल इंडिया सहित प्रमुख घरेलू घटनाक्रमों, एजेंसियों की भूमिकाओं एवं जिम्मेदारियों तथा आस्ट्रेलिया की साइबर सुरक्षा समीक्षा, साइबर स्पेस में जिम्मेदार राज्य आचरण के अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों का विकास, क्षेत्रीय घटनाक्रम, इंटरनेट अभिशासन एवं साइबर अपराध पर बहुहितधारक दृष्टिकोण आदि पर चर्चा की।

सीईआरटी - इंडिया और सीईआरटी - आस्ट्रेलिया के बीच संबंध को सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने साइबर सुरक्षा पर प्रचालनात्मक सहयोग की रूपरेखा पर हस्ताक्षर किया ताकि साइबर खतरों पर सूचना के आदान - प्रदान में और ऐसी घटनाओं पर कार्रवाई करने में अधिक सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। दोनों पक्षों ने साइबर अपराध तथा कानून प्रवर्तन के उपायों पर सूचना के आदान - प्रदान के लिए साथ मिलकर काम करने के अवसरों की भी पहचान की। शिष्टमंडलों के बीच इस बार पर सहमति हुई कि साइबर स्पेस पर अंतर्राष्ट्रीय कानून की प्रयोज्यता तथा मानदंडों के विकास पर विचार - विमर्श करने के लिए और वार्ता लाभप्रद होगी जिसमें सरकारी विशेषज्ञों के संयुक्त राष्ट्र समूह का कार्य, क्षेत्रीय निकायों के कार्य, क्षेत्रीय सी ई आर टी क्षमता के विकास के समर्थन में विश्वास निर्माण और एशिया - प्रशांत सी ई आर टी समुदाय पर आसियान क्षेत्रीय मंच के कार्य तथा इंटरनेट अभिशासन पर बहु-हितधारक दृष्टिकोण के समर्थन में भिन्न - भिन्न हितधारकों की भूमिका शामिल है।

दोनों देशों ने 2016 में कैनबरा में वार्ता के अगले चक्र का आयोजन करने का निर्णय लिया।

2. संयुक्त वक्तव्य: **2015** संयुक्त राज्य अमेरिका-भारत साइबर संवाद - **11** अगस्त - **12, 2015,** वाशिंगटन डीसी

संपूर्ण सरकारी साइबर वार्ता, जो इस श्रृंखला की चौथी वार्ता है, का नेतृत्व संयुक्त राज्य साइबर सुरक्षा समन्वयक तथा राष्ट्रपति के विशेष सहायक माइकल डैनियल और भारत के उप राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार

अरविंद गुप्ता द्वारा किया गया था। साइबर मुद्दों के लिए विदेश विभाग के समन्वयक क्रिस्टोफर पेंटर और विदेश मंत्रालय में नीति आयोजन, आतंकवाद की खिलाफत तथा वैश्विक साइबर मुद्दों के लिए संयुक्त सचिव श्री संतोष झा ने वार्ता का सह-आयोजन किया।

इस वार्ता में संयुक्त राज्य सरकार की ओर से विदेश विभाग, न्याय विभाग, गृह सुरक्षा विभाग, कोष विभाग तथा वाणिज्य विभाग ने भाग लिया। भारत सरकार का प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय में राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा समन्वयक, विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा किया गया।

साइबर सुरक्षा के अनेक मुद्दों पर चर्चा की गई जिसमें साइबर संकट, साइबर सुरक्षा सूचना की हिस्सेदारी में वृद्धि, साइबर दुर्घटना प्रबंधन, साइबर अपराध के निपटने के प्रयासों में मेक इन इंडिया के संदर्भ में साइबर सुरक्षा सहयोग, इंटरनेट अभिशासन के मुद्दे तथा साइबर स्पेस में राज्य व्यवहार के मानदंड शामिल थे।

दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में क्षमता निर्माण, साइबर सुरक्षा अनुसंधान एवं विकास, साइबर अपराध से निपटने, अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा तथा इंटरनेट अभिशासन पर सहयोग बढ़ाने के कई तरह के अवसरों की पहचान की तथा अपनी साइबर सुरक्षा साझेदारी को मजबूत करने तथा ठोस परिणाम प्राप्त करने के लिए अनुवर्तन की अनेक गतिविधियों का संचालन करने की मंशा व्यक्त की।

औपचारिक वार्ता के अलावा, प्रतिनिधियों ने साइबर सुरक्षा तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। भारतीय प्रतिनिधि मंडल ने विदेश विभाग में उप सचिव अंटोनी ब्लिंकेन तथा गृह सुरक्षा एवं आतंकवाद की खिलाफत के लिए राष्ट्रपति के सहायक लीसा मोनाको के साथ बैठक की।

दोनों देशों ने 2016 में दिल्ली में साइबर वार्ता के अगले चक्र का आयोजन करने का निर्णय लिया।

12. विविध

1. भारतीय मिशनों के प्रमुखों को प्रधानमंत्री का संदेश, **07** फरवरी **2015**

- प्रधानमंत्री ने भारतीय मिशनों के प्रमुखों से आग्रह किया कि वे स्पष्ट दिमाग के साथ, भारत की विकास प्राथमिकताओं पर, और विदेशों में भारत के हितों को आगे बढ़ाने के लिए इस अवसर का उपयोग करते हुए विश्व स्तर पर भारत को प्रमुख भूमिका निभाने में मदद करें, न कि केवल संतुलन बल के रुप में, पुरानी मानसिकता को बदलने हेतु, बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुकूल होने, और तेजी से काम करने के लिए त्वरित रहें।
- प्रधानमंत्री ने भारत की गौरवशाली विरासत के प्रमुखों को "तेजस्वी जीवंत प्रतिनिधि" (तेजस्वी, जीवन अनंतपुंज) के रूप में वर्णित किया।
- प्रधानमंत्री ने कहा कि वैश्विक शांति एवं समृद्धि के लिए आज नए खतरे और नए खिलाड़ी हैं तथा यह भी कहा कि भारत, जिसने हमेशा विश्वबंधुत्व एवं शांति का साथ दिया है, पर शांति के लिए इन चुनौतियों को दूर करने में विश्व की मदद करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।
- जलवायु परिवर्तन की चुनौती पर प्रधानमंत्री ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा करना भारत की सांस्कृतिक विरासत का अंग है और इसलिए, भारत को इस चुनौती से निपटने में निश्चित रूप से अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए तथा जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के प्रति वैश्विक सोच में परिवर्तन लाने की दिशा में भी काम करना चाहिए और कहा कि भारतीय संस्कृति में ऐसे हजारों उदाहरण हैं जो हमारे प्रकृति - प्रेम को दर्शाते हैं।
- प्रधानमंत्री ने रिकार्ड समय में तथा रिकार्ड संख्या में सह-प्रायोजकों के साथ संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को अपनाए जाने में उनकी सफलता के लिए भारतीय राजनयिक समुदाय को श्रेय दिया। उन्होंने कहा कि तनाव प्रबंधन सहित पूरी दुनिया के लोगों की रोजमर्रा की आम समस्याओं के संभावित समाधान के रूप में योग को प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- प्रधानमंत्री ने कहा कि नीति आयोग ने भारतीय डायसपोरा को हमारे राष्ट्र की बहुत बड़ी शक्ति के रूप में माना है तथा मिशन प्रमुखों को नवाचारी तरीके ढूंढने चाहिए जिसके माध्यम से इस ताकत को सकारात्मक रूप से मजबूत किया जा सके।
- प्रधानमंत्री ने दुनिया भर में मिशनों की सर्वोत्तम प्रथाओं का एक संग्रह तैयार करने और उन्हें क्षैतिज रूप से फैलाने, "स्वच्छता" के लिए संस्कृति विकसित करने, डिजिटल कूटनीति पर वक्र से आगे रहने, डिजिटल पुस्तकालयों को बनाए रखने और प्रमुख व्यक्तियों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखने का आह्वान किया।

2. नई दिल्ली में “भारतीय डायसपोरा एवं सांस्कृतिक विरासत : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य” पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन के अवसर पर विदेश मंत्री का संबोधन, **11** फरवरी, **2015**

- भाषण में भारत की विरासत और संस्कृति पर प्रकाश डाला गया जो भारतीय परंपराओं, भाषा, कला तथा पूर्वजों द्वारा दिए गए ज्ञान के धन के माध्यम से जीवित है।
- उन्होंने शांति, अहिंसा और भाईचारे के बारे में समृद्ध इतिहास तथा मूल्यों के बारे में बात की जो वर्तमान परिदृश्य में 'वसुधैव कुटुम्बकम' और सर्व धर्म सम्भाव और भारतीय लोगों, इतिहास के रूप में ज्ञान और संस्कृति के प्रसार के बारे में सच है।

- उन्होंने 19वीं शताब्दी में भारतीयों द्वारा गिरमिटिया श्रम और उनकी बाद की सफलताओं और दुनिया के विभिन्न कोनों में फैली हुई कठिन यात्रा के बारे में बात की।
- भाषण में भारतीय संस्कृति के प्रसार में भारतीय डायस्पोरा के प्रयासों को उजागर किया गया जो नृत्य, संगीत और फ़िल्में और साहित्य के क्षेत्र में हैं।
- उन्होंने विभिन्न घटनाओं जैसे 'प्रवासी भारतीय दिवस' के रूप में गांधीजी की दक्षिण अफ्रीका से वापसी की 100वीं वर्षगांठ मनाने और कोलकाता में गुयाना में भारतीय गिरमिटिया श्रमिकों को समर्पित स्मारक की स्थापना के रूप में इस लंबी यात्रा की शुरुआत का उल्लेख किया।
- उन्होंने उल्लेख किया कि भारत आज दुनिया भर के हितों की अभूतपूर्व पुनरुत्थान तथा भारत की वृद्धि को एक नरम शक्ति के रूप में देख रहा है, जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के हालिया अंगीकार किए गए रिकॉर्ड 177 देशों के साथ मिलकर किया गया था।

3. आसियान पर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में सचिव (पूर्व) द्वारा मुख्य भाषण - भारत में खाद्य सुरक्षा, कृषि प्रौद्योगिकी और खाद्य इंजीनियरिंग में सहयोग, दिल्ली संवाद सत्र **2015** के लिए रन-अप इवेंट, मुंबई, **12** फरवरी **2015**

- भारत के पूर्वी पड़ोस और उससे आगे के देशों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो प्रधानमंत्री मोदी द्वारा जापान, म्यांमार, ऑस्ट्रेलिया और फिजी की यात्राओं से स्पष्ट है।
- प्रधानमंत्री मोदी के विचारों को भारत की लुक ईस्ट पॉलिसी को एक्ट ईस्ट पॉलिसी में बदलने और 'एशियाई शताब्दी' के सपने के मूल में आसियान को रखने पर जोर दिया गया।
- इसमें आसियान-भारत संबंधों के ऐतिहासिक संबंधों और 2012 में आसियान-भारत संबंधों के 20 वर्षों के अवसर पर रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाने के भारत के निर्णय पर प्रकाश डाला गया।
- इसमें आसियान के साथ 26 वार्षिक वार्ता तंत्रों का उल्लेख किया गया, जिसमें शिखर सम्मेलन और प्रमुख क्षेत्रों में सात मंत्रिस्तरीय स्तर की बैठकें शामिल हैं, जिनमें उल्लेखनीय रूप से कृषि शामिल है।
- 2012 के स्मारक शिखर सम्मेलन के दौरान अपनाए गए विजन स्टेटमेंट में उल्लेखित भाषण ने क्षेत्र में दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता को मान्यता दी और आसियान और भारत के बीच कृषि क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने के प्रयासों का स्वागत किया।
- 2011-2013 की अवधि के लिए कृषि और वानिकी में आसियान-भारत सहयोग के लिए आसियान- भारत कार्य समूह द्वारा कृषि पर किए जा रहे कार्यों और आसियान- भारत सहयोग की मध्यम-अवधि की योजना पर एक लघु अद्यतन दिया गया।
- भाषण ने स्वीकार किया कि कृषि एवं खाद्य सुरक्षा राष्ट्र की समग्र विकास योजना और विनिर्माण क्षेत्र के लिए कृषि के महत्व के साथ-साथ कृषि कच्चे माल और नकदी फसलों के निर्यात के बाद राजस्व में से एक है।
- इसमें कृषि और वानिकी के क्षेत्र में आसियान सदस्यों द्वारा सामना की जाने वाली आम चुनौतियों के बारे में बात की गई और कहा गया कि सहयोग, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और संयुक्त अनुसंधान एवं विकास सभी को लाभ होगा।
- इसमें कृषि सहयोग के लिए कई कार्यक्रमों के बारे में बात की गई और आशा व्यक्त की कि यह सहयोग और मजबूत होता रहेगा।
- इसमें कनेक्टिविटी को बढ़ाने के प्रयासों पर प्रकाश डाला गया - भारत-म्यांमार-थाईलैंड

त्रिपक्षीय राजमार्ग, इंफाल के बाहरी इलाके में फूड पार्क और मणिपुर में थाउबल में प्रस्तावित एसईजेड को उदाहरण के रूप में उल्लेख किया गया।

- इसमें 12वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा घोषित आसियान के साथ परियोजना वित्तपोषण के लिए विशेष सुविधा हेतु ढांचे पर काम पर प्रकाश डाला और कनेक्टिविटी परियोजनाओं के त्वरित कार्यान्वयन पर भी प्रकाश डाला गया।
- जनवरी 2015 में पूर्णकालिक राजदूत के साथ जकार्ता में आसियान में नए निवास मिशन के उद्घाटन पर प्रकाश डाला गया।

4. अगली पीढ़ी की दुनिया के लिए अंतर्राष्ट्रीय युवा शिखर बैठक **2015** में विदेश मंत्री का भाषण, 20 फरवरी 2015

- भाषण की शुरुआत युवाओं के बारे में कुछ बातें ही बहुत ही सुंदर हैं बताने और जीवन शक्ति को उजागर करने तथा विश्व मंच पर भारत की युवा अवस्था के रूप में उभरती शक्ति के रूप में भारत की नई सुबह की तुलना करने के साथ हुई।
- भाषण में दुनिया भर में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मंचों में भारत के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला गया।
- यह महसूस करने की आवश्यकता के बारे में बात की गई कि दुनिया पहले की तुलना में अब बहुत अधिक परस्पर जुड़ी हुई है और आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक व्यापार प्रभाव एक तथा सभी जैसी घटनाएँ और भारत को वैश्विक परस्पर संबंध के इस दृष्टिकोण के साथ काम करना चाहिए।
- इसमें विदेश नीति पर केंद्रित चार प्रमुख एजेंडे पर प्रकाश डाला गया:
    - राष्ट्रीय पुनरुत्थान एवं विकास के लिए बाहरी भागीदारी का उपयोग करना और विकास एवं कूटनीति को एक साथ आगे बढ़ाना।
    - 'पड़ोसी पहले' नीति, पड़ोस में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना। पड़ोस नीति भी व्यापक एकीकरण और कनेक्टिविटी के व्यापक दृष्टिकोण पर केंद्रित है।
    - विदेश नीति भारतीय संस्कृति को विदेशों में भारत के हितों को बढ़ावा देने में शक्तिशाली साधन के रूप में देखती है, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया गया था।
    - भारत एक जन-केंद्रित, संवादात्मक और युवा विदेश नीति का अनुसरण कर रहा है जो नए विचारों, नई पहलों और नई प्रेरणाओं के लिए खुला है, विशेष रूप से युवाओं से।

5. नई दिल्ली में दक्ष एवं नवाचारी समाधानों के माध्यम से जल संसाधन प्रबंधन पर असेम कार्यशाला में सचिव (पूर्व) द्वारा उद्घाटन भाषण, 27 फरवरी 2015

- उल्लेखित किया गया किस नवंबर, 2013 में भारत द्वारा आयोजित 11वीं असेम विदेश मंत्री बैठक असेम में एक नए प्रबोधन की शुरूआत थी क्योंकि मंत्रीगण चर्चा से आगे निकलकर स्वैच्छिक आधार पर मूर्त, परिणामोन्मुख पहलों की ओर अग्रसर होने के लिए सहमत हुए।
- उपरोक्त संदर्भ में भाषण में कहा गया कि; भारत सरकार ने मूर्त सहयोग हेतु कई क्षेत्रों की पहचान की है, और कई गोलमेज सम्मेलन की मेजबानी की है।
- उल्लेख किया गया कि शहरीकरण, जल प्रबंधन प्रौद्योगिकियों और ग्रीनवे की पहचान एएसईएम में संभव मूर्त सहयोग के क्षेत्रों में से एक के रूप में की गई थी।

- इसमें जल प्रबंधन में भारत की रुचि का उल्लेख किया गया और इस बात पर प्रकाश डाला कि 2008 में भारत सरकार द्वारा जारी जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) ने जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की चुनौतियों का सामना करने हेतु आठ राष्ट्रीय मिशनों की पहचान की है। राष्ट्रीय जल मिशन इन आठ में से एक है। राष्ट्रीय जल मिशन का मुख्य उद्देश्य एकीकृत जल संसाधन विकास और प्रबंधन के माध्यम से, जल का संरक्षण, अपव्यय को कम करना और राज्यों के भीतर और भीतर दोनों में अधिक समान वितरण सुनिश्चित करना है।
- इसमें भारत के सामने प्रभावी जल प्रबंधन और कचरे को कम करने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया और भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में यह एक बड़ी समस्या बन गई क्योंकि कोई भी औद्योगिक विकास को गति नहीं देना चाहता।
- इसमें यह बताया गया है कि इन लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु जिन कुछ रणनीतियों की पहचान की जा सकती है, उनमें नए स्रोतों की खोज करना, जल शोधन तकनीकें जैसे कि समुद्री जल के लिए आरक्षित परासरण और खारे पानी का विलवणीकरण आदि शामिल हैं।
- भाषण में उल्लेख किया गया है कि ऐसे मुद्दों पर सहयोग और ज्ञान का हस्तांतरण आवश्यक है।

6. भुवनेश्वर में "भारत और हिंद महासागर : समुद्री व्यापार एवं सभ्यतागत संपर्कों को नवीकृत करना'' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विदेश मंत्री का संबोधन, (20 मार्च 2015)

- हिंद महासागर के महत्व को रेखांकित करते हुए, उन्होंने कहा कि विशाल हिंद महासागर क्षेत्र में 40 से अधिक देश हैं तथा यहां विश्व की लगभग 40 प्रतिशत आबादी रहती है। यह महान संस्कृतियों का विशाल एवं विविध क्षेत्र है तथा भविष्य के लिए यहां प्रचुर अवसर उपलब्ध हैं। इसलिए, यह क्षेत्र, जो अफ्रीकी तट से पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया तक फैला है तथा आस्ट्रेलिया को भी छूता है, ऐसा क्षेत्र है जिस पर हमारी विदेश नीति में विशेष बल दिया जाता है।
- आगे उन्होंने कहा कि, आज हिंद महासागर से विश्व का आधा कंटेनर शिपमेंट गुजरता है, बल्क कार्गो ट्रैफिक का एक तिहाई भाग और तेल के नौप्रेषण का दो तिहाई भाग यहां से गुजरता है, हालांकि इस यातायात का तीन चौथाई भाग विश्व के अन्य क्षेत्रों को जाता है। मात्रा की दृष्टि से हमारा 90 प्रतिशत व्यापार और हमारा 90 प्रतिशत तेल आयात समुद्र के माध्यम से होता है। हमारी 7500 किमी की लंबी तटरेखा है, 1200 द्वीप हैं तथा 2.4 मिलियन वर्ग किमी में फैला अनन्य आर्थिक क्षेत्र है।
- इस क्षेत्र में मजबूत समुद्री सुरक्षा तंत्र की आवश्यकता पर बल देते हुए, उन्होंने कहा कि समुद्री सुरक्षा भारत के सभी हिंद महासागर क्षेत्र के साथ द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने कहा कि भारत समुद्री क्षेत्र में घनिष्ठ सहयोग का निर्माण करना चाहते हैं, द्विपक्षीय समुद्री अभ्यासों को नियमित करना चाहते हैं तथा हिंद महासागर क्षेत्र के सभी पश्चवर्ती देशों के साथ नेवी एवं तटरक्षक के बीच वार्ता को सुदृढ़ करना चाहते हैं।
- उन्होंने कहा कि भारत विभिन्न बहुपक्षीय संस्थानों का हिस्सा है, जो एशिया प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा मुद्दों पर सक्रिय रूप से बहस कर रहे हैं।
- उन्होंने कहा कि भारत समुद्री क्षेत्र की एकता, अस्थिरता एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए समान सोच वाले देशों के साथ काम कर रहे हैं।
- ईएएम ने फिर पुष्टि की कि भारत समुद्री सुरक्षा, नौवहन की आजादी, बाधामुक्त विधि सम्मत वाणिज्य तथा अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसरण में विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए प्रतिबद्ध है।
- उन्होंने कहा "हम सागर या नीली अर्थव्यवस्था के समग्र विकास के माध्यम से इस क्षेत्र के लिए अधिक सहयोगात्मक एवं एकीकृत भविष्य के लिए प्रयास कर रहे हैं। यह व्यापार,

पर्यटन एवं निवेश, अवसंरचना विकास, समुद्री विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, संपोषणीय मछली पालन तथा समुद्री पर्यावरण की सुरक्षा में अधिक सहयोग को बढ़ावा देगा।"

- क्षेत्र के देशों को अंतःक्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने हेतु एक सामान्य क्षेत्रीय मानक विकसित करना चाहिए। अंतर-क्षेत्रीय व्यापार विकास और आईओआरए के आर्थिक प्रदर्शन को बढ़ावा देने के रास्ते में आने वाली चुनौतियों और बाधाओं को दूर करने हेतु कुछ तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है।

7. नई दिल्ली में प्रथम विश्व युद्ध की शताब्दी संस्मारक प्रदर्शनी पर विदेश मंत्री द्वारा संबोधन **(23 मार्च, 2015)** - प्रमुख बिंदु

- प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों के योगदान को बताते हुए, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने कहा कि कई लोग महान युद्ध को यूरोपीय कार्य समझते हैं – यूरोप की साम्राज्यी महाशक्तियों के बीच वर्चस्व की लड़ाई की देन। लेकिन, यह पूरी तरह सच नहीं है।
- उन्होंने उल्लेख किया कि, न केवल भारत, बल्कि पूरे भारतीय उप-महाद्वीप ने इस संघर्ष में भाग लिया। कुछ अनुमानों से पता चलता है कि क्षेत्र से लगभग 1.5 मिलियन ने युद्ध में भाग लिया।
- कुछ विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया है कि हर छठा सैनिक जिसे ब्रिटेन ने लड़ाई के लिए भेजा था, भारतीय साम्राज्य से था। इन बहादुर सैनिकों ने अपनी मातृभूमि से दूर विदेशी जलवायु और परिस्थितियों में लड़ाई लड़ी।
- भारत ने दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा की तुलना में युद्ध में अधिक सैनिकों को भेजा। कुछ विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया है कि हर छठा सैनिक जिसे ब्रिटेन ने लड़ाई के लिए भेजा था, भारतीय साम्राज्य से था। इन बहादुर सैनिकों ने अपनी मातृभूमि से दूर विदेशी जलवायु और परिस्थितियों में लड़ाई लड़ी।

8. नई दिल्ली में ग्रोथ नेट शिखर सम्मेलन **2015** में विदेश मंत्री की टिप्पणी **(26 मार्च, 2015)**

- भारत का बाकी दुनिया के साथ संबंध, विशेष रूप से आर्थिक संबंध बढ़ गया है और इन संबंधों का काफी विस्तार हो गया है, और यह स्वाभाविक ही है कि हमारी विदेश नीति ऐसी हो जो इस ग्रोथ स्टोरी में उल्लेखनीय रूप से योगदान करे।
- भारत 3डी - लोकतंत्र, जनसंख्या और मांग की अपनी अनूठी बढ़त का इस्तेमाल करके वैश्विक विनिर्माण परिदृश्य और निर्यात बाजारों में एक शक्तिशाली खिलाड़ी के रूप में उभर कर आने के लिए एक माकूल स्थिति में है। इस प्रयास के केंद्र में मेक इन इंडिया अभियान है। हालांकि, 3 डी का फायदा उठाने के लिए उपयुक्त सार्वजनिक नीति और कारोबार एवं निवेश अवसरों की दृष्टियों से एक सकारात्मक बाह्य परिवेश की जरूरत है।
- एक्ट ईस्ट पालिसी भारत की लुक ईस्ट पालिसी के अधिक सक्रिय और कार्रवाईयों की प्रधानता वाले दौर में प्रवेश करने हमारी इच्छा का द्योतक है। इस पालिसी की कामयाबी इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि पिछले कुछेक महीनों में आसियान देशों के साथ हमने कितने नजदीकी संबंध कायम किए हैं।
- भारत ने कनेक्टिविटी पर, विशेषकर आसियान को अपने उत्तर पूर्व के साथ लिंक करने के लिए, एक सुसंगत कार्यनीति बनाने के लिए विशेष प्रयास किए हैं।
- आसियान के साथ भारत के आर्थिक संबंध में भी प्रगाढ़ता आई है। यहां प्राथमिकताएं क्षेत्रीय एकीकरण और विभिन्न प्रक्षेत्रों जैसे कनेक्टिविटी, इनर्जी, शिक्षा, आईटी और संस्कृति में परियोजनाओं के क्रियान्वयन पर हैं।
- भारत एक ऐसी शासन एवं विनियामकीय प्रणाली सुनिश्चित करने के प्रति प्रतितद्ध हैं जो पारदर्शी, अनुक्रियाशील और निवेशक-हितैषी होगी। सरकार ने इस संबंध में कई कदम उठाए

हैं।

- सहकारी संघवाद की प्रधानमंत्री की संकल्पना के अनुसार दुनिया के प्रति अपने आउटरीच में स्थानीय निकायों और राज्य सरकारों को समाविष्ट करना अपेक्षाकृत अधिक बड़े प्रयास का हिस्सा है। इस संकल्पना को क्रियान्वित करने के लिए मेरे मंत्रालय ने एक "राज्य डिवीजन" का गठन किया है जो कारोबार एवं निवेश संबंधी सभी प्रयोजनों के लिए राज्यों के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है।
- सरकार की फ्लैगशिप स्कीमों, चाहे वह स्वच्छ भारत अभियान, क्लीन गंगा, कौशल विकास, स्मार्ट सिटी या ज्ञान हो, के क्रियान्वयन में भारत के डायस्पोरा सबसे मूल्यवान भागीदार हो सकते हैं।
- प्रधानमंत्री ने एक नए फार्म का लांच किया है, दुनियाभर के भारतीय डायस्पोरा के साथ उच्च स्तर का संवाद शुरू किया है। वे उन लोगों तक पहुंचे हैं, और उन्होंने भी उनका गर्मजोशी और मित्रता का स्वागत किया है।

9. दिल्ली वार्ता **VII,** नई दिल्ली के उद्घाटन सत्र में विदेश मंत्री द्वारा मुख्य भाषण - प्रमुख बिंदु

- विदेश मंत्री ने कहा कि भारत और आसियान के बीच संपर्क में वृद्धि हमारे लिए एक प्रमुख रणनीतिक प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि हमारा पूर्वोत्तर क्षेत्र आसियान के लिए हमारा भूमि सेतु है तथा उन्हें इस बात की खुशी है कि इस क्षेत्र के कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने हमारे विचार – विमर्श में योगदान देने के लिए आज शाम हमारे साथ होने के लिए अपना बहुमूल्य समय निकाला है।
- भारत की कई आसियान देशों के साथ समुद्री सीमाएँ हैं, और यह व्यापार के दृष्टिकोण से विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
- उन्होंने दर्शकों को सूचित किया कि, उम्मीद है कि वर्ष के अंत तक आसियान-भारत समुद्री परिवहन सहयोग समझौते को अंतिम रूप दिया जाएगा।
- भारत ने त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना को लागू करने में प्रगति की है, जो मणिपुर में मोरेह से म्यांमार के माध्यम से थाईलैंड में माई सोत तक निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करने का प्रस्ताव करती है।
- उन्होंने कहा कि भारत ने म्यांमार-म्यांमार-थाईलैंड परिवहन परिवहन समझौते पर भी बातचीत शुरू कर दी है।
- भारत एक अंतरिक्ष परियोजना का कार्यान्वयन आरंभ करने वाला है जो आसियान-भारत निधि के तहत सबसे बड़ी परियोजना होगी, जिसमें इसरो द्वारा वियतनाम के हो ची मिन्ह शहर में एक ट्रैकिंग एवं डाटा ग्रहण स्टेशन एवं डाटा प्रसंस्करण सुविधा की स्थापना; इंडोनेशिया में बियाक स्टेशन का उन्नयन और आसियान के सभी देशों के अंतरिक्ष कर्मियों के लिए प्रशिक्षण का प्रावधान शामिल है।
- भारत आईटीईसी तथा कोलंबो योजना, मेकांग-गंगा सहयोग (एमजीसी) त्वरित प्रभाव निधि पहल तथा बहु क्षेत्रक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) के तहत मानव संसाधन विकास एवं क्षमता निर्माण के लिए अपनी सहायता जारी रखेगा।
- भारत आसियान एकीकरण-विकास अंतर को सीमित करने की पहल के तहत सी एल एम वी देशों में साफ्टवेयर विकास में उत्कृष्टता केंद्र तथा अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने की भी प्रक्रिया में है। इस सप्ताह, परियोजना टीम लाओ पीडीआर एवं वियतनाम में है तथा उत्कृष्टता के इन केंद्रों की स्थापना पर मेजबान सरकार के साथ चर्चा कर रही है।

10. नई दिल्ली में डब्ल्यूएफयूएनए फाउंडेशन इंडिया के उद्घाटन के अवसर पर विदेश मंत्री का भाषण (**3 मार्च, 2015)** - मुख्य बिंदु

- ब्ल्यूएफयूएनए के भारत के अध्याय का शुभारंभ एक मील का पत्थर है जिसे विश्व निकाय और इसके विशेष एजेंसियों के प्रदर्शन पर विस्तृत कर्तव्यों को पूरा करना चाहिए।
- विदेश मंत्री ने कहा कि मजबूत विश्वास है कि राष्ट्रों के संगठन के प्रतिनिधि संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्र को समकालीन भू राजनीतिक और आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करना चाहिए। यही कारण है कि भारत आज संयुक्त राष्ट्र सुधार के प्रयासों में सबसे आगे है, जिसमें स्थायी और गैर-स्थायी दोनों श्रेणियों में सुरक्षा परिषद का विस्तार शामिल है, ताकि इसे अधिक व्यापक रूप से प्रतिनिधि, कुशल और पारदर्शी बनाया जा सके और जिससे इसकी प्रभावशीलता और इसके निर्णयों की वैधता में और वृद्धि हो।
- उन्होंने आगे कहा कि, भारत का माननाहै कि संयुक्त राष्ट्र के 70वें वर्षगांठ वर्ष में इस लंबे समय से जारी मुद्दे पर एक ठोस परिणाम होना चाहिए।
- वह मानती है कि वैश्विक चुनौतियों का सामना करने और सभी के लिए अवसर बनाने तथा सभी हितधारकों की साझा जिम्मेदारी हेतु संयुक्त राष्ट्र का समर्थन करना सदस्य राज्यों का दायित्व है।

11. भारत ने ईरान के साथ परमाणु समझौते का स्वागत किया **(14** जुलाई **2015)**

ईरान परमाणु समझौते पर आधिकारिक प्रतिक्रिया में, भारत ने ईरानी परमाणु मुद्दे पर वार्ता के सफल समापन का स्वागत किया। अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के संबंध में एक महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसे अतीत तथा वर्तमान के लंबित मुद्दों के स्पष्टीकरण हेतु एक रोड मैप पर ईरान और एजेंसी के बीच समझौते से रेखांकित किया गया है।

12. जॉर्डन**,** फिलीस्तीन और इजरायल की अपनी राजकीय यात्रा की समाप्ति पर तेल अवीव से नई दिल्ली लौटते समय रास्ते में राष्ट्रपति द्वारा मीडिया वार्ता, **15** अक्टूबर**, 2015**

- पहली बार किसी भारतीय राष्ट्रपति द्वारा जॉर्डन, फिलिस्तीन और इज़राइल के दौरे किए गए थे। उन्होंने इस महत्व को दर्शाया कि भारत इस क्षेत्र के देशों के साथ अपनी साझेदारी को बढ़ाने पर निर्भर है, जो भारत का विस्तारित पड़ोस है।
- जॉर्डन में, राष्ट्रपति ने महामहिम शाह अब्दुल्लाह द्वितीय तथा जॉर्डन के प्रधानमंत्री अब्दुला एंसौर के साथ बैठकें की, जिसमें आतंकवाद की खिलाफत, रक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी तथा ऊर्जा सहित आपसी रूचि के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में नई सिनर्जी के द्वार खोलने के अवसरों का पता लगाया। महामहिम शाह अब्दुल्लाह द्वितीय ने जॉर्डन की आईसीटी कंपनियों के साथ काम करने के लिए भारतीय कंपनियों को प्रोत्साहित करने की अपनी गहन इच्छा व्यक्त की। 16 एमओयू तथा करारों को अंतिम रूप दिया गया जिसमें शैक्षिक संस्थाओं के बीच करार एवं एमओयू शामिल हैं। अम्मान में एक प्रमुख एवेन्यू का नाम मेरी यात्रा के दौरान महात्मा गांधी जी के नाम पर रखा गया।
- शाह अब्दुल्लाह द्वितीय ने विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी तथा संयुक्त राष्ट्र सुधार की चल रही प्रक्रिया का समर्थन किया। शाह अब्दुल्लाह द्वितीय ने तथा मैंने भारत को निर्यात करने के लिए फास्फोरिक एसिड का उत्पादन करने के लिए जॉर्डन फास्फेट माइंस कंपनी तथा इफ्को के बीच जॉर्डन-भारत उर्वरक कंपनी नामक एवं संयुक्त उद्यम का उद्घाटन किया जो 860 मिलियन अमरीकी डालर की परियोजना है।
- फिलिस्तीन में, राष्ट्रपति महमूद अब्बास, प्रधानमंत्री डा. रामी हामदल्लाह तथा प्रमुख राजनीतिक दलों के नेताओं द्वारा गर्मजोशी एवं स्नेह के साथ उनका स्वागत किया गया। राष्ट्रपति ने फिलीस्तीन के उद्देश्य के लिए भारत के सिद्धांतों पर आधारित समर्थन को दोहराया तथा बातचीत

के माध्यम से ऐसे समाधान का आह्वान किया जो संप्रभु, स्वतंत्र, व्यवहार्य एवं एकजुट फिलीस्तीन राज्य में परिणत हो, जिसकी राजधानी के रूप में पूर्वी येरूशलम हो, जो इजरायल के साथ शांति से अगल-बगल में सुरक्षित एवं मान्यताप्राप्त सीमाओं के अंदर रहे, जैसा कि चतुष्तक रोड मैप तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के संगत संकल्पों में पृष्ठांकित किया गया है।

- राष्ट्रपति ने आईसीसीआर छात्रवृत्तियों की संख्या 10 से बढ़ाकर 25 छात्रवृत्ति प्रतिवर्ष कर दी है तथा फिलीस्तीन के लिए आईटीईसी स्लाटों को 50 से बढ़ाकर 100 करने की घोषणा की; फिलीस्तीन प्राधिकरण को बजटीय सहायता के रूप में 5 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य का एक चेक सौंपा; अल कुडस विश्वविद्यालय में आईसीटी में भारत-फिलीस्तीन उत्कृष्टता केंद्र का उद्घाटन किया तथा एक मिलियन अमरीकी डालर की अनुमानित लागत से समान उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के साथ गाजा में भी आईसीटी में एक और भारत-फिलीस्तीन उत्कृष्टता केंद्र का निर्माण करने संबंधी भारत के निर्णय की घोषणा की। राष्ट्रपति ने 12 मिलियन अमरीकी डालर की अनुमानित लागत से रमल्लाह में एक आईटी पार्क और 4.5 मियिलन अमरीकी डालर की अनुमानित लागत से एक फिलीस्तीन राजनयिक संस्थान स्थापित करने संबंधी भारत सरकार के निर्णय की घोषणा की।
- इजरायल में राष्ट्रपति रूवेन रिवलिन, प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतनयाहू तथा नेसेट के स्पीकर यूली योएल एडिलस्टीन द्वारा गर्मजोशी एवं मैत्री की भावना के साथ राष्ट्रपति का स्वागत किया। दोनों नेताओं ने अपने बहुआयामी संबंधों की समीक्षा की तथा हमारे दोनों देशों के परस्पर लाभ के लिए उनमें वृद्धि करने के लिए तरीकों एवं उपायों का पता लगाया।
- उन्होंने इजरायल को भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण देशों में से एक के रूप में बताया तथा कहा कि हमारे दोनों देशों को हमारी भागीदारी के सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों में फिर से जान फूंकने की आवश्यकता है। इजरायल ने ऐसे समय में भारत को रक्षा उपकरण, प्लेटफार्म और सिस्टम प्रदान किया है जब उनकी भारत को सबसे अधिक जरूरत थी। दोनों नेताओं ने सौर ऊर्जा, डेयरी विकास, जल प्रबंधन, बागवानी, पशु-पालन तथा कृषि में सहयोग का विस्तार करने के अलावा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन तथा इजरायली अंतरिक्ष एजेंसी के बीच सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता पर चर्चा की।
- दोनों देशों की सरकारों के बीच दो करारों पर हस्ताक्षर किए गए। भारत और इजरायल की शैक्षिक संस्थाओं के बीच 8 एम ओ यू का आदान-प्रदान हुआ। इनसे दोनों देशों के बीच उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग को प्रोत्साहन मिलेगा तथा ये संयुक्त अनुसंधान, विद्वानों के आदान-प्रदान आदि का प्रावधान करेंगे।

13. लैटिन अमेरिका की गणमान्य हस्तियों के लिए डिनर के अवसर पर विदेश मंत्री द्वारा टिप्पणियां, **8** अक्टूबर**, 2015**

- मंत्री स्वराज ने कहा कि एलएसी क्षेत्र के साथ संबंध पारंपरिक रूप से सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में, ये राजनीतिक भागीदारी के साथ-साथ व्यापार और वाणिज्यिक अंत:क्रियाओं की दृष्टि से गहन हुए हैं।
- लैटिन अमेरिकी तथा कैरेबियन क्षेत्र के साथ हमारे व्यापार में निकट भविष्य में आकर्षक वृद्धि देखने को मिली है तथा आज यह 46 बिलियन डालर के आसपास है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वर्ष 2000 में भारत का व्यापार मात्र 2 बिलियन डालर था, यह इस क्षेत्र के साथ द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाता है।
- भारत ने मेरकोसुर के साथ तथा चिली के साथ तरजीही व्यापार करार किया हुआ है। एक अनुमान के अनुसार, हमारा निवेश 20 बिलियन डालर के आसपास है, जो मुख्य रूप से आईटी सेक्टर, आटोमोबाइल पार्ट्स, खनन एवं हाइड्रोकार्बन जैसे क्षेत्रों में है।
- लैटिन अमेरिकी क्षेत्र अन्यों के अलावा भेषज पदार्थ, चमड़ा, आटोमोबाइल पार्ट्स, इंजीनियरिंग माल, टेक्सटाइल, सूचना प्रौद्योगिकी जैसे भारतीय उत्पादों के लिए बाजार प्रस्तुत करता है। दूसरी

ओर, एलएसी क्षेत्र तेल एवं गैस, खनिज एवं धातु, अनाज, दलहन, तिलहन, सोया, ताजे फल तथा अनेक अन्य उत्पादों की पेशकश करता है।

- यह साल यह देखते हुए विशिष्ट रूप से महत्वपूर्ण है कि भारत ने तीन प्रमुख क्षेत्रीय समूहों अर्थात सीईएलएसी, एसआईसीए और कैरिकॉम के साथ मंत्री स्तर पर बातचीत की है।
- यात्रा का फोकस आर्थिक एवं वाणिज्य है। परंतु उन्होंने तीन अन्य मुद्दों का भी उल्लेख किया। पहला, आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए निरंतर सबसे गंभीर खतरा बना हुआ है। आतंकवाद का सामना करने के लिए ठोस कदम उठाना चाहिए। इस संबंध में, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय के लिए सभी के समर्थन का आह्वान किया। दूसरा, जलवायु परिवर्तन एक प्रमुख वैश्विक समस्या है जिससे भारत जूझ रहे हैं। हाल ही में अपनी आईएनडीसी की घोषणा की है तथा आशा करते हैं कि इस साल के उत्तरार्ध में पेरिस में सीओपी-21 में एक व्यापक, संतुलित एवं साम्यपूर्ण करार होगा। तीसरा, सुरक्षा परिषद का सुधार तथा स्थायी एवं अस्थायी दोनों श्रेणियों में इसका विस्तार आज की एक अपरिहार्यता है। पिछली संयुक्त राष्ट्र महासभा में उसके अध्यक्ष द्वारा प्रस्तुत पाठ को 70वें सत्र में ले जाने का निर्णय लिया गया था।

14. भारत की एक्ट ईस्ट नीति पर पूर्वोत्तर राज्यों के राज्यपालों के लिए विदेश मंत्री द्वारा आयोजित वार्ता सत्र, **06** अक्टूबर**, 2015**

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने मंगलवार, 6 अक्टूबर, 2015 को भारत की ''एक्ट ईस्ट नीति'' पर पूर्वोत्तर राज्यों के राज्यपालों के लिए आधे दिन के एक वार्ता सत्र का आयोजन किया। जवाहरलाल नेहरू भवन में आयोजित वार्ता सत्र में अरूणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री जे. पी. राजखोवा, असम और नागालैंड के राज्यपाल पद्मनाभ बालाकृष्ण आचार्य, मणिपुर एवं मेघालय के राज्यपाल श्री वी. शणमुगनम,मिजोरम के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल निर्भय शर्मा और सिक्किम के राज्यपाल श्रीनिवास पाटिल ने भाग लिया।

वार्ता, जिसमें भारत की एक्ट ईस्ट नीति के सभी पहलुओं को व्यापक रूप से शामिल किया गया था, विशेष रूप से इस बात पर ध्यान दिया गया कि ये उत्तर पूर्वी क्षेत्र पर कैसे प्रभाव डालते हैं। अपने मुख्य संबोधन में, विदेश मंत्री ने कहा कि नॉर्थ ईस्ट "भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी में प्राकृतिक भागीदार" है, भारत की आसियान का पुल है, और एक्ट ईस्ट पॉलिसी भारत की उत्तर पूर्वी क्षेत्र की स्थिरता, अर्थव्यवस्था और संभावनाओं को मजबूत करने का साधन है। इसमें तहत संपर्क की विभिन्न सीमा पारीय परियोजनाओं पर चर्चा हुई जो कार्यान्वयन या चर्चा के अधीन हैं, जो पूर्वोत्तर को म्यांमार, बंग्लादेश, थाइलैंड तथा यहां तक कि कंबोडिया,लाओ पीडीआर और वियतनाम सहित वृहद क्षेत्र से जोड़ेंगी। सीमा व्यापार और उत्तर पूर्व को क्षेत्रीय उत्पादन और मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत करने के मुद्दों पर भी चर्चा की गई।

13. भारत और बहुपक्षीय संस्थान

I. ब्रिक्स और भारत

1. VII ब्रिक्स शिखर सम्मेलन

9 जुलाई **2015** को **VII** ब्रिक्स शिखर सम्मेलन, ऊफ़ा घोषणा, ऊफ़ा, रूसी संघ

ब्राजील संघात्मक गणराज्य, रशियन फ़ेडरेशन, भारत गणराज्य, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ़ चाइना और दक्षिण अफ़्रीका गणराज्य के नेताओं ने 9 जुलाई 2015 को रूस के ऊफ़ा में सातवें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में मुलाकात की थी, जो "ब्रिक्स भागीदारी - वैश्विक विकास का शक्तिशाली कारक" विषय के तहत आयोजित किया गया था। इस घोषणा में 77 पैराग्राफ शामिल हैं। इसमें विभिन्न विषयों को शामिल किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र में, विशेष रूप से, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधार के संबंध में सहयोग पर एक अच्छा पैराग्राफ है। आतंकवाद के खिलाफ सहयोग के विषय पर पैराग्राफ का एक सेट। आईसीटी क्षेत्र में सहयोग से संबंधित कई पैराग्राफ। इस घोषणा में आईएमएफ सुधार और विश्व बैंक प्रशासन संरचनाओं के सुधार के महत्व पर प्रतिबिंब है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा **9** जुलाई **2015** को रूसी संघ के उफा में ब्रिक्स व्यापार परिषद में टिप्पणी

पीएम ने कहा कि:

- ब्रिक्स व्यापार परिषद इस ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के सबसे महत्वपूर्ण अपर में से एक है।
- भारत बड़ी परियोजनाओं में सहायता प्रदान करने के लिए ब्रिक्स पुनर्बीमा पूल बनाने के कदमों और सुझावों का स्वागत करता है।
- पहले व्यापार मेले की मेजबानी करते हुए भारत को बहुत खुशी होगी।

रूसी संघ के ऊफ़ा में **7**वीं ब्रिक्स शिखर बैठक पर सचिव (ईआर) द्वारा मीडिया वार्ता का प्रतिलेखन, 9 जुलाई, 2015

प्रमुख बातें:

- कुछ प्रस्तावों का एक संकलन जो प्रधानमंत्री ने प्रतिबंधित सत्र में अपने हस्तक्षेप में किया और प्लेनरी में अपने भाषण में बाहर रखा गया है।
- कुछ प्रस्तावों का एक संकलन जिसे प्रधानमंत्री जी ने प्रतिबंधित सत्र में अपने हस्तक्षेप के दौरान और पूर्ण सत्र में अपने भाषण में रखा था।
- दस विशिष्ट प्रस्ताव किए गए थे। पहली घोषणा यह थी कि हमारा एक वार्षिक ब्रिक्स व्यापार मेला होना चाहिए, इनमें से पहला 2016 में भारत की अध्यक्षता के दौरान होगा। अन्य घोषणाएं हैं: भारत के कार्यकाल के दौरान अध्यक्ष के रूप में रेलवे अनुसंधान केंद्र, सर्वोच्च लेखा परीक्षा संस्थानों के बीच सहयोग, ब्रिक्स डिजिटल पहल, ब्रिक्स कृषि अनुसंधान केंद्र, राज्य और स्थानीय

सरकार मंच, शहरों के बीच सहयोग, ब्रिक्स खेल परिषद, और वार्षिक ब्रिक्स स्पोर्ट्स मीट और ब्रिक्स अंडर -17 फुटबॉल टूर्नामेंट।

- तब एक घोषणा हुई कि न्यू डेवलपमेंट बैंक की पहली बड़ी परियोजना स्वच्छ ऊर्जा और ब्रिक्स फिल्म महोत्सव के क्षेत्र में होनी चाहिए।

2. विदेश मामलों के ब्रिक्स मंत्रियों की बैठक

29 सितंबर **2015** को न्यूयॉर्क में ब्रिक्स विदेश मंत्रियों की नियमित बैठक

- विदेश मामलों के ब्रिक्स मंत्रियों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के इस वार्षिक सत्र के मार्जिन पर 29 सितंबर, 2015 को न्यूयॉर्क में अपनी नियमित बैठक आयोजित की, जिसमें संयुक्त राष्ट्र की स्थापना और दूसरे विश्व युद्ध के अंत के घोषणा की 70वीं वर्षगांठ मनाई गई।
- मंत्रियों ने उन सभी को श्रद्धांजलि दी जो फासीवाद और सैन्यवाद के खिलाफ और राष्ट्रों की स्वतंत्रता के लिए लड़े।
- मंत्रियों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था और वित्त की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की।
- मंत्रियों ने करीब आर्थिक, वित्तीय और व्यापार सहयोग के महत्व पर जोर दिया, विशेष रूप से नीति समन्वय के माध्यम से, ब्रिक्स आर्थिक साझेदारी के लिए रणनीति का समय पर कार्यान्वयन और न्यू डेवलपमेंट बैंक और इसके अफ्रीकी क्षेत्रीय केंद्र के पूर्ण कामकाज पर।
- मंत्रियों ने आतंकवाद की कड़ी निंदा दोहराई।

"संचार और आईसीटी के क्षेत्र में सहयोग का विस्तार" पर बैठक के परिणामों पर संचार के ब्रिक्स मंत्रियों की विज्ञप्ति**,** मास्को**, 23** अक्टूबर **2015**

विज्ञप्ति में कहा गया:

- इंटरनेट सहित आईसीटी के सुरक्षित, स्थिर और निरंतर संचालन तथा उपयोग को सुनिश्चित करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, पार्टियों ने बहुपक्षवाद, लोकतंत्र, पारदर्शिता और पारस्परिक विश्वास के सिद्धांतों के आधार पर हितधारक अपनी-अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों में इंटरनेट प्रशासन के लिए तंत्र की स्थापना के महत्व पर ध्यान दिया और प्रासंगिकता को शामिल किया।
- भारत सरकार के संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और सदस्य राज्यों के संबंधित मंत्रालयों ने आईसीटी के क्षेत्र में ब्रिक्स वर्किंग ग्रुप की वार्षिक बैठकें आयोजित करने, आईसीटी के क्षेत्र में सहयोग और बातचीत के लिए उपयुक्त क्षमता के निर्माण, इंटरनेट सहित आईसीटी के क्षेत्रों में सहयोग की प्रतिबद्धता जताई।

एंटाल्या में जी**20** शिखर सम्मेलन के अंत में ब्रिक्स नेताओं की अनौपचारिक बैठक पर मीडिया टिप्पणी **15** नवंबर **2015**

ब्रिक्स नेताओं ने 15 नवंबर 2015 को एंटाल्या में जी20 शिखर सम्मेलन के अंत में मुलाकात की।

- नेताओं ने पेरिस में घिनौने आतंकी हमलों की कड़ी निंदा की।
- नेताओं ने खुलेपन, एकजुटता, समानता, आपसी समझ, समावेशिता और पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित ब्रिक्स रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने के महत्व को रेखांकित किया।
- नेताओं ने वैश्विक वित्तीय और आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में मंच की अग्रणी भूमिका

को बढ़ाने के लिए अपनी आगामी जी20 प्रेसीडेंसी में चीन का समर्थन करने के लिए अपनी तत्परता की घोषणा की।

15 नवंबर**, 2015** को ब्रिक्स नेताओं की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उद्घाटन टिप्पणियां

प्रधानमंत्री ने कहा कि:

- आतंकवाद के खिलाफ पूरी मानवता को एकजुट होना चाहिए। आतंकवाद से निपटने हेतु एकजुट वैश्विक प्रयास की आवश्यकता इससे पहले कभी इतनी जरूरी नहीं रही है। ब्रिक्स राष्ट्रों के लिए भी यह प्राथमिकता होनी चाहिए।
- भारत के ब्रिक्स अध्यक्षता का विषय "उत्तरदायी, समावेशी और सामूहिक समाधान का निर्माण" होगा, जिसका संक्षिप्त रुप 'ब्रिक्स' होगा। यह उपयुक्त रूप से समूह के लोकाचार का वर्णन करता है।

II. जी20 और भारत

1. जी**20** प्रमुखों का सम्मेलन**,** एंटाल्या**,** तुर्की

जी**20** प्रमुखों का सम्मेलन**,** एंटाल्या**,** तुर्की में भारत की भागीदारी**, 15-16** नवंबर**, 2015**

नवंबर 2015 में G20 जी20 प्रमुखों का सम्मेलन, एंटाल्या, तुर्की में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। भारत के वित्त मंत्री और भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर ने वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंक गवर्नर्स की बैठकों में प्रतिनिधित्व किया। अरविंद पनागरिया ने जी20 में भारत के शेरपा के रूप में प्रतिनिधित्व किया।

जी20 लीडर्स विज्ञप्ति**,** एंटाल्या शिखर सम्मेलन**,** 15-16 नवंबर 2015

- जी20 के नेताओं ने 15-16 नवंबर, 2015 को तुर्की के एंटाल्या में अपने लोगों की समृद्धि को बढ़ाने के लिए मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास प्राप्त करने और अधिक सामूहिक कार्यों को निर्धारित करने हेतु मुलाकात की।
- जी20 लीडर्स की विज्ञप्ति में कहा गया है कि नेता अपनी अर्थव्यवस्थाओं की वास्तविक और संभावित वृद्धि को बढाने, नौकरी के निर्माण का समर्थन करने, लचीलापन मजबूत करने, विकास को बढ़ावा देने और अपनी नीतियों के समावेश को बढ़ाने के लिए सामूहिक कार्रवाई जारी रखने के लिए दृढ़ हैं।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई पर जी**20** का वक्तव्य**,** एंटाल्या**,** तुर्की**, 16** नवंबर**, 2015**

- जी20 के वक्तव्य में 13 नवंबर को पेरिस में और 10 अक्टूबर 2015 को अंकारा में हुए जघन्य आतंकवादी हमले की कड़े शब्दों में निंदा की गई। ये सभी मानवता के लिए अस्वीकार्य कृत्य हैं।
- दुनिया भर में जारी और हाल के आतंकवादी हमलों ने एक बार फिर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और एकजुटता बढ़ाने की आवश्यकता को दर्शाया है।

एंटाल्या कार्य योजना

एंटाल्या कार्य योजना मजबूत, स्थायी और संतुलित विकास बनाने हेतु रणनीतिक और महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें कहा गया है:

- भारत लघु और मध्यम अवधि में आर्थिक गतिविधि का समर्थन करने और इसके त्वरित विकास हेतु अपनी लचीलापन बढ़ाने के लिए सभी नीतिगत तंत्र का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है।
- राजकोषीय, मौद्रिक और संरचनात्मक सुधार नीतियों के सही मिश्रण के अलावा, भारत ने अपने कर की संरचना को बदलने और संभावित विकास देने हेतु अधिक लाभ देने के संभावित लाभों पर भी विस्तार किया है, उदाहरण के लिए रोजगार बढ़ाने के माध्यम से, निजी निवेश का पोषण और उत्पादकता को बढ़ावा देना।
- कार्य योजना नोट: भारत ने ऊर्जा की कीमतों को कम किया है, एफडीआई को उदार बनाया है और व्यापार करने की लागत को कम करने के लिए कर और अन्य नीतियों में सुधार किया है।
- अर्जेंटीना, ब्राजील, कनाडा, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया और अमेरिका ने पर्याप्त अतिरिक्त सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के निवेश के लिए प्रतिबद्ध हैं।

विकास और जलवायु परिवर्तन पर जी**20** वर्किंग लंच में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रमुख उद्बोधन**, 15** नवंबर **2015**

पीएम ने कहा कि:

- आतंकवाद वर्तमान समय की सबसे बड़ी वैश्विक चुनौती है। यह न केवल जीवन का दुखद अंत करता है, बल्कि यह बड़ी आर्थिक लागत भी कराता है और उनके जीवन के रास्ते को खतरे में डालता है। इसके लिए व्यापक वैश्विक प्रतिक्रिया आवश्यक है। इसे जोड़ना जी20 की प्रमुख प्राथमिकता होनी चाहिए।
- यह सत्र दो अन्य प्रमुख वैश्विक चुनौतियों - विकास और जलवायु परिवर्तन पर चर्चा करता है। भारत विकास और जलवायु परिवर्तन को प्रतिस्पर्धी उद्देश्यों के रूप में नहीं देखता है। यह मानवता और प्रकृति की एकता में विश्वास पर केंद्रित है।
- जी20 को स्वयं को सतत विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित करना चाहिए। ऐसा करने पर, भारत तेजी से और व्यापक आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जी**20** वर्किंग डिनर पर वैश्विक चुनौतियों -आतंकवाद और शरणार्थी संकट पर उद्बोधन**, 15** नवंबर**, 2015**

पीएम ने कहा कि:

- आतंकवाद एक प्रमुख वैश्विक चुनौती है। संघर्ष के क्षेत्रों से दूर शहरों की सड़कों पर, आतंकवाद एक घातक कीमत चुकाने के मजबुर करता है। आतंकवाद के पुराने ढाँचे बने हुए हैं। ऐसे देश हैं जो अभी भी इसे राज्य नीति के एक साधन के रूप में उपयोग करते हैं।
- भारत को आतंकवादियों को हथियारों की आपूर्ति को रोकने, आतंकवादी आंदोलनों को बाधित करने और आतंकी वित्तपोषण को रोकने और अपराधीकरण करने के प्रयासों को मजबूत करना चाहिए।
- आज, दुनिया भर में अनुमानित 60 मिलियन लोगों की सुरक्षा की आवश्यकता है... भारत ने उन देशों को धन्यवाद दिया जिन्होंने अपनी सीमाओं और आश्रयों को खोला है।

जी-**20** के कार्यकारी सत्र-**I** में समावेशी विकास पर प्रधानमंत्री का उद्बोधनः वैश्विक अर्थव्यवस्था**,** विकास रणनीतियां**,** रोजगार एवं निवेश रणनीतियां, 15 नवंबर 2015

पीएम ने कहा कि:

- विकास को प्रोत्साहित करने हेतु, भारत को सार्वजनिक निवेश बढ़ाने की जरूरत है, न कि केवल मौद्रिक नीति पर भरोसा करने की।
- मौद्रिक नीति कार्यों पर सावधानीपूर्वक संचार के लिए केंद्रीय बैंकों को जी20 की निरंतर वित्तीय और मुद्रा बाजारों को स्थिर रखने में सहायक होगी।
- बहुपक्षीय विकास बैंकों को विकासशील देशों की बुनियादी सुविधाओं की जरूरतों का समर्थन करने के लिए अपने पूंजी आधार को बढ़ाना चाहिए। नए विकास बैंक जैसे नए संस्थान वित्त पोषण के अतिरिक्त स्रोतों का स्वागत करते हैं।
- जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने की आवश्यकता पर वैश्विक सहमति है। हालांकि, बहुपक्षीय संस्थानों को ऋण पर ऐसे मुश्किल सुरक्षा उपाय और शर्तें नहीं लादनी चाहिए कि वे कई देशों में विकास के लिए बाधा बन जाएं और स्थायी विकास को कमजोर कर दें।
- जी20 प्रयासों को इस वर्ष अपनाए गए संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए, विशेष रूप से 2030 तक सभी गरीबी उन्मूलन के नंबर एक लक्ष्य के साथ।
- भारत ने इस वर्ष महिलाओं के रोजगार पर और युवाओं पर जी 20 फोकस का स्वागत किया।

लचीलापन बढ़ाने पर जी-**20** शिखर सम्मेलन**,** सत्र -**II** में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संबोधन**,** एंटाल्या**, 16** नवंबर**, 2015**

पीएम ने कहा कि:

- उन्होंने अधिक लचीला और खुले वैश्विक वित्तीय प्रणाली के निर्माण के सफल प्रयासों के लिए जी 20 की सराहना की।
- यह वैश्विक अर्थव्यवस्था में वृद्धि और स्थिरता का एक अनिवार्य आधार है।

व्यापार और ऊर्जा पर जी**20** वर्किंग लंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संबोधन**, 16** नवंबर**, 2015**
पीएम ने कहा कि:

- वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक पारदर्शी, न्यायसंगत, भेदभाव रहित और नियम-आधारित वैश्विक व्यापार प्रणाली आवश्यक है।
- क्षेत्रीय व्यापार समझौतों को वैश्विक व्यापार प्रणाली के विखंडन की ओर नहीं ले जाना चाहिए और अधिक उदार बहुपक्षीय व्यापार शासन का समर्थन करना चाहिए।

2. जी**20** के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों की बैठक

विज्ञप्ति: जी**20** के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों की बैठक **4-5** सितंबर **2015,** अंकारा**,** तुर्की

विज्ञप्ति में कहा गया कि:

- भारत मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास हासिल करने हेतु अपने प्रयासों का समर्थन करने के लिए व्यापक आर्थिक और संरचनात्मक नीतियों की भूमिका की पुष्टि करता है।
- 2010 आईएमएफ कोटा और शासन सुधारों की प्रगति में निरंतर देरी से भारत को निराश है। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई सभी देशों की प्रमुख प्राथमिकता है और इसलिए, भारत अपने वित्तपोषण चैनलों से निपटने के अपने संकल्प को दोहराता है। भारत विकासशील देशों के लिए सक्षम वैश्विक आर्थिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है क्योंकि वे अपने नीतिगत संवाद को मजबूत करने सहित अपने सतत विकास एजेंडा को आगे बढ़ाते हैं।

3. 14-15 दिसंबर**, 2015** को चीन के सान्या में जी**20** फाइनेंस और सेंट्रल बैंक डिपो की बैठक

14-15 दिसंबर, 2015 को चीन के सान्या में जी20 फाइनेंस और सेंट्रल बैंक डिपॉजिट्स मीटिंग आयोजित की गई थी, जो 1 दिसंबर 2015 को जी20 अध्यक्षता पर चीन की पहली उच्च स्तरीय बैठक है।

बैठक की सह-अध्यक्षता चीन के उप-वित्त मंत्री झू गुआंग्यो और पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना के उप-गवर्नर यी गैंग ने की। चीन के वित्त मंत्री लू जीवेई ने उद्घाटन सत्र को संबोधित किया और 2016 में जी20 वित्त ट्रैक के एजेंडे, प्राथमिकताओं और कार्य कार्यक्रम को पेश किया। प्रतिनिधियों ने 2016 में एजेंडा, प्राथमिकताओं और कार्य कार्यक्रम पर व्यापक समझौते पर पहुंचा और वैश्विक अर्थव्यवस्था, मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास के लिए रूपरेखा, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय वास्तुकला, वित्तीय क्षेत्र में सुधार, अंतर्राष्ट्रीय कर सहयोग, हरित वित्त और जलवायु वित्त सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। जी20 सदस्य देशों के प्रतिनिधि, आमंत्रित अतिथि देश और संबंधित अंतर्राष्ट्रीय संगठन बैठक में शामिल हुए।

III. एससीओ और भारत

1. एससीओ क्षेत्र में उच्च स्तरीय सम्मेलन सुरक्षा और स्थिरता का संयुक्त वक्तव्य, मॉस्को**, 4** जून **2015**

- शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सदस्य प्रतिनिधियों, पर्यवेक्षकों और संवाद भागीदारों (भारत सहित) के उच्च प्रतिनिधियों ने एससीओ क्षेत्र में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के मुद्दों पर सीधी और रचनात्मक भावना से चर्चा की।
- संयुक्त वक्तव्य में जोर दिया कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों के समकालीन चरण की प्रमुख प्रवृत्ति सामान्य अविभाज्य सुरक्षा और पारस्परिक रूप से लाभप्रद समान सहयोग के सिद्धांतों के आधार पर बहुध्रुवीय दुनिया का गठन किया जा सकता है।

2. **10** जुलाई**, 2015** को शंघाई सहयोग संगठन के पूर्ण बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा टिप्पणी

प्रधानमंत्री ने कहा:

- उन्होंने एससीओ के सदस्यों को भारत को पूर्ण सदस्य के रूप में स्वीकार करने पर आभार व्यक्त किया। यह इतिहास के प्राकृतिक जुड़ाव को दर्शाता है।
- मध्य यूरेशियन क्षेत्र के साथ भारत के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संबंध प्राचीन काल से मौजूद हैं। और, इसने हम दोनों को समृद्ध किया है।
- चीन और रूस के साथ भारत की मजबूत और मजबूत रणनीतिक साझेदारी भी है।
- भारत को इस क्षेत्र में बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान करने में प्रसन्नता होगी।
- यहां मौजूद अन्य देशों के साथ, एससीओ एक एकीकृत और जुड़े यूरेशिया के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड हो सकता है जो दुनिया में सबसे गतिशील क्षेत्र बन जाएगा।

- ऊर्जा और संसाधनों और इसके विशाल और गतिशील बाजार के लिए भारत की आवश्यकता एससीओ क्षेत्र में समृद्धि को बढ़ावा देगी।
- भारत मानव संसाधन विकास, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स और स्वास्थ्य देखभाल, बैंकिंग और पूंजी बाजार, छोटे और मध्यम उद्यमों और सूक्ष्म वित्त, और खाद्य सुरक्षा और कृषि में अपनी भागीदारी को गहरा करेगा।
- समृद्धि का भविष्य शांति की नींव पर टिका हुआ है। भारत इस क्षेत्र में शांति और दोस्ती को आगे बढ़ाने में योगदान देगा।

3. क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग पर शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य देशों के शासनाध्यक्षों (प्रधानमंत्रियों) का वक्तव्य**, 15** दिसंबर **2015,** झेंग्झौ

- शंघाई सहयोग संगठन के सदस्यों की सरकारों (प्रधानमंत्रियों) ने एससीओ क्षेत्र में मजबूत आर्थिक विकास, लोगों की भलाई में सुधार और संगठन के ढांचे में व्यापार और अर्थव्यवस्था में बहुपक्षीय सहयोग के कार्यों के संकल्प की वकालत की, और सिल्क रोड इकोनॉमिक बेल्ट बनाने के लिए पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की परियोजना सहित क्षेत्रीय आर्थिक बातचीत को बढ़ावा देने के लिए सदस्य राज्यों की पहल को ध्यान में रखा गया।

4. **15** दिसंबर**, 2015** को शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य देशों के शासनाध्यक्षों (प्रधानमंत्रियों) की **14** वीं बैठक के परिणामों पर संयुक्त संवाद

- 14-15 दिसंबर 2015 को झेंग्झौ (चीन) में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के शासनाध्यक्षों (प्रधानमंत्रियों) की 14वीं बैठक हुई। भारतीय पक्ष से, बैठक में विदेश राज्य मंत्री श्री वेजय कुमार सिंह ने भाग लिया।
- प्रतिनिधिमंडलों के प्रमुखों ने अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय आर्थिक विकास के मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला पर रचनात्मक और व्यवसायिक माहौल में विचारों का आदान-प्रदान किया, एससीओ सदस्य के लोगों के बीच आपसी समझ और पारंपरिक मित्रता को और मजबूत करने के लिए आर्थिक और मानवीय सहयोग में सुधार के लिए संभावनाओं और उपायों पर चर्चा की।
- सरकारों के प्रमुखों ने सिल्क रोड इकोनॉमिक बेल्ट पर पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की पहल के लिए समर्थन की पुष्टि की और क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग पर वक्तव्य जारी किया।

5. **15** दिसंबर**, 2015** को शंघाई सहयोग संगठन के शासनाध्यक्षों की बैठक में विदेश राज्य मंत्री श्री वी. के. सिंह का संबोधन

मंत्री ने कहा:

- भारत, भारत की सदस्यता के शीघ्र पूरा होने की आशा करता है ताकि वह जल्द से जल्द एससीओ के कार्यक्रमों और गतिविधियों में पूरी तरह से शामिल हो सके।
- इस क्षेत्र में कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, विशेष रूप से सीमा पार आतंकवाद और उग्रवाद के बढ़ते प्रभाव, के समाधान की आवश्यकता है।
- भारत वित्तीय प्रबंधन, विशेष रूप से माइक्रोफाइनेंस, फार्मास्यूटिकल्स, आईटी और स्वास्थ्य सेवा जैसी सेवाओं के साथ-साथ क्षमता निर्माण के क्षेत्र में अपनी क्षमता बढ़ा सकता है।

14. वित्त मंत्रालय के प्रमुख कार्यक्रम

I. राष्ट्रीय

'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम

'मेक इन इंडिया' 2015 का प्रमुख प्रमुख कार्यक्रम रहा है। इसका उद्देश्य निवेश को आसान बनाना, नवाचार को बढ़ावा देना, कौशल विकास में वृद्धि, बौद्धिक संपदा की रक्षा, और बेस्ट-इन-क्लास विनिर्माण बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है। एफडीआई नीति, राष्ट्रीय विनिर्माण नीति, बौद्धिक संपदा अधिकारों और दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे और अन्य राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारों के विवरण के साथ ऑटोमोबाइल, रक्षा, विमानन, जैव प्रौद्योगिकी, निर्माण, खाद्य प्रसंस्करण, खनन, मीडिया और मनोरंजन, तेल और गैस, पर्यटन और आतिथ्य सहित पच्चीस क्षेत्रों की जानकारी वेब पोर्टल पर उपलब्ध कराई गई है। निवेशकों को मार्गदर्शन, सहायता और उन्हें संभालने के लिए 'इन्वेस्ट इंडिया' में एक निवेशक सुविधा सेल बनाया गया है। सरकार ने निम्नलिखित कुछ गलियारों के निर्माण की योजना बनाई है:

1. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा
2. बेंगलुरु-मुंबई आर्थिक गलियारा
3. चेन्नई-बेंगलुरु औद्योगिक गलियारा परियोजना
4. विजाग-चेन्नई औद्योगिक गलियारा
5. अमृतसर-कोलकाता औद्योगिक गलियारा

जब से 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की घोषणा की गई है, इसने न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि और निवेश की संभावनाओं को उजागर किया है, बल्कि वैश्विक स्तर पर राजनयिक व्यस्तताओं के चित्रफलक को भी मजबूत और विस्तृत किया है। इसने भारत की विकास क्षमता, क्षेत्रीय तथा वैश्विक आर्थिक चक्रों की गति को स्थापित करने में इसके महत्व को प्रदर्शित किया है। उदाहरण के लिए, आईएमएफ ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि आज, भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है, यहां तक कि चीन से भी अधिक; इसकी बिलियन से भी अधिक जनसंख्या विशाल बाजार प्रदान करती है; इसके विशाल खनिज तथा प्राकृतिक संसाधन बंदोबस्त के साथ-साथ कुशल जनशक्ति भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र में परिवर्तित करने में सक्षम है। वास्तव में, नई नीति ने भारतीय डायस्पोरा, बहुराष्ट्रीय कंपनियों सहित प्रमुख विदेशी निवेशकों को शामिल करने हेतु मंच तैयार किया है, जो विश्व अर्थव्यवस्था को मंदी से बचाने के साथ-साथ भारत को वैश्विक स्पर्धा में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में शामिल करने हेतु महत्वपूर्ण है।

नीति आयोग की स्थापना (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान)

नीति आयोग की स्थापना, योजना आयोग की जगह पर की गई है, जो विकास प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण दिशात्मक और रणनीतिक इनपुट प्रदान करता है। 26 जनवरी 2015 को भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा इसकी घोषणा की गई थी। आयोग की स्थापना 'राज्य सरकारों, क्षेत्र के विशेषज्ञों और संबंधित संस्थानों सहित हितधारकों के स्पेक्ट्रम के व्यापक परामर्श' के बाद की गई थी। यह आयोग योजना आयोग के पिछले अभ्यास की तुलना में केंद्र और राज्यों के बीच परामर्श के दो-तरफ़ा प्रवाह पर आधारित है। नीति आयोग का उद्देश्य बेहतर अंतर-मंत्रालय और बेहतर केंद्र-राज्य समन्वय को बढ़ावा देकर नीति के धीमे तथा मंद कार्यान्वयन को समाप्त करना है; पालक सहकारी संघवाद; राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं की साझा दृष्टि विकसित करना है। केंद्र सरकार की भूमिका को पहले और अंतिम उपाय के प्रदाता के बजाय 'एनबलर' के रूप में परिभाषित किया गया है। आयोग खाद्य सुरक्षा, गरीबों के उत्थान, कौशल प्रशिक्षण,

अत्याधुनिक संसाधन केंद्र को बनाए रखने, ग्रामीण स्तर पर विश्वसनीय योजनाएं बनाने और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह के थिंक टैंकों के बीच प्रमुख हितधारकों के बीच सलाह और उत्साहजनक भागीदारी प्रदान करने के साथ-साथ सरकार के उच्च स्तरों पर इनको एकत्रित करने के साथ-साथ सलाह और प्रोत्साहन के बीच महत्वपूर्ण भागीदारी प्रदान करने की भी सलाह देता है, साथ ही शैक्षिक और नीति अनुसंधान संस्थान, नए आयोग की प्रमुख विशेषताएं हैं।

इसके अलावा, आयोग निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करेगा:

- भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ, शिक्षा, कौशल विकास, लिंग पूर्वाग्रह के उन्मूलन और रोजगार के माध्यम से युवाओं, पुरुषों और महिलाओं की क्षमता का निर्माण;
- गरीबी उन्मूलन, और हर भारतीय को सम्मान तथा स्वाभिमान का जीवन जीने का मौका प्रदान करना;
- लैंगिक पक्षपात, जाति और आर्थिक विषमताओं के आधार पर असमानताओं का निवारण;
- गांवों को विकास प्रक्रिया में संस्थागत रूप से एकीकृत करना।
- 50 मिलियन से अधिक छोटे व्यवसायों के लिए नीति समर्थन, जो रोजगार सृजन का प्रमुख स्रोत हैं;
- उनकी पर्यावरणीय और पारिस्थितिक संपत्ति की सुरक्षा।

प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया और बेटी बचाओ- बेटी पढाओ अभियान में भी नए आयोग की भी कुछ प्रमुख भूमिकाएं हैं।

विनिवेश विभाग (डीओडी)

2014-15 में, सरकार ने विनिवेश की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण नीतिगत सुधार किया। इससे वार्षिक योजना के आधार पर शेयरों की पहचान के सिद्धांतों के आधार पर विनिवेश के पहले का दृष्टिकोण परिवर्तित हो गया है, जो बाजार में पहुंच में देरी, शेयरों की हैमरिंग, ओवरहांग, शेयरों के विभाजन में लचीलापन की कमी आदि जैसी समस्याओं के लिए जिम्मेदार था। जारी योजना ने अधिकारियों को अग्रिम तैयारी / नियोजन, अनुमोदन प्रक्रिया पर तेजी से नज़र रखने, गोपनीयता बनाए रखने में मदद की, ताकि समयबद्ध और केंद्रित तरीके से केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (सीपीएस) में भारत सरकार (जीओआई) की हिस्सेदारी के विनिवेश से बचा जा सके। नतीजतन, सरकार वित्तीय वर्ष 2014-15 में 24,349 करोड़ रुपये के उच्चतम विनिवेश प्राप्तियों को प्राप्त करने में सक्षम रही, वह भी वित्त वर्ष की अंतिम 6 महीनों की अवधि में। यह 2000 और 2014 के बीच 9,593 करोड़ रुपये के वार्षिक औसत से भी अधिक है।

2014-15 की सफलता को देखते हुए, विनिवेश विभाग ने वित्त वर्ष 2015-16 के लिए 69,500 करोड़ रुपये के आंकड़े का लक्ष्य रखा है। इसमें सीपीएसई के विनिवेश से 41,000 करोड़ रुपये और "रणनीतिक विनिवेश" से 28,500 करोड़ रुपये शामिल हैं। विनिवेश प्रक्रिया में तेजी लाने और 69,500 करोड़ रुपये के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु विनिवेश विभाग ने निम्नलिखित कुछ उपायों को लागू करने की रूपरेखा प्रस्तुत की है:

- आवर्ती योजना के साथ वार्षिक योजना को बदलना;
- सीपीएसई के लिए प्रस्तावों की एक पाइपलाइन बनाना, जो वर्तमान में अनुमोदन के विभिन्न चरणों में हैं;
- अनुमोदन प्रक्रिया की फास्ट ट्रैकिंग;
- शेयरों के हैंमरिंग को रोकने के लिए गोपनीयता बनाए रखना;
- लेन-देन में तेजी लाने के लिए बिचौलियों की व्यवस्था को बदलना;
- मामले के आधार पर पीएसयू-ओएनएस लेनदेन पर 20 प्रतिशत शेयरों को आरक्षित करने

हेतु एक दृष्टिकोण का पालन करके विनिवेश कार्यक्रम को और अधिक समावेशी बनाना।

विदेशी कर्ज

मार्च 2015 के अंत तक, भारत का कुल विदेशी ऋण लगभग 475.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। पिछले वर्ष की तुलना में इसमें 29.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर की वृद्धि हुई है, जो लगभग 6.6 प्रतिशत है। दो कारकों ने विदेशी ऋण के बढ़ने में योगदान दिया है, पहला, भारतीय रुपये की तुलना में अमेरिकी डॉलर की वृद्धि; और दूसरा, अनिवासी जमा। जीडीपी प्रतिशत के संदर्भ में, विदेशी ऋण 23.8 प्रतिशत है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 0.2 प्रतिशत की मामूली वृद्धि है। मार्च 2015 के अंत में 58.3 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ अमेरिकी डॉलर मूल्यवर्ग ऋण भारत के विदेशी ऋण का सबसे बड़ा घटक रहा, इसके बाद भारतीय रुपया (27.9 प्रतिशत), एसडीआर (5.8 प्रतिशत), जापानी येन (4.0 प्रतिशत) और यूरो (2.4 प्रतिशत) रहा। इसी अवधि के दौरान कुल विदेशी ऋण का अल्पकालिक ऋण घटकर 20.5 प्रतिशत से घटकर 17.8 प्रतिशत हो गया है। मार्च 2015 से अंत और मार्च 2014 के बीच विदेशी मुद्रा भंडार में अल्पकालिक ऋण का अनुपात 30.1 प्रतिशत से घटकर 24.8 प्रतिशत हो गया है।

एफडीआई, विदेशी मुद्रा रिजर्व, विदेशी ऋण, इज ऑफ डूइंग बिजनेस

1991 के मध्य के बाद से, भारत सरकार ने बड़े आर्थिक सुधारों को अपनाया, भारत की अर्थव्यवस्था में न केवल धीरे-धीरे विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण होना शुरू हुआ, बल्कि धीरे-धीरे यह वैश्वीकरण प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरी। इसमें कुछ सुधार किए हैं, जिसमें कठोर विनियामक प्रक्रिया से उद्योगों को नियंत्रित करना; निवेश प्रक्रियाओं का सरलीकरण, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को बढ़ावा देना, विनिमय नियंत्रण का उदारीकरण, करों का युक्तिकरण और सार्वजनिक क्षेत्र का विभाजन भी शामिल है। हालांकि, 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत वर्तमान सरकार ने एफडीआई संलग्न करने की प्रक्रिया तेज कर दी है। प्रधानमंत्री मोदी ने दो दर्जन से अधिक देशों, मुख्य रूप से जापान, अमेरिका, चीन, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, संयुक्त अरब अमीरात आदि का दौरा किया और विदेशी निवेशकों के समक्ष भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ती संभावनाओं का प्रदर्शन किया और देश में एफडीआई को आकर्षित किया। प्रधानमंत्री ने भारतीय आर्थिक नीतियों का खाका तैयार किया और 'मेक इन इंडिया' की योजना को विस्तार से बताया। एक अलग बैठक में, उन्होंने भारत में 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में सुधार करने पर भी जोर दिया। वैश्विक संदर्भ में, ईज ऑफ डूइंग इंडेक्स कुल 189 देशों में से भारत को 134वें स्थान पर दर्शाता है, जबकि प्रधानमंत्री ने एक बैठक में भारत को 40-50वें स्थान पर रखने के लिए कहा था। इसके अलावा, सरकार कर प्रक्रिया को सरल बनाने के साथ-साथ कराधान के पूर्वव्यापी प्रावधानों पर विचार करने के लिए गुड्स एंड सर्विस टैक्स (जीएसटी) को लागू करने की भी योजना बना रही है, जिसका विदेशी निवेशक लंबे समय से इंतजार कर रहे हैं।

एफडीआई अंतर्वाह

पिछले वर्ष की तुलना में, 2015 में भारत में एफडीआई इक्विटी प्रवाह डॉलर और रुपये दोनों के संदर्भ में लगभग 105 प्रतिशत बढ़ गया। निरपेक्ष रूप से, 4,481 मिलियन अमेरिकी डॉलर (27,880 करोड़ रुपये) एफडीआई इक्विटी भारत की तुलना में आया, जो 2014 में इसी अवधि के दौरान 2,189 मिलियन अमेरिकी डॉलर (13,589 करोड़ रुपये) था।

पिछले तीन वर्षों में, मॉरीशस भारत में शीर्ष निवेशक रहा है। 2015 में, इसने लगभग 9,030 मिलियन डॉलर का निवेश किया, इसके बाद सिंगापुर, ब्रिटेन, जापान, नीदरलैंड, यूएसए, जर्मनी, आदि है, हालांकि साइप्रस और यूएई अपेक्षाकृत छोटे देश हैं, वे भी भारतीय अर्थव्यवस्था में आठवें और दसवें सबसे बड़े एफडीआई योगदानकर्ता हैं। सेवा क्षेत्र ने एफडीआई के प्रमुख हिस्से को आकर्षित किया, इसके बाद निर्माण तथा दूरसंचार क्षेत्र हैं। मुंबई ने विदेशी निवेश पूंजी की सबसे बड़ी राशि को आकर्षित किया है,

उसके बाद नई दिल्ली और बैंगलोर हैं।

'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत सरकार ने देश में एफडीआई की सुविधा के लिए कई महत्वपूर्ण नीतियां पेश की हैं। इसमें 15 क्षेत्रों में एफडीआई मानदंडों में ढील दी गई है। कुछ क्षेत्रों जैसे टाउनशिप, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, व्यावसायिक केंद्रों, चिकित्सा उपकरणों और रेलवे के कुछ क्षेत्रों में, इसने स्वचालित मार्गों के माध्यम से 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति दी है। रक्षा जैसे अन्य क्षेत्रों में, इसने 49 प्रतिशत समेकित एफडीआई की अनुमति दी है, निजी क्षेत्र के बैंकों में 74 प्रतिशत आदि है। बीमा और उप-गतिविधियों में सीमा को 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 49 प्रतिशत कर दिया गया, जबकि पेंशन फंड में 49 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति है।

विदेशी मुद्रा रिजर्व

भारत के विदेशी मुद्रा रिजर्व ने 26 दिसंबर 2014 और 18 दिसंबर 2015 के बीच 319.71 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 351 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक की 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। यह 10 महीने के आयात बिल के लिए पर्याप्त है। कम होते आयात बिल, जिसमें मुख्य रूप से कच्चे तेल की कम कीमतों और यूएसडी के खिलाफ रुपये के मूल्यह्रास ने योगदान दिया है, ने भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में सुधार किया है।

मसाला बांड

अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (आईएपसी) ने 10-वर्ष, 10 बिलियन भारतीय रुपये के बॉन्ड (163 मिलियन डॉलर के बराबर) जारी किए हैं। 'मसाला बॉन्ड' लंदन स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध पहले रुपये के बांड को चिह्नित करता है। बॉन्ड यील्ड 6.3 प्रतिशत थी। वे अपतटीय रुपये के बाजारों में सबसे लंबे समय तक रहने वाले बॉन्ड हैं, जो कि आईएफसी द्वारा तीन, पांच और सात साल की परिपक्वताओं के पहले अपतटीय रुपये जारी करने पर बनते हैं। मसाला बांड में अधिकांश निवेशक यूरोपीय बीमा कंपनियां हैं। मसाला बॉन्ड विदेशी वाणिज्यिक ऋण (ईसीबी) से अलग है, जो भारतीय कंपनियों द्वारा विदेशी मुद्रा जुटाने के लिए जारी किए गए थे, जबकि मसाला बॉन्ड यूएसडी में निर्धारित है, इसलिए जोखिम भारतीय पक्ष का नहीं बल्कि विदेशी खरीदारों का होता है। एक्सिस बैंक द्वारा इंफ्रास्ट्रक्चर बॉन्ड जारी करने में प्रस्ताव से आय का निवेश किया गया था। मसाला शब्द का उपयोग जानबूझकर स्थानीय स्वाद और भारतीय संस्कृति तथा व्यंजनों को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रवासी को आकर्षित करने के लिए किया गया है। अतीत में चीन और जापान ने भी विदेशी निवेशकों को प्रभावित करने के लिए हांगकांग और जापानी समुराई बांड जैसे एक लोकप्रिय पकवान के नामपर अपने स्थानीय नामों जैसे कि डिम-सम बांड के आधार पर बांड जारी किए हैं। मसाला बॉन्ड को सर्वश्रेष्ठ रूप से भारत सरकार की सांस्कृतिक-आर्थिक कूटनीति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

स्वर्ण योजनाएँ

विश्व स्वर्ण परिषद (डब्ल्यूजीसी) के अनुमान के अनुसार, भारतीयों के पास अलग-अलग रूपों में 1 ट्रिलियन डॉलर (62.6 लाख करोड़ रुपये) का लगभग 22,000 टन स्वर्ण मौजूद है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था का लगभग आधा है। ये स्वर्ण भंडार आर्थिक दृष्टिकोण से बेकार है। दूसरी तरफ, भारत रत्न और आभूषणों के प्रमुख निर्यातकों में से एक रहा है। यह रूस, अफ्रीका, आदि से सोने का आयात करता है, जिसमें यूएसडी के परिचलन के अनुसार उतार-चढ़ाव होता है और इसकी कमाई को प्रभावित करता है। घरेलू अवसर को देखते हुए, 2014-15 के बजट में, सरकार ने आर्थिक उद्देश्यों के लिए सोने के इन जमा का उपयोग करने के लिए तीन स्वर्ण योजनाओं की घोषणा की: स्वर्ण मुद्रीकरण, सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड और स्वर्ण सिक्का योजना। पूर्व में तुर्की ने आर्थिक उद्देश्यों के लिए स्वर्ण भंडार के दोहन की ऐसी ही योजना को लागू किया था।

- *स्वर्ण मुद्रीकरण योजनाएं*

इस योजना की घोषणा बजट 2015-16 में घरों और न्यासों में बेकार पड़े सोने की मूर्तियों को जुटाने और इसे उत्पादक उपयोग हेतु इस्तेमाल करने के उद्देश्य से की गई थी। इस योजना का शुभारंभ 5 नवंबर 2015 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था। इस योजना से उन स्वर्ण आभूषण निर्माताओं को सोना उपलब्ध कराते हूए लाभ होगा जो बड़े पैमाने पर छोटे तथा मध्यम स्तर के उद्यम चलाते हैं। यह आम आदमी को उसके सोने के जमा पर ब्याज अर्जित करने की सुविधा देकर लाभान्वित करेगा।

- *सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड स्कीम*

इस योजना की घोषणा बजट 2015-16 में बड़े पैमाने पर जनता को निवेश का एक नया वित्तीय साधन प्रदान करने और भौतिक स्वर्ण की मांग को कम करने के उद्देश्य से की गई थी। इस योजना को 5 नवंबर 2015 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किया गया था। लंबे समय में, यह योजना काफी हद तक, सोने के आयात की देश की मांग को कम करने में मदद करेगी। बांड की पहली किश्त जारी करने के बाद 6 नवंबर, 2015 से 30वें सत्र तक खुला था, 2015 में लगभग 250 करोड़ रुपये के एसजीबी को सब्सक्राइब किया गया था।

- *भारतीय गोल्ड कॉइन स्कीम*

इस योजना की घोषणा बजट 2015-16 में देशी सोने के सिक्कों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। योजना को सरकार के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के साथ जोड़ा गया है। इस योजना का शुभारंभ 5 नवंबर, 2015 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था।

राष्ट्रीय निवेश और अवसंरचना कोष का निर्माण ("एनआईआईएफ")

अपने बजट भाषण 2015-16 में, केंद्रीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली ने राष्ट्रीय निवेश और अवसंरचना कोष (एनआईआईएफ) की स्थापना की घोषणा की। एनआईआईएफ की स्थापना का उद्देश्य है: (i) मुख्य रूप से व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य परियोजनाओं में बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से आर्थिक प्रभाव को अधिकतम करना, ग्रीनफील्ड और ब्राउनफील्ड दोनों में, जिसमें रुकी हुई परियोजनाएं शामिल हैं; (ii) घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्रोतों से निवेश आकर्षित करना; (iii) एनआईआईएफ रणनीतिक एंकर भागीदारों से इक्विटी भागीदारी की मांग करेगी; (v) एनआईआईएफ के लिए भारत सरकार के योगदान का उद्देश्य इसे संप्रभु निधि के रूप में प्रदर्शित करना है और इसके सह-निवेश के लिए विदेशी संप्रभु / अर्ध-संप्रभु / बहुपक्षीय / द्विपक्षीय निवेशकों को आकर्षित करने की उम्मीद है। एनआईआईएफ का प्रारंभिक अधिकृत कॉर्पस रु. 20,000 करोड़, जिसे समय-समय पर उठाया जा सकता है। कॉर्पस में सरकार का योगदान / हिस्सेदारी 49 प्रतिशत होगी। एनआईआईएफ की गतिविधियों की देखरेख के लिए, सरकार ने निम्नलिखित संरचना के साथ एक शासी संघ का गठन करने का निर्णय लिया है: - (i) वित्त मंत्री - अध्यक्ष (ii) सचिव, डीईए (iii) सचिव, वित्तीय सेवाएँ और अन्य एजेंसियों के सदस्य। वास्तव में, एनआईआईएफ घरेलू और विदेशी दोनों निवेशकों के लिए समान स्तर प्रदान करने की योजना है।

ओडीए प्लस लोन

ओडीए प्लस नामक एक नया ऋण साधन, वित्त मंत्री द्वारा बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त वित्तीय जरूरतों को पूरा करने हेतु अनुमोदित किया गया था जो भारत-जर्मन द्विपक्षीय विकास सहयोग के तहत सहमत प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में नहीं आते हैं। ओडीए प्लस के तहत वित्त पोषण के

लिए जर्मन की ओर से दो परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

प्रक्रियाओं के सरलीकरण और बेहतर करदाता सेवाओं हेतु किए गए उपाय

राजस्व और कर अनुपालन बढ़ाने हेतु, सरकार ने कर भुगतान की प्रक्रिया को आसान बनाने के साथ-साथ आयकर रिटर्न दाखिल करने पर भी ध्यान केंद्रित किया है। इस संबंध में निम्नलिखित उपाय किए गए हैं:

- स्थायी खाता संख्या (पैन) जारी करना

पैन अब विभिन्न गतिविधियों जैसे बैंक खाता खोलने, डीमैट खाते खोलने, सेवा कर, बिक्री कर / वैट, उत्पाद शुल्क पंजीकरण आदि प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। पैन डेटाबेस में आर्थिक प्रगति के साथ स्थिर विकास देखा गया है। चालू वर्ष के दौरान (31 मार्च 2015 तक) 1,86,04,948 पैन आवंटित किए गए हैं।

- ई-बिज़ कार्यक्रम

ई-बिज़ कार्यक्रम वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) का एक मिशन मोड प्रोजेक्ट है। इसका उद्देश्य स्टार्ट-अप कारोबार हेतु विभिन्न मंत्रालयों और विभागों से लाइसेंस, पर्यावरण और भूमि संबंधी मंजूरी, जैसे सिंगल विन्डोज़ क्लीयरेंस प्रदान करके निवेशकों को सुविधा प्रदान करना है।

- आयकर रिटर्न की ई-फाइलिंग

ई-फाइलिंग परियोजना आयकरदाताओं को वेब-सक्षम सेवाएं प्रदान करने के लिए आयकर विभाग द्वारा एक प्रमुख ई-गवर्नेंस और ई-डिलीवरी उपाय है। परियोजना का उद्देश्य करदाताओं द्वारा सीधे इंटरनेट पर आयकर के तहत निर्धारित आयकर रिटर्न, ऑडिट रिपोर्ट और अन्य प्रपत्रों की ई-फाइलिंग को सक्षम करना तथा ई-रिटर्न बिचौलियों (ईआरआई) के माध्यम से करना है। वित्त वर्ष 2015-16 में, ई-फाइलिंग पोर्टल पर 7 सितंबर 2015 तक 2.06 करोड़ रिटर्न प्राप्त हूए हैं, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 26.12% की वृद्धि है।

- आयकर रिटर्न हेतु केंद्रीकृत प्रसंस्करण केंद्र (सीपीसी)

यह परियोजना सभी ई-फाइल किए गए आयकर रिटर्न और सभी पेपर रिटर्न के केंद्रीकृत प्रसंस्करण, कर्नाटक और गोवा के भी, बेंगलुरु में सक्षम करती है। सीपीसी ने 31 मार्च 2015 तक 9.25 करोड़ ई-रिटर्न से अधिक के संसाधित किए हैं, जो अनुमानित रुप से शुरुआती 5 वर्षों में सीपीसी को 5 करोड़ ई-फाइल रिटर्न संसाधित करना था। सीपीसी ने वित्तीय वर्ष 2014-15 के दौरान वित्तीय वर्ष 2014-15 के दौरान आय के 3.07 करोड़ रिटर्न को संसाधित किया है, जो वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान संसाधित 2.44 करोड़ से अधिक है।

- रिफंड बैंकर

रिफंड बैंकर परियोजना ने रिफंड के निर्धारण, उत्पादन, समस्या, प्रेषण तथा क्रेडिट के लिए सिस्टम संचालित प्रक्रिया को सक्षम किया है। इस परियोजना ने रिफंड के वितरण की प्रक्रिया को पूरी तरह से स्वचालित, शीघ्र और पारदर्शी बना दिया है। रिफंड का निर्धारण सीधे ईसीएस के माध्यम से करदाता के बैंक खाते में किया जाता है। इंडिया पोस्ट और नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) के सहयोग से एक वेब आधारित स्थिति ट्रैकिंग सुविधा योजना के तहत उपलब्ध है।

- ई-सहयोग

पायलट प्रोजेक्ट ई-सहयोग को एक ऑनलाइन तंत्र के रूप में शुरू किया गया था, जो कि करदाता द्वारा आयकर कार्यालय जाने की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ई-सेवा के माध्यम से आयकर रिटर्न में बेमेल लेनदेन को हल करने के लिए शुरू किया गया था। इस पहल के तहत विभाग बेमेल लोगों के करदाताओं को सूचित करने के लिए एसएमएस, ई-मेल का उपयोग करके ई-सेवा को समाप्त करने की सूचना प्रदान करेगा। करदाता को केवल ई-फाइलिंग पोर्टल पर जाने और बेमेल संबंधित जानकारी देखने और समस्या पर ऑनलाइन प्रतिक्रिया प्रस्तुत करने के लिए अपने उपयोगकर्ता-आईडी और पासवर्ड से लॉग इन करना होगा। करदाताओं द्वारा ऑनलाइन जमा की गई प्रतिक्रियाओं पर कार्रवाई की जाएगी और यदि स्वचालित क्लोजर नियमों के अनुसार प्रतिक्रिया और अन्य जानकारी संतोषजनक पाई जाती है, तो समस्या को बंद कर दिया जाएगा। करदाता ई-फाइलिंग पोर्टल पर लॉग इन करके अद्यतन स्थिति की जांच कर सकता है।

- इनकम रिटर्न का ई-सत्यापन:

करदाताओं की सुविधा के लिए और शुरू से अंत तक ई-सक्षम सेवाएं प्रदान करने हेतु सीबीडीटी द्वारा आय की वापसी के इलेक्ट्रॉनिक सत्यापन की एक प्रणाली शुरू की गई है। करदाता अब इंटरनेट बैंकिंग पोर्टल के माध्यम से या आधार-आधारित प्रमाणीकरण प्रक्रिया के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से दायर रिटर्न को सत्यापित कर सकता है। छोटे करदाताओं के लिए, आयकर विभाग की ई-फाइलिंग वेबसाइट के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक सत्यापन कोड (ईवीसी) भी जनरेट किया जा सकता है। इस सुविधा का उपयोग करने वाले व्यक्तियों को सीपीसी बेंगलुरु को पेपर आधारित आईटीआर-वी सत्यापन फॉर्म जमा करने की आवश्यकता नहीं होगी। 07.09.2015 तक ईवीसी के माध्यम से लगभग 33 लाख ई-रिटर्न सत्यापित किए गए हैं।

काले धन पर अंकुश लगाने के लिए कदम

विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का संघटन, मई 2014 में, सर्वोच्च न्यायालय के दो पूर्व न्यायाधीशों के साथ अंतर-सदस्यीय के रूप में अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, विदेशों में जमा काले धन से संबंधित मुद्दों से निपटने के लिए किया गया;

अघोषित विदेशी आय और परिसंपत्तियों (कर का प्रभाव) विधेयक, 2015 का परिचय: संसद के माध्यम से भारत के लोगों के लिए सरकार द्वारा की गई प्रतिबद्धता को पूरा करने हेतु, काला धन (अघोषित विदेशी आय और परिसंपत्तियां (कर का प्रभाव)) अधिनियम, 2015 को अधिनियमित किया गया है। उक्त अधिनियम के तहत प्रासंगिक नियम [काला धन (अघोषित विदेशी आय और संपत्ति) और कर नियमों का प्रभाव, 2015] तय किए गए हैं। अघोषित विदेशी आय और संपत्ति (कर का प्रभाव) विधेयक, 2015 की मुख्य विशेषताएं हैं:

- कर और जुर्माने की दर - बिना किसी छूट, कटौती या किसी भी आगे के नुकसान के अघोषित विदेशी आय या संपत्ति पर 30 प्रतिशत की दर से कर लगेगा। भारत के बाहर स्थित आय या संपत्ति के गैर-प्रकटीकरण पर जुर्माना, कर देय देय राशि के तीन गुना के बराबर होगा, अर्थात, अघोषित आय का 90 प्रतिशत या अघोषित संपत्ति के मूल्य, 30 के अलावा देय कर के अलावा।
- अधिनियम में विभिन्न प्रावधानों के उल्लंघन के लिए कड़े दंड और बढ़ी हुई सजा का भी प्रावधान है।
- धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 को पीएमएलए के तहत अनुसूचित अपराध के रूप में इस अधिनियम के तहत कर चोरी के अपराध में शामिल करने के लिए संशोधन किया गया है।
- विदेशी आय या संपत्ति के संबंध में विवरणी प्रस्तुत करने में विफलता पर 10 लाख रुपये का

जुर्माना लगेगा। इसके लिए छह महीने से लेकर सात साल तक के कठोर कारावास की सजा भी होगी।

- विदेशी आय या भारत के बाहर स्थित संपत्ति के संबंध में कर से बचने की विफल कोशिश करने की सजा तीन साल से दस साल तक के कठोर कारावास होगी।
- वन टाइम अनुपालन अवसर - काला धन अधिनियम भी सीमित अवधि के लिए (1 जुलाई, 2015 से 30 सितंबर, 2015 तक) उन व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है, जिनके पास कोई भी विदेशी संपत्ति है, जिनके बारे में आयकर के उद्देश्य से खुलासा नहीं किया गया है। ऐसे व्यक्तियों को निर्दिष्ट कर प्राधिकरण से पहले घोषणा पत्र दाखिल करने की अनुमति दी गई थी। घोषणा करने वालों को 30 प्रतिशत की दर से कर का भुगतान करना होता है और जुर्माना के बराबर राशि मिलती है। वन टाइम अनुपालन अवसर के तहत 4,147 करोड़ रुपये की अघोषित विदेशी संपत्ति घोषित की गई है।

बेनामी लेनदेन (निषेध) विधेयक

घरेलू काले धन पर अंकुश लगाने के संबंध में, एक नया और अधिक व्यापक, बेनामी लेनदेन (निषेध) संशोधन विधेयक, 2015 को बेनामी लेनदेन (निषेध) अधिनियम (बीटीपीए) 1988 में संशोधन के लिए लोकसभा में पेश किया गया है। नया संशोधित कानून बेनामी संपत्ति को जब्त करने और अभियोजन प्रदान करने में सक्षम करेगा, इस प्रकार, बेनामी संपत्ति के रूप में काले धन को उत्पन्न करने और उत्पादन के लिए प्रमुख राजस्व अवरुद्ध करना भी सक्षम होगा, विशेष रूप से अचल संपत्ति में।

सूचना का स्वचालित आदान-प्रदान (एईओआई)

भारत कर चोरी से निपटने के वैश्विक प्रयासों में शामिल हो गया है, जिसमें पूरी तरह से पारस्परिक आधार पर सूचनाओं के स्वत: आदान-प्रदान पर एक समान वैश्विक मानक के कार्यान्वयन का समर्थन करना, अपतटीय केंद्रों में धन छिपाने वाले व्यक्तियों के बारे में सूचना के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करना शामिल है। विधायी उपाय, जहां भी आवश्यक हो, आयकर अधिनियम, 1961 की 285बीए (वित्त) (सं. 2) अधिनियम, 2014 की स्वचालित विनिमय सूचना में संशोधन की सुविधा देता है।

धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए)

विदेशी संपत्ति के संबंध में आय को छिपाने या कर की चोरी के अपराध को धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) के तहत एक पूर्ववर्ती अपराध बनाया जाएगा। यह प्रावधान प्रवर्तन एजेंसियों को विदेशों में मौजूद अघोषित संपत्ति को शामिल करने और जब्त करने तथा काले धन को वैध बनाने वाले व्यक्तियों के खिलाफ अभियोजन शुरू करने में सक्षम करेगा।

वित्तीय सेवा विभाग (जीएफएस)

जहाँ तक देश में बैंकिंग और बीमा क्षेत्र का संबंध है, वित्तीय सेवा विभाग (जीएफएस), वित्त मंत्रालय एक नोडल विभाग है। वर्तमान वित्तीय वर्ष में, वित्तीय सेवा विभाग ने विभिन्न पहल की है और यूनिवर्सल फाइनेंशियल इन्क्लूजन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु विभिन्न वित्तीय समावेशन और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित योजनाएं शुरू की हैं।

प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई): "मेरा खता - भाग्य विधाता"

प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त 2014 को विश्व की सबसे बड़ी वित्तीय समावेशन योजना की शुरुआत करने की घोषणा की थी। 28 अगस्त 2014 को देश भर में इस योजना की शुरुआत कर दी गई। वित्तीय

समायोजन के इस राष्ट्रीय मिशन का एक महत्वाकांक्षी उद्देश्य देश के सभी परिवारों को बैंकिंग सुविधाओं के दायरे में लाना और सभी परिवारों का बैंक खाता खुलवाना है। प्रधानमंत्री द्वारा इस बात पर जोर दिया गया है कि वित्तीय प्रणाली की मुख्यधारा से बाहर छूट गए लोगों को इसमें शामिल करना महत्वपूर्ण है। सरकार ने 'बैंकिंग सुविधाओं की सब तक पहुंच' के लिए पीएमजेडीवाई की शुरुआत की। इस योजना के तहत 'सामान्य बचत खाता' खोला गया जिसमें छह माह तक संतोषजनक संचालन के बाद 5000 रुपये तक के ओवरड्राफ्ट की सुविधा है। इसके अलावा खाताधारक को एक रूपे डेबिट कार्ड और एक लाख रुपये तक का दुर्घटना बीमा कवर भी मिलेगा।

उपलब्धियां:

- 11 नवंबर 2015 तक विभिन्न बैंकों ने प्रधानमंत्री जनधन योजना के तहत 19.21 करोड़ बैंक खाते खोले और इनमें 26,819 करोड़ रुपये की राशि जमा हुई है। 16.51 करोड़ खाताधारकों को रूपे कार्ड जारी किया जा चुका है। प्रतिदिन दो लाख बैंक खाते खोले गए।
- 13 नवंबर 2015 तक 45.98 लाख से ज्यादा खातों को ओवरड्राफ्ट की सुविधा प्रदान की गई है।
- इनमें से 8.86 लाख खाताधारकों ने कुल 124.95 लाख रुपये की ओवरड्राफ्ट सुविधा का लाभ उठाया है।
- 13 नवंबर 2015 तक 30,000 रुपये के लाइफ कवर के 1336 दावों और एक लाख रुपये के 333 दुर्घटना बीमा दावों का भुगतान किया जा चुका है।
- इसे गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।

जन धन से जन सुरक्षा योजनाएं

2015 में, सरकार ने आम नागरिकों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं शुरू कीं, विशेषकर वृद्ध, गरीब, महिलाओं और किसी भी दुर्घटना में अपने कमाने वाले परिवार के सदस्य को खोने वाले परिवारों के लिए।

- *अटल पेंशन योजना (एपीवाई)*

सरकार ने एपीवाई योजना को 60 से अधिक उम्र के व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु शुरु किया। इस योजना के तहत, किसी भी सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम के तहत आने वाले सभी लोगों पर ध्यान केंद्रित करने हेतु 60 वर्ष की आयु के बाद 1,000 रुपये से 5, 000 रुपये की पेंशन दी जाएगी। सरकार वृद्ध लोगों की सहायता करने के लिए पाँच वर्ष के लिए 10,000 रुपये सालाना तक के कुल योगदान में से 50 प्रतिशत का योगदान करेगी। इस योजना को सभी भारतीयों, विशेषकर गरीबों, वंचितों और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा प्रणाली माना जाता है। एपीवाई को राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के समग्र प्रशासनिक तथा संस्थागत वास्तुकला के तहत पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) द्वारा प्रशासित किया जा रहा है। 24 नवंबर 2015 तक इस योजना के तहत कुल 10.35 लाख ग्राहक पंजीकृत किए गए हैं।

- *प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई)*

पीएमएसबीवाई एक वर्ष की व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना है, जिसमें किसी दुर्घटना के कारण मृत्यु या स्थायी विकलांगता पर 2 लाख रुपये और स्थायी आंशिक विकलांगता पर 1 लाख रुपये का वार्षिक नवीकरण की पेशकश की जाती है। यह 18 से 70 वर्ष की आयु के लोगों के लिए उपलब्ध है। 24 नवंबर 2015 तक पीएमएसबीवाई के तहत बैंकों द्वारा सूचित सकल नामांकन 9.16 करोड़ है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (आरआरबी सहित) की हिस्सेदारी 93.2 प्रतिशत है।

- *प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई)*

पीएमजेजेबीवाई एक वर्ष की जीवन बीमा योजना है, जो किसी भी कारण से मृत्यु पर प्रति वर्ष 2 लाख रुपये का कवरेज प्रदान करती है और 18 से 50 वर्ष की आयु के लोगों के लिए उपलब्ध है। इसके लिए एक विशेष वेबसाइट www.jansuraksha.gov.in बनाई गई है। ग्राहकों के सवालों के जवाब देने के लिए आवंटित राज्यवार टोल फ्री नंबर भी उपलब्ध है। नवंबर 2015 तक, बैंकों ने पीएमजेजेबीवाई के तहत कुल 2.86 करोड़ नामांकन दर्ज किया है। सार्वजनिक बैंकों का हिस्सा 91 फीसदी है।

II. अंतरराष्ट्रीय

न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) की स्थापना

शंघाई, चीन में ब्रिक्स देशों द्वारा न्यू डेवलपमेंट बैंक की स्थापना की गई है। यह बैंक ब्रिक्स देशों, अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं तथा विकासशील देशों में अवसंरचना और सतत विकास परियोजनाओं के लिए संसाधन जुटाएगा। यह बहुपक्षीय तथा क्षेत्रीय वित्तीय संस्थानों के मौजूदा प्रयासों का पूरक होगा। श्री के.वी. कामथ ने बैंक के पहले अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला है। एनडीबी को अप्रैल, 2016 तक अपना पहला ऋण उपलब्ध कराने की उम्मीद है।

ब्रिक्स आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था (सीआरए) की स्थापना

ब्रिक्स देशों द्वारा सीआरए की स्थापना की नींव का काम 2015 में पूरा कर लिया गया है। शासी परिषद प्रक्रिया नियम और स्थायी समिति प्रक्रिया नियम को गवर्निंग काउंसिल ने 4 सितंबर 2015 को आयोजित अपनी उद्घाटन बैठक में मंजूरी दे दी थी। स्व-प्रबंधन की स्थापना आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था का सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, ब्रिक्स देशों के लघु अवधि के तरलता दबावों को बढ़ाने में मदद मिलेगी, आपसी सहयोग प्रदान करेगा और वित्तीय स्थिरता को और मजबूत करेगा। यह वैश्विक वित्तीय सुरक्षा जाल को मजबूत करने तथा मौजूदा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को अतिरिक्त सुरक्षित रूप में पूरक बनाने में भी योगदान देगा।

सार्क और एसडीएफ की बैठक

सार्क के वित्त मंत्रियों और वित्त सचिवों की 7वीं बैठक 19 और 20 अगस्त 2015 को आयोजित की गई। इन बैठकों में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व राज्य मंत्री (वित्त) श्री जयंत सिन्हा ने किया। इन बैठक में कुछ प्रमुख मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया था, जो हैं: (i) सार्क सदस्य देशों के बीच मुद्रा विनिमय व्यवस्था; (ii) सार्क वित्त में पूंजी और अंतरा क्षेत्रीय निवेश तथा विकास के अधिक प्रवाह की सुविधा। (iii) एसडीएफ गवर्निंग काउंसिल की 4वीं बैठक 20 अगस्त, 2015 को आयोजित की गई थी, जिसमें मुख्य रूप से सार्क विकास कोष को मजबूत करने तथा इसके तरीकों को आगे बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की गई थी। (iv) सार्क विकास निधि की 21वीं और 22वीं बोर्ड की बैठक क्रमशः अप्रैल और अगस्त 2015 में आयोजित की गई थी; (iv) 18 नवंबर 2015 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने नवंबर 2017 तक दो और वर्षों के लिए संशोधन के साथ सार्क सदस्य देशों के लिए मुद्रा स्वैप व्यवस्था पर फ्रेमवर्क की वैधता के विस्तार को मंजूरी दी है।

भारत एशिया इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक (एआईआईबी) का हस्ताक्षरकर्ता बन गया

अन्य देशों के साथ भारत ने 29 जून 2015 को बैंक के समझौता पत्रों पर हस्ताक्षर किए। एआईआईबी बीजिंग में स्थित एक बहुपक्षीय विकास बैंक है जो सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा, धन सृजित

करेगा और बुनियादी ढांचे और अन्य उत्पादक क्षेत्रों में निवेश करके एशिया में बुनियादी ढांचे की कनेक्टिविटी में सुधार करेगा। समझौते के पत्रों के अनुसमर्थन की प्रक्रिया चल रही है।

जी**20** शिखर सम्मेलन **2015**

जी20 शिखर सम्मेलन 2015 15-16 नवंबर 2015 को तुर्की के एंटाल्या में आयोजित किया गया था। प्रधानमंत्री ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। शिखर सम्मेलन में वित्त मंत्री अरुण जेटली, शेरपा डॉ. पनागरिया और भारत सरकार के आधिकारिक प्रतिनिधियों के नेतृत्व में अंतर-सरकारी बैठकों की एक साल की लंबी प्रक्रिया के समापन को चिन्हित किया गया है। जी20 आर्थिक और वित्तीय सहयोग के मुद्दों पर केंद्रित है। एंटाल्या में इस साल के शिखर सम्मेलन में, नेताओं ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, वैश्विक विकास को और अधिक समावेशी बनाने, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली के लचीलेपन को बढ़ाने, दीर्घकालिक विकास को बढ़ाने हेतु निवेश जुटाने, और आर्थिक सुधार और श्रम बाजारों पर पिछली प्रतिबद्धताओं को लागू करने, बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली को मजबूत करने हेतु कई ठोस कार्य करने हेतु प्रतिबद्धता दर्शायी है।

वन वर्ल्ड विदाउट हंगर - एक विशेष पहल

जर्मनी की सरकार द्वारा शुरू की गई योजना को कुपोषण और भुखमरी के उन्मूलन तथा बढ़ती वैश्विक आबादी के लिए दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा की सुरक्षा का समर्थन करने हेतु मंजूरी दी गई थी, और यह पहल द्विपक्षीय / बहुपक्षीय विकास सहयोग तथा क्षेत्र एवं नागरिक समाज की निजी भागीदारी के माध्यम से लागू की जाएगी। इस पहल के तहत कुल 21 मिलियन यूरो की चार परियोजनाओं की पहचान की गई है, जिनमें से 3 परियोजनाएं (यूरो 11.05) मिलियन तकनीकी सहयोग के तहत हैं और एक वित्तीय सहयोग के तहत (अनुदान के आधार पर 10 मिलियन यूरो) है।

सौर ऊर्जा साझेदारी

अगले पांच वर्षों में 1 बिलियन यूरो की सीमा में रियायती ऋणों के आधार पर सौर ऊर्जा साझेदारी का समर्थन करने के लिए एमएनआरई, भारत और जर्मन सरकार के बीच समझौता ज्ञापन की सुविधा और हस्ताक्षर किए गए। विभिन्न संस्थाओं के साथ किए गए समझौते में निम्नलिखित तरीके से धनराशि आवंटित की गई है: (i) हिमाचल प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड में ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर परियोजना के लिए 57 मिलियन यूरो-केएफडब्ल्यू (जर्मन डेवलपमेंट बैंक) के साथ अनुबंध (ii) एपीट्रांसको में ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर की परियोजना में यूरो 6 मिलियन केएफडब्ल्यू (जर्मन डेवलपमेंट बैंक) के साथ हस्ताक्षरित; (iii) माइक्रोफाइनेंस और माइक्रो एंटरप्राइजेज को बढ़ावा देने के लिए संप्रभु गारंटी के बिना यूरो 55 मिलियन का सिबडी (भारत) और केएफडब्ल्यू (जर्मन डेवलपमेंट बैंक) के बीच समझौते पर हस्ताक्षर (iv) 200 मिलियन यूरो बैंगलोर मेट्रो रेल परियोजना चरण II को आवंटित; एएफडी (फ्रांसीसी विकास बैंक) के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

जर्मनी और फ्रांस के साथ द्विपक्षीय तकनीकी और वित्तीय सहयोग

जर्मनी और फ्रांस के साथ वार्षिक वार्ता बैठक (एएफडी) 28-29 सितंबर, 2015 और 8-9 अक्टूबर, 2015 को सफलतापूर्वक आयोजित की गई थी। जर्मनी ने द्विपक्षीय तकनीकी और वित्तीय सहयोग के लिए 2015 की अवधि के दौरान 1,490.60 मिलियन यूरो (लगभग 11,000 करोड़ रुपये) की प्रतिबद्धता जताई है, जबकि फ्रांस ने इसी वर्ष लगभग 250 मिलियन की सहायता की।

भारतीय विकास और आर्थिक सहायता योजना का अफ्रीका तक विस्तार

भारत सरकार 2005-06 से अफ्रीका और अन्य विकासशील देशों के लिए लाइन ऑफ क्रेडिट का विस्तार कर रही है। योजना को अगले पांच वर्षों के लिए यानि 2015-16 से 2019-20 तक सीसीईए की स्वीकृति के साथ दूसरा विस्तार दिया किया गया है।

यूएसएआईडी के साथ वित्तीय समावेशन पर समझौता ज्ञापन (एमओयू)

प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) के तहत, आर्थिक मामलों के विभाग, भारत और यूएसएआईडी के बीच 4 नवंबर, 2015 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस समझौते के तहत, आम और गरीब भारतीयों को विस्तारित भुगतान स्वीकृति नेटवर्क और अन्य प्रयासों के माध्यम से वित्तीय समावेशन का समर्थन करने हेतु भारत सरकार और यूएसएआईडी मिलकर काम करेंगे।

भारत ने अमेरिकी व्यापार और विकास एजेंसी (यूएसटीडीए) के साथ तीन अनुदान समझौते पर हस्ताक्षर किए

दोनों पक्षों ने निम्नलिखित क्षेत्रों में तीन अनुदान समझौतों पर हस्ताक्षर किए: (i) यूएसटीडीए भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को अनुदान देगा, जो भारत में परियोजना 2 बॉडी स्कैनर सिस्टम प्लॉट पर तकनीकी सहायता के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की तकनीकी सहायता लागत को आंशिक रूप से निधि देगा; (ii) यूएसटीडीए भारत में मुंबई रिफाइनरी में भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड के = निम्नतम उन्नयन परियोजना पर व्यवहार्यता अध्ययन के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की लागत को आंशिक रूप से निधि प्रदान करेगा; (ii) अंत में, यूएसटीडीए भारतीय रेलवे में पीपीपी ढांचे को विकसित करने हेतु आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की लागत को आंशिक रूप से निधि देगा।

भारत ने **2015** में विश्व बैंक के साथ नए ऋण और समझौतों पर हस्ताक्षर किए

बुनियादी ढाँचे के क्षेत्र को गति देने के लिए भारत ने 2015 के दौरान विश्व बैंक और एडीबी के साथ कई नए ऋणों पर बातचीत की और हस्ताक्षर किए। इसमें ईडीएफसी परियोजना के तीसरे चरण के लिए विश्व बैंक के साथ 650 मिलियन अमेरिकी डॉलर का आईबीआरडी ऋण शामिल है। 3-चरणबद्ध ईडीएफसी परियोजना के लिए विश्व बैंक द्वारा किया गया कुल ऋण 2725 मिलियन अमेरिकी डॉलर है। यह परियोजना लुधियाना और कोलकाता के बीच पूर्वी समर्पित फ्रेट कॉरिडोर के दौरान माल ढुलाई में वृद्धि करेगी। एक अन्य परियोजना पर बातचीत हुई और हस्ताक्षर किया गया जो, 300 मिलियन अमेरिकी डॉलर के विश्व बैंक ऋण के लिए तमिलनाडु रोड सेक्टर परियोजना है। जून 2015 में तमिलनाडु सतत शहरी विकास परियोजना के अलावा 300 मिलियन अमेरिकी डॉलर के विश्व बैंक ऋण पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

राष्ट्रीय पहल स्वच्छ भारत

भारत ने अपने स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के लिए विश्व बैंक से 1500 मिलियन अमेरिकी डॉलर की वित्तीय सहायता मांगी है। इसके तहत, सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में खुले में शौच को कम करने, गाँवों में खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) की स्थिति को प्राप्त करने और बनाए रखने और ठोस तथा तरल आधारित प्रबंधन को बढ़ाने की योजना बनाई है। सरकार ने सुदूर क्षेत्रों में छत पर पीवी में सौर बुनियादी ढांचे और स्थापना के लिए विश्व बैंक और एडीबी को परियोजनाएं भी दी हैं, जिससे शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रम, विशेष रूप से झारखंड और उत्तराखंड में अल्पसंख्यक युवाओं तथा राज्य स्तरीय कौशल विकास कार्यक्रमों के लिए कार्यक्रम कौशल एवं रोजगार वृद्धि कार्यक्रम (एसईईपी) को सफलतापूर्वक चलाया जा सके।

स्मार्ट सिटीज मिशन

स्मार्ट सिटीज मिशन, कथन और दिशानिर्देश दस्तावेज़ में, भारत सरकार ने कहा है कि, "शहर अर्थव्यवस्था

के विकास के इंजन हैं।" वर्तमान में, शहरों में रहने वाली कुल आबादी का लगभग 30 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद में 63 प्रतिशत योगदान दे रहा है। लेकिन 2030 तक स्थिति काफी बदल जाएगी; करीब 41 फीसदी आबादी शहरों में चली जाएगी और जीडीपी में 75 फीसदी का योगदान करेगी। नतीजतन, इसमें "भौतिक, संस्थागत, सामाजिक और आर्थिक बुनियादी ढांचे" के व्यापक विकास की आवश्यकता है। यह न केवल जीवन की गुणवत्ता में सुधार करेगा, बल्कि "विकास और वृद्धि के शुचिता चक्र की गति" में निवेश और स्थापना को आकर्षित करेगा। नतीजतन, सरकार ने पूरे देश में पांच वर्षों में 100 स्मार्ट शहरों (वित्त वर्ष 2015- 16 से वित्त वर्ष 2019-20) को विकसित करने की योजना बनाई है। पांच वर्षों में अनुमानित व्यय लगभग 48,000 करोड़ रुपये होगा यानी प्रति वर्ष प्रति शहर 100 करोड़ रुपये। इन शहरों में कुछ बुनियादी ढांचे का निर्माण किया जाएगा, जैसे कि पानी की पर्याप्त आपूर्ति; सुनिश्चित बिजली की आपूर्ति; स्वच्छता, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सहित; कुशल शहरी गतिशीलता और सार्वजनिक परिवहन; किफायती आवास, विशेष रूप से गरीबों के लिए; मजबूत आईटी कनेक्टिविटी और डिजिटलाइजेशन; स्थायी पर्यावरण आदि, भारत सरकार ने स्मार्ट शहरों के निर्माण की प्रक्रिया को तेज करने के लिए अमेरिका, जर्मनी, जापान, आदि के साथ कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

15. रक्षा क्षेत्र में विकास

2015 में, भारत सरकार ने रक्षा क्षेत्र में बहु-आयामी नीति दृष्टिकोण अपनाए हैं: (i) स्वदेशीकरण; (ii) आधुनिकीकरण; और (iii) मेक-इन-इंडिया पहल के माध्यम से अपेक्षित क्षमता तथा बुनियादी ढांचे को विकसित करते हुए हथियारों और उपकरणों की महत्वपूर्ण कमी को दूर करना; (iv) संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, रूस, जापान, इज़राइल आदि जैसे कई देशों से आधुनिक हथियारों को प्राप्त करना। वर्ष 2015 में, रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) ने अधिग्रहण के मामलों में रक्षा मंत्रालय के शीर्ष निकाय को 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक के विभिन्न महत्वपूर्ण और उच्च अंत रक्षा खरीद प्रस्तावों को मंजूरी दे दी।

रक्षा में एफ.डी.आई.

25 नवंबर 2015 को, औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) ने रक्षा में एफडीआई नीति की समीक्षा की। संशोधित दिशानिर्देशों के अनुसार, एफडीआई सीमा को स्वचालित मार्ग के माध्यम से 26 प्रतिशत से 49 प्रतिशत तक और मामले से मामले के आधार पर सरकारी मार्ग के तहत 49 प्रतिशत से ऊपर बढ़ाया गया है, देश में जहां कहीं भी आधुनिक और 'अत्याधुनिक' तकनीक का उपयोग होने की संभावना है। इसके अलावा, अन्य दिशानिर्देश भी हैं, जैसे कि: (i) औद्योगिक लाइसेंसिंग के उद्देश्य से रक्षा उत्पादों की सूची को छोटा और अधिसूचित किया गया है; (ii) सरकार ने रक्षा वस्तुओं के निर्यात हेतु तेजी से मंजूरी के लिए एक रक्षा निर्यात रणनीति को अधिसूचित किया है; (iii) एफपीआई / एफआईआई / एनआरआई / क्यूएफआई द्वारा पोर्टफोलियो निवेश और एफवीसीआई द्वारा एक साथ निवेश निवेशकर्ता / संयुक्त उद्यम कंपनी की कुल इक्विटी का 24 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा; (iii) पोर्टफोलियो निवेश स्वचालित मार्ग के तहत होगा; (iv) आवेदक कंपनी का प्रबंधन बोर्ड में बहुमत के प्रतिनिधित्व के साथ-साथ कंपनी / मुख्य फर्म के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के भारतीय हाथों में होना चाहिए, जो भारतीय निवासी हैं; (v) 49 प्रतिशत तक एफडीआई के लिए सरकार की अनुमति लेने वाली आवेदक कंपनी का स्वामित्व भारतीय कंपनी के पास होना चाहिए, जिसका स्वामित्व भारतीय नागरिक के पास हो; और (vi) 2000 करोड़ रुपये से अधिक की प्रस्तावित आमदनी के साथ 49 प्रतिशत से अधिक एफडीआई के प्रस्ताव, जिन्हें सीसीएस द्वारा अनुमोदित किया जाना है, को आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) की मंजूरी की आवश्यकता नहीं होगी; (vii) डीआरडीओ और रक्षा उत्पादन विभाग के माध्यम से उद्योग के साथ बातचीत तेज हुई है।

रक्षा विनिर्माण क्षेत्रों में, जिन कंपनियों ने औद्योगिक लाइसेंस प्राप्त नहीं किया है, उन्हें विदेशी निवेश का लाभ उठाने हेतु सरकार से अनुमति लेनी होगी, जिसके परिणामस्वरूप स्वामित्व पैटर्न में बदलाव या

मौजूदा निवेशक द्वारा नए विदेशी निवेशक को हिस्सेदारी का हस्तांतरण किया जाएगा। लाइसेंस रक्षा मंत्रालय और विदेश मंत्रालय के परामर्श से डीआईपीपी, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा दिए जाएंगे। सरकार ने निवेश करने वाली कंपनियों को भी दिशा-निर्देश प्रदान किए, जैसे कि: (i) यह उत्पाद डिजाइन और विकास के क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होने हेतु संरचित होना चाहिए; (ii) निवेशकर्ता / संयुक्त उद्यम कंपनी, विनिर्माण सुविधा के साथ-साथ भारत में निर्मित होने वाले उत्पाद का रखरखाव और लाइफ टाइम समर्थन की सुविधा भी होनी चाहिए।

रक्षा में एफडीआई को उद्योग लाइसेंस (विकास और विनियमन अधिनियम), 1951 के तहत औद्योगिक लाइसेंस के अधीन किया गया है।

संयुक्त सैन्य अभ्यास

- *अभ्यास 'युद्ध अभ्यास - **2015**'*

भारत-अमेरिका संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण अभ्यास युद्ध अभ्यास 2015, संयुक्त बेस लुईस मैककॉर्ड, संयुक्त राज्य अमेरिका में 09 से 23 सितंबर 2015 तक आयोजित किया गया था। इस अभ्यास के तहत इन्फैंट्री सब यूनिट और भारतीय सेना के गठन मुख्यालय और संयुक्त प्रशिक्षण के लिए अमेरिकी सेना से समान भागीदारी के सैनिक एक साथ आए। इस अभ्यास ने दोनों देशों के कर्मियों को संयुक्त राष्ट्र के आदेश के तहत शहरी इलाके में सैन्य अभियानों पर अपने अनुभव साझा करने का एक आदर्श मंच प्रदान किया।

- *अभ्यास 'इंद्र - **2015**'*

भारत और रूस, इंद्र-2015 के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में आयोजित किया गया था, जो 08 से 18 नवंबर 2015 तक हुआ था। अभ्यास के अंतिम चरण में दोनों देशों के बलों के समूह का संयोजन देखा गया, जो संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में कार्य कर रहा था, जो अर्ध-शहरी इलाके में सशस्त्र आतंकवादियों का मुकाबला करने में तीसरे देश की सरकार की सहायता करता है।

- *अभ्यास 'हैंड-इन-हैंड'*

काउंटर टेररिज्म पर ऑपरेशन हैंड-इन-हैंड नामक बटालियन स्तर का संयुक्त भारत-चीन सेना अभ्यास और 'मानवीय सहायता और आपदा राहत' 12 से 22 अक्टूबर 2015 तक कुनमिंग, चीन में आयोजित किया गया था। दोनों पक्षों के सैनिकों ने एक साथ प्रशिक्षण लिया और मिश्रित समूहों में एक दूसरे से विशेष रूप से काउंटर टेररिज्म परिदृश्य में बेसिक इंडिविजुअल स्किल्स (कॉम्बेट बॉक्सिंग, बेसिक माउंटेनियरिंग और शूटिंग), कॉम्प्रिहेंसिव कॉम्बैट स्किल्स (बाधा पार करना, कॉम्बैट शूटिंग, डिमोलिशन, हाई इंटेंसिटी ट्रेनिंग) और यूनिट / सब यूनिट टैक्टिक्स पर सीखा। भारत-चीन सीमा क्षेत्रों पर आतंकवाद-रोधी अभियानों का चित्रण करने वाला एक संयुक्त क्षेत्र अभ्यास 21 से 22 अक्टूबर तक आयोजित किया गया था ताकि अभ्यास के उद्देश्यों को मान्य किया जा सके।

प्रथम विश्व युद्ध का शताब्दी समारोह

भारतीय सेना ने प्रथम विश्व युद्ध की शताब्दी 10 मार्च से 14 मार्च 2015 तक नई दिल्ली में उन 1.5 मिलियन भारतीय सैनिकों की याद में मनाई, जिन्होंने युद्ध में लड़ाई लड़ी थी और 74000 से अधिक लोगों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। 10 मार्च 1915 वह दिन है जिस दिन फ्रांस के आर्टोइस क्षेत्र में ब्रिटिश ऑफेंसिव में नेवे चैपेले की लड़ाई में गढ़वाल ब्रिगेड और भारतीय कोर के मेरठ मंडल ने भाग लिया था। 2014 से 2018 की अवधि को प्रथम विश्व युद्ध के शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

2015 में संयुक्त नौसेना अभ्यास

- *भारत-फ्रांस वरुण - **2015** अभ्यास*

भारत-फ्रांस नौसैनिक अभ्यास (वरुण) का चौदहवाँ संस्करण 23 अप्रैल से 02 मई 2015 तक गोवा में आयोजित किया गया था, जिसमें बंदरगाह और समुद्री चरण के अभ्यास दोनों शामिल थे।

- *सिम्बेक्स - **2015***

भारतीय नौसेना का पूर्वी बेड़ा दक्षिणी हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर में परिचालन पर गया था। इस तैनाती के हिस्से के रूप में, स्वदेश निर्मित गाइडेड मिसाइल स्टील्थ फ्रिगेट आईएनएस सतपुड़ा और नवीनतम और स्वदेशी एंटी-सबमरीन वारफेयर कार्वेट आईएनएस कामोर्टा 18 मई 2015 को सिंगापुर पहुंचे। इन जहाजों ने इमडेक्स-15 में भाग लिया और बाद में 23-26 मई 2015 से सिंगापुर नौसेना के साथ द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास सिम्बेक्स-15 का आयोजन किया।

- *अभ्यास ऑसइंडेक्स - **2015***

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच उद्घाटन द्विपक्षीय समुद्री अभ्यास - 15 को भारत के पूर्वी तट पर 11 से 19 सितंबर 2015 तक आयोजित किया गया था। इस अभ्यास का उद्घाटन रॉयल एडमिरल जोनाथन मीड, रॉयल ऑस्ट्रेलियन नेवी (आरएएन) के हेड नेवी कैपेबिलिटी और विशाखापत्तनम में आईएनएस शिवालिक में फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग ईस्टर्न फ्लीट के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग रियर एडमिरल अजेंद्र बहादुर सिंह ने संयुक्त रूप से किया। यह अभ्यास बंदरगाह के चरण के साथ शुरू हुआ जिसमें व्यावसायिक बातचीत के साथ ब्रीफिंग और व्यावहारिक प्रदर्शन शामिल थे।

- *मालाबार अभ्यास - **2015***

मालाबार अभ्यास का 19वां संस्करण 14 से 19 अक्टूबर 2015 तक बंगाल की खाड़ी में आयोजित किया गया था। भारतीय नौसेना और अमेरिकी नौसेना बलों के साथ-साथ जापान समुद्री आत्म-सुरक्षा बलों (जेएमएसडीएफ) ने भी अभ्यास में भाग लिया। इस त्रिपक्षीय अभ्यास ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की महत्वपूर्ण नौसेनाओं के बीच नौसेना के सहयोग को काफी बढ़ाया।

- *इंद्र-नेवी - **2015***

भारत-रूस द्विपक्षीय अभ्यास इंद्र नेवी 2015 का आठ संस्करण 07 से 12 दिसंबर 2015 तक विशाखापत्तनम की खाड़ी में बंगाल की खाड़ी में आयोजित किया गया था। इस अभ्यास ने आपसी विश्वास और पारस्परिकता को मजबूत करने में मदद की और दोनों नौसेनाओं के बीच सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने में भी सक्षम बनाया।

विदेशी देशों के साथ रक्षा सहयोग

अंतर्राष्ट्रीय रक्षा सहयोग के हिस्से के रूप में, भारत वायु सेना (आईएएफ) एयर स्टाफ वार्ता, पेशेवर विनिमय यात्राओं, खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न अनुकूल देशों की वायु सेनाओं के साथ जुड़ी हुई है।

- *इंद्रधनुष-**IV***

भारत-ब्रिटेन के द्वि-पार्श्व सह-संचालन के भाग के रूप में, अभ्यास इंद्रधनुष-IV जुलाई 21-30, 2015 के बीच आरएएफ बेस कॉन्सिंगबी, ब्रेज़ नॉर्टन और होनिंगटन में किया गया था। भारतीय वायुसेना की टुकड़ी में 190 कर्मी शामिल थे, जिन्होंने अभ्यास में भाग लिया। आईएएफ की संपत्ति में सू-30एमकेआई, सी-130जे, सी-17, आईएल-78 विमान और गरुड़ शामिल थे।

- *संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण (जेएमटी) -**15***

रिपब्लिक ऑफ सिंगापुर एयर फोर्स (आरएसएएफ) के साथ संयुक्त सैन्य प्रशिक्षण (जेएमटी-15) वायुसेना स्टेशन कलिकुंडा में 02-22 नवंबर, 2015 को आयोजित किया गया था। आरएसएएफ ने 06 एक्स एफ-16 सी/डी विमान तैनात किए। सू-30एमकेआई के साथ द्विपक्षीय अभ्यास 23 नवंबर, 2015 से दो सप्ताह के लिए आयोजित किया गया था।

संकट में फंसे लोगों की मदद

- *नेपाल भूकंप*

नेपाल के लिए राष्ट्र के समग्र राहत प्रयास के हिस्से के रूप में, भारतीय सेना ने 25 अप्रैल 2015 से ऑपरेशन 'मैत्री' शुरू किया। इंजीनियर टास्क बलों ने बारपाक, बसंतपुर / भक्तपुर और जोरबती से बचाव और पुनर्वास अभियान शुरू किया। सेना ने अस्पतालों की भी स्थापना की और भूकंप में घायल लोगों का इलाज किया।

- *चेन्नई में बाढ़*

1 दिसंबर 2015 को, राज्य सरकार के आह्वान पर एक संयुक्त ऑपरेशन में, भारत वायु सेना और भारतीय सेना ने ऑपरेशन 'मदद' के तहत चेन्नई के तंबरम, मुदिचुर, मणिपुरम, गुडुवनचेरी और उरापक्कम क्षेत्रों में बाढ़ में फंसे 20,000 से अधिक लोगों को बचाया गया। सेना ने राज्य सरकार और कुछ गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रदान किए गए 1,25,000 से अधिक राहत पैकेट वितरित किए।

शोध अध्येता और शोध प्रशिक्षु, जिन्होंने वार्षिक समीक्षा 2015 की सामग्री तैयार करने में योगदान दिया

क्र. सं.	महीना	नाम	पदनाम
1.	जनवरी 2015	डॉ. राजीव रंजन	शोध अध्येता
2.	फरवरी 2015	सुश्री अपराजिता पांडे	शोध प्रशिक्षु
3.	मार्च 2015	डॉ. अमित कुमार	शोध अध्येता
4.	अप्रैल 2015	डॉ. आसिफ शुजा	शोध अध्येता
5.	मई 2015	डॉ. निहार रंजन दास	शोध अध्येता
6.	जून 2015	डॉ. अमित रंजन	शोध अध्येता
7.	जूलाई 2015	डॉ. उमेर अनास	शोध अध्येता
8.	अगस्त 2015	डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य	शोध अध्येता
9.	सितंबर 2015	डॉ. दिनोज के. उपाध्याय और डॉ. अतहर ज़फ़र	शोध अध्येता
10.	अक्टूबर 2015	डॉ. स्मिता तिवारी	शोध अध्येता
11.	नवंबर 2015	डॉ. स्तुति बनर्जी	शोध अध्येता

12.	दिसंबर 2015	डॉ. निवेदिता रे और डॉ. इंद्राणी तालुकदार	शोध अध्येता
13.	वित्त और रक्षा	डॉ. जाकिर हुसैन	शोध अध्येता
14.	बहुपक्षीय संस्थान	डॉ. संजीव कुमार	शोध अध्येता
15.	विविध (गैर-पारंपरिक खतरों सहित)	डॉ. उमेर अनास	शोध अध्येता
16.	आसियान और दक्षिण पूर्व एशिया	डॉ. राहुल मिश्रा	शोध अध्येता
17.	प्रूफरीडिंग	डॉ. राकेश मीणा और डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य	शोध अध्येता